ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म।

(यजुर्वेद अन्तिम मन्त्र)

स्वामी शरण कृत

वैदिक धात्वादि कोश

(धातु, उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम)

प्रकाशक

पालीवाल प्रकाशन

मूल्य : पाँच सौ रुपये मात्र

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ॐ खम् ब्रह्म॥

जो आदित्य पुरुष (ईश्वर) है, वह मैं हूँ। ओम् सर्वव्यापक ब्रह्म है॥

पुस्तक : वैदिक धात्वादि कोश

लेखक : स्वामी शरण

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

संस्करण : प्रथम, 2016 ई.
(मकर संक्रान्ति, 2072 वि., 5117 युगाब्द)

मूल्य : रु. 500/—

प्रकाशक : पालीवाल प्रकाशन

मुद्रक : पालीवाल प्रकाशन

पालीवाल भवन, 117/एच-1/02, पाण्डु नगर,
जे. के. मन्दिर के सामने, कानपुर - 208005

वेबसाइट - vedayan.simplesite.com

मो. **9839105629, 8687849004, 7985402016**

VAIDIK DHATVADI KOSH
BY SWAMI SHARAN

मूल्य : पाँच सौ रुपये मात्र

ॐ

विषय सूची

निवेदन	05
वर्णमाला	14
ध्यातव्य	15
धात्वादि कोश	
अ,	17
आ,	35
इ,	38
ई,	42
ऋ,	44
ॠ,	46
ऌ,	47
उ,	47
ऊ,	52
ए,	53
ऐ,	57
ओ,	57
औ	58
क,	58
क्ष,	88
ख,	93
ग,	98
घ,	113
ङ	118
च,	118
छ,	132
ज,	136

ज्ञ,	146
झ,	148
ञ,	149
ट,	150
ठ,	151
ड,	151
ढ,	154
ण	155
त,	155
त्र,	173
थ,	177
द,	177
द्य,	189
ध,	193
न,	201
प,	212
फ,	237
ब,	238
भ,	246
म,	258
य,	280
र,	289
ल,	303
व,	314
श,	336
श्र,	351
ष,	357
स,	370
ह,	404

ॐ

निवेदन

वैदिक साहित्य तथा देववाणी वैदिक संस्कृत भाषा में रुचि रखने वाले विद्याप्रेमी सज्जनों की सेवा में यह धात्वादि कोश प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता तथा आत्मसन्तोष की अनुभूति हो रही है। हमारे लिए संस्कृत भाषा-व्याकरण के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वेद का स्वाध्याय ही है। हमारी मान्यता है कि वेद भगवान् ही हमारे गुरु हैं। वेद ही परमात्मा का शब्द-शरीर तथा प्रत्यक्ष रूप है। वेद विश्व का प्राचीनतम साहित्य तथा भारतीय धर्म-संस्कृति का मूल स्रोत है। वेद का पाठ तथा स्वाध्याय करना हमारा परम धर्म है। हमारी मान्यताएँ, चिन्तन तथा आचार-विचार वेद के अनुकूल होना चाहिए।

इस धात्वादि कोश में धातु, उपसर्ग, अव्यय-निपात, संख्या तथा सर्वनाम पदों का संकलन किया गया है। इस प्रकार का पञ्चाङ्ग कोश प्रथमतः प्रस्तुत किया जा रहा है, अतः इसके विषय में परिचय प्राप्त कर लेना उपयोगी होगा। इस कोश का मुख्य उद्देश्य जन सामान्य को सरलता से वैदिक संस्कृत भाषा से परिचित कराना है। अतः इसमें व्यावहारिकता तथा सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है। परम्परागत शास्त्रीय संस्कृत व्याकरण से अपरिचित सज्जन भी इसका लाभ उठा सकें, इसका ध्यान रखते हुए इसमें कुछ नूतन दृष्टिकोण अपनाया गया है।

इसकी रचना प्रक्रिया भी इसकी सरलता तथा इस व्यावहारिक स्वरूप को स्पष्ट करती है। वेद के अध्ययन में छात्रों की सरलता के लिए वैदिक शब्दों तथा धातुओं का संकलन करना प्रारम्भ किया गया था। पर्याप्त मन्थन के पश्चात् धात्वादि कोश को इस रूप में प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया। इस कोश से वेद तो क्या, संस्कृत भाषा से भी अपरिचित छात्रों

का भय दूर हुआ और उत्साहपूर्वक वेद के स्वाध्याय में प्रवेश सम्भव हो सका। अतः इसकी व्यावहारिक उपयोगिता तो स्पष्ट हो ही चुकी है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सरल वैदिक व्याकरण तथा वैदिक शब्दकोश भी प्रस्तुत किया गया है। अन्ततः वैदिक शब्दकोश में चारो वेदों में आये सभी पदों को स्थान मिल जाना चाहिए। यह हमारा संकल्प है। यह कार्य सुदीर्घ प्रयास की अपेक्षा रखता है। अब तक उपलब्ध संस्कृत शब्दकोशों में वैदिक शब्द नहीं दिये गये हैं तथा वैदिक शब्दकोश उपलब्ध नहीं था। हमारे सरल वैदिक व्याकरण, वैदिक धात्वादि कोश तथा वैदिक शब्दकोश की सहायता से साधारण छात्र भी वैदिक तथा लौकिक संस्कृत शब्दों का अर्थ सरलता से समझ सकते हैं।

वेद के अध्ययन में यह बात दृढ़ता से स्वीकृत है कि वेद के सभी संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया शब्द धातुज हैं। अतः धातु-ज्ञान के विना वैदिक शब्दों का अर्थ नहीं किया जा सकता है। सामान्यतः यह तथ्य लौकिक शब्दों के लिए भी सत्य है। पाणिनीय धातुपाठ में 1970 धातुएं हैं तथा पाणिनि से पूर्ववर्ती काशकृत्स्न के धातुपाठ में धातुओं की संख्या इससे बहुत अधिक है। प्रमुख वेदभाष्यकारों ने वेदमन्त्रों का अर्थ करते हुए कुछ ऐसी धातुओं का भी निर्देश किया है जो सामान्यतः धातुकोश में उल्लिखित नहीं हैं। हमने इस कोश में उन सभी धातुओं को समाहित करने का प्रयास किया है जो हमें कहीं भी उपलब्ध हो गयीं हैं। इससे यह कोश बहुत उपयोगी तथा व्यापक बन गया है।

परम्परागत धातुपाठ में अनुबन्ध आदि के साथ धातुओं का उल्लेख किया जाता है। प्रयोग काल में उनका रूप भिन्न हो जाता है। परम्परागत व्याकरण शास्त्र में अध्ययन काल तथा प्रयोग काल में धातुओं के पृथक रूप माने जाते हैं। जन-सामान्य को प्रायोगिक रूप की ही आवश्यकता होती है। इस धातुकोश में धातुओं के अध्ययनकाल के शास्त्रीय स्वरूप के

स्थान पर प्रायोगिक स्वरूप को प्रमुखता प्रदान की गयी है। इसमें यथासम्भव सभी धातुओं को प्रायोगिक स्वरूप में स्थान देने का प्रयास किया गया है। प्रयोग काल में कुछ धातुओं के विविध रूप प्रचलित हैं जिन्हें शास्त्रीय दृष्टि से एक धातु माना गया है, जैसे गम् तथा गच्छ। हमने सरलता तथा सुविधा के लिए उन रूपों को पृथक् धातु के रूप में स्थान दिया है। इससे छात्रों को शब्दों तथा पदों में निहित धातुओं को समझने में बहुत सुविधा हुई है।

संस्कृत शब्दों को मूलतः तीन भागों में विभाजित किया जाता रहा है - नाम, धातु, निपात। नाम में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों को सम्मिलित किया जाता है। निपात में वे शब्द होते हैं जिनमें नामिक या क्रिया (आख्यातिक) विभक्ति नहीं जुड़ती है। सामान्यतः उनको अव्यय भी कह सकते हैं। निपात में विशिष्ट शाब्दिक अर्थ न रखने वाले ऐसे शब्द भी हैं जो पाद-पूरणार्थ या विशेष बल देने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। स्वाभाविक रूप से इनमें विभक्तियाँ नहीं जुड़ती है, अर्थात् इनके रूप नहीं चलते हैं। इसी अर्थ में ये अव्यय हैं। इसी रूप में उपसर्ग को भी हम अव्यय या निपात वर्ग में रख सकते हैं। वेद में उपसर्ग, अव्यय, निपात में भेद नहीं है। कह सकते हैं कि वेद के कुछ अव्यय शब्दों ही लौकिक संस्कृत में उपसर्ग के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। संख्या तथा सर्वनाम शब्द संस्कृत वाक्यों में विशेषण के रूप में प्रयोग होते हैं तथा उनकी विभक्तियाँ अथवा रूप अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं। व्यावहारिक दृष्टि से इनकी संख्या सीमित होने तथा शब्द-रूप बनाने के स्थान पर शब्दार्थ सीखना सरल प्रतीत होने के कारण हमने संख्यावाची पदों तथा सर्वनाम पदों को भी अव्यय के समान स्वतन्त्र रूप में इस कोश में स्थान दे दिया है। ऐसा केवल व्यावहारिकता तथा सरलता की दृष्टि से किया गया है। यह प्रयोग भी उपयोगी सिद्ध हुआ है।

धातु शब्द का मूल अर्थ है वह शब्दांश जो शब्दों या पदों के मूल अर्थ

को धारण करता है, अथवा शब्द या पद जिसको अर्थवत्ता अथवा सार्थकता के लिए धारण करते हैं। इससे स्पष्ट है कि धातु को जानकर ही शब्दों या पदों का अर्थ जाना जा सकता है। इस मूल भावना को ध्यान में रखकर ही उपसर्ग, निपात-अव्यय, संख्या, सर्वनाम को भी इस कोश में स्थान दिया गया है। इस प्रकार यह धात्वादि कोश एक प्रकार से सम्पूर्ण कोश बन जाता है। इस कोश की सहायता से सभी शब्दों-पदों का अर्थ जानना सरल हो जाता है। इसके अतिरिक्त केवल विभक्तियों तथा प्रत्ययों की जानकारी शेष रह जाती है। प्रत्ययों का कोश भी संकलित किया जा सके तो उपयोगी रहेगा। हम मानते हैं कि वास्तव में सम्पूर्ण शब्दकोश बनाना तो असम्भव है।

इस कोश में शब्दों का क्रम वर्णमाला के अनुसार रखा गया है। वर्णमाला में अक्षरों को उच्चारण स्थान के अनुसार ही रखा जाता है। यही वैदिक संस्कृत भाषा तथा वर्णमाला की विशेषता तथा वैज्ञानिकता है। उच्चारण स्थान के अनुसार वर्णक्रम कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य के रूप में होना चाहिए। इस प्रकार स्वरों का क्रम अ, इ, ऋ, ऌ, उ रहेगा। ऋ, ऌ स्वरों का प्रयोग न्यून होने के कारण सामान्यतः विद्यार्थी अ, इ, उ का क्रम बोलते हैं। इसी प्रकार संयुक्त अक्षरों के विषय में भी कठिनाई होती है। त्त, क्ष, ज्ञ, श्र आदि अनेक संयुक्ताक्षरों का शुद्ध उच्चारण न जानने के कारण विद्यार्थी शब्दों को कोश में खोज नहीं पाते हैं। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए ही हम विषय-सूची में वर्णक्रम सूची दे रहें हैं। सामान्यतः कोश में इसकी आवश्यकता नहीं मानी जाती है। इसके साथ ही हम वर्णमाला भी दे रहे हैं। उसमें संयुक्ताक्षरों की स्थिति भी स्पष्ट हो जायेगी। इसे सरल वैदिक व्याकरण पुस्तक से लिया गया है।

अनुस्वार का प्रयोग सामान्यतः पञ्चमाक्षरों (ङ्, ञ्, ण, न, म्) के

स्थान पर विकल्प रूप में किया जाता है। इस कोश में शब्दों को पञ्चमाक्षरों के अनुसार क्रम से ही खोजना चाहिए। य, र, ल, व, श, ष, स, ह वर्णों से पूर्व उनके उच्चारण स्थान वाले पञ्चमाक्षरों के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग मिलता है। अनुस्वार तथा विसर्ग स्वर के पश्चात् ही आते हैं। अतः माना जाना चाहिए कि शब्दों के क्रम में इनकी उपस्थिति से कोई अन्तर नहीं पड़ता है, अर्थात् किसी स्वर के पश्चात् व्यञ्जन के क्रम से शब्द आते रहते हैं। इनको उस स्वर के पश्चात वाले व्यञ्जन का क्रम पूर्ण होने पर अन्त में स्थान दिया गया है। उदाहरण के लिए अंह को अह के पश्चात् देखा जाना चाहिए तथा अतः को अत के पश्चात्।

वैदिक भाषा और संस्कृत की संरचना में सूक्ष्म अन्तर मिलता है। वेद में उपसर्ग और धातुएँ संस्कृत से अधिक हैं। विभक्तियों में बहुलता है तथा विकल्प भी स्वीकार्य हैं। वैदिक संस्कृत विश्व की प्राचीनतम, सर्वाधिक समृद्ध सशक्त तथा वैज्ञानिक भाषा है। विश्व का प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान तथा संस्कृति की धरोहर संस्कृत भाषा में ही सुरक्षित है। विश्व का प्राचीनतम साहित्य वेद भारतीय संस्कृति का मूल आधार तथा संस्कृत भाषा की अनुपम देन है। अतः मानवता के विकास के प्राचीनतम सोपान को सुरक्षित रखने के लिए वैदिक संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक है। यह सर्वमान्य है कि वैदिक भाषा प्राचीनतम है। उसके व्याकरण सम्बन्धी नियमों में सरलता है, अतः वह सीखने तथा प्रयोग करने में सरल है। उसमें भाषा सौन्दर्य के लिए विविधतापूर्ण प्रयोग भी हैं।

प्राचीनतम साहित्य वेद की भाषा ही शुद्ध देववाणी है। व्यापक नियमों के अनुकूल होते हुए भी अनेक वैदिक प्रयोगों को प्रचलन से बाहर कर दिया गया। इसे उचित नहीं माना जा सकता है। उचित यही है कि उपयोगी वैदिक प्रयोगों को त्याज्य न समझें, सम्मान सहित प्रयोग किया जाये। वैदिक प्रयोगों की उपेक्षा करना संस्कृत को अशुद्ध बनाना है। वैदिक

भाषा में परिवर्तन से बने रूप को शुद्ध देववाणी नहीं कहा जा सकता है। भारोपीय या आर्यभाषा परिवार की भाषाओं का मूल वैदिक संस्कृत ही है। अतः इसे भारत से यूरोप - अमेरिका तक प्रचलित सभी प्रमुख भाषाओं का मूल रूप माना जाता है। शब्दावली तथा व्याकरण संरचना की समानता के कारण आधुनिक भाषा विज्ञान में इन सभी भाषाओं को एक भाषा परिवार की मान्यता प्राप्त है।

व्याकरण के अन्तर्गत किसी भाषा की शब्द-रचना तथा वाक्य रचना में प्रयुक्त सामान्य प्रवृत्तियों तथा नियमों को निरूपित किया जाता है। व्याकरण का एकमात्र उद्देश्य भाषा सीखना है। इसका लक्ष्य भाषा को एकरूपता तथा वस्तुनिष्ठता प्रदान कर नियमबद्ध तथा सरल बनाना है, उसे जटिल तथा दुरूह बनाना नहीं।

भाषा विज्ञान को व्याकरणों का व्याकरण कहा जाता है। व्याकरण में बताया जाता है कि भाषा में शब्द तथा वाक्य रचना के नियम क्या हैं। भाषा विज्ञान में यह जानने का प्रयास किया जाता है कि भाषा में शब्द तथा वाक्य रचना का वह रूप कैसे विकसित हुआ। व्याकरण यह बता देता है कि वेद में शब्द प्रयोग के नियम क्या थे और बाद में लौकिक संस्कृत में शब्दों के प्रयोग किस रूप में होने लगे। भाषा विज्ञान यह जानने का प्रयास करता है कि वेद में जो नियम थे, उनमें परिवर्तन कैसे हुआ।

वेद तथा संस्कृत भाषा के तटस्थ सर्वेक्षण तथा व्याकरण के स्वतन्त्र विश्लेषण से सरल वैदिक व्याकरण प्रणाली का विकास करने में सफलता मिली है। संस्कृत भाषा सीखने में शब्दरूप तथा धातु रूप रटना कठिन समस्या रही है। प्रस्तुत पद्धति इस समस्या का सुगम समाधान खोजने का विनम्र प्रयास है। इस प्रणाली में शब्द रूप तथा धातु रूप नहीं रटना पड़ता है तथा सूत्रों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इनके स्थान पर नामिक एवम् आख्यातिक विभक्ति प्रत्ययों का प्रयोग सीखना सरल है।

सरल संस्कृत व्याकरण में तीन मुख्य सिद्धान्त अपनाये गये हैं, 1. मूल नियम, 2. व्यापक प्रयोग 3. विकल्प। परम्परागत व्याकरण के मूल नियमों को पूर्ण महत्व देते हुए सबसे पहले सिखाया गया है। जहां मूल नियम के स्थान पर अपवाद को अपनाने की परम्परा है, वहां उनके स्थान पर व्यापक प्रयोग वाले नियमों को अपनाया गया है। ऐसे व्यापक प्रयोग वाले नियमों को सर्वत्र अपनाने की परम्परा को वरीयता दी गयी है तथा अपवादों को विकल्प के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है। इसका अर्थ है कि मूल नियम तथा व्यापक प्रयोग वाले सार्व नियमों के प्रयोग को महत्व प्रदान किया गया है तथा अपवादों को विकल्प के रूप में बाद में सिखाने की नीति अपनायी गयी है।

कुछ उपसर्ग और अव्ययों में त्य आदि प्रत्यय जुड़कर नामिक शब्द बन जाते हैं। फिर उनमें नामिक विभक्ति लग जाती है। महर्षि पाणिनि ने एक सूत्र में इस नियम का उल्लेख किया है। इस प्रकार नि उपसर्ग में त्य प्रत्यय जुड़कर नित्य शब्द बना। जिसका बहुवचन नित्यासः बना। इस शब्द का अर्थ नि उपसर्ग के अर्थ से लिया जायेगा। अतः नित्यासः शब्द का अर्थ निरन्तर बने रहना ही है।

उपसर्ग तथा अन्य अव्यय शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नामिक शब्द बनते हैं। ऐसे अव्ययज अथवा निपातज शब्द संज्ञा और विशेषण बन जाते हैं परन्तु उन अव्यय अथवा निपात शब्दों से क्रियाएँ नहीं बनतीं हैं। अर्थात् उनमें आख्यातिक अथवा क्रिया विभक्तियाँ नहीं जुड़ती हैं। इस प्रकार नामिक अर्थात् संज्ञा तथा विशेषण शब्द दो प्रकार के हो जाते हैं - धातुज तथा अधातुज अथवा अव्ययज या निपातज। कुछ शब्द ध्वनि के अनुसार होते हैं, जिनकी कोई धातु नहीं होती है। उन्हें ध्वन्यानुसारी शब्द कहते हैं। जैसे - चिश्चा।

जिन शब्दों के क्रिया रूप मिल जाते हैं, उनकी धातु स्वीकार्य मानी

जाती है, भले ही किसी धातुकोश में वह धातु हो अथवा नहीं। (सिच्यते - सिच - यजु. 19/15)। हिंसा के भाव वाली धातुओं में गति का भाव निहित होता है तथा गत्यर्थक धातुओं में जानना, पाना का भाव निहित होता है। वेद को श्रुति भी कहते हैं। प्राचीनकाल में गुरु से सुनकर ही शिष्य ज्ञान प्राप्त करते थे अतः वेद में श्रु-श्रवण धातु का अर्थ जानना, विद्वान होना भी स्वाभाविक रूप से माना जाना चाहिए। श्रवस्यवः आदि शब्द विद्वान्, सुनाने वाले, सुनने वाले के लिए प्रयोग किये गये हैं।

धातु अथवा शब्द के प्रथम स्वर से पूर्व अ लगता है तथा सन्धि हो जाती है। इसे परम्परागत व्याकरण में सन्धि प्रकरण में गुण कहा गया है। इस प्रकार अ जुड़ने को प्रत्यय भी माना जाता है। यदि पहले से अ, आ है तो दोनों मिलकर दीर्घ आ हो जायेंगे, इसी प्रकार इ होने पर ए, तथा उ होने पर ओ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए रम् से राम, कम् से काम शब्द बनते हैं। इक प्रत्यय लगने पर भी ऐसा होता है। वेद में इक प्रत्यय जुड़ने पर वैदिक शब्द बनेगा। वैदिक शब्द का अर्थ है - वेद से उत्पन्न, वेद से सम्बन्धित, वेद से युक्त। यह प्रत्यय स्वार्थ अर्थात् स्वयम् के अर्थ में भी लगता है। इसका अर्थ है कि कम तथा काम शब्द के अर्थ समान होंगे।

लोकभाषा में पञ्चमाक्षर के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग अधिक होने लगा है। यह अनुचित है। इससे उच्चारण अशुद्ध होता है तथा अर्थ भी अस्पष्ट हो सकता है। हमने अनुस्वार (ं) के स्थान पर क से म तक पञ्चमाक्षर का प्रयोग करने का प्रयास किया है। य, र, ल, व, श, ष, स के पहले आने वाले अनुस्वार (ं) को तालव्य, मूर्धन्य और दन्त्य स्थान के अनुसार शब्द क्रम में रखा गया है। इसी प्रकार ह से पहले आने वाला अनुस्वार (ं) स्वाभाविक रूप से ङ के स्थान पर है। ङ के स्थान पर अनुस्वार (ं) को स्वीकार किया गया है। इससे सभी को सरलता होती है। विसर्ग (:) का उच्चारण स् (सूक्ष्म) अथवा ह् (सूक्ष्म) के रूप में है। अतः

इसको शब्दकोश में इसी क्रम में स्थान दिया गया है।

इस प्रयास से वेद तथा देववाणी संस्कृत भाषा से जन-सामान्य को परिचित कराने में सहायता मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है। इसमें न्यूनतायें सम्भव हैं, परन्तु एक दिशा तो मिल ही गयी है। दोषदर्शन की तुलना में श्रेष्ठतर प्रयास करना सदैव सम्मान्य तथा अनुकरणीय रहा है। इस शैली में अधिक उत्तम तथा परिष्कृत कार्य किये जा सकते हैं। भविष्य में विद्वान् अधिक उत्तम, निष्पक्ष तथा प्रामाणिक वेदार्थ प्रस्तुत करेंगे, ऐसी आशा-अपेक्षा करना स्वाभाविक है। आशा है कि हमारे सहयोगी इस कार्य को पूर्ण करेंगे। शेष जीवन काल में हमसे जो कुछ बन पड़ेगा, सेवा करने का प्रयास करते रहेंगे।

स्वामी शरण

लाजपत नगर, कानपुर

ॐ

वर्णमाला

स्वर

ह्रस्व (ह्रस्व) या लघु मूल स्वर :- अ, इ, ऋ, ऌ, उ

दीर्घ मूल स्वर :- आ, ई, ॠ, ॡ, ऊ

दीर्घ संयुक्त स्वर :- ए, ऐ, ओ, औ

व्यञ्जन

स्पृष्ट :-

1. 'क' वर्ग - क, ख, ग, घ, ङ (कण्ठ्य)
2. 'च' वर्ग - च, छ, ज, झ, ञ (तालव्य)
3. 'ट' वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्धन्य)
4. 'त' वर्ग - त, थ, द, ध, न (दन्त्य)
5. 'प' वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ्य)

ईषत् स्पृष्ट :-

य, र, ल, व (अन्तस्थ)

ईषत् विवृत :-

श, ष, स, ह (ऊष्म)

अनु स्वर :-

अनुस्वार (ं), विसर्ग (:)

संयुक्त व्यंजन (प्रचलित) :-

क्त, क्ष, ज्ञ, त्र, द्ध, द्य, द्व, श्र

ॐ

संयुक्त व्यंजन

क्त = क् + त (क्त), क्ष = क् + ष (क्ष),

ज्ञ = ज् + ञ (ज्ञ), ठ्य = ठ् + य (ठ्य),

ठ्व = ठ् + व (ठ्व), त्र = त् + र (त्र),

द्ग = द् + ग (द्ग), द्भ = द् + भ (द्भ),

द्म = द् + म (द्म), द्य = द् + य (द्य),

श्र = श् + र (श्र), स्र = स् + र (स्र),

ह्न = ह् + न (ह्न), ह्म = ह् + म (ह्म),

ह्य = ह् + य (ह्य), ह्र = ह् + र (ह्र),

ह्ल = ह् + ल (ह्ल), ह्व = ह् + व (ह्व)।

ध्यातव्य

1. अनुस्वार व विसर्ग स्वर के बाद ही आते हैं।

2. अनुस्वार (ं) का प्रयोग **ङ्, ञ्, ण्, न्, म्** के स्थान पर उसके बाद उसी उच्चारण स्थान का अक्षर होने पर विकल्प रूप में प्रचलित है। **अनुस्वार के स्थान पर ङ्, ञ्, ण्, न्, म् का यथास्थान प्रयोग क़रना उचित है।**

3. व्यंजन में स्वर जुड़ा होता है। जैसे - क् + अ = क।

4. संयुक्त स्वर ए, ओ का ह्रस्व (लघु) उच्चारण भी होता है।

5. किसी व्यंजन को अस्वर या आधा लिखने के लिए उसके नीचे अस्वर चिह्न (हलन्त) लगा देते हैं या उसे आधा लिखते हैं अथवा सस्वर व्यंजन को उसके नीचे जोड़ कर लिखते हैं। **भक्‌त, भक्त, भक्त अथवा शक्‌ति, शक्ति, शक्ति या मक्‌का, मक्का, मक्का के रूप में एक शब्द को**

तीन तरह से लिख सकते हैं। तीनों का उच्चारण तथा अर्थ समान है।

6. संयुक्त व्यंजनों की संख्या असीमित है। प्रचलन के कारण क्त, क्ष, ज्ञ, त्र, द्ध, द्य, द्व, श्र को इसी तरह लिख सकते हैं। द के नीचे ध, य, व जोड़ने का प्रचलन धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। अतः द्ध, द्य, द्व के स्थान पर द्‌ध, द्‌य, द्‌व लिखना उचित है। अस्वर अथवा हलन्त र को ऊपर रेफ के रूप में लिखते हैं, जैसे कर्म। इसे र के नीचे हलन्त लगाकर (र्‌) लिखना उचित है, जैसे कर्‌म। अस्वर या हलन्त अक्षर के बाद आने पर सस्वर र को नीचे तिर्यक् रेखा के रूप में लिखते हैं, जैसे क्रम। अस्वर या हलन्त अक्षर को नीचे हलन्त लगाकर या उसका अस्वर या आधा रूप लिखें तथा र को सामान्य रूप में लिखें तो उचित ही है, जैसे क्‌रम या क्रम।

7. र पर उ, ऊ की मात्रा नीचे लगाना (र‍ु, र‍ू) उचित है, परन्तु प्रचलन के कारण रु, रू के रूप में भी लिख सकते हैं।

8. कोई मात्रा आधे अक्षर पर नहीं लगनी चाहिए। **इ की मात्रा से पूर्व आधा अक्षर लिखना अव्यावहारिक है, अतः अस्वर चिह्न (हलन्त) लगाकर लिखें।** प्रचलन के कारण इ की मात्रा के बाद आधा अक्षर, फिर इ से पूर्व उच्चारित होने वाला पूरा अक्षर लिख सकते हैं।

ॐ

वैदिक धात्वादि कोश

(अ)

अ (उपसर्ग) = नहीं।

अक् (अकति, अकयति, अकते, अकयते) = गतौ, वक्रगतौ, कुटिलगतौ। जाना, जानना, पाना, घूमना, कुटिल गति करना, वक्र गति करना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना। (अकति, अकयति - कुटिलम् आचरति। अकः, अककः, अकन् - वक्रगन्ता। अकिः, अकनम्, अकनीयम्, अक्यम्, आक्यम्, आकम् आक् - वक्रगमने)।

अकस्मात् (अव्यय) = अचानक।

अक्क् (अक्कति, अक्कते) = रक्षणे, पालने। रक्षा करना, पालन करना। (अक्कति, अक्कते - रक्षति, पालनम् करोति। अक्कः - पालनकर्ता (राजा)।

अक्ष् (अक्षति, अक्षते) = खेलने, क्रीडने, दर्शने। खेलना, देखना। (अक्षति, अक्षते - खेलति, पश्यति। अक्षः - क्रीडनम्, नेत्रम् च। अक्षिः - चक्षुः, नेत्रम्। अक्षकः, अक्षमाणः - क्रीडितरि)।

अक्ष् (अक्षति, अक्षणोति) = संघाते, व्याप्तौ। व्याप्त होना, इच्छितार्थ होना, पैठना, घुसना, एकत्र होना। (अक्षति, अक्षणोति - एकत्रो भवति्)।

अख् (अखति, अखते) = गतौ, विदारणे, खनने। जाना, खोदना, खुरचना, काटना, चीरना, फाड़ना। (अखति - भूमिम् विदारयति। आखुः - खननकर्ता मूषकः वा)।

अग् (अगति, अगते) = गतौ, अग्रगतौ, ऊर्ध्वगतौ, कुटिलायां गतौ वक्रगतौ च। जाना, जानना, पाना, आगे जाना, ऊर्ध्वगति करना, घूमना,

कुटिल गति करना, वक्र गति करना, टेढ़ा जाना, टेढ़े रास्ते से जाना। (अगति, अगते - कुटिलम् आचरति। अग्निः - प्रगतिः, ऊर्ध्वगतिः, वक्रगतिः, कुटिलो गतिः वा। अग्रः, अग्रणी - अग्रगामी)।

अग् (अगते) = आदाने, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना। (अगते - पिबति, गृह्णाति। आगा, आगः - अपग्रहणम्, दुर्ग्रहणम्, पापम् वा)।

अगद् (अगद्यति) = नीरोगत्वे। निरोग रहना। (अगद्यति - नीरोगी भवति। अगदः - नीरोगी)।

अग्रे (अव्यय) = आगे।

अघ् (अघयति, अघयते) = स्खलने, गत्याक्षेपे, गत्यवरोधे, पापकरणे। पाप करना, अपराध करना, गिरना, गति अवरोध करना। (अघते - पतति। अघकः, अघमानः - स्खलितरि। अघम्, अघी, अघू, अघनम्, अघनीयम्, अघ्यम् - स्खलने। अघयति - दुर्व्यवहारं करोति। अघम् - पापम्। अघवान् - पापी)।

अङ्क्-अंक् (अङ्कते, अङ्कयति, अङ्कयते) = संख्याने, परिचये, चिह्ने, पदे लक्षणे च। गिनना, चिह्न करना, टहलना, गोद में लेना, परिचय करना। (अङ्कते - परिचिनोति। अङ्कः - परिचयः, जंघा, क्रोडः (गोद)। अङ्ककः, अङ्कमानः - परिचायके। अङ्किः, अङ्कुः, अङ्कनम्, अङ्कनीयम्, अङ्कितम्, अङ्क्यम् - लक्षणे। अङ्कयति - चिह्नयति। अङ्कः (अंकः), अङ्कवान्, अङ्किः - परिचायके। अङ्कः - युद्धम्, चिह्नम्। अङ्कनम्, अङ्कनीयम्, अङ्कितम् - चिह्नकरणे)।

अङ्क्, अनक्, अञ्ज् (अनक्ति, अङ्क्ते, अञ्जिष्यति, अञ्जिष्यते) = व्यक्तिम्रक्षणकान्तगतिषु, स्पष्टीभावे, कोमले, कान्तौ, गतौ च। जाना, स्वच्छ करना, प्रशंसा करना, विख्यात करना, चमकना, प्रकाशित होना, तैलमर्दन करना, अभ्यञ्जन करना, सजाना, कोमल होना। अभि - अभ्यञ्जन करना, तैलमर्दन करना। वि - स्पष्ट करना, उत्पन्न करना। अधि - भरना,

संवारना। आ - तेल मलना, चिकना करना, मान करना। नि - तेल मलना, छिपना। प्रति - तेल मलना, संवारना, सजाना। सम् - तेल मलना, मान करना, भरना, एकत्र करना, जोड़ना, संवारना (अनक्ति, अङ्क्ते, अञ्जिष्यति - प्रकाशते, गच्छते, प्रशंसते)।

अङ्ख् (अंख्) (अङ्खयति, अङ्खयते) = रिङ्गणे, गतिवैकल्ये। रेंगना, हाथ पांव से चलना, लटकना, अटकाना (अङ्खयति, अङ्खयते - रिङ्गति (रिंगति)।

अङ्ग् (अंग्) (अङ्गति, अङ्गते) = गतौ, अङ्गे, अवयवे, अंकुरणे। चलना, टहलना, समीप जाना। (अङ्गति - अंकुरितो भवति। अंगम् - अवयवः)।

अङ्ग् (अंग्) (अङ्गयति, अङ्गयते) = पदे, लक्षणे च। टहलना, चिह्न करना। परि - प्रवृत्त करना, जगाना। विपरि - छिपाना, ढाँपना (अङ्गयति, अङ्गयते - चिह्नयति)।

अङ्ग (अंग) (अव्यय) = आदर के साथ सम्बोधन।

अङ्घ् (अंघ्) (अङ्घति, अङ्घते, अङ्घयति, अङ्घयते) = गतौ, गत्याक्षेपे, गत्यवरोधे, चिह्ने, पदे लक्षणे च। गति करना, आरम्भ करना, शीघ्रता करना, लंगड़ाना, धमकाना, घुड़कना, द्यूत (जुआ) खेलना, चिह्न करना, निन्दा करना। (अङ्घति, अङ्घते - चिह्नयति)।

अच् (अचति, अचते) = गतौ, मरणे, याचने च। जाना, चलना, आदर करना, मांगना। (अचति, अचते - गच्छति, याचति, मरति। अचन्, अचकः, अचानः अचमानः - मर्ता। आचः - वृक्षः। अच्, आच्, अचिः, अचुः, अचम्, अच्यम्, आच्यम्, आचनम्, आचनीयम् - मरणे)।

अचिरम् (अव्यय) = शीघ्र।

अचिरात् (अव्यय) = शीघ्र।

अचिरेण (अव्यय) = शीघ्र।

अच्छ (उपसर्ग) = निर्मल, अच्छा।

अच्छ् (अच्छति, अच्छते) = गतौ, सत्ये, निर्मले। जाना, सत्य होना, निर्मल होना। (अच्छति - सत्यम् स्वच्छम् च भवति। अच्छम् - सत्यम्, स्वच्छः - निर्मलः)।

अज् (अजति, अजते) = क्षेपणे, स्थापने, गमने च। जाना, हांकना, दौड़ाना, फेंकना। (अजति, अजते - स्थापयति, गच्छति, क्षिपति)।

अजस्त्रम् (अव्यय) = निरन्तर।

अञ्च् (अंच) (अञ्चति, अञ्चते) = गतौ, व्ययगतौ, शनैः गतौ, पूजने, याचने अव्यक्ते शब्दे दर्शने च। झुकना, टेढ़ा करना, जाना, पूजा करना, मान करना, संवारना, शोभित करना, मांगना, चाहना, प्रकट करना, न्यूनाधिक देखना, अस्पष्ट बोलना। अव - दक्षिण की ओर झुकना या जाना। उत्-उद् - उत्तर की ओर झुकना या जाना। परा - पीछे की ओर झुकना या जाना। प्र - पूर्व की ओर झुकना या जाना। प्रति - पश्चिम की ओर झुकना या जाना। अप - दूर करना, हटा देना। आ - झुकना। उप - निकालना (जल आदि)। परि - घुमाना। वि - फैलाना, विस्तृत करना। सम् - एकत्र करना। (अञ्चति, अञ्चते - शनैः गच्छति। अञ्चन्, अञ्चकः, अञ्चानः, अञ्चमानः - व्ययगतिः। अञ्चनम्, अञ्चनीयम्, अञ्च्यम्, आञ्च्यम् - व्ययगतौ। अञ्चुः - तटम्। अञ्चा - प्रयाणस्थानम्)।

अञ्च् (अञ्चयति, अञ्चयते) = विशेषणे, पृथक्करणे। विशेषित करना, सम्मानित करना, हटाना, पृथक् करना। (अञ्चयति - श्रेष्ठो, विशिष्टो भवति। अञ्चनम् - विशिष्टम्)।

अञ्ज्-अंज् (अञ्जयति, अञ्जयते) = भाषार्थः। बोलना, स्पष्ट करना (अञ्जयति, अञ्जयते - वदति, भाषते)।

अञ्ज् (अनक्ति, अङ्क्ते, अञ्जिष्यति, अञ्जिष्यते) = स्पष्टीभावे, कोमले, कान्तौ, गतौ च, व्यक्तिम्रक्षणकान्तगतिषु। जाना, स्वच्छ करना,

प्रशंसा करना, विख्यात करना, चमकना, प्रकाशित होना, तैलमर्दन करना, अभ्यञ्जन करना, संवारना, सजाना। अभि - अभ्यञ्जन करना, तैलमर्दन करना। वि - स्पष्ट करना, उत्पन्न करना। अधि - भरना, संवारना। आ - तेल मलना, चिकना करना, मान करना। नि - तेल मलना, छिपना। प्रति - तेल मलना, संवारना, सजाना। सम् - तेल मलना, मान करना, भरना, एकत्र करना, जोड़ना, खाना, संवारना (अनक्ति, अङ्क्ते, अञ्जिष्यति - प्रकाशते, गच्छते, प्रशंसते)।

अट् (अटति, अटते) = गतौ, भ्रमणे। घूमना, फिरना। परि - जाना, भटकना। (अटति - भ्रमति, क्रीडयति। आटः - क्रीडनम्)।

अट्ट् (अट्टते) = अतिक्रमणहिंसनयोः, मञ्चिकायाम्, मञ्चक्रियायाम्। अधिक होना, मार डालना, दुःख देना, मञ्च बनाना। (अट्टति - मञ्चम् करोति। अट्टम् - मञ्चः, खट्वा)।

अट्ट् (अट्टयति, अट्टयते) = अनादरे, सूक्ष्मीभावे, अस्वादु-भवने। अस्वादु होना, अनादर करना, अपमान करना, सूक्ष्म होना। (अट्टयति - अस्वादु भवति। अट्टम् - अस्वादु-भवनम्)।

अठ् (अठति, अठते) = गतौ। जाना (अठति - गच्छति)।

अड् (अडति, अडते) = उद्यमे, व्याप्तौ। फैलना, व्यापना, उद्यम करना, प्रयत्न करना, उपभोग करना, अपने अधिकार में लाना। (अडति - उद्योगम् करोति। आडः - कर्मशीलः, उद्योगी)।

अड्ड् (अड्डति) = अभि-योगे, रहस्ये, प्रयत्ने, मेलने, संयोगे, प्रार्थनायाम्। सब ओर से जोड़ना, संयुक्त करना, वाक्यादिकों का प्रतिपादन करना, हल्ला करना, घेरना, प्रयत्न करना, प्रार्थना करना। (अड्डा - मिलन-स्थानम्)।

अण्-अन् (अण्यते) = जीवने, चेतने, प्राणने, गमने, सामर्थ्ये च। चेतन होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना, श्वासोच्छ्वास करना, बलवान

होना (अण्यते - जीवति। प्राणः - श्वासोच्छ्वासः, जीवनः)।

अण् (अणति) = सूक्ष्मीभावे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, सूक्ष्म होना। (अणति - ध्वनयति, सूक्ष्मो भवति। अणिः, अणुः - सूक्ष्मद्रव्यम्, लघु द्रव्यम्, अल्पपरिधिद्रव्यम्)।

अण्ठ् (अण्ठति, अण्ठते) = गतौ। जाना, चलना (अण्ठते - गच्छति)।

अण्ड् (अण्डति, अण्डते) = गतौ, आच्छादने। चलना, आच्छादन करना। (अण्डति, अण्डते - आच्छादयति, गच्छति। अण्डः - आच्छादनः, प्राण्यवयवः। अण्डुः - आच्छादनः, वृक्षविशेषः वा)।

अत् (अतति) = सातत्यगमने। जाना, सदैव चलते रहना। (अतति - सततम् गच्छति, आत्था, आत्मा - सर्वत्रसंचारी)।

अत् (अत्ति) = भक्षणे। खाना, नष्ट करना। अव - तृप्त होना, मुंह बन्द हो जाना, खाना छोड़ देना। आ - खाना। प्र - खाना। सम् - खाना। वि - काटना, कुतर लेना, चबाना। (अत्ति = भक्षति, आदयति - भोजयति, खिलाता है। जिघत्सति - खाने की इच्छा करता है। अन्तम् - भक्तम्, आहारः)।

अतः (अव्यय) = इसलिए।

अतएव (अव्यय) = इसलिए।

अतीव (अव्यय) = बहुत।

अतो (अव्यय) = इससे।

अत्र (अव्यय) = यहाँ।

अथ (अव्यय) = मंगल सूचक, आरम्भ सूचक, अब, तब, इसके पश्चात।

अथ किम् (अव्यय) = हाँ, तो क्या, ठीक है।

अथा (अव्यय) = अब।

अथो (अव्यय) = तब।

अद् (अत्ति) = भक्षणे। खाना, नष्ट करना। अव - तृप्त होना, मुंह बन्द हो जाना, खाना छोड़ देना। आ - खाना। प्र - खाना। सम् - खाना। वि - काटना, कुतर लेना, चबाना। (अत्ति = भक्षति, आदयति - भोजयति, खिलाता है। जिघत्सति-खाने की इच्छा करता है। अन्तम् - भक्तम्, आहारः)।

अदो, अदः = यह (सर्वनाम)।

अदः (सर्वनाम) = इस ने, इस को। (नपुंसकलिंग)।

अद्य (अव्यय) = आज।

अधः (अव्यय) = नीचे।

अधर् (अधरयति, अधरयते) = न्यूने, जये, निम्ने, नीचैः गमने। न्यून करना, जीतना।

अधराक् (अव्यय) = दक्षिण।

अधस्तात् (अव्यय) = नीचे।

अधि (उपसर्ग) = अधिक।

अधि-इ (अध्येति, अध्येते) = अध्ययने, स्मरणे, स्मृतौ। स्मरण करना, अध्ययन करना (अध्येति, अध्येते - स्मरति)।

अधु (अध्वति) = संचरणे। चलना, विचरण करना। (अध्वति = चलति, विचरति, संचरति। अध्वः = मार्गः)।

अधुना (अव्यय) = अब।

अन् (उपसर्ग) = नहीं।

अन् (अनिति, अन्यते) = जीवने, श्वसने, चेतने, प्राणने, गमने, सामर्थ्ये च। चेतन होना, जीवन होना, समर्थ होना, जाना। (अनिति, अन्यते - जीवति। प्राणः - हृद्वायुः। अपानः - गुदवायुः। समानः - नाभिवायुः।

उदानः - कण्ठवायुः। व्यानः - सर्वशरीरव्यापि-वायुः। अन्तिः, अन्तम्, अननम्, अन्तव्यम्, अननीयम् - चेतनायाम्)।

अनक्, अङ्क, अञ्ज् (अनक्ति, अङ्क्ते, अञ्जिष्यति) = (स्पष्टीभावे, कोमले, कान्तौ, गतौ प्रशंसने च, व्यक्तिम्रक्षणकान्तगतिषु) = जाना, स्वच्छ करना, सराहना, विख्यात करना, चमकना, प्रकाशित होना, तैलमर्दन करना, अभ्यञ्जन करना, संवारना, सजाना। अभि - अभ्यञ्जन करना, तैलमर्दन करना। वि - स्पष्ट करना, उत्पन्न करना। अधि - भरना, संवारना। आ - तेल मलना, चिकना करना, मान करना। नि - तेल मलना, छिपना। प्रति - तेल मलना, संवारना, सजाना। सम् - तेल मलना, मान करना, भरना, एकत्र करना, जोड़ना, संवारना (अनक्ति, अङ्क्ते, अञ्जिष्यति - प्रकाशते, गच्छते, प्रशंसते)।

अनया (सर्वनाम) = इसके द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

अनयोः (सर्वनाम) = इन दोनों के, इन दोनों में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

अनु (अनोति, अनुते) = धारणे, सहने। (अनोति, अनुते - सहते। अन्वन् अन्वानः, अनकः, अन्ता - सहनकर्तरि)।

अनु = पश्चात्, अनुसार, पीछे, अनुकूल (उपसर्ग)।

अनेन (सर्वनाम) = इसके द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)

अन्त् (अन्तति, अन्तते) = बन्धने, क्रमे, हिंसायां च। बांधना, पाना, हिंसा करना। (अन्तति, अन्तते - हिंसति। अन्तकः, अन्तमानः - हिंसके। अन्तम् - समाप्तिः। अन्तिः, अन्तरम्, अन्तनीयम् - हिंसने)।

अन्तम = निकट, (सर्वनाम)।

अन्तमा = निकट (सर्वनाम)।

अन्तः (अव्यय) = बीच में, भीतर।

अन्तर् (उपसर्ग) = बीच में, भीतर।

अन्तर (सर्वनाम) = बीच में।

अन्तरा (अव्यय) = बीच में।

अन्तरे (अव्यय) = बीच में।

अन्तरेण (अव्यय) = विना।

अन्ति = निकट (अव्यय)।

अन्तिके = निकट (अव्यय)।

अन्त्र् (अन्त्रयति, अन्त्रयते) = जीवने। जीवन होना, जीवित रहना। (अन्त्रयति, अन्त्रयते - जीवति। अन्त्रम्, अन्त्रणम्, अन्त्रणीयम् - जीवनम्)।

अन्द् (अन्दति, अन्दते) = बन्धने, प्रापणे। बांधना, प्राप्त करना (अन्दति, अन्दते - प्राप्नोति)।

अन्दोल् (अन्दोलयति) = गतौ, अन्दोलने, विकम्पने। झुलाना, हिलाना (अन्दोलयति - विकम्पते)।

अन्ध् (अन्धयति, अन्धयते) = दृष्टि-बाधायाम्, दृष्टिना उपघाते। अन्धा होना, आँख मूंदना। (अन्धकारः - अप्रकाशः, तमः)।

अन्य (सर्वनाम) = अन्य, कोई और, इतर।

अन्यच्च (अन्यत् च) (अव्यय) = अन्य भी, और भी

अन्यत्र (अव्यय) = अन्य स्थान पर।

अन्यथा (अव्यय) = अन्य प्रकार से।

अप् (अपति) = पालने। पालन करना। वि - व्याप्त होना। प्र - प्राप्त होना। सम्-आ - समाप्त होना। (अपः, अपस् - पालनम्, जलम् वा)।

अप = दूर। (अव्यय, उपसर्ग)

अपर (सर्वनाम) = अन्य।

अपरम् (अव्यय) = और।

अपाक् (अव्यय) = पश्चिम।

अपि (उपसर्ग) = निकट।

अपि (अव्यय) = भी (शंका, सम्भावना के अर्थ में भी)

अपि च (अव्यय) = और भी।

अपो (अव्यय) = निम्नता, बुराई, दूर।

अप्प् (अप्पति, अप्पते) = पालने, रक्षणे। पालन करना। (अप्पि - रक्षणम्। अप्पः - पिता। अप्पा - माता)।

अब्ब् (अब्बति) = जनने, जन्मनि। जन्म देना, जन्म होना। (अब्बः - पिता। अब्बा - माता)।

अभि (उपसर्ग) = सभी ओर, मुख्य।

अभितः (अव्यय) = सभी ओर से।

अभीके (अव्यय) = निकट, सभी ओर।

अभीक्षणम् (अव्यय) = निरन्तर।

अभ्र् (अभ्रति) = गतौ, चलने, भ्रमणे। जाना, घूमना, मेघ-गति करना। (अभ्रति - भ्रमति। अभ्रम् - मेघः)।

अम् (अमति, अमिति, अमीति) = गति-शब्द-सम्भक्तिषु, सेवायाम्, खादने च। जाना, शब्द करना, बोलना, सेवा करना, खाना।

अम् (अमयति, आमयति, आमयति, आमयते) = पीडायाम्, रोगे, क्षुधायाम् च। रोगग्रस्त होना, अजीर्ण रोगयुक्त होना, क्षुधित होना, भूखा होना। (अमयति, आमयति - क्षुधितो भवति, रोगी भवति)।

अमी (सर्वनाम) = यह। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमीभिः (सर्वनाम) = इन सब द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमीभ्यः (सर्वनाम) = इन सब के लिए, इन सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमीषाम् (सर्वनाम) = इन सब का। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमीषु (सर्वनाम) = इन सब में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुतः (सर्वनाम) = इससे।

अमुना (सर्वनाम) = इस द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुम् (सर्वनाम) = इस को। (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुया (सर्वनाम) = इस द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

अमुयोः (सर्वनाम) = इन दोनों के, इन दोनों में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

अमुष्मात् (सर्वनाम) = इस से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुष्मिन् (सर्वनाम) = इस में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुष्मै (सर्वनाम) = इस के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुष्य (सर्वनाम) = इस के। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अमुष्याः (सर्वनाम) = इस के, इस से। (स्त्रीलिंग)।

अमुष्याम् (सर्वनाम) = इस में। (स्त्रीलिंग)।

अमुष्यै (सर्वनाम) = इस के लिए। (स्त्रीलिंग)।

अमू (सर्वनाम) = इन दोनों ने, इन दोनों को। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

अमूः (सर्वनाम) = इन सब ने, इन सब को। (स्त्रीलिंग)।

अमून् (सर्वनाम) = इन सब को। (पुल्लिंग)।

अमूनि (सर्वनाम) = इन सब ने, इन सब को। (नपुंसकलिंग)।

अमूभिः (सर्वनाम) = इन सब द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

अमूभ्यः (सर्वनाम) = इन सब से, इन सब के लिए। (स्त्रीलिंग)।

अमूभ्याम् (सर्वनाम) = इन दोनों द्वारा, इन दोनों के लिए, इन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

अमूषाम् (सर्वनाम) = इन सब का। (स्त्रीलिंग)।

अमूषु (सर्वनाम) = इन सब में। (स्त्रीलिंग)।

अमो (सर्वनाम) = इन सब ने। (पुल्लिंग)।

अम्ब् (अम्बते, अम्बति) = गतौ, शब्दे, मर्दनक्रियायाम्। जाना, जानना, पाना, बोलना, शब्द करना, मर्दन करना। (अम्बः, अम्बकः - पिता। अम्बा, अम्बिका - माता। अम्बु, अम्बिलम् - गतिशीलम्, जलम् वा)।

अम्बर् (अम्बर्यति) = सम्भरणे। एकत्र होना, एकत्र करना, बटोरना।

अम्भ् (अम्भते) = द्रवीभावे, ध्वनौ, शब्दे। द्रवीभूत होना, शब्द करना। (अम्भते - आह्वयति, शब्दयति। अम्भः – द्रवीभूतम्, जलम्)।

अम्म् (अम्मति) = धारणे, पोषणे, गतौ, गमने। धारण-पोषण करना, गति करना। (अम्मा - माता। अम्मिः, अम्मिता - पोषकः, पोषिता पुत्रः पुत्री वा)।

अय् (अयते, अयति) = गतौ, शब्दे, ध्वनौ। चलना, जाना, ध्वनि करना। प्र (प्ल) - प्लायते - भाग जाना। परा (पला) - पलायते - भाग जाना। (र-ल-योः अभेदः)। (अयः, अयस् - प्रगतिः, श्रेष्ठम् कार्यम् वा। अयनम् - मार्गः। अय्यः, आय्यः, अयकः, आयकः, अयमानः - गन्तरि। अयकः, अयमानः, एः, अयिः, अयनम्, अयनीयम् - गन्तरि)।

अयम् (सर्वनाम) = यह, इस ने। (पुल्लिंग)।

अया (सर्वनाम) = इस द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

अयुत (संख्या) = दस हजार (10,000)।

अये (अव्यय) = आदरपूर्वक सम्बोधन, आश्चर्यबोधक।

अर् - ऋ (अरति) = गतौ, चलने, सत्ये च। सत्य होना, जाना, जानना, पाना, फैलाना। (ऋ, ऋतम्, ऋतिः - चलने सत्ये च)।

अर् - ऋ (अरते) = शब्दे, ध्वनौ, हिंसने, महत्त्व-प्रदर्शने। (अरते - शब्दयति, महत्वम् प्रदर्शयति। अरकः, अरमाणः - महत्त्व-प्रदर्शयिता। ऋः, अरिः, अरणम्, अरणीयम्, अर्यम्, आर्यम् - महत्त्व-प्रदर्शने। अरकः, अरमाणः

- हिंसकः। ऋः (ऋः), अरिः, अरम्, अरणम्, अरणीयम्, अर्यम्, आर्यम् - हिंसने)।

अरर् (अरर्यति) = आराकर्मणि। आरे से काटना, नष्ट करना।

अरे, अरेरे, रे, रेरे (अव्यय) = तिरस्कारपूर्वक सम्बोधन।

अर्क (अर्कते, अर्कयति, अर्कयते) = स्तवने, तपने, प्रकाशने, आदाने, ग्रहणे। प्रशंसा करना, स्तुति करना, तपाना, उष्ण करना, लेना, ग्रहण करना। (अर्कः - प्रकाशकः)।

अर्घ (अर्घति) = पूजायाम्। पूजा करना, मान देना, मूल्यवान् होना, मोल पड़ना।

अर्च (अर्चति, अर्चयति, अर्चयते) = पूजायाम्, दीप्तौ, प्रकाशने, सेवायाम्। पूजा करना, मान करना, सेवा करना, चमकना, प्रकाशित होना। अनु - जय-जयकार करना, मान करना। प्र - पूजना। सम् - पूजना, स्थिर करना, संस्थापन करना।

अर्ज (अर्जति) = अर्जने, अलब्धस्य लाभे। अप्राप्त को पाना, सम्पादन करना, अर्जित करना, पाना, उठाना।

अर्ज (अर्जयति, अर्जयते) = प्रतियत्ने, उद्योगे, संस्कारे। उद्योग करना, पदार्थ को संस्कृत करना, तैयार करना। अति - जाने देना, दूर करना। अनु - जाने देना, मुक्त करना। अन्वव - पीछे से जाने देना, हराना। अपि - जोड़ना। अप्यति - जोड़ना, मिलाना। अव - जाने देना, मुक्त करना। उद् - चलाना।

अर्थ (अर्थयते, अर्थयति) = उपयाञ्चायाम्। मांगना, याचना करना, चाहना, प्रयोजन-तात्पर्य होना। (अर्थयते - धनम् याचते। अर्थानः - याचकः। अर्थः - प्रयोजनः, सारः)।

अर्द (अर्दति) = गतौ याचने च। मांगना, याचना करना, जाना।

अर्द (अर्दयति, अर्दयते, अर्दति, अर्दते) = हिंसायाम्। मारना, बध

करना, दुःख देना, सताना।

अर्द्ध (अर्द्धते) = समाने, समविभागे। समान विभाग होना, आधा होना, आधा करना, दो भाग करना।

अर्ध (अर्धते) = समाने, समविभागे। समान विभाग होना, आधा होना, आधा करना, दो भाग करना।

अर्ब (अर्बति) = गतौ, हिंसने। जाना, हिंसा करना, मार डालना।

अर्व (अर्वति) = हिंसायाम्, पद्भ्याम् ताडने। चोट करना, मार डालना, दुःख देना, सताना। (अर्वति - पद्भ्याम् ताडयति। अर्वन् - पद्भ्याम् ताडकः, घोटकः वा)।

अर्वाक् (अव्यय) = पहले।

अर्वावतः = निकट (अव्यय, सर्वनाम)।

अर्ह (अर्हति, अर्हते, अर्हयति, अर्हयते) = पूजायाम्, योग्यभावे। पूजा करना, सत्कार करना, पूजनीय होना, पूजा योग्य होना, योग्य होना।

अल् (ऌ) (अलते) = समापने, पर्याप्तभुवि, सहने, शब्दे, ध्वनौ। समाप्त होना, पर्याप्त होना, समर्थ होना, शब्द करना, बोलना। (अलकः, अलमानः - समापयिता। लृः, आलिः, अलनम्, अलनीयम्, अल्यम्, आल्यम् - समापने। अलम् - पर्याप्तम्। लृः, अलनम्, अलनीयम् - सहनम्)।

अल् (अलति) = परिधाने, आभूषणे, व्याप्तौ, निवारणे। संवारना, भूषित करना, निवारण करना, शक्तिमान होना, पूरा करना। (अलति, अलते - परिदधाति। अलन्, अलमानः - परिधारकः)।

अलर्क (अलर्कते) = आदाने, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना।

अलम् (अव्यय) = पर्याप्त, व्यर्थ, समर्थ।

अल्ल् (अल्लति) = गतौ मुक्तौ पालने च। प्रभुता होना, पालन करना, गति करना। (अल्लः - पालकः, प्रभुः, स्वामी वा। अल्ला - पालनकर्त्री, स्वामिनी वा। अल्लम् - पालकः)।

अव् (अवति, अवते) = पालने, रक्षणे। रक्षण-गति-कान्त-प्रीति-तृप्ति-अवगम-प्रवेश-श्रवण-स्वामी-अर्थ-याचन-क्रिया-इच्छा-दीप्ति-अवाप्ति-आलिंगन-हिंसा-आदान-भाव-वृद्धिषु। संरक्षण करना, बचाना, जाना घुमाना, कामना करना, प्यारा होना, प्यार करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना, जानना, समझना, प्रवेश करना, पैठना, घुसना, धँसना, सुनना, सुनाना, प्रभु होना, आज्ञा मानना, मांगना, कर्म करना, कान्ति होना, चमकना, शोभित होना, प्राप्त होना, मिलना, पाना, आलिङ्गन करना, गले लगाना, मार डालना, दुःख देना, सताना, ग्रहण करना, लेना, होना, बढ़ना, शक्तिमान् होना, दहन करना, जलाना, विभाग करना, बांटना, पहुँचना। अनु - ढांढस देना। उद् - ध्यान देना, मार्ग प्रतीक्षा करना, प्रवृत्त करना। उप - स्नेह करना। सम् - तृप्त करना, संरक्षण करना। (अवति = पालति, रक्षति। अविः - पालनीयः, रक्षकः, पशुविशेषः ('भेड़')।

अव् (आवयति) = अवकल्पने, कल्पनायाम्। कल्पना करना, निरूपण करना। (अवना - निरूपणम्)।

अव् (ऊ) (अवते) = शब्दे, ध्वनौ, विश्वसने। शब्द करना, विश्वास करना। (अवते - विश्वस्तम् करोति। अवकः, अवमानः - विश्वासयिता। ऊः, अविः, अवनम्, अवनीयम् - विश्वसने)।

अव् (ओ) (अवति) = शब्दे, ध्वनौ, आह्वाने। शब्द करना, आह्वान करना। (अवति - शब्दयति। अवकः, अवमानः - आह्वयितरि। ओ, अवनम्, अवनीयम् - आह्वाने)।

अव (अव्यय) = नीचे, दूर, प्राप्त।

अवधीर् (अवधीरयति, अवधीरयते) = अपमाने, तिरस्कारे। अपमान करना, तिरस्कार करना, घृणा करना।

अवर (सर्वनाम) = निम्न, नीचे।

अव्य (अव्यति) = बन्धने पालने च। बाँधना, पालन करना। (अव्यः -

पालकः (राजा)।

अव्व् (अव्वति) = बन्धने पालने च। बांधना, पालन करना। (अव्वा - माता। अव्वः - पिता)।

अश् (अश्नुते) = व्याप्तौ संघाते च। व्याप्त होना, फैलाना, पहुँचना, पाना, संग्रह करना। अनु - पहुँचना, सामान होना। आ - पहुँचना, पाना, प्राप्त करना, सौंपना। उद् - ऊपर पहुँचना, पाना, प्राप्त करना, शासक होना। उप - पाना, प्राप्त करना, उपार्जन करना, शासक होना। परि - समाना, पूर्ण होना। प्र - पहुँचना, पूर्ण होना। (अशनिः, अशुः, आशुः - व्यापकः। अशनम्, अशनीयम्, अष्टिः, अष्टम् - व्याप्तिः)।

अश् (अश्नाति, आशयति) = अदने, भोजने। खाना, भोगना, खिलाना, पिलाना, तृप्त करना। अति - अधिक खाना। उप - खाना, भोगना।

अंश् (अंशयति, अंशयते) = समाधाते, सहभावे। विभाग करना, बाँटना, साथ होना। (अंशयति - सह गच्छति। अंशकः - सह गन्ता। अंशनम्, अंशनीयम् - सहभावे)।

अशन् (नामधातु) (अशनायति) = भोजने। भोजन करना, खाना, खाने की इच्छा करना, क्षुधित होना।

अशीतिः (संख्या) = अस्सी (80)।

अष् (अषति, अषते) = प्रकाशे, आदाने, गतौ च। जाना, टहलना, ग्रहण करना, लेना, चमकना। (अषन्, अषकः, अषाणः, अषमाणः - प्रकाशके। अट्, आट्, अषम्, अषणीयम्, अष्यम्, आष्यम्, अषम्, आषम्, अषि, आषि, अषु, आषु, अषा, आषा - प्रकाशने)।

अष्ट (संख्या) = आठ (08)।

अष्टचत्वारिंशत् (संख्या) = अड़तालीस (48)।

अष्टदश (संख्या) = अठारह (18)।

अष्टनवति (संख्या) = अट्ठानवे (98)।

अष्टपञ्चाशत् (संख्या) = अट्ठावन (58)।

अष्टशीति (संख्या) = अट्ठासी (88)।

अष्टषष्टिः (संख्या) = अड़सठ (68)।

अष्टसप्तति (संख्या) = अठहत्तर (78)।

अष्टात्रिंशत् (संख्या) = अड़तीस (38)।

अष्टाविंशतिः (संख्या) = अट्ठाईस (28)।

अस् (अस्ति) = भुवि, सत्तायाम्। होना, रहना। (असन्, असकः - भविता। अः, अस्तिः, अस्तम्, अस्तव्यम्, अस्यम्, असनीयम् - अस्तित्वे)।

अस् (अस्यति) = क्षेपणे। फेंकना, बिखेरना, उड़ाना। अनु - नीचे बैठना। अप - छोड़ना, त्यागना, वर्जित करना। नि - रखना, स्थापित करना। निर् - निकाल देना, बहिष्कृत करना। पर्युप (परि-उप) - सभी ओर घेर कर बैठना, उपासना करना। प्र - फेंकना, बिखेरना, उड़ाना, खण्डन करना, स्वीकार नहीं करना, मान्य नहीं करना। वि - विभाग करना। व्या - फैलाना, विस्तृत करना, क्रम से लगाना, अनुक्रम से रखना। सन्नि (सम्-नि) - संन्यास धारण करना, प्रपञ्च छोड़ना, विरक्त होना। सम् - एकत्र करना, मिलाना।

अस् (असति, असते) = प्रकाशे, आदाने, गतौ च। जाना, लेना, चमकाना। (असन्, असकः, असानः, असमानः - प्रकाशकः, ग्रहीता, चलिता। असुः, असिः, अस्तिः, असुरः, असुरम् - प्रकाशकः, ग्रहीता, चलिता। असुः, आसनम्, आसन्, आसुरम्, अः - प्रकाशे)।

अंस् (अंसयति, अंसयते) = समाधाते, सहभावे। विभाग करना, बाँटना, साथ होना।

असकृत् (अव्यय) = कई बार।

असम्प्रति (अव्यय) = अनुचित।

असाम्प्रतम् (अव्यय) = अनुचित।

असु - असू (असूयति, असूयते) = उपतापे। रोगी होना।

असौ (सर्वनाम) = यह, इस ने। (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग)

अस्त् (अस्तयति) = अस्ते, कान्तिहीने, संघाते। अस्त होना, कान्तिहीन होना, ग्रसित होना, नष्ट होना। (अस्तयति - नाशयति। अस्तम् - निकृष्टम्)।

अस्थाने (अव्यय) = अनुपयुक्त, अनवसर।

अस्मत् (सर्वनाम) = हम सब से। (त्रिलिंग)।

अस्मद् (सर्वनाम) = मैं (त्रिलिंग)।

अस्मभ्यम् (सर्वनाम) = हमारे लिए, हम सब के लिए। (त्रिलिंग)।

अस्माकम् (सर्वनाम) = हमारा, हम सब का। (त्रिलिंग)।

अस्मात् (सर्वनाम) = इससे। (त्रिलिंग)।

अस्मात् (सर्वनाम) = इस से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अस्मान् (सर्वनाम) = हमको। (त्रिलिंग)।

अस्मान् (सर्वनाम) = हम सब को। (त्रिलिंग)।

अस्माभिः (सर्वनाम) = हमसे, हमारे द्वारा, हम सब द्वारा। (त्रिलिंग)।।

अस्मासु (सर्वनाम) = हममें, हम सब में। (त्रिलिंग)।

अस्मिन् (सर्वनाम) = इस में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अस्मे (सर्वनाम) = हमारे लिए, मुझमें। (त्रिलिंग)।

अस्मै (सर्वनाम) = इस के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अस्य (सर्वनाम) = इसका। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

अस्याः (सर्वनाम) = इससे, इसका (स्त्रीलिंग)।

अस्याम् (सर्वनाम) = इस में। (स्त्रीलिंग)।

अस्यै (सर्वनाम) = इस के लिए। (स्त्रीलिंग)।

अह्-अह्नु (अह्नोति) = व्याप्तौ, समर्पणे, दाने। फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, व्याप्त होना, विस्तार करना, अर्पण करना, समर्पण करना,

देना।

अह् (अहति) = हिंसागत्योः। जाना, हिंसा करना।(अहति - नाशयति। अहस्, अहिः - गतिकारः, हिंसकः)।

अंह् (अंहयति, अंहयते) = भासार्थः, वक्रगतौ, कुटिलगत्याम्, कलुषे, मथने। प्रकाशित होना, चमकना, कुटिल गति करना, मथना। (अंहते - कुटिलं गच्छति। अंहकः, अंहमानः, अंहिः, अंहुः, अंहनम्, अंहस्, अंहनीयम् - कुटिलगत्याम्, पापम् वा)।

अहम् (सर्वनाम) = मैं, मैंने। (त्रिलिंग)।

अहह (अव्यय) = खेद या विस्मयसूचक।

अंहाः (अव्यय) = सम्बोधन, विस्मयसूचक।

अह्नु-अह् (अह्नोति) = व्याप्तौ, समर्पणे, दाने। फैलना, विस्तृत होना, व्यापना, व्याप्त होना, विस्तार करना, अर्पण करना, समर्पण करना, देना।

(आ)

आ (उपसर्ग) = समन्तात्, पर्यन्त, सम्पूर्ण रूप से, पूरी तरह, आगम।

आः (अव्यय) = पीड़ा या क्रोध सूचक।

आ-क्रन्द (आ-क्रन्दयति, आ-क्रन्दयते) = निरन्तरं भुवि, सातत्ये, क्रन्दने। निरन्तर होना, बुलाना, पुकारना।(आ-क्रन्दयति - निरन्तरं भवति। आ-क्रन्दः - नैरन्तर्येण भविता। आक्रन्दनम् - नैरन्तर्येण भवनम्)।

आञ्छ (आञ्छति) = आयामे, पाद-प्रसारणे। पैर फैलाना, बढ़ाना, दीर्घ करना, लम्बा करना। (आञ्छति - पादौ अग्रे प्रसारयति। आञ्छा - पाद-प्रसारणम्)।

आत् (वैदिक उपसर्ग) = समन्तात्, सम्यक्, सम्पूर्ण।

आत् (अव्यय) = भी, अथ, अब, इसके अनन्तर।

आनु (आनुते) = दुःख से रोना।

आनुषक् = निरन्तर, अविछिन्न (अव्यय)।

आन्दोल (आन्दोलति, आन्दोलयति, आन्दोलयते) = आन्दोलने, गतिचातुर्ये, गतिप्रावीण्ये, उत्क्षेपे। झुलाना, हिलाना, लटकना, झूलना। (आन्दोलति - लम्बते। आन्दोलम् - शिविका (पालकी)।

आप् (आपयति) = लम्भने, अवलम्बने, प्रापणे। प्राप्त होना, पाना, अवलम्ब होना, सहारा होना। (आपन्, आपकः - अवलम्बिनि। आपनम्, आपनीयम् - अवलम्बने। अभिवि - सभी ओर से व्यापना। अव - पाना। परि - सभी ओर से व्यापना। परिसम् - समाप्त करना, पूर्ण करंना)।

आप् - आप्नु (आप्नोति, आप्नुते) = व्याप्तौ। व्यापना, जाना। अभिवि - सभी ओर से व्यापना। अव - प्राप्त होना, मिलना, पाना। उपसम् - समीप प्राप्त होना, आना, ग्रन्थादिक की समाप्ति करना। परि - तृप्ति करना, पूर्ति करना। परिवि - सभी ओर से व्यापना। प्र - प्राप्त होना, पाना। वि - व्यापना। संवि - अच्छी तरह व्यापना।

आप्नु - आप् (आप्नोति, आप्नुते) = ग़तौ, व्याप्तौ। जाना, व्याप्त होना। अभिवि - सभी ओर से व्यापना। अव - प्राप्त होना, मिलना, पाना। उपसम् - समीप प्राप्त होना, समीप आना, ग्रन्थादिक की समाप्ति करना। परि - तृप्ति करना, पूर्ति करना। परिवि - सभी ओर से व्यापना। प्र - प्राप्त होना, पाना। वि - व्यापना। संवि - अच्छी तरह व्यापना।

आप्यायी (आप्यायते) = क्षुधिते। भूँख लगना, भूँखा होना।(आप्यायते - क्षुधितो भवति। आप्यायकः आप्यायमानः - क्षुधिते)।

आभिः (सर्वनाम) = इनके द्वारा, इनके साथ। (स्त्रीलिंग)।

आभ्यः (सर्वनाम) = इन सब के लिए, इन सब से। (स्त्रीलिंग)।

आभ्याम् (सर्वनाम) = इन दोनों द्वारा, इन दोनों के लिए, इन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

आय (ऐ) (आयते) = शब्दे, ध्वनौ, शासने। शब्द करना, शासन करना। (आयते - शास्ति। आयकः, आयमानः - राजा। ऐ, आयनम्, आयनीयम् - शासने)।

आयम् (सर्वनाम) = (आ + अयम्), यह।

आरात् (अव्यय) = दूर, समीप।

आव (औ) (आवते) = अपशब्दे, ध्वनौ। ध्वनि करना, गाली देना। (आवते - गालिम् ददाति। आवकः, आवमानः - गालिप्रदातरि। औ, अवनम्, औवनीयम् - गालिप्रदानम्)।

आवयोः (सर्वनाम) = हम दोनों का, हम दोनों में। (त्रिलिंग)।

आवाभ्याम् (सर्वनाम) = हम दोनों द्वारा, हम दोनों के लिए, हम दोनों से। (त्रिलिंग)।

आवाम् (सर्वनाम) = हम दोनों ने, हम दोनों को। (त्रिलिंग)।

आविः (उपसर्ग) **=** सम्मुख, प्रत्यक्ष, अनावृत।

आस् (आस्ते) = उपवेशने, विद्यमाने, जीवने। होना, बैठना, उपस्थित होना, विद्यमान होना, जीवन होना। अधि - वास करना, रहना, ऊपर बैठना, वस्तुसादृश्य के कारण इच्छित वस्तु को छोड़ के दूसरी वस्तु को लेना। अभि - अध्ययन करना, अभ्यास करना, सीखना। उत् - छोड़ना, त्यागना, उपेक्षा करना, हिलाना, कम्पित करना। उप - उपासना करना, भजन करना। निर् - निकाल देना। (आसीनः, आसकः, आस्ता, आस्तवान् - उपवेशके। आस्तिः, आस्तम्, आसनम्, आसनीयम्, आस्तव्यम् - आसने)।

आ-सद् (धातु) (आसादयति, आसादयते, आसदति, आसादते) = आगमने, गतौ। आना, जाना, चढ़ाई करना। (आसादयति - आगच्छति। आसादनम् - आगमनम्)।

आसाम् (सर्वनाम) = इन सब का। (स्त्रीलिंग)।

आसु (सर्वनाम) = इन सब में। (स्त्रीलिंग)।

आस्मिन् (आ + अस्मिन्) (सर्वनाम) = इसमें।

आहोस्वित (अव्यय) = अथवा।

(इ)

इः (वैदिक उपसर्ग) **=** निः, निश्चित, नितराम्, निरन्तर, बाहर।

इ (अयति, एति) = गतौ, गमने, प्रेरणे। जाना, जानना, पाना, प्रेरित करना। अति - अतिक्रमण करना, समय बिताना, अधिक श्रेष्ठ होना। अनु - पीछे जाना, अनुसरण करना, अनुकरण करना, दूसरे के समान कार्य करना। अप - निकल जाना। अभि - निकल जाना, सामने आना, सर्वत्र जाना। अभ्युत् - अभ्युदय होना, प्रसिद्ध होना। अभ्युप - अंगीकार करना, स्वीकार करना, संमुख आना, सामने आना। अव - जानना, समझना। उत् - उदय होना, उगना, ऊपर जाना। उप — सहायता करना, समीप आना या जाना, लेना। निर् - निकल जाना। परि - सभी ओर घुमाना, प्रदक्षिणा करना। परा - पीछे लौटना। सम् - संगत होना, मिलना। समुप - सामने आना। वि - व्यय करना, खर्च करना, विध्वंस करना। प्रति - स्पष्ट होना, विश्वास रखना। (अयनम् - मार्गः। इः, यन्, यन्ता, अय्यः, आय्यः, अयकः, आयकः - गन्तरि। उपेतः, समेतः, परेतः, अपेतः - संगच्छमानः, गतिशीलः, गतः। न्यायः (नि-अयः) - नीतिः। नैयायिकः - न्यायस्य अध्येता। इति - समाप्तिः। इत्, इतिः, इतम्, इतव्यम्, - चलने। आयः - आगमने)।

इक्ष् (इक्षते) = आस्वादने। स्वाद लेना। (इक्षकः, इक्षमाणः - स्वदितरि। इक्षुः, इक्षणम्, इक्षणीयम् - स्वदने)।

इख् (एखति) = गतौ। जाना।

इङ्ख् (इङ्खति) = गतौ, प्रवेशने। जाना, प्रवेश करना।

इङ्ग् (इङ्गति) = गतौ, अल्पीभावे। जाना, अल्प होना। (इङ्गति - अल्पी भवति। इङ्गः - गच्छमानः, गतिशीलः)।

इङ्घ् (इङ्घति) = पालने, पोषणे, रक्षणे। पालन-पोषण करना, रक्षा करना।

इच्छ् (इच्छति) = कामे, अभिलाषायाम्, इच्छायाम्। चाहना, इच्छा करना। अनु - ढूँढ़ना। प्रति - ग्रहण करना, लेना, प्रतिवचन देना। (इच्छन्, इच्छकः, इच्छा - अभिलाषायाम्)।

इज् (इजते) = गतौ, ज्ञाने, पूजायाम्। पूजना, जाना, जानना। (इजते - जानाति। इजकः, इजक्, इजमानः - विज्ञः, निपुणे वा। इजिः, इजनम्, इजनीयम्, इज्यम्, इज्या - पूजायाम्)।

इट्-एट् (एटति) = गतौ, गमने, प्रक्षेपणे, ताडने। जाना, फेकना, ताडना करना। (एटति - प्रक्षिपति, ताडयति। एटुः - प्रक्षेपणम्)।

इड् (एडति) = धारणे, छेदने, घर्षणे। धारण करना, काटना, चीरना, टुकड़े करना, घिसना। (एडति - घर्षति, छिद्रं करोति)।

इण् (एणति) = शब्दे। बोलना। (इणः - ध्वनिः, शब्दः, प्रतिध्वनिः वा)।

इण्ड् (इण्डति) = हिंसायाम्, गमने, बन्धने। हिंसा करना, गति करना, बन्धन करना, बन्धन होना। (इण्डति - बन्धयति। इण्डा - बन्धनः, माला वा)।

इत् (अव्यय) = एव, ही।

इतः (अव्यय) = यहां से।

इतस्ततः (अव्यय) = इधर – उधर।

इति (अव्यय) = यह, इस प्रकार, ऐसा।

इतिह (अव्यय) = इतिहास-वाचक।

इत्थम् (अव्यय) = इस प्रकार।

इदम् (सर्वनाम) = यह (उभयलिंग)

इदा (अव्यय) = आज, इस समय।

इदानीम् (अव्यय) = इस समय।

इन्-एन् (एनति) = प्रकाशने, सम्भक्तौ, मिश्रणे। प्रकाशित करना, मिलाना, अलग करना (एनति - प्रकाशते। इनः - प्रकाशः, प्रकाशकः, सूर्यः वा)।

इन्द् (इन्दति) = परमैश्वर्ये, पराक्रमे। परम ऐश्वर्य होना अमानवीय पराक्रम होना। (इन्द्रः - परमैश्वर्यवान्)

इन्ध् (इन्धे) = दीप्तौ। प्रदीप्त होना, प्रकाशित होना, चमकना।

इन्व -इव् (इन्वति) = व्याप्तौ प्रीणने च। व्यापना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना। (इव्वः - व्यापकः। इव्वनम्, इव्वि, इव्वु - व्याप्तौ)।

इमम् (सर्वनाम) = इस को। (पुल्लिंग)।

इमाः (सर्वनाम) = इन सब ने, इन सब को। (स्त्रीलिंग)।

इमान् (सर्वनाम) = इन सब को। (पुल्लिंग)।

इमानि (सर्वनाम) = इन सब ने, इन सब को। (नपुंसकलिंग)।

इमाम् (सर्वनाम) = इसको। (स्त्रीलिंग)।

इमे (सर्वनाम) = ये दोनों, इन दोनो ने, इन दोनों को। (नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

इमे (सर्वनाम) = इन सब ने। (पुल्लिंग)।

इमौ (सर्वनाम) = इन दोनों ने, इन दोनों को। (पुल्लिंग)।

इम्भ् (इम्भयते) = संघाते। एकत्र करना।

इयम् (सर्वनाम) = यह, इस ने। (स्त्रीलिंग)।

इर् (इर्यति, इर्यते) = ईर्ष्यार्थः। ईर्ष्या करना, मत्सर करना।

इरज् (इरज्यति) = ईर्ष्यार्थः। ईर्ष्या करना, मत्सर करना।

इरण् (एरणति) = शब्दे। शब्द करना।

इरस् (इरस्यति) = ईर्ष्यार्थः। ईर्ष्या करना, मत्सर करना।

इर्य - ऋ (इर्यति) = गतौ, चलने सत्ये च। जाना, फैलाना। (ऋ, ऋतम्, ऋतिः - चलने सत्ये च)।

इल् (इलति) = स्वप्नक्षेपणयोः, गतौ, धारणे, सहने च। सहना, समर्थ होना, नींद लेना, जाना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, बिखेरना। (इलति – सहते। इला - सहनशीला, सहमाना, भूमिः वा। इलन् - गन्ता)।

इला (इलायति) = विलासे। विलास करना, खेलना।

इल्ल् (इल्लति) = गतौ, संयोजने। जाना, जोड़ना।

इव (अव्यय) = सदृश, की तरह, के समान, सम्भवतः।

इव् -इन्व (इन्वति) = व्याप्तौ प्रीणने च। व्यापना, तृप्त होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना। (इव्वः - व्यापकः। इव्वनम्, इव्वि, इव्वु - व्याप्तौ)।

इवस् (इवस्यति) = सन्तापे सेवने च। सन्ताप होना, सेवा करना।

इष् (इषति) = उञ्छे, इच्छायां, अभिलाषायाम्, परिचालने। चबाना, बीनना, एक-एक दाना चुनना, छानना, इच्छा करना, चाहना। अनु - ढूँढ़ना। प्रति - ग्रहण करना, लेना, प्रतिवचन देना। (इषम् - इष्टार्थम्। इष्टम् - इच्छा। इट्, एषः - अभिलाषुके। एष्टव्यम् - अभिलषितव्यम्। एषणम्, एषणीयम्, इष्टम्, इष्टिः - अभिलाषायाम्)।

इष् (इष्यति) = गतौ। जाना। अनु - ढूँढ़ना, खोजना। (इष्यन्, इष्टः, इष्टवान्, एष्टा, एषकः - गन्तरि। इष्यम्, एषणम्, एष्टव्यम्, इष्टम्, इष्टिः, एषः, एष्यः, एषणीयम् - गमने)।

इष् (इष्णाति) = आभीक्ष्णये, निरन्तरं दर्शने। निरन्तर देखना। (इष्णाति - निरन्तरं पश्यति। इष्टः, इष्टवान्, एषकः - निरन्तरं द्रष्टा। इष्टम्, इष्टिः, एषणम्, एषणीयम् - नैरन्तर्येण दर्शने)।

इषुध् (इषुध्यति) = शर-धारणे। बाण धारण करना, तरकस बांधना।

इह (अव्यय) = यहाँ, इसमें।

(ई)

ई (वैदिक उपसर्ग) = सदृश, की तरह, के समान, सम्भवतः।

ई (अयति, ईयते, एति) = गति-व्याप्ति-प्रजनन-कान्त्यसन-खादनेषु। जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना। (ईनः, अयानः - गमकः। ईः, ईतिः, अयनम्, अयनीयम् - गत्याम्)।

ईक्ष (ईक्षते) = दर्शने। देखना, अवलोकन करना। अप - अपेक्षा करना, प्रतीक्षा करना, चाहना। अभि - टकटकी बांधना। अव - देखना, निहारना। उत् - ऊपर देखना। उप - उपेक्षा करना, छोड़ना, त्यागना। निर् - देखना, निरीक्षण करना, ताकना। परि - परीक्षा करना, शोधना। प्र - देखना, निहारना, स्वीकार करना। वि - देखना, ताकना। प्रति - मार्ग देखना, प्रतीक्षा करना, आदर करना, मानना। प्रत्युत् - दूसरे के देखने पर उसकी ओर निहारना। सम् - समीक्षा करना।

ईख् (ईखति) = गतौ। जाना।

ईङ्ख (ईङ्खति) = गतौ। जाना।

ईज् (ईजते) = गति-कुत्सनयोः। जाना, निन्दा करना। (ईक्, ईजकः, ईजमानः - गन्तरि। ईजिः, ईजुः, ईजनम्, ईजनीयम्, ईज्यम् - चलने)।

ईञ्ज (ईञ्जति, ईञ्जते) = गति-कुत्सनयोः। जाना, दोष लगाना, निन्दा करना।

ईट् (ईटति, ईटते) = गतौ, गमने। जाना, चलना। (ईटिः - गतिः)।

ईट् (ईट्टे) = स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना।

ईड् (ईट्टे, ईड्ते, ईडते, ईडति, ईडते, ईडयति, ईडयते) = स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना। (ईडानः, ईडकः - प्रशंसकः। ईडा, ईडनम्, ईडनीयम्, ईड्यम्, ऐड्यम् - प्रशंसायाम्)।

ईन्त (ईन्तति) = बन्धने। बांधना, जकड़ना।

ईम् = इसको **(सर्वनाम)।**

ईर् (ईर्ते) = गतौ, कम्पने च। जाना, कांपना, थर-थराना, हिलाना। (ईरः, ईराणः - गन्ता, कम्पिता च। ईरणम्, ईर्यम्, ऐरम् - चलनम्। ईरी - कम्पवान्। ईरणी - कम्पवती)।

ईर् (ईरयति, ईरयते) = गतौ, क्षेपे, प्रेरणायाम्। जाना, हांकना, प्रेरणा करना, फेंकना। उत् - कहना, बोलना। प्र - प्रेरणा करना, भेजना। सम् - वायु के समान जाना। (ईरः - क्षेपकः)।

ईर्क्ष्य (ईर्क्ष्यति) = ईर्ष्यार्थः, क्रोधेन दन्तपेषणे। ईर्ष्या करना, मत्सर करना, क्रोध में दांत पीसना।

ईर्ष (ईर्षते) = ईर्ष्याकर्मणि, गतौ हिंसायां दाने च। ईर्ष्या करना, जाना, हिंसा करना, दान करना।

ईर्ष्य (ईर्ष्यति) = ईर्ष्याकर्मणि, ईर्ष्यार्थः। ईर्ष्या करना।

ईश् (ईशति, ईशते, ईष्टे) = ऐश्वर्ये, शासने। ऐश्वर्य होना, शासन होना, अधिकार होना। (ईट्, ईशः, ईशिता, ईशानः, ईश्वरः - शासके। ईष्टिः, ईष्टम्, ईशितव्यम्, ईश्यम्, ऐश्यम्, ऐश्वर्यम् - शासने)।

ईष् (इष्टे) = = ऐश्वर्ये, शासने। ऐश्वर्य होना, शासन होना, अधिकार होना।

ईष् (ईषते) = गति-हिंसा-दर्शन-दानेषु। जाना, हिंसा करना, देखना, अवलोकन करना, दान करना।

ईष् (ईषति) = उञ्छे, चर्बणे, रुचौ। चबाना, बीनना, एक-एक दाना उठाना। (ईषति - चर्वयति। ईषणम् - रुचिः)।

ईषत् (अव्यय) = अत्यल्प, कुछ, थोड़ा।

ईह् (ईहते) = इच्छायाम्, उद्योगे, चेष्टायाम्। प्रयत्न करना, उद्योग करना। सम् - इच्छा करना, चाहना। (ईहकः, ईहमानः - इच्छुकः। ईट्, ईहिः, ईहुः, ईहनम्, ईहनीयम्, ईहा - इच्छायाम्)।

(ऋ)

ऋ - अर् (अरति) = गति-प्रापणयोः, गतौ, चलने सत्ये च। जाना, फैलाना। (ऋ, ऋतम्, ऋतिः - चलने सत्ये च। अरत्, अरकः, अर्ता, ऋतः, ऋतवान्, अरः, आरः, अरकः, अर्यः, आर्यः - गन्तरि। अरण्यम्, आरणम्, अर्तव्यम्, अरणीयम्, ऋतिः, ऋतम्, ऋत्, ऋतम् - चलने)।

ऋ - अर् (अरते) = गति-प्रापणयोः, शब्दे, ध्वनौ, हिंसने, महत्त्व-प्रदर्शने। शब्द करना, हिंसा करना, महत्व दिखाना। (अरकः, अरमाणः - महत्त्व-प्रदर्शयिता। ऋः, अरिः, अरणम्, अरणीयम्, अर्यम्, आर्यम् - महत्त्व-प्रदर्शने। अरकः, अरमाणः - हिंसकः। ऋः, अरिः, अरम्, अरणम्, अरणीयम्, अर्यम्, आर्यम् - हिंसने। अर्तः, अर्ता, आरकः, आरः - गन्तरि। अरिः - हिंसकः, शत्रुः वा)।

ऋ - इर्य (इर्यति) = गति-प्रापणयोः, गतौ, चलने सत्ये च। जाना, फैलाना। (ऋ, ऋतम्, ऋतिः - चलने सत्ये च)।

ऋ–ऋच्छ (ऋच्छति) = गति-प्रापणयोः, गत्याम्, इन्द्रिये, प्रलये, मूर्तौ, भावे च। जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना। कठिन होना, दृढ़ होना, इन्द्रिय होना। (ऋच्छा - सेना। ऋच्छन्, ऋच्छन्, ऋच्छितः, ऋच्छितवान् - गन्तरि। ऋच्छनम्, ऋच्छनीयम्, ऋच्छितव्यम् - गत्याम्)।

ऋ - ऋण (ऋणाति) = गति-प्रापणयोः, गतौ। जाना। (ऋणाति - गच्छति। ऋतः, ऋतवान् - गन्तरि। ऋतम्, ऋतिः - गमने। निर्ऋतिः - दिक्पालकः। ऋणम् - उत्तर्णाद् गृहीतं धनम्)।

ऋ - ऋणु (ऋणोति, इयर्ति) = गति-प्रापणयोः, गतौ, हिंसायाम्। चलना, हिंसा करना, मार डालना। (अरत्, अरकः, अर्ता, ऋतः, ऋतवान्, अरः, आरः, अरकः, अर्यः, आर्यः - गन्तरि। अरण्यम्, आरणम्, अर्तव्यम्,

अरणीयम्, ऋतिः, ऋतम्, ऋत् - चलने)।

ऋक्ष (ऋक्षते) = विकर्तने। काटना। (ऋक्षते - कृन्तति, हिनस्ति। ऋक्षः, ऋक्षकः, ऋक्षमाणः - विकर्तनशीले)।

ऋक्ष (ऋक्षु) (ऋक्ष्णोति) = हिंसने प्रकाशे च। प्रकाश करना, मार डालना, दुःख देना।

ऋक्षि (ऋक्षिणोति) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना।

ऋच् (ऋचति, अर्चति) = प्रशंसायाम्, स्तुतौ, दीप्तौ, आच्छादने। प्रशंसा करना, स्तुति करना, आच्छादित करना, ढकना, चमकना। (ऋक्, ऋचा - स्तुतिः। अर्चन्, अर्चकः, ऋक्तः, ऋक्तवान् - स्तोतरि)।

ऋच्छ (ऋच्छति) = गति-प्रापणयोः, गत्याम्, इन्द्रिये, प्रलये, मूर्तौ, भावे च। जाना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना, पहुँचाना, कठिन होना, दृढ़ होना, इन्द्रिय होना। (ऋच्छा - सेना। ऋच्छन्, ऋच्छन्, ऋच्छितः, ऋच्छितवान् - गन्तरि। ऋच्छनम्, ऋच्छनीयम्, ऋच्छितव्यम् - गत्याम्)।

ऋज् (ऋजति, अर्जते) = गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु, सत्ये, ऋजुत्वे च। अर्जन करना, जाना, खड़ा रहना, स्थिर होना, बलिष्ठ होना, सामर्थ्यवान् होना, सम्पादन करना, प्राप्त करना, मिलाना। (ऋजति, अर्जते - समाहरति। ऋजकः, ऋजमानः - सत्यवति। ऋजः, ऋजि, अर्जनम्, अर्जनीयम्, आर्जनम्, आर्ज्यम्, अर्ज्यम् - ऋजुत्वे)।

ऋञ्ज (ऋञ्जते) = अलंकरणे, प्रसाधने च, पाके, पचने, भर्जने। सेकना, भूंजना, अलंकरण करना, प्रसाधन करना, पकाना।। (ऋञ्जकः, ऋञ्चमानः - पाचकः, भर्जकः। ऋञ्जनम्, ऋञ्जम्, ऋञ्जनीयम्, ऋञ्जिः, ऋञ्चः - भर्जने)।

ऋणु (ऋणोति, ऋणुते, अर्णोति, अर्णुते) = गतौ, दुर्गतौ। जाना, गमन करना, दुर्गमन करना, कुगति करना। (ऋणोति, ऋणुते - दुर्गच्छति। ऋणम् - उत्तर्णाद् गृहीतं धनम्)।

ऋतम् (अव्यय) = सार्वभौम नियम, सत्य।

ऋती (ऋतीयते) = निन्दने, दयायाम्, घृणायाम्। निन्दा करना, दोष लगाना, कृपा करना, दया करना।

ऋते (अव्यय) = विना।

ऋध् (ऋध्यति, ऋध्नोति) = वृद्धौ, समृद्धौ, प्रसन्नतायाम्। बढ़ाना, वृद्धि करना, वृद्धि होना, श्रीमान् होना, आनन्दित करना, पूरा करना।

ऋफ् (ऋफति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायाम् हिंसने प्रवेशने च। मार डालना, पीड़ा देना, निन्दा करना, प्रवेश करना। (ऋफति - प्रवेशति। अर्फन्, अर्फकः - प्रवेशके। अर्फणम्, अर्फणीयम् - प्रवेशने)।

ऋभ् (ऋभति, ऋभते) = शब्द करना, लिखना, चिह्न करना, जाना, जानना, पाना।

ऋभुक्ष (ऋभुक्षते) = घातने, मारणे। मार डालना। (ऋभुक्षणम्, ऋभुक्षणीयम् - मारणे)।

ऋम्फ (ऋम्फति) = खटखटाकरणे। (ऋम्फन्, ऋम्फकः - खटखटाकारके। ऋम्फणम्, ऋम्फणीयम् - खटखटाकरणे। ऋम्फा - पंकः (दलदल)।

ऋष् (ऋषति, अर्षति) = गतौ, सूक्ष्मगतौ, अन्तर्गमने, अन्तर्भूतगमने, अन्तर्दर्शने, दर्शने च। जाना, जानना, पाना, अन्तर्दृष्टि होना, सूक्ष्मता से भीतर देखना, मारना, ढकेलना, ग्रहण करना, लेना, बहना। (ऋषिः - मन्त्रद्रष्टा। ऋष्टः, ऋष्टवान् - गमकः। अर्षणम्, अर्षणीयम् - ज्ञानम्। आर्षम्, आर्षेयम्, ऋषित्वम् - अन्तर्दर्शने, सूक्ष्मगतौ च)।

(ॠ)

ॠ (ऋणाति) = गतौ। जाना, चलना, जानना, पाना।

(ऌ)

ऌ (अलते) = समापने, पर्याप्तभुवि, सहने, शब्दे, ध्वनौ। समाप्त होना, पर्याप्त होना। (अलकः, अलमानः - समापयिता। लृः, आलिः, अलनम्, अलनीयम्, अल्यम्, आल्यम् - समापने। अलम् - पर्याप्तम्। अलकः, अलमानः - राजा, पर्वतः। लृः, अलनम्, अलनीयम् - सहनम्)।

(उ)

उ (उपसर्ग-निपात) = ही।

उ = उत्तम, उत्कृष्ट (उपसर्ग)।

उ–अव् (अवति) = शोषणे। सुखाना, शोषण करना। (अवति - शुष्यति। अवकः - शुष्यमाणः। उः - शुष्कः, लघुः वा। उत - समुच्चये)।

उ–अव (अवते) = पालने, रक्षणे, शब्दे च। पालन करना, रक्षा करना, शब्द करना। (अवते - पालयति। अवकः, अवमान्ः, उः - पालकः। अव्यम्, आव्यम्, अवनम्, अवनीयम्, अविः - रक्षणम्)।

उक्-उच् (वद्) (वदति, वदते, वादयति, वादयते) = व्यक्तायाम् वाचि, व्यक्तवाक्ये, सन्देशवाचने। कहना, स्पष्ट कहना, समझाना। (उक्तिः, उक्तम् - कथने)।

उक्ष (उक्षति) = वपने, प्रोक्षणे, दृढ़े, सेचने, घर्षणे। निर्मल करना, स्वच्छ करना, गीला करना, प्रोक्षण करना, सींचना, भेजना, दृढ़ होना, दृढ़ करना। प्र - सींचना, जल सिञ्चन से संस्कृत करना, मार डालना। (उक्षति - वपति। उक्षा - वप्ता। उक्षितम् - उप्तम्। उक्षणम् - बीजम्। उक्षिता, उक्षाणः, उक्षकः, उक्षुः, ऊक्षु - वप्तृषु)।

उक्ष (उक्षते) = सहने, शक्तौ, सामर्थ्ये। सहन करना। (उक्षः - वृषभः। उक्षणम्, उक्षकीयम् - सहने)।

उख् (ओखति) = गतौ, ज्वलने। जाना, जलना। (ओखति - ज्वलति। उखा - अङ्गारधानी)।

उग-उग्र (**उग्र**ति, **उग्र**ते) = उग्रतायाम्। उग्र होना, अधृष्य होना, अदम्य होना।

उङ्ख (उङ्खति) = गतौ, अलंकरणे, शोषणे। जाना, आना, अलंकृत करना, संवारना, शुष्क होना, सूखना, म्लान होना, मुर्झाना।

उच्-उक् (वद्) (वदति, वदते, वादयति, वादयते) = व्यक्तायां वाचि, व्यक्तवाक्ये, सन्देशवाचने, सम्बन्धे। कहना, स्पष्ट कहना, समझाना। (ऊचे- वदति। उक्तिः, उक्तम् - कथनम्। (उक्, ओचन्, ओचकः, उक्तम्, उक्तवान्, ओक्ता - सम्बन्धके, सम्बन्धिनि। उक्तम्, उक्तिः, ओचनम्, ओचनीयम् - सम्बन्धे)।

उच् (उच्यति) = समवाये, सम्बन्धे। एकत्र होना।

उच्चैः (अव्यय) = ऊँचा।

उच्छ (उच्छति, वि - व्युच्छति) = विपाशे, बन्धनत्रोटने, त्यागे, खण्डने। पूरा करना, समाप्त करना, छोड़ना, बाँधना। प्र - पोंछना। (उच्छा - खण्डनम्। उच्छन्, उच्छितः, उच्छितवान् - त्यागी। उच्छनम्, उच्छनीयम्, उच्छितव्यम्, उच्छितिः, उच्छितम् - त्यजनन्)।

उज्ज (उज्जति) = आर्जवे। सरलता से ब्यवहार करना।

उज्झ (उज्झति) = उत्सर्गे, सामान्ये, परित्यागे। छोड़ना, त्यागना। प्र - छूट जाना, मुक्त होना। (उज्झति - सामान्यं भवति, परित्यजति। उज्झकः - सामान्यपुरुषः, त्याजकः। उज्झनम्, उज्झनीयम् - सामान्ये, परित्यागे)।

उञ्छ (उञ्छति) = कणशः आदाने, उञ्छे, चालने, कम्पने। थोड़ा-थोड़ा एकत्र करना, बीनना, उञ्छन करना, कम्पन कराना, चुनना। (उञ्छन्, उञ्छकः - कम्पयितरि। उञ्छनम्, उञ्छनीयम् - कम्पने। उञ्छः - उञ्छितः, आरण्यो धान्यविशेषः वा)।

उट् -ओट् (ओटति) = गतौ, गमने, चलने। जाना, चलना। (उटः,

उटजः - पाथेयः (मार्गसाधनम्, मार्गकुटी वा)।

उठ्-ओठ् (ओठति, ओठते) = उपघाते। मारना, ठोकना, नीचे गिराना।

उण्ड (उण्डति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्याम् च। गति करना, हिंसा करना।(उण्डति - छिनत्ति। उण्डः - हिंसकः, छेदकः, मत्कुणः वा (खटमल)। उण्डुकम् - हिंसनम्, द्यूतम् वा)।

उत् (उपसर्ग) = ऊपर, उच्च।

उत = तथ्रा, वैसे ही, उसी प्रकार, भी, ही (अव्यय)।

उत्तर (अव्यय) = उत्तर।

उत्तर = उत्तर, उत्तम, उच्चतर (सर्वनाम)।

उत्तरम् = उत्तर, उत्तम, उच्चतर (अव्यय)।

उत्तरेण (अव्यय) = उत्तर द्वारा।

उद् - उन्द् (उनत्ति, उन्दति, उन्दिष्यति) = क्लेदने, आद्रतायाम्, कष्टे च।आर्द्र होना, गीला होना, कष्ट होना।(उनत्ति - कष्टं भुङ्क्ते।उत्तः, उत्तिः - कष्टभोक्ता। उदकम् - जलम्)।

उदक् (अव्यय) = उत्तर।

उध्रस् (उध्रस्नाति, उध्रासयति, उध्रासयते) = उञ्छे, कणशः आदाने, चालने, कम्पने, एकैकशः आदाने, निर्धारणे। थोड़ा-थोड़ा एकत्र करना, बीनना, उञ्छन करना, चुनना।

उन् (ऊति) = अल्पभुवि, संभक्तौ, मिश्रणे। अल्प होना। (ऊति - अल्पी भवति। ऊनः - स्वल्पम्)।

उनत् (उनत्ति, उन्दति, उन्दिष्यति) = क्लेदने, आद्रतायाम्, कष्टे च। आर्द्र होना, गीला होना, कष्ट होना। (उनत्ति - कष्टं भुङ्क्ते। उत्तः, उत्तिः - कष्टभोक्ता। उदकम् - जलम्)।

उन्द (उनत्ति, उन्दति, उन्दिष्यति) = क्लेदने, आद्रतायाम्, कष्टे च। आर्द्र होना, गीला होना, कष्ट होना।(उनत्ति - कष्टं भुङ्क्ते। उत्तः, उत्तिः - कष्टभोक्ता। उदकम् - जलम्)।

उप्-वप् (वपति, वपते) = बीजतन्तुसन्ताने, वपने, योजने, घर्षणे, तन्तुनिर्माणे च। बीज बोना, बुनना, उत्पन्न करना, अन्नादि काटना।(वपति - क्षेत्रे धान्यम् आकिरति। वपते - योजयति। वपन्, वपमानः, वपकः, वापकः - बीजवापके। वपा, वापिः, वपनम्, उप्तव्यम्, उप्तम्, उप्तिः, वपनीयम्, वप्यम्, वाप्यम्, वापम्, वप्, वाप् - वपने, योजने, तन्तुसन्ताने)।

उप (उपसर्ग) = समीप, निकट।

उपरि (अव्यय) = ऊपर।

उपाके = समीप (अव्यय, सर्वनाम)।

उब्ज (उब्जति) = आर्जवे दमने च। सीधी रीति से चलना, सीधा ब्यवहार करना, दबाना, दमन करना। नि - अधोमुख होना। (उब्जः - ऋजुः। उब्जम्, उब्जनीयम् - आर्जवे)।

उभ् (उभति) = पूरणे, भरणे।भरना, पूर्ण करना।(उभति - पूरयति)।

उभ (सर्वनाम) = दोनो।

उभय (सर्वनाम) = दोनो।

उभयतः (सर्वनाम) = दोनों ओर।

उभा (सर्वनाम) = दोनो।

उभे (सर्वनाम) = दोनो।

उभौ (सर्वनाम) = दोनो।

उम्भ (उम्भति) = पूरणे, भरणे।भरना, पूर्ण करना।(उम्भन्, उम्भः, उम्भकः - पूरके। उम्भनम्, उम्भनीयम् - भरणे)।

उर्-ओर् (ओरति) = गतौ। जाना, चलना।

उरस् (उरस्यति) = बलार्थे। बलवान् होना।

उरु (अव्यय) = बहुत।

उर्द (उर्दते) = परिमाणे, क्रीडायाम्, आस्वादने, माने। मापना, गिनना, खेलना, स्वाद लेना। (उदः, उर्दकः, उदमानः - मापके। उर्दनं, उर्दनीयम्, उर्दः - माने, क्रीडने, आस्वादने च)।

उर्व (उर्वति) = सहने हिंसायाम् च। सहना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना। (उर्वति - सहते। उर्वी - सहनशीला, पृथिवी वा)।

उलण्ड (उलण्डयति, उलण्डयते) = उत्क्षेपणे। फेंकना, ऊपर फेंकना, उड़ाना, झोंकना।

उश् - वश् (वष्टि) = कान्तौ। इच्छा करना, चाहना।

उष् (धातु) (उषति, ओषति) = उष्णे, दाहे, रोगे, पीडायां। हिंसा करना, पीडा करना, जलना, रोग होना। (उषति - पीडयति। उषः, उषर्बुधः, उष्णः, उषणम् - दाहः, पीडा, घर्मः, अग्निः वा)।

उषध् (उषधति) = पीडानिवारणे, ज्ञाने। जानना, रोगमुक्त करना, रोग का प्रतीकार करना, चिकित्सा करना)।

उषस् (उषस्यति) = प्रभातभावे। प्रभात होना, पौ फटना।

उह्-वह-वोढ-ऊढ (वहति, वहते) = वहने, प्रापणे, धारणे। वहन करना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना। प्र - बुद्धिमान् होना (वहति, वहते - धारयति। वहन्, वहमाणः, वोढा, वहकः, वाहकः - वाही, वहनकर्ता। वहिः, वाहः, वहनम्, वहनीयम्, वह्या, वाह्यम्, ऊढम्, ऊढिः, ऊढव्यम् - वहने। प्रौढिः - बुद्धिमत्ता। प्रौढः - बुद्धिमान्। प्रौढा - बुद्धिमती)।

उह्- ओह (ओहति) = अर्दने। मार डालना, नष्ट करना, दुःख देना, सताना।

(ऊ)

ऊ (अवते) = शब्दे, ध्वनौ, विश्वसने। शब्द करना, विश्वास करना। (अवते - विश्वस्तं करोति। अवकः, अवमानः - विश्वासयिता। ऊः, अविः, अवनम्, अवनीयम् - विश्वसने)।

ऊठ् (ऊठति) = उपघाते। मारना, ठोकना, नीचे गिराना।

ऊढ्-वह्-वोढ् (वहति, वहते) = वहने, प्रापणे, धारणे। वहन करना, बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना। प्र - बुद्धिमान् होना (वहति, वहते - धारयति। वहन्, वहमाणः, वोढा, वहकः, वाहकः - वाही, वहनकर्ता। वहिः, वाहः, वहनम्, वहनीयम्, वह्या, वाह्यम्, ऊढम्, ऊढिः, ऊढव्यम् - वहने। प्रौढिः - बुद्धिमत्ता। प्रौढः - बुद्धिमान्। प्रौढा - बुद्धिमती)।

ऊन् (ऊनयति, ऊनयते) = संभक्तौ, मिश्रणे, परिहरणे, न्यूने, परिहाणे, मापने, गणनायाम्। न्यून करना, अल्प करना, घटाना, संक्षेप करना, मापना, गिनना। (ऊनति - अल्पी भवति। ऊनयति - अल्पं भवति। ऊनः - स्वल्पम्। ऊनयन् - अल्पं भावुकः)।

ऊय् (ऊयते) = तन्तुसन्ताने, तन्तुसंयोगे। सीना, बुनना। (ऊयते - सीव्यति, संयोजयति। ऊयकः, ऊयमानः - वस्त्रवायके। ऊयिः, ऊयुः, ऊय्यम्, ऊयनम्, ऊयनीयम् - संयोजने)।

ऊर्ज (ऊर्जति, ऊर्जते, ऊर्जयति, ऊर्जयते) = गतौ, सामर्थ्ये, बलप्राणनयोः, बले चैतन्ये च। जाना, सामर्थ्य होना, शक्तिमान होना, पराक्रमी होना, जीवन होना। (ऊर्जयति - बलयति, बलयुक्तं करोति। ऊर्जितः, अर्जितवान्, ऊर्जस्वी - बलवति। ऊर्क्, ऊर्जितम्, ऊर्जन्, ऊर्जनम्, ऊर्जनीयम्, ऊर्जस् - शक्तौ। ऊर्जिः, ऊर्जुः, ऊर्जम्, ऊर्जनम्, ऊर्जतम्, ऊर्जनीयम्, ऊर्ज्यम् - सामर्थ्ये)।

ऊर्ण (ऊर्णोति, ऊर्णुते, ऊर्णीते) = वयने, आच्छादने। बुनना, आच्छादन करना, ढकना। (ऊर्णः, ऊर्णन्, ऊर्णकः, ऊर्णिता, ऊर्णतवान्, ऊर्णानः -

तन्तुवायके। ऊर्णनाभिः - तन्तुवायः, कीटविशेषः (मकड़ी)। ऊर्णनम्, ऊर्णनीयम्, ऊर्णितव्यम्, ऊर्णतिः, ऊर्णितम् - वयने)।

ऊर्द (ऊर्दते) = माने, क्रीडायाम्। मापना, गिनना, क्रीड़ा करना, खेलना।

ऊर्ध्वम् (अव्यय) = उच्च, ऊपर।

ऊष् (ऊषति) = दाहे, क्वथने, रुजायाम्, रोगे, पीडायाम्। जलाना, ताप देना, रोगी होना, एकत्र होना। (ऊषति - वाष्पयति, उष्णम् करोति। ऊष्मा - तापम्, वाष्पम्। ऊषरा - तप्तः, मरु-प्रदेशः वा। ऊषः - तापे, क्वथने। ऊषरः, ऊषरा - उष्णप्रदेशः। ऊषणम् - वाष्पम्। उट्, उषिः, उष्यः, उष्टिः, ऊषत्, ऊषणम्, ऊषायाम् - तापे, वाष्पे)।

ऊह् (ऊहते) = वितर्के, अनुमाने, विचारे। अनुमान करना, विचार करना, ऊहापोह करना, कल्पना करना, तर्क करना। प्रवि - कुछ काल तक ठहरना। वि - व्यूह रचना करना। सम् - एकत्र होना। (ऊहते - विचारयति, अनुमानम् करोति। ऊहकः, ऊहमानः - विचारकः। ऊहिः, ऊहा, ऊहनम्, ऊहनीयम्, ऊह्यम्, ऊट् - विचारक्रियायाम्)।

(ए)

ए (एति) = गति-व्याप्ति-प्रजनन-कान्त्यसन-खादनेषु। जाना, फैलना, व्यापना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, खाना, उड़ाना, फेंकना, भेजना, प्रेरणा करना।

ए-अय् (अयते) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (अयकः, अयमानः, ए, अयिः, अयनम्, अयनीयम् - शब्दे)।

एक् (एकते) = शङ्कायाम्, विमर्शे, विचारे। शंका करना, विचार करना, विमर्श करना। (एकते - विमृशति। एकः, एककः, एकमानः - विमर्शके। एक्, एकिः, एकनम्, एक्यम् - विचारे)।

एक (संख्या) = एक (01)।

एकचत्वारिंशत् (संख्या) = इकतालीस (41)।

एकत्रिंशः (संख्या) = इकतीस (31)।

एकदा (अव्यय) = एक समय, एक बार।

एकधा (अव्यय) = एक प्रकार से।

एकनवति (संख्या) = इक्यानवे (91)।

एकपदे (अव्यय) = एक साथ।

एकविंश (संख्या) = इक्कीस (21)।

एकषष्टिः (संख्या) = इकसठ (61)।

एकसप्तति (संख्या) = इकहत्तर (71)।

एकापञ्चाशत् (संख्या) = इक्यावन (51)।

एकाशीति (संख्या) = इक्यासी (81)।

एज् (एजति, एजते) = दीप्तौ, प्रकाशे, कम्पने, चलने। प्रकाशित होना, चमकना, झलकना, कम्पन करना, चलना। (एजते - प्रकाशते। एजति - कम्पते। एक, एजकः, एजमानः - महति दीपके। एजिः, एजुः, एजनम्, एजनीयम्, एज्यम्, ऐज्यम् - प्रकाशे। एजनम् - कम्पनम्)।

एट्-इट् (एटति) = गतौ, गमने, प्रक्षेपणे, ताडने। जाना, फेकना, ताडना करना। (एटति - प्रक्षिपति। एटति - ताडयति, एटुः - प्रक्षेपणम्)।

एठ् (एठते) = विबाधायाम्, स्थविरे, गत्यवरोधे, ताडने, आतुरे। रोकना, दुःख देना, सताना, आतुर होना। (एटः, एठकः, एठानः - आतुरे। एठुः - ताडनम्। एटनम्, एठनीयम् - आतुरतायाम्)।

एड् (एडति) = धारणे, सहने, घर्षणे। धारण करना, सहना, घर्षण करना। (एडति - सहते। एडूकः - भित्तिः, बाधा)।

एतत्-एतद् (सर्वनाम) = इस ने। (नपुंसकलिंग)।

एतम् (सर्वनाम) = यह, इसको। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एतया (सर्वनाम) = इस द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

एतयोः (सर्वनाम) = इन दोनों के, इन दोनों में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

एतस्मात् (सर्वनाम) = इस से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एतस्मिन् (सर्वनाम) = इस में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एतस्मै (सर्वनाम) = इस के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एतस्य (सर्वनाम) = इस के। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एतस्याः (सर्वनाम) = इससे, इसका। (स्त्रीलिंग)।

एतस्याम् (सर्वनाम) = इसमें। (स्त्रीलिंग)।

एतस्यै (सर्वनाम) = इस केलिए। (स्त्रीलिंग)।

एतर्हि (अव्यय) = अब।

एताः (सर्वनाम) = इन सब ने, इन सब को। (स्त्रीलिंग, बहुवचन)।

एतान् (सर्वनाम) = इन सब को। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

एतानि (सर्वनाम) = इन सब ने, इन सब को। (नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

एताभिः (सर्वनाम) = इन सब द्वारा। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

एताभ्यः (सर्वनाम) = इन सब के लिए, इन सब से। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

एताभ्याम् (सर्वनाम) = इन दोनों द्वारा, इन दोनों के लिए, इन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

एताम् (सर्वनाम) = इस को। (स्त्रीलिंग)।

एतासाम् (सर्वनाम) = इन सबका। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

एतासु (सर्वनाम) = इन सब में। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

एते (सर्वनाम) = इन सब ने। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

एते (सर्वनाम) = इन दोनों ने, इन दोनों को। (नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

एतेन (सर्वनाम) = इस द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एतेभ्यः (सर्वनाम) = इन सब के लिए, उन सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

एतेषाम् (सर्वनाम) = इन सब का। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

एतेषु (सर्वनाम) = इन सब में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

एतैः (सर्वनाम) = इन सब द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

एतौ (सर्वनाम) = इन दोनों ने, उन दोनों को। (पुल्लिंग)।

एध् (एधते) = वृद्धौ, वर्धने। बढ़ना। (एघते - बर्धते। एधमानः - वर्धमानः। एत्, एध्, एधनम्, एधस्, एद्धिः, एद्धम्, एद्धिः - वृद्धौ)।

एन्-इन् (एनति) = संभक्तौ, मिश्रणे, दोषे, दूषणे च। दोष होना। अलग करना, मिलाना। (एनति - दुष्यति। एनः - पापम्)।

एनम् (सर्वनाम) = इसको।

एनोः (सर्वनाम) = इन दोनों का।

एभिः (सर्वनाम) = इन सब द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एभ्यः (सर्वनाम) = इन सब केलिए, इन सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एरण्ड (एरण्डति) = स्नेहने, तैलक्रियायाम्। स्नेहन करना, चिकना करना। (एरण्डति - स्नेहनम् करोति। एरण्डः - स्नेहन-द्रव्यविशेषः)।

एल् (एलति, एलयति, एलयते) = प्रेरणे, सहने। प्रेरणा करना, प्रोत्साहित करना। (एलयति - प्रेस्यति)।

एल्-येल् (यालति, एलति) = गतौ, विस्तारे। जाना, विस्तार होना। (यालति, एलति - विस्तरितो भवति)।

एला (एलायति) = विलासे। क्रीडा करना, विलास करना, खेलना।

एव (अव्यय) = ही।

एवम् (अव्यय) = इस प्रकार, इस तरह।

एष् (एषते) = गतौ, स्खलने, प्रयत्ने। गिरना, फिसलना, समीप जाना या आना, प्रयत्न करना, चाहना, दौड़ना, रेंगना। (एषते - स्खलति (फिसलता है)। एट्, एषकः, एषमाणः - स्खलितरि। एषणम्, एषणीयम् - स्खलनम्)।

एषः (सर्वनाम) = यह, इस ने। (पुल्लिंग)।

एषा (सर्वनाम) = यह, इस ने। (स्त्रीलिंग)।

एषाम् (सर्वनाम) = इनका, इन सब के। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

एषु (सर्वनाम) = इन सब में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

(ऐ)

ऐ - आय् (आयते) = शब्दे, ध्वनौ, शासने। शब्द करना, शासन करना। (आयते - शास्ति। आयकः, आयमानः - शासकः, राजा वा। ऐ, आयनम्, आयनीयम् - शासने)।

(ओ)

ओ (अवति) = शब्दे, ध्वनौ, आह्वाने। बुलाना, आह्वान करना। (अवति - शब्दयति। अवकः, अवमानः - आह्वयितरि। ओ, अवनम्, अवनीयम् - आह्वाने)।

ओक् (ओकति, ओकते) = निवासे। निवास करना।

ओख् (ओखति) = शोषणालमर्थयोः, शोषणे शृंगारे च। शुष्क होना, सूखना, कान्तिमान होना, संवारना, अलंकृत करना, स्वीकार नहीं करना।

(ओखति - शुष्यति, अलङ्करोति)।

ओज् (ओजति, ओजते, ओजयति, ओजयते) = ओजे, शक्तौ। शक्तिमान् होना, बढ़ना।

ओट्- उट् (ओटति) = गतौ, गमने, चलने। जाना, चलना। (उटः, उटजः - पाथेयः (मार्गसाधनम्, मार्गकुटी वा)।

ओठ्- उठ् (ओठति, ओठते) = उपघाते। मारना, ठोकना, नीचे गिराना।

ओण् (ओणति) = अपनयने। ले जाना, दूर ले जाना।

ओर्-उर् (ओरति) = गतौ। जाना, चलना।

ओलण्ड (ओलण्डयति, ओलण्डति) = उत्क्षेपणे। ऊपर उठाना, ऊपर फेंकना। (ओलण्डयति - उत्क्षिपति। ओलण्डः - उत्क्षेपकः)।

ओषध्-उषध् (ओषधति) = पीडानिवारणे, ज्ञाने। जानना, रोगमुक्त करना, रोग का प्रतीकार करना, चिकित्सा करना, नष्ट करना)।

ओह्-उह् (ओहति) = अर्दने। मार डालना, नष्ट करना, दुःख देना, सताना।

(औ)

औ-आव् (आवते) = अपशब्दे, ध्वनौ। अपशब्द कहना, गाली देना, ध्वनि करना। (आवते - गालिं ददाति। आवकः, आवमानः - गालिप्रदातरि। औ, अवनम्, औवनीयम् - गालिप्रदानम्)।

(क)

कः (सर्वनाम) = कौन, किस ने। (पुल्लिंग)।

कक् (ककते) = लौल्ये, चाञ्चल्ये, गर्वे, संचारे, दुःखे, भये। गर्व

करना, चञ्चल होना, प्यासा होना। (ककते - संचरति। काकः - भयः। काकुः - दुःखम्, भयम्। कक्, ककिः, ककुः, ककनम्, ककनीयम्, कक्यम्, काक्यम् - संचारे। ककक:, काकक:, ककमानः - संचारके)।

कक्क (कक्कति) = भ्रमे, भ्रमणे, लौल्ये, चाञ्चल्ये, गर्वे, संचारे, दुःखे, भये, हसने। गर्व करना, चञ्चल होना, हंसना, मुस्कराना। (कक्कते - भ्रमति। कक्कः - भ्रमणशीलः। कक्का, कक्कुः, कक्किः, कक्कनम्, कक्कनीयम्, कक्यम्, काक्यम् - संचारे। कक्ककः, काक्ककः, कक्कमानः - संचारी)।

कक्ख (कक्खति) = हसने। हंसना, मुस्कराना।

कक्ष (कक्षते) = धारणे, घर्षणे। धारण करना, घर्षण करना। (कक्षते - घर्षति, धारयति। कक्षकः, कक्षमाणः - घर्षितरि। कक्षः, कक्षिः, कक्षणम्, कक्षणीयम् - घर्षणे)।

कख् (कखति, कखयति) = हसने। हंसना, मुस्कराना। (कखति, कखयति - हसति। कखः, कखकः, कखन् - हसिता। कखि, कखु, कखनम्, कखनीयम्, कख्यम्, काख्यम्, काखम्, कख, काख् - हसने)।

कग् (कगति, कगयति) = गतौ। चलना, करना, बनाना। (कगति, कगयति - चलति। कगः, कगकः, कगन् - गन्ता। कागिः, कागः - काकः। कगिः, कगनम्, कगनीयम् - गतौ)।

कङ्क (कङ्कते) = उत्पाटने, गत्यर्थः, गतौ। उत्पाटन करना, जाना। (कङ्कते - उत्पाटयति। कङ्कः - उत्पाटकः)।

कङ्ख (कङ्खते) = चलने, कूर्दने। चलना, कूदना। (कङ्खते - कूर्दते। कङ्खः, कङ्खकः, कङ्खानः - कूर्दितरि। कङ्खिः - कूर्दक। कङ्खुः, कङ्खनम्, कङ्खनीयम् - कूर्दने)।

कच् (कचति, कचते) = दीप्तौ, प्रकाशे, दीप्तिबन्धनयोः, बन्धने, प्रकाशे, शब्दे च। बांधना, चमकाना, प्रकाशित होना, शब्द करना, पुकारना।

(कचते - बध्नाति। कचः, काचम्, कचि, कचु, कचनम्, कचनीयम्, कच्यम् - प्रकाशे, बन्धने। काचिः, काचकः, काचमानः, कचमानः - बन्धनकर्तरि)।

कच्छ (कच्छति) = धारणे, सहने। धारण करना, सहन करना। (कच्छति - सहते, धारयति। कच्छा - सहनम्। कच्छपः - सहनशीलः, कूर्मः वा)।

कज् (कजति) = मदे। सुधिहीन होना, सुखी होना, बढ़ना, मत्त होना।

कञ्च (कञ्चते) = व्यवहारे, दीप्तौ, प्रकाशे, दीप्तिबन्धनयोः। बांधना, चमकना, प्रकाशित होना। (कञ्चते - व्यवहरति। काञ्चनम्, कञ्चकः, कञ्चमानः - दीप्तौ, प्रकाशितरि, बन्धने)।

कञ्चित्, कञ्चन (सर्वनाम) = कोई, किसी को, क्या।

कञ्ज (कञ्जति) = हिंसागत्योः, हिंसायाम्, विकर्तने, गत्याम् च। हिंसा करना, गति करना। (कञ्जति - कृन्तति। कञ्जरम, कञ्जम्, कञ्जी - गतौ, विकर्तने)।

कट् (कटति, कटयति) = वर्षावरणयोः, कष्टजीवने, गतौ। बरसना, घेरना, जाना, समीप जाना, कष्ट पाना। प्र - प्रकट होना, दिखना। (प्र-कटयति - प्रकट होता है, दिखता है)।

कठ् (कठति) = कृच्छ्जीवने, कष्टमये जीवने। कष्ट पाना। (कठति - कष्टं प्राप्नोति। कठोरः - कष्टम्)।

कड् (कडति) = मदे, अहंकारे, गर्वे, भेदे, पृथक्करणे। दुःख वा आनन्द में लीन होना, गर्व होना, अहंकार होना, भेद करना, पृथक् करना। (कडति - मदति, गर्वति, अभिमत्तो भवति। कडकः - अहंकारी। कडिः - खण्डः। कडः - मदः। काडः, काडुः, कडन्, कडकः - भेदके। कडः - आर्तनादः)।

कड्ड (कड्डति) = कार्कश्ये, कठोरव्यवहारे। कर्कश होना, निष्ठुर

होना, कठोर होना। (कड्डति - कठोरम् व्यवहरति। कड्डायः - कठोरः)।

कण् (कणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, 'आरा' शस्त्रेण कर्तने। काटना, कण बनाना, रोना, शब्द करना। (कणति - ('आरा' शस्त्रेण) कर्तयति)।

कण् (कणति, कणयति) = गतौ, समीप जाना, छोटा होना। (कणः, कणकः, कणन् - लघुद्रव्यम्, गन्ता। कणा - गन्त्री। कणम्, कणनम्, कणितव्यम्, कणनीयम्, कण, काण्, काणम्, कण्यम्, काण्यम् - गमने)।

कण् (कणयति, कणयते) = निमीलने। आँखें मूंदना।

कण्ट (कण्टति) = गतौ, वेदनायाम्, पीड़ायाम्। जाना, पीडा होना। (कण्टति - पीड़ितो भवति। कण्टकः - पीडकः, (कांटा)।

कण्ठ (कण्ठति) = गिलने, निगरणे। (कण्ठति - निगरति। कण्ठः - निगरकः, गलः वा)।

कण्ठ (कण्ठयति, कण्ठयते, कण्ठति, कण्ठते) = शब्दने, स्मरणे, शोके, दुःखे। शब्द करना, शोक करना, रोकना, उत्कण्ठित होना, स्मरण करना। उत् - दुःख करना, शोक करना, उत्कण्ठित होना। (कण्ठयति - दुःखितो भवति। कण्ठते - शब्दम् करोति। कण्ठकः, कण्ठमानः - शब्दकर्तरि। कण्ठिः, कण्ठुः, कण्ठनम्, कण्ठनीयम् - शब्दने)।

कण्ड (अव्यय, निपातः) = हे, रे, अरे (सम्बोधन)।

कण्ड (कण्डते, कण्डति) = मदे, उन्मादे। दुःख वा आनन्द में लीन होना। (कण्डते - मत्तो भवति। कण्डलः, कण्डकः, कण्डानः - मत्ते)।

कण्ड (कण्डति) = मांसपृथुले, मांसपेश्याम्। मोटा होना, मांस बढ़ना। (कण्डति - मांसेन प्रथते। कण्डम् - मांसम्, मांसपेशी वा। कण्डम् - मांसम्)।

कण्ड (कण्डयति, कण्डयते; कण्डति) = भेदने, भेदे, पृथक्करणे। छानना, तोड़ना, फोड़ना, अलग-अलग करना, धान्यादिकों का भूसा

निकालना, संरक्षण करना, पालना। (कडिः - अर्धम्। कण्डिः - रन्ध्रः। काण्डः - परिच्छेदः, तीरम्, जलम्)।

कण्डू (कण्डूयति) = गात्रविघर्षणे। खुजलाना।

कत् (अव्यय) = कितना।

कत्थ (कत्थते) = श्लाघायाम्, प्रशंसायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना। वि - झूठी प्रशंसा करना। (कत्थते - प्रशस्यो (योग्यो) भवति। कत्थः, कत्थकः कत्थमानः - प्रशंसके (योग्ये)। कत्थिः, कत्थनम्, कत्थनीयम्, कत्थ्यम्, कत्था - प्रशंसने)।

कत्र (कत्रयति, कत्रयते) = शैथिल्ये। ढीला करना, छोड़ना, मुक्त करना।

कथ् (कथयति, कथयते, कथापयति, कथापयते) = वाक्यप्रबन्धे, सम्यक् भाषणे। कहना, व्याख्यान करना। (कथयति - वदति। कथकः - वक्ता। कथा, कथनम्, कथनीयम् - वचने)।

कथञ्चन (अव्यय) = किसी प्रकार।

कथञ्चित् (अव्यय)= किसी प्रकार, कोई।

कथम् (अव्यय) = कैसे।

कथमपि (अव्यय) = कैसे भी, किसी तरह भी।

कद् (कदते, कद्यते) = वैक्लव्ये वैकल्ये वा। भ्रमित होना, घबरा जाना, व्याकुल होना।

कदा (अव्यय) = कब।

कदाचन (अव्यय) = कभी।

कदाचित् (अव्यय) = कभी।

कदापि (अव्यय) = कभी।

कदापि न (अव्यय) = कभी नहीं।

कध्र (कध्रयति) = शैथिल्ये, शिथिलभावे। शिथिल होना। (कध्रयति - शिथिलो भवति। कध्रः, कध्रकः, कध्रयन् - शिथिलभावुके। कध्रणम्, कध्रणीयम् - शैथिल्ये)।

कन् (कनति) = व्याप्ति-कान्ति-गतिषु, व्यापने, प्रकाशे गतौ च। चमकना, प्रकाशित होना, चाहना, प्रीति करना, समीप जाना या आना, तृप्त होना। (कनति - प्रकाशितो 'भवति (चमकता है')। काननम् - व्यापनम्। कान्तिः - प्रकाशः। कन्वन्, कन्वानः, कन्ता, कन्तः, कन्तवान् - प्रकाशके। कन्तिः - प्रकाशिका। कननम्, कननीयम्, कन्त्रम्, कन्यम्, कान्यम्, कानम्, कनम् - प्रकाशे)।

कनु (कनोति, कनुते) = शोभायाम्, प्रकाशे। शोभा होना, प्रकाश करना, प्रकाशित होना। (कनोति, कनुते - प्रकाशते)।

कन्त्र (कन्त्रयति) = उपाये, चातुर्ये। चतुर होना, उपाय करना। (कन्त्रयति - चतुरो भवति। कन्त्रकः - चतुरः। कन्त्रणम्, कन्त्रणीयम् - चातुर्ये)।

कन्थ (कन्थति) = हिंसासंक्लेशयोः, वधे पीडनायां सीवने च। हिंसा करना, पीडा देना। (कन्थति - संपीडति, सीव्यति वा। कन्थति - हिंसयति ताडयति वा। कन्था - गुदड़ी)।

कन्द (कन्दति) = आह्लादने, संतोषे रोदने च। आह्लाद होना, संतोष होना, बुलाना, रोना। (कन्दति - रोदति। कन्दः - आह्लादः, पुत्रः वा)।

कन्द (कन्दते) = वैक्लव्ये वैकल्ये हिंसने च। भ्रमित होना, घबराना, मार डालना।

कबृ (कबरते) = वर्णे, शृङ्गारे, सौन्दर्ये। शृङ्गार करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, रंग देना, रंगना। (कबरते - शृङ्गारं करोति। कबरी - केश-वेश-युता। कबरः, कबरकः, कबरमाणः - वर्णकर्तरि। कबरणम्,

कबरणीयम् - रजने)।

कम् (सर्वनाम) = किस को। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

कम् (कमयति, कामयति, कमते, कामयते) = कान्तौ, इच्छायाम्, अभिलाषायाम्। चाहना, इच्छा करना। (कान्तः, कान्ता, कामिनी, कामः, कामकः, कामनम् - इच्छा, आसक्तिः। कमिः, कमनम्, कमनीयम्, कम्यम्, काम्यम् - इच्छायाम्)।

कम्प (कम्पते) = कम्पने, चलने, क्षान्तौ, सहने। हिलना, कांपना, सहना। अनु - दया करना। (कम्पयति - भयेन कम्पते। कम्पा, कम्पम् - कम्पने।

कम्ब (कम्बति) = चलने, जये, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। चलना, जाना, जीतना, मर्दन करना। (कम्बति - विजयते। कम्बी, कम्बुः - जयः)।

कम्भ (कम्भति) = स्तम्बने, स्थापने। स्थिर होना, स्थापित होना। (कम्भति - स्थापयति, तिष्ठति। कम्भः - स्तम्भः)।

कया (सर्वनाम) = किससे, किस द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

कयोः (सर्वनाम) = किन दोनों के, किन दोनों में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

कर्क (कर्कति, कर्कते) = हसने, लौल्ये, संचारे, कठोरताम् आचरणे। हंसना, कठोरता करना, संचार करना। (कर्कते - कठोरताम् आचरति। कर्कः, कर्कन्धुः, कर्का - कठोरः, संचारः वा)।

कर्ज (कर्जति) = व्यथने। पीड़ा देना, सताना।

कर्ण (कर्णति) = श्रवणे, अपनयने, परित्यागे। सुनना, दूर ले जाना, परित्याग करना। (कर्णति - शृणोति। कर्णः - श्रवणेन्द्रियम्। आ - सुनना। समा - सुनना)।

कर्ण (कर्णयति, कर्णयते) = भेदने। बेधना, बींधना, छेदना, कोचना।

कर्त (कर्तयति, कर्तयते) = विकर्तने, शैथिल्ये। काटना, छोड़ना,

मुक्त करना, ढीला करना।

कत्र (कत्रयति, कर्तयते) = शैथिल्ये। छोड़ना, मुक्त करना, ढीला करना।

कर्द (कर्दति, कर्दते) = गतौ, संघाते, पंके, कुत्सिते शब्दे, निन्दिते शब्दे। कौवे के समान शब्द करना, पेट गुड़गुड़ाना, अन्त्रकूजन होना। (कर्दते - फेनः संहतो भवति (फेन ऊपर जमता है)। कर्दम् - पंकः। कर्दमम, कर्दकः, कर्दमानः, कर्दः - संघाते, पंके। कर्दिः, कर्दनम्, कर्दनीयम् - अपानवायुशब्दे)।

कर्ब (कर्वति) = दर्पे, अभिमाने। गर्व करना।(कर्बति - गर्व करोति। कर्बुरः, कर्बम् कर्बणम्, कर्बु, कर्बि - गर्वे)।

कर्व (कर्बति) = गतौ, गत्याम्, आच्छादने। जाना, आच्छादन करना। (कर्वति - आच्छादयति। कर्वन् - आच्छादने)।

कल् (कलति) = धारणे, घर्षणे, मन्थने। धारण करना, घर्षण करना, मन्थन करना, मथना। (कलति - मन्थति। कललम् - मन्थनम)।

कल् (कलयति, कलयते) = गतौ, क्षेपे। जाना, चलना, उड़ाना, फेंकना। (कलयति - गच्छति। कलकलः - जल-प्रवाहे ध्वनिः। कलम्, कलनम्, कलनीयम् - गतिः)।

कल् (कलयति, कलयते) = आस्वादने। स्वाद लेना, निगलना (कलुः, कलनम्, कलनीयम्, कल्यम्, कल्यणम्, कल्याणम् - शुभे)।

कल् (कलयति, कलते) = गतौ संख्याने, गणनायाम् शब्दे च। शब्द करना, जाना, गिनना। आ - बंधना, लेना। परि - स्मरण रखना। वि - व्याकुल होना। सम् - सारांश कहना, तात्पर्य कहना। (कलते - गणनाम् करोति। कलना - गणना, गणितम्। कलकः, कलमानः - गणकः। कलुः, कलनम्, कलनीयम्, कल्यम्, कल्यणम्, कल्याणम् - गणनायाम्, शुभे च)।

कलञ्ज (कलञ्जति) = विस्मरणे, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च।

गति करना, हिंसा करना, भूलना। (कलञ्जति - विस्मरति। कलञ्चुः, कलञ्जा, कलञ्जिकारी - विस्मरणे, मद्ये वा)।

कल्प (कल्पते, कल्पयति) = अवकल्पने, कल्पनायाम्, भावे, भुवि, सामर्थ्ये, विरचने, कृपायाम्। शक्तिमान होना, समर्थ होना, बनाना, रचना। (कल्पयति - भावयति। कल्पना - भावना। कल्पते - कृपाम् करोति। कल्पकः, कल्पमानः - कृपालौ। क्लृप्, क्लृपि, क्लृपि, कल्पनीयम्, कल्प्यम्, काल्प्यम् - सामर्थ्ये)।

कल्प (कल्पते, कल्पयति, कल्पयते) = अवकल्कने, दौर्बल्ये, बलाधिक्ये। दुर्बल होना, अधिक बल होना, कल्पना करना, विचार करना, मिश्रित करना, चित्रित करना, रंगना।

कल्ल (कल्लते) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट शब्द करना, शब्द करना, गूंगा होना।(कल्लते - उच्चैः अव्यक्तं शब्दयति। कल्लकः, कल्लमानः - उच्चैः शब्दयितरि। कल्लनम्, कल्लनीयम् - कोलाहले)।

कल्ल (कल्लति) = सहने, धारणे, घर्षणे। सहन करना, धारण करना, घर्षण करना। (कल्लति - सहते। कल्लः - सहनम्)।

कल्ह (कल्हते) = प्राधान्य-परिभाषण-हिंसा-दानेषु, मुख्ये, परिभाषणे, हिंसायां, दाने च। देना, मुख्य होना, परिभाषण करना, हिंसा करना। (कल्हते - ददाति। कल्हणः, कल्हकः, कल्हमानः - दातरि। कल्हिः, कल्हनम्, कल्हनीयम् - दानकर्मणि)।

कव् (कवते) = वर्णे, वर्णने। कविता करना, वर्णन करना, चित्र खींचना।

कश् (कशति, कशते, कष्टे) = गति-शासनयोः, दीप्तौ - प्रकाशने। दण्ड देना, शासन करना।

कश्चित् (सर्वनाम) = कोई, प्रश्नवाचक।

कष् (कषति, कषयति) = हिंसायाम्, हिंसार्थः। मार डालना, दुःख

देना, स्वर्ण को परीक्षा के लिए घिसना। नि - सोने की परीक्षा करना। (कषति - मारयति। कषम् - हिंसनम्, मलिनम् वा। कषिः, कष्टन् - दुःखम्। कषणम्, कषाणम्, काष्ठम् - दुःखे, हिंसने वा)।

कष्ट (कष्टति, कष्टयति) = प्रतिघाते, प्रतिहिंसने। प्रतिघात करना। (कष्टन्, कष्टकः - प्रतिहिंसकः। कष्टम्, कष्टिः, काष्टम्, कष्टनम्, कष्टनीयम्, कष्ट्यम्, काष्ट्यम् - प्रतिहिंसने)।

कस् (कसति, कसते) = गतौ, अपगमने, कम्पने च। हिलना, कांपना। वि - खिलना। (कसति, कसते - चलति। कसन्, कसकः - चलिता। कसनम्, कसनीयम्, कस्यम्, कास्यम् - अपगमने)।

कस् (कस्ते) = गतिशासनयोः। जाना, नष्ट करना, आज्ञा करना, दण्ड देना, शासन करना।

कंस् (कंस्ते) = गति-शासनयोः, गत्याम् उपवेशने च। जाना, नष्ट करना, आज्ञा करना, शासन करना, दण्ड देना, बैठना। (कंस्ते - गच्छति, उपविशति। कंसानः, कंसकः, कंस्तवान् - उपविष्टः। कंसनम्, कंसनीयम्, कंस्तव्यम्, कंस्तिः, कंस्तम्, कंस्यम् - उपवेशने। कांस्यम् - गतौ, उपवेशने, धातुविशेषः वा)।

कस्त (कस्तयति) = आमोदने, गन्धने, अल्पीभावे। (कस्तयति - अल्पीभवति। कस्तूरी - गन्धः, एतद् नामकम् गन्धद्रव्यम्)।

कस्मात् (सर्वनाम) = किस से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)

कस्मिन् (सर्वनाम) = किस में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)

कस्मै (सर्वनाम) = किसलिए, किसके लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

कस्य (सर्वनाम) = किसका। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

कस्याः (सर्वनाम) = किस से, किस का। (स्त्रीलिंग)।

कस्याम् (सर्वनाम) = किस में। (स्त्रीलिंग)।

कस्याश्चित् (सर्वनाम) = किसी का। (स्त्रीलिंग)।

कस्यै (सर्वनाम) = किस के लिए। (स्त्रीलिंग)।

कह् (कहति) = शब्दने, हिंसागत्योः। कहना, शब्द करना, हिंसा करना, गति करना। (कहति - शब्दयति)।

का (सर्वनाम) = कौन, किस ने। (स्त्रीलिंग)।

काः (सर्वनाम) = किन सब ने, किन सब को। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

काङ्क्ष (काङ्क्षति) = काङ्क्षायाम्, इच्छायाम्। चाहना, इच्छा करना, लोभ करना। (काङ्क्षा - इच्छा)।

काञ्च (काञ्चते) = दीप्ति-बन्धनयोः। बांधना, चमकाना, प्रकाशित होना।

काण्ड (काण्डति) = परिच्छेदे, विभाजने। विभाग करना, विभाजन करना, टुकड़े करना। (काण्डति - विभजति। काण्डः - विभागः)।

कान् (सर्वनाम) = किन सब को। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

कानि (सर्वनाम) = कौन सब, किन सब ने, किन सब को। (नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

काभिः (सर्वनाम) = किन सब द्वारा। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

काभ्यः (सर्वनाम) = किन सब से, किन सब के लिए। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

काभ्याम् (सर्वनाम) = किन दोनों द्वारा, किन दोनों के लिए, किन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

काम् (सर्वनाम) = किस को। (स्त्रीलिंग)।

कामम् (अव्यय) = स्वेच्छानुसार, माना कि।

काल् (कालयति, कालयते) = कालगणनायाम्, उपदेशे च। उपदेश करना, काल गणना करना।

काश् (काशते, काश्यते) = दीप्तौ, प्रकाशे। प्रकाश करना, चमकना।

निः - निकाल देना, छिपाना, प्रकट करना। (काशते, काश्यते - प्रकाशते। काश्, काशः, काशमानः - प्रकाशितरि। काशनम्, काशनीयम्, काशनी, काश्मीरः - - प्रकाशने, कुंकुमम् वा (केसर)।

कास् (कासते) = शब्दकुत्सायाम्, ध्वनिविकारे, कासने। खांसना, खखारना, चमकना। (कासते - कासनं करोति (खांसता है)। कासः - खांसी)।

कास् (कास्यते) = दीप्तौ, प्रकाशे। प्रकाश करना, चमकना। (कास्यते - प्रकाशते। कासानः, कासकः, कास्मीरः - प्रकाशकः, काश्मीरः, कुंकुमम् वा (केसर)। कासः, कासिः, कासम्, कासनीयम, कास्यम् - प्रकाशने)।

कासाम् (सर्वनाम) = किन सब का। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

कासु (सर्वनाम) = किन सब में। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

कि = कोई, किसी को (अव्यय, निपात)।

किः (अव्यय) **=** कोई, किसी।

कि (चिकेति) = ज्ञाने। जानना समझना। नि - निश्चयपूर्वक जानना।

किञ्च (किम् च) (अव्यय) = और क्या।

किञ्चन (किम् + चन) (अव्यय) = कोई।

किट (केटति) = क्रोधे, गमने, त्रासे। सताना, डराना, जाना। (केटति - चलति, क्रुध्यति)।

किट्ट (किट्टति) = चूर्णे, चूर्णीभावे। चूर्ण होना, चूर्ण करना। (किट्टति - चूर्णयति। किट्टम् - चूर्णम्)।

किण् (किणति) = शब्दे, अपशब्दक्रियायाम्। चिढ़ाना।

कित् (केतति, केतयति, चिकित्सति) = निवासे, रोगापनये च, गृहे, पीडा-निवारणे च। निवास करना, रहना, रोग का प्रतीकार करना, चिकित्सा करना, शासन करना, नष्ट करना। वि - आशंका करना, विश्वास न

करना। (चिकित्सति - रोग चिकित्सा करता है, शासन करता है, नष्ट करता है। चिकित्सा - रोगपरीक्षा, रोगनिवारणम्। चिकित्सुः - वैद्यः)।

कित् (चिकेत्ति, चिकित्ति, चिकित्सति) = ज्ञाने। जानना। (केतन्, केतकः, केतः, केत्ताः, केत्तवान्, कित्तः, केत्यः, कैत्यः, कैतः, कित्, चिकित्सिन्, चिकित्सकः, चिकित्सुः - ज्ञातरि। केती - ज्ञात्री। केतनम्, केतनीयम्, केत्यम्, कैत्यम्, केतव्यम्, कैतम्, कैतवम् - ज्ञाने)।

किन्तु (अव्यय) = परन्तु, लेकिन।

किम् (सर्वनाम) = क्या, क्यों, किस ने। (नपुंसकलिंग)।

किम् उत (किमुत) (अव्यय) = और क्या?

किम्, धिक् (अव्यय) = धिक्कार-सूचक।

किम् पुनः (अव्यय) = क्या कहना है।

किम् वा (किम्वा) (अव्यय) = अथवा, या।

किमु (अव्यय) = क्या कहना है।

किमुत् (अव्यय) = क्या कहना है।

किल् (किलति, केलयति) = शैत्यक्रीडनयोः। श्वेत होना, खेलना, भेजना, उड़ाना। (किलति - क्रीडति, शीतीकरोति। किलन्, किलकः - शीतीकारकः। किलम्, केलम्, केलनम्, केलनीयम् - शीतीकरणे)।

किल (अव्यय) = निश्चय ही, सचमुच।

कीज् (कीजति) = अव्यक्ते शब्दे, अस्पष्टध्वनौ। अस्पष्ट बोलना। (कीजति - अस्पष्टम् वदति। कीजकः - अस्पष्टवक्ता)।

कीट् (कीटयति, कीटयते) = बन्धने, वर्णे। रंगना, रंग में डुबोना, बांधना, बन्धन करना, कीट लगना, जंग लगना।

कीट् (कीटति) = गतौ, गमने, अङ्कुरणे। गति करना, अङ्कुरित होना। (कीटति - अङ्कुरितो भवति। कीटः - गन्ता, प्राणिः वा)।

कीर्त (कृत्) (कीर्तयति) = नाम लेना।

कील् (कीलति) = बन्धने, कीले, कीलने। बांधना, कील ठोंकना, कील लगाना।(कीलति - कीलम् स्थापयति। कीलिः, कीलम्, कीलकम् - बन्धनम्)।

कीव् (कीवति) = रुजायाम्, रोगे। दूषितं रक्त होना, पस पड़ना। (कीवम्, कीवनम्, कीवु - दूषितम् रक्तम्)।

कृ (करति, करोति, कुरुते) = करणे। करना। अति - अधिक करना। अधि - जीतना, बढ़कर होना, अधिकार होना, शान्ति से सहन करना, दूसरे के अनुकूल करना। अप - अपकार करना, झूठ बोलना। आ - वेषान्तर करना, भेष बदलना। उत् - मार डालना, मरणोन्मुख करना, एकत्र करना। उदा - दूषण लगाना, छलना। उप - उपकार करना। उपस् - पलटना, परिवर्तन करना। उपस् - स्वच्छ करना, संवारना, बटोरना, उत्तर देना। तिरस् - अपमान करना, घृणा करना, तिरस्कार करना। दुस् (दुष्) - दुष्कर्म करना। निरा - भर्त्सना करना, निन्दा करना, त्यागना, निकाल देना, नष्ट करना। परिस् (परिष्) - स्वच्छ करना, शोभित करना। परा - निराकरण करना, सदाचारपूर्वक रहना, अच्छी रीति से वर्तना। प्र - प्रारम्भ करना, सेवा करना, बांटना, भंग करना, कहना, बोलना। प्रति - प्रतीकार करना, उपाय करना। प्रत्युप - प्रत्युपकार करना। वि - ढूँढ़ना, शब्द करना, विकार होना, रूपान्तर करना, सन्तापित करना, कम्पित करना। व्या - स्पष्ट करना, समझाना। संस् - स्वच्छ करना, एकत्र करना। सु - अच्छा करना।(कुर्वन्, कुर्वाणः, कर्ता - कारके। करी, करिणी, करेणुः, करः, कारुः, कारी, कारकः - कर्तरि। कृतिः - कर्म। कृतम् - समाप्तम्। कृत्यम् - कर्म। कार्यम्, कारितम् - कर्म। कर्मन् - कर्तुः कर्म)।

कृड् (कृडति) = घनत्वे। दृढ़ या कठिन होना, कठोर हो जाना, जम जाना।

कृण् (कर्णति) = श्रवणे, अपनयने, परित्यागे। सुनना, दूर ले जाना, परित्याग करना। (कर्णति - शृणोति। कर्णः - श्रवणेन्द्रियम्)।

कृण् (कृणोति, कृणुते) = हिंसाकरणयोश्च, हिंसायाम्, घातने। दुःख देना, मार डालना, कतरना, सताना, दुःखित होना।(कृणोति, कृणुते - घातयति। कृतः, कृतवान् - घातके। कृत्, कृतम्, कृतिः, कृत्यम्, कृतकम् - हिंसायाम्)।

कृत् (कृणत्ति, कृन्तति, कृन्ते) = कर्तने, छेदने, वेष्टने। कतरना, काटना, घेर लेना, वेष्टित करना।(कृत्तः, कृत्तवान्, कर्त्ता, कृतकः, कृत् - विकर्तके। कृत्तिः, कर्तनम्, कर्तनीयम् - छेदने। कर्त्तरपः - वस्त्र-छेदनी (कैंची), कृन्तति, कृन्तते - छेदयति। कृन्तन्, कृत्तः, कृत्तवान्, कृतिकः, कृतकः - विकर्तरि। कृन्तनम्, कृन्तनीयम्, कृत्तम्, कृत्तिः - विकर्तने)।

कृतम् (अव्यय) = बस, हो गया।

कृप् (कृपयति, कृपयते) = कृपायाम्, दयायाम्, सामर्थ्ये, दौर्बल्ये। कृपा करना, दया करना, सामर्थ्य होना, कल्पना करना, विचार करना, दुर्बल होना।(कृपयति - दयते। कृपालुः - दयालुः। कृपा - दया)।

कृवि (कृविणोति) = हिंसाकरणयोश्च। मार डालना, सताना, दुःख देना।

कृश् (कृश्यति) = तनूकरणे, कार्श्ये। कृश होना, सूक्ष्म होना। (कृश्यति - तनूकरोति। कर्शन्, कर्शकः, कृष्टः, कृष्टवान्, कर्ष्टा - तनूकर्तरि। कृष्टम्, कृष्टिः, कर्शनम्, कर्शनीयम्, कार्श्यम्, कर्शितव्यम् - तनूकरणे)।

कृष् (कर्षति, कृषति, कृषते) = विलेखने, भूमिकर्षणे। कृषिकर्म करना, जोतना, हल चलाना, रेखा करना। अप - स्राव करना, बहाना, हीन करना, तिरस्कृत करना, घृणा करना। अव - तिरस्कृत करना, निकालना, उद्धृत करना, बाहर निकालना, ऊपर उठाना। आ - आकर्षण करना, खींचना। उत् - उठाना, उद्धृत करना, उठा लेना, उत्तेजन देना। सम् -

आकुञ्चन करना, समेटना। सन्नि - खींच कर समीप लाना। (कर्षति - हलेन भूमि विलेखयति। कर्षः - विलेखनम्। कर्षणम् - आकर्षम्। कार्ष्यम् - विलेखनम्। कृष्णः - कृषकः, कृष्णगुणः। कार्षा - हलेनोत्पादिता भूलेखा। कृषन्, कृष्टः, कृष्टवान्, कृषिकः, कृषीबलः - कर्षके। कृषिः, कृष्टम्, कृष्टिः - विलेखनम्)।

कॄ (किरति, करिष्यति) = विक्षेपे, स्थापने। फेंक देना। अप - हल से रेखा करना, विरल करना, अलग करना, उड़ाना, फेंकना। अव - फेंकना। आ - भरना। प्रति, प्रतिष् - दुःख देना, हिंसा करना। वि - विरल करना, फेंकना। सम् - एकत्र करना। अभि - उल्लंघन करना, गर्त में होना, नष्ट होना। उप, उपस् - छेदन करना, हिंसा करना। (किरति - स्थापयति। किरः - स्थापकः)।

कॄ (कृणाति, कृणीते) = हिंसायाम्। दुःख देना, मार डालना। (कृणः, कृणवान् - हिंसके)।

कॄ (कीर्यति) = विक्षेपे, वयौहानौ, वयःक्षये। झिड़कना। (कीर्यति - विक्षिपति। कीर्णः, कीर्णवान्, किरन्, कर्ता - विक्षेपके)।

कु (उपसर्ग) = बुरा, अनुचित।

कु (कौति, कोप्यति) = शब्दे, ध्वनौ, भर्त्सने। शब्द करना, कविता करना। (कौति - भर्त्सयति, शब्दयति। कवन्, कावकः, कवः, कविः, कावः, कव्यः, काव्यः - भर्त्सके। कुः, कुत्, कुतिः, कुतम्, कुत्यम्, कुतव्यम्, कवनम्, कवनीयम् - भर्त्सने। कविः - काव्यकर्ता)।

कु (कवते, कुवते, कुनाति, कुनीते) = शब्दे, गर्जने। शब्द करना, अस्पष्ट बोलना, भौंरे के समान शब्द करना। (कवते - गर्जति। कुः, कवक्िः, कवकः, कवमानः - वर्णयितरि। कवनम्, कवनीयम्, काव्यम्, कव्यम् - वर्णनक्रियायाम्। कः, कुः, कवानः, कवः, कावः - शब्दयितरि)।

कुक् (कुकते, कोकते) = लौल्ये, आदाने, ग्रहणे, भक्षणे। ग्रहण

करना, लेना, ललचाना। (कुकते - भक्षति। कोकते - नयति। कोककः, कोकमानः - ग्रहीतरि। कुक्, कुकिः, कोकनम्, कोक्यम्, कोकनीयम् - ग्रहणे)।

कुक्क (कुक्कति, कुक्कते) = आदाने, ग्रहणे। ग्रहण करना, लेना, ललचाना। (कुक्कः - दत्तस्य प्रतिग्राहकः। कुक्ककः, कुक्कमानः - बलाद् ग्रहीतरि)।

कुक्ष (कुक्षति) = पूरणे, भरणे। पूर्ण करना, भरना। (कुक्षकः, कुक्षमाणः- पूरयितरि। कुक्षिः - उदरम्। कुक्षणम्, कुक्षणीयम् - भरणे)।

कुच् (कुचति) = संकोचने, संवरणे, मिश्रणे, कौटिल्ये, रोधने, कर्षणे, क्षते च। आकुञ्चित होना, आकुञ्चित करना, लपेटना। सम् - संकुचित होना।

कुच् (कोचति) = शब्दोत्तारे, प्रतिध्वनौ। प्रतिध्वनि होना, पक्षी के समान जोर से पुकारना। (कोचति - प्रतिध्वनति। कोचः - प्रतिध्वनिः (गूँजना)।

कुच् (कोचति) = सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु। सम्पर्क करना, स्वच्छ करना, स्पर्श करना, छूना, जोतना, हल चलाना, वक्र होना, लिखना, रेखा खींचना, आकुञ्चित करना, आकुञ्चित होना, कलह करना, रोकना, अड़ाना, प्रतिबन्ध करना। (कोचति - संवृणोति, स्पृशति, कुटिलयति, अभ्यागच्छति, लिखति। कुचन्, कुचकः - संवरिता)।

कुच् (कोचति) = स्तेयकरणे, चौर्ये। चुराना। (कोचति - चोरयति। कोचा - चौर्यम्)।

कुज् (कुजति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। हिंसा करना, गति करना, फैलना। (कुजति - प्रसरति)।

कुज् (कोजति) = स्तेयकरणे। चुराना, चोरी करना।

कुञ्च् (कुञ्चति) = गति कौटिल्याल्पीभावयोः। जाना, टेढ़ा जाना,

टेढ़ा होना, टेढ़ा करना, अल्प होना, अल्प करना। आ - आकुञ्चित होना, अकड़ जाना।

कुञ्ज (कुञ्जति) = अव्यक्ते शब्दे, अस्पष्टध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना, गुञ्जारना। (कुञ्जति - शब्दम् करोति। कुञ्जिः कुञ्जुः कुञ्जनम् - कुञ्जने, अव्यक्ते शब्दे। कुञ्जरः - अव्यक्त शब्दकर्ता, हस्ती वा)।

कुट् (कुटति) = गतौ, निवासे च। गति करना, निवास करना। (कुटजः, कुटः, कुटी, कुटीरम् - आवासः। कुटारः - बृहत्सन्निवेशः (डेरा)। कोटा, कोटारम्, कोटरम् - पक्षिनीडम्)।

कुट् (कुटति) = कौटिल्ये, वक्रतायाम्। टेढ़ा होना, ठगना, फंसाना। (कुटति - वक्रो भवति। कुटन्, कुटकः - वक्रे। कुटिलम् - वक्रम्)।

कुट् (कोटयति, कोटयते) = छेदने, विदारणे, मध्यतः पोलकरणे। खोखला करना, कतरना, तपाना। (कोटयति - मध्यतः पोलयति। कोटन्, कोटकः - पोलः, सारहीनः। कोटनम्, कोटनीयम् - पोलितम्, सारवर्जितम्)।

कुटुम्ब (कुटुम्बयते) = धारणे, पालने च। धारण करना, पालन करना।

कुट्ट (कुट्टयति, कुट्टयते) = छेदनभर्त्सनयोः। कतरना, निन्दा करना, दोष लगाना, रगड़ना।

कुठ् (कोठयति) = छेदने, विदारणे, विकर्तने। चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना। (कोठयति - विकर्तयति। कोठन्, कोठकः - विकर्तके। कोठनम्, कोठनीयम् - विकर्तने। कुठारः - विकर्तकः, परशुः वा)।

कुड् (कुडति) = बाल्ये, बालभावे, संघाते। बालक के समान खेलना, खाना, एकत्र करना) (कुडति - क्रीडति। कुडः, कोडः, कोडकः - क्रीडके)।

कुण् (कुणति, कोणति) = शब्दोपकरणयोः, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, दानादि से संरक्षण करना, सम्भालना, झगड़ना, दुःखी रहना। (कोणति - युध्यते (झगड़ता है)। कुणः, कोणः, कोणा, कोणाः - शब्दोपकरणः,

वाद्यविशेषः, वीणायाः तारम् वा)।

कुण् (कुणयति, कुणयते) = क्रीडने, नर्तने, आमन्त्रणे, अभिमुखम् भूत्वा वार्ताकरणे, संकोचे, पूरणे। खेलना, नृत्य करना, आमन्त्रण करना, अभिमुख वार्ता करना, संकोच करना, पूर्ण करना, उपदेश करना, बोलना, बुलाना। (कुणयते - पूर्णम् करोति, समापयति। कुणयन् - नर्तकः। कुणनम्, कुणनीयम्, कुणकम् - क्रीडने)।

कुण्ट (कुण्टति) = स्खलने, प्रतिघाते, गतिवैकल्ये। कुण्ठित करना, दुःखादि से श्रमित होना, लंगड़ाना। (कुण्टति - स्खलति। कुण्टः - विकृतपात्)।

कुण्ठ (कुण्ठति) = प्रतिघाते, गतिवैकल्ये, स्खलने, आलस्ये, तृषायां च। कुण्ठित होना, कुण्ठित करना, आलस्य होना, गतिहीन होना, लंगड़ाना। (कुण्ठति - गतिहीनो भवति। कुण्ठः - आलस्ययुक्तः)।

कुण्ठ (कुण्ठयति, कुण्ठयते) = वेष्टने रक्षणे च। घेरना, कुण्ठित करना, रक्षा करना।

कुण्ड (कुण्डति) = वैकल्ये। विकल होना, कुण्ठित करना, दुःखादि से कुण्ठित होना। (कुण्डः - कुण्ठितः। कुण्डा - गुदा, गुदद्वारम्। कुण्डली - कुण्ठितः विकलः (सर्पः)। कुण्डम् - विकलम् द्रव्यम् (कूड़ा)। ।

कुण्ड (कुण्डते) = दाहे, तृषायाम्। जलना, प्यास लगना। (कुण्डते - दहते। कुण्डः, कुण्डकः, कुण्डानः - दहनकर्तरि। कुण्डा - गुदा, गुदद्वारम्। कुण्डिः, कुण्डुः, कुण्डनम्, कुण्डनीयम् - दाहे)।

कुण्ड (कुण्डयति) = अनृतभाषणे, असत्यवदने। असत्य बोलना। (कुण्डयति - मिथ्यावदति। कुण्डः - मिथ्या। कुण्डम् - असत्यम्)।

कुण्ड (कुण्डयति, कुण्डते) = रक्षणे, पालने। रक्षा करना, पालन करना, संभालना। (कुण्डयति - रक्षति। कुण्डम् - रक्षकम्)।

कुतः (अव्यय) = कहाँ से।

कुत्र (अव्यय) = कहाँ।

कुत्रचित् (अव्यय) = कहीं।

कुत्स (कुत्सयते) = अवक्षेपे, निन्दायाम्। दोष लगाना, निन्दा करना, तिरस्कार करना। (कुत्सन्, कुत्सकः - निन्दके। कुत्सनम्, कुत्सनीयम्, कुत्सितम्, कुत्सा - निन्दायाम्)।

कुथ् (कुथ्नाति) = संश्लेषणे, पीडनायां च। मिलकर रहना, दुःख देना।

कुथ् (कुथ्यति, कुथ्नाति, कुन्थति) = हिंसासंक्लेशयोः, वधे पीडनायाम् दुःखे पूतीभावे दुर्गन्धे च। दुःख देना, दुःख भोगना, पीड़ित होना, दुर्गन्ध आना। (कुथ्यति - दुर्गन्धयुक्तो भवति। कुथ्यन्, कोथः, कोथिकः, कोथितः, कोथितवान् - दुर्गन्धयुक्ते। कुथिः, कुथ्यः, कोथनम्, कोथनीयम्, कोथितव्यम्, कोथिः, कोथितम् - दुर्गन्धे। कुथ्नाति - दुःख्यति। कुथः, कोथनम्, कोथकः - दुःखी। कोथनम्, कोथनीयम् - दुःखे)।

कुन्थ (कुन्थति) = हिंसासंक्लेशयोः, वधे पीडनायां च, पूतीभावे, दुर्गन्धे। दुःख देना, दुःख भोगना, पीड़ित होना, दुर्गन्ध आना। (कुन्थति - हिंसयति ताडयति वा। कुन्था - युद्धम्)।

कुन्द्र (कुन्द्रयति, कुन्द्रयते) = अनृतभाषणे। झूठ बोलना।

कुप् (धातु) (कुप्यति) = कोपे, रोषे, क्रोधे। क्रोध करना। (कुप्यति - क्रुद्धो भवति। कुपितः, कुपितवान्, कोपिता, कोपन्, कोपकः - क्रुद्धे। कोपः, कोपनम्, कुपितम्, कुपितिः, कुपितव्यम्, कोपनम्, कोप्यम्, कौप्यम्, कौप्यम् - कोपने, क्रुद्धे)।

कुप् (कोपयति, कोपयते) = कोपे, रोषे, क्रोधे, भाषार्थः, भासार्थः च। बोलना, चमकना, क्रोध करना।

कुभ् (कुभति) = धारणे, घर्षणे। धारण करना, घर्षण करना।

कुम् (कुमति, कुमते) = कान्तौ। चाहना, इच्छा करना।

कुमार् (कुमारयति, कुमारयते) = खेलने, क्रीडायाम्। बालक के समान खेलना, क्रीडा करना। (कुमारयति - क्रीडते)।

कुमाल् (कुमालयति, कुमालयते) = खेलने, क्रीडायाम्। बालक के समान खेलना, क्रीडा करना।

कुम्प (कुम्पति, कुम्पयति) = आच्छादने। ढकना, फैलना।

कुम्ब (कुम्बति, कुम्बयति, कुम्बयते) = आच्छादने। आच्छादित करना, ढाँपना, ओढ़ना। (कुम्बयति - आच्छादयति। कुम्बन्, कुम्बकः - आच्छादके। कुम्बनम्, कुम्बनीयम् - आच्छादने)।

कुम्भ (कुम्भयति, कुम्भयते) = आच्छादने। आच्छादित करना, ढंकना।

कुर् (कुरति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (कुरति - शब्दम् करोति। कुरिः, कुरुः, कौरव्यः, कोरवम्, कौरवी, कोरवी, कोरकम्, कुरटम्, कोरः, कोरी - शब्दकर्ता, शाब्दिकः, प्रवाचकः)।

कुर्क (कुर्कते) = दशने, आदाने, ग्रहणे। ग्रहण करना, लेना, ललचाना, डसना, काटना। (कुर्कते - दशति। कुर्कुरः - दशकः, कुक्कुरः वा)।

कुर्द (कुर्दते) = क्रीडायाम्, कुर्दने। खेलना, क्रीडा करना, कूदना। (कुर्दते - क्रीडति। कुर्दः, कुर्दकः, कुर्दमानः - क्रीडके। कुर्दः, कुर्दुः, कुर्दनीयम् - क्रीडने)।

कुल् (कुलति, कूलति) = आवरणे। (कूलम् - नदीतटम्)।

कुल् (कोलति) = संख्याने गणनायाम् बन्धुषु च। बटोरना, अपने के समान वर्तना, सजातीयता से रहना, गिनना। आ - तत्पर होना, व्याकुल होना। (कोलति - गणयति। कुलम्, कुलकम्, कुलिः, कुलुत्थम्, कुली, कुलीन, कुलजः - कुटुम्बे, बन्धुषु च)।

कुवित् (अव्यय) = बहुत।

कुश् (कुश्यति) = संश्लेषणे। गले लगाना, आलिंगन करना, लपेटना।

कुंश् (कुंशयति, कुंशयते, कुंशति) = भासार्थाः भाषार्थाः च। चमकना, बोलना। (कुंशः, कुंशकः, कुंशनम्, कुंशनीयम् - प्रकाशे, भाषणे)।

कुशि (कुश्यति) = समाधातरि, श्लेषणे, सहने। समाधान करना, सहन करना। (कोशकः, कोष्टा, कुष्टः, कुष्टवान् - समाधातरि। कोशी, कोशः - कोषः, संग्रहः।कुशम्, कौशेयम्, कुष्टम्, कुष्टिः, कोशनम्, कोशनीयम् - सहने)।

कुष् (कुष्यति, कुष्णाति) = निष्कर्षे, बहिष्कारे। बाहर निकालना, रगड़ कर निकालना, चमकना, परीक्षा करना, कसौटी पर घिसकर परीक्षा करना। अव - सिद्ध करना, स्थापित करना। निस् - खीच कर बाहर निकालना। (कुष्यति - बहिः करोति, पृथक् करोति। कोषन्, कोषकः, कुष्टः, कुष्टवान् - बहिष्कर्तरि)।

कुषुभ् (कुषुब्यति) = क्षेपे, भासार्थाः भाषार्थाः च। छोड़ना, फेंकना, चमकना, बोलना।

कुंस् (कुंसयति, कुंसयते, कुंसति) = भासार्थाः भाषार्थाः रुदने च। चमकना, बोलना, रोना। (कुंसयति - रोदिति। कुंसः, कुंसकः- रोदकः)।

कुसुम्ब (कोसम्बति) = मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, पृथ्वी पर कर्षण करना। (कोसम्बति - पृथिव्या उपरि कर्षति)।

कुस्म (कुस्मयते) = कुस्मयने, कुत्सिते हास्ये। विचार करके देखना, अयोग्य रीति से हँसना। (कुस्मयते - निन्दितम् हसति। कुस्मानः, कुस्मकः - निन्दितहासके। कुस्मम्, कुस्मनम्, कुस्मनीयम्, कुस्मतिम् - निन्दितहसने)।

कुह् (कोहति, कुहयते) = नाशे, अदर्शने, विस्मापने, कृत्रिमे। उगना, आश्चर्य या चमत्कार दिखाना, मोहित करना। (कुहयते - कृत्रिमम् करोति। कोहति - नाशयति। कुहानः, कुहकः - वञ्चकः, कृत्रिमकारः, (ऐन्द्रजालिकः)।

कू (कुवते, कुनाति, कुनीते) = शब्दे, विह्वले। दुःखकारक शब्द करना, विह्वल होना।

कूज् (कूजति) = अव्यक्ते शब्दे, अस्पष्टध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना, कूजना। (कूजति - शब्दयति। कूजकः - शब्दकारः (पिकः)।

कूट् (कोटति) = गतौ, गमने, अंकुरणे। जाना, अंकुरित होना। (कोटति - चलति, अंकुरितो भवति)।

कूट् (कूटयते) = प्रमादे, वञ्चने, अप्रदाने, अवसादने। नहीं देना, अस्पष्ट, गूढ़ करना, कूट करना, नीचे गिराना। (कूटयते - वञ्चयते)।

कूट् (कूटयति, कूटयते) = परितापे परिदाहे तृषायाम् च। दुःख देना, जलाना, दग्ध करना, प्यास लगना, बुलाना, आमन्त्रण करना, मन्त्रणा देना, उपदेश करना। (कूटयति - उष्णम् करोति)।

कूड् (कूडति) = घनत्वे। दृढ़ होना, कठिन होना, खाना।

कूण् (कूणयति, कूणयते) = संकोचने। संकुचित होना, ऐंठना।

कून् (कूनयते) = संकोचने। संकुचित होना, ऐंठना।

कूप् (कूपयति) = अशक्तौ। अशक्त करना, छिपना।

कूर्द (कूर्दते) = क्रीडायाम्, कूर्दने। खेलना, क्रीडा करना, कूदना।

कूल् (कूलति) = आवरणे। आच्छादित करना, ढांपना, छिपाना। अनु - अनुकूल होना। (कूलति - आच्छादयति। कूलम् - नदीतटम्)।

के (सर्वनाम) = कौन सब, किन सब ने। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

के (सर्वनाम) = किन दोनों ने, किन दोनों को। (नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

केत् (केतयति, केतयते) = आमन्त्रणे, अभिमुखं भूत्वा वार्ताकरणे। बुलाना, अभिमुख वार्ता करना, आमन्त्रित करना, मन्त्रणा करना। (केतयति - अभिमुखम् आयाति)।

केन (सर्वनाम) = किस द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

केप् (केपते) = गतौ चलने कम्पने च। जाना, कम्पित होना। (केपते - गच्छति, चलति। केपः, केपकः, केपानः - गन्तरि। केपिः, केपुः, केपनम्, केपनीयम् - गमने)।

केभिः (सर्वनाम) = किन सब द्वारा।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

केभ्यः (सर्वनाम) = किन सब के लिए, किन सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

केल् (केलति) = विलासे, क्रीडने, कम्पने, गतौ, चलने च। जाना, खेलना, कम्पित होना। (केलिः - क्रीडा)।

केला (केलायते) = विलासे, क्रीडने, चलने च। क्रीडा करना, खेलना।

केवलम् (अव्यय) = केवल, मात्र, इतना ही।

केव् (केवते) = रिक्तीभावे, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, रिक्त होना। (केवते - रिक्तो भवति। केवकः, केवलः, केवः, केवमानः, केव् - रिक्ते। केविः, केवुः, केवा, केवनम्, केव्यम्, कैव्यम् - रिक्तीभावे)।

केषाम् (सर्वनाम) = किन सब का। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

केषु (सर्वनाम) = किन सब में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

कै (कायति) = शब्दे, ध्वनौ, स्तुतौ, प्रशंसने। शब्द करना, स्तुति करना, प्रशंसा करना। (कायति - प्रशंसयति। काननम्, कायनम्, कानिः, कीतम् - प्रशंसायाम्। कायकः, कायिता - शब्दकर्ता, स्तोता (गायकः)। कः - स्तुत्यः (ब्रह्म)।

कैः (सर्वनाम) = किन सब द्वारा।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

कैल् (केलति) = विलासे, क्रीडने, गतौ, चलने च। खेलना, जाना, चलना, गति करना। (केलिः - क्रीडा)।

कोटि (संख्या) = एक करोड़ (100,000,00)।

कोल् (कोलति) = आवरणे, खनने। आवरण करना, खनन करना। (कोलति - खनति। कोलः - खननकरः, यष्टिका वा, (छड़ी)।

कोल् (कोलति) = गतिप्रतिघाते, गमनावरोधे, वञ्चने। चलने में रुकावट होना। (कोलति - निरुणद्धि। कोलः - पादबन्धनी रज्जुः। कोलुः

- वञ्चनम्)।

कौ (सर्वनाम) = किन दोनों ने, किन दोनों को। (पुल्लिंग)।

क्नथ (क्नथति, क्नथयति) = हिंसायाम्, ताडने, मारणे, पातने। दुःख देना, मार डालना, गिराना। (क्नथति, क्नथयति - ताडयति, पातयति च। क्नथः, क्नथकः, क्नथन् - ताडयिता। थ, क्नाथ, क्नथि, क्नथु, क्नाथु, क्नाथम्, क्नथितम्, क्नथितव्यम्, क्नथम् - पातने)।

क्नंस् (क्नंसति, क्नंसयति) = दीप्तौ, प्रकाशने, शब्दे, ध्वनौ। चमकना, शब्द करना।

क्नसु (क्नसयति, क्नस्यति) = कौटिल्ये, वक्रे, शब्दे, प्रकाशने, ह्वरणदीप्त्योः। वक्र होना, चमकना। (क्नसयति - कलरवो भवति, वक्रो भवति, प्रकाशयति)।

क्नुसु (क्नुस्यति) = ह्वरणदीप्त्योः, द्योतने प्रकाशने। चमकना, प्रकाशित होना। (क्नुस्यति - द्योतते, प्रकाशते। क्नुस्यन्, क्नोसः, क्नोसकः, क्नोसितः, क्नोसितवान्, क्नोसिता - द्योतके, प्रकाशके। क्नुसिः, क्नुसा, क्नोस्यम्, क्नोसनम्, क्नोसनीयम्, क्नोसितव्यम्, क्नोसितम्, क्नोसितिः - द्योतने)।

क्नू (क्नूनाति, क्नूनीते) = शब्दने। शब्द करना। (क्नूनाति, क्नूनीते - शब्दं करोति। क्नूतः, क्नूतवान् - शब्दकर्तरि। क्नूतम्, क्नूतिः - शब्दने)।

क्नूय् (क्नूयते) = शब्दे उन्दे च। शब्द करना, आर्द्र होना, गीला होना, भीगना, दुर्गन्ध आना।

क्मर् (क्मरति) = कौटिल्ये, हूर्च्छने, कृत्रिमे। वक्र होना, टेढ़ा होना, कृत्रिम करना, वञ्चक होना, ठग बनना। (क्मरति - कृत्रिमम् करोति। क्मरः - कृत्रिमकः)।

क्रक्ष - कृष (क्रक्षति, कर्षति, कृषति, कृषते) = विलेखने, भूमिकर्षणे। कृषिकर्म करना, जोतना, हल चलाना, रेखा करना। अप - स्राव करना, बहाना, हीन करना, तिरस्कृत करना, घृणा करना। अव - तिरस्कृत करना,

निकालना, उद्धृत करना, बाहर निकालना, ऊपर उठाना। आ - आकर्षण करना, खींचना। उत् - उठाना, उद्धृत करना, उठा लेना, उत्तेजना देना। सम् - आकुञ्चन करना, समेटना। सन्नि - खींच कर समीप लाना। (कर्षति - हलेन भूमि विलेखयति। कर्षः - विलेखनम्। कर्षणम् - आकर्षम्। कार्ष्यम् - लेखनम्। कृष्णः - कृषकः, कृष्णगुणः। कार्षा - हलेन उत्पादिता भूलेखा। कृषन्, कष्टः, कृष्टवान्, कृषिकः, कृपीबलः - कर्षके। कृषिः, कृष्टम्, कृष्टिः - कर्षणे, विलेखने)।

क्रथ् (क्रथयति) = क्रीडायाम्। बार-बार क्रीडा करना, आनन्द करना, मनोरञ्जन करना।

क्रथ् (क्रथति, क्रथयति, क्रथयते) = हिंसायाम्, पातने, मारणे। मार डालना, गिरा देना, पटकना। (क्रथः, क्रथकः क्रथन् - पातयिता। क्रथ्, क्राथ्, क्रथि, क्रथुः, क्राथुः, क्रथ्यम्, क्राथ्यम्, क्रथिम्, क्रथितव्यम्, क्रथनम्, क्रथनीयम् - पातने। क्रथः, क्रथकः, क्रथन् - अवहन्ता। क्रथनम्, क्रथनीयम् - हिंसायाम्)।

क्रद् (क्रदयति, क्रदते) = चिन्तने, वैकल्ये, विकलतायाम्। दुःखित होना, विकल होना, चिन्तन करना। (क्रदते, क्रदयति - व्यथते, चिन्तयति। क्रदकः, क्रदमानः - चिन्तकः। क्रदिः, क्रदनम्, क्रदनीयम् - क्रदयम्, क्रादयम् - चिन्तनम्)।

क्रन्द (क्रन्दति) = क्रन्दने, आह्लादने, संतोषे रोदने च। क्रन्दन करना, रोना, पुकारना, बुलाना, आह्लाद होना, सन्तोष करना। (क्रन्दति - रुदति, रोदिति। क्रन्दः, क्रन्दनम् - रोदनम्)।

क्रन्द (क्रन्दयति, क्रन्दते) = क्रन्दने, वैक्लव्यै विकलतायाम् वैकल्ये, चञ्चलतायाम्। विकल होना, दुःखी होना, चञ्चल होना। (क्रन्दते, क्रन्दयति - विकलो भवति। क्रन्दकः, क्रन्दमानः - विकले। क्रन्दिः, क्रन्दनम्, क्रन्दनीयम्, क्रन्द्यम् - चञ्चलतायाम्)।

क्रन्द (आ-पूर्वक - आक्रन्दयति, आक्रन्दयते) = सातत्ये, आह्वाने। निरन्तर होना, बुलाना, पुकारना। (आ-क्रन्दयति - निरन्तरं भवति। आ-क्रन्दः - नैरन्तर्येण भविता। आक्रन्दनम् - नैरन्तर्येण भवनम्)।

क्रप् (क्रपयति, क्रपते) = कृपायाम, दयायाम्, गतौ च। जाना, कृपा करना, दया करना। (क्रपते, क्रपयति - दयाम् करोति। क्रपकः, क्रपमाणः - कृपालुः। क्रपिः, क्रपा, क्रपणम्, क्रपणीयम्, क्रप्यम्, क्राप्यम् - दयायाम्)।

क्रम् (क्रमति, क्रमते, क्रम्यते, क्रामति, क्राम्यति) = पादविक्षेपे, पद्भ्यां चलने। निर्भयता से जाना, रक्षण करना, बढ़ना, वृद्धिगत होना। आ - उगना, उदित होना। उप - प्रारम्भ करना। वि - पग गिनते जाना। व्या - अतिक्रमण करना, आज्ञा भंग करना। अति - बाहर जाना। आ - जय पाना, अधिक होना। उत् - अतिक्रमण करना, आज्ञा भंग करना। निस् - आगे जाना। परा - पराक्रम करना। प्र - निकल जाना, समीप आना। परि - घूमना। वि - जीतना, ऊपर जाना। सम् - स्थानान्तर करना, जाना। (क्रमति - पद्भ्यां चलति। क्रमः - क्रमशः, पश्चाद् वा। क्रमणम् - कालक्षेपः। क्रान्तः - गन्ता, यात्री)।

क्रिम् (क्रिमति) = पादविक्षेपे, पदभ्यां चलने। पैरों से चलना। (क्रिमिः - कीटः)।

क्री (क्रीणाति-क्रीणीते) = द्रव्यविनिमये, मूल्ये। खरीदना, बदले में लेना, जीतना। वि - बेचना। (क्रीणाति, क्रीणीते - मूल्येन गृह्णाति। क्रीतः, क्रीतवान्, क्रयन्, क्रयमाणः, क्रेता - क्रेतरि। क्रयः, क्रय्यः, क्रेयम्, क्रेतव्यम्, क्रयणम्, क्रयणीयम्, क्रीतम्, क्रीतिः - मूल्ये)।

क्रीड् (क्रीडति) = विहारे, खेलने, क्रीडने। खेलना, विहार करना, उपहास करना, मन बहलाना। अनु - खेलना। आ, परि, सम् - खेलना। (क्रीडति - खेलति। क्रीडा - खेलः)।

क्रुञ्च (कुञ्चति) = कौटिल्याल्पीभावयोः, कुटिलतायाम् अल्पतायाम्

च। समीप जाना या आना, वक्र घूमना या जाना, मुड़ना, वक्र होना, वक्र करना, अल्प होना, अल्प करना।(क्रुञ्चति - गमने कुटिलो भवति (मुड़ता है)। क्रुञ्चा - आकुञ्चनम्)।

क्रुड् (क्रुडति) = निमज्जने, घसने, खादने। खाना, बालक के समान चेष्टा करना, डूबना, दृढ़ होना।(क्रुडति - भक्षयति।क्रोडनम्, क्रोडनीयम् - भक्ष्यम्)।

क्रुड (क्रोडति) = कम्पने, चलने, गतौ। कम्पन करना, जाना, चलना।(क्रोडति - कम्पते।क्रोडनम् - कम्पनम्)।

क्रुथ् (क्रुथ्नाति) = संक्लेशे, संश्लेषणे, हिंसने च। दुःखित होना, विह्वल होना, लिपटना, मार डालना।

क्रुध् (क्रुध्यति) = क्रोधे, रोषे। क्रोध करना। (क्रुध्यति - कुप्यति। क्रुद्धः, क्रुद्धवान्, क्रोधकः, क्रुत् - कोपितरि। क्रोधः - रोषः)।

क्रुश् (क्रोशति) = रोदने, आह्वाने, शब्दने।पुकारना, रोना।अनु - दया करना।आ - निन्दा करना, गाली देना।उप - दोष देना।प्र - उच्च स्वर से पुकारना।(क्रोशति - आह्वयति।क्रुष्टम्, क्रुष्टिः - आह्वानम्)।

क्रूड् (क्रूडति) = चलने, गतौ, खनने। खोदना, गोदना, जाना, चलना। (क्रूडति- गुदगुदयति, खनति। क्रूडनम् - गोदनक्रिया। क्रूडः - खनकः। क्रूडनम् - खननम्)।

क्रूय् (क्रूयते) = शब्दे।शब्द करना।(क्रूयकः, कूयमाणः - शब्दयितरि। क्रूयिः, क्रूयः, क्रूयणम्, क्रूयणीयम् - शब्दे)।

क्रेव् (क्रेवते) = सेवने। लेना, सेवन करना, भजना।

क्लथ् (क्लथति) = हिंसायाम्, मारणे, अवहनने। कूटना, दुःख देना, मार डालना, घूमना।(क्लथति, क्लथयति - अवहन्ति (कूटता है)। क्लथ्, क्लाथ्, क्लथिः, क्लाथुः, क्लथनम्, क्लथितव्यम्, क्लथनीयम्, क्लथ्यम्, क्लाथ्यम्, क्लाथम् - अवहनने)।

क्लद् (क्लदते, क्लदयति) = वैकल्ये, वैक्लव्ये, विकलतायाम्, चिन्तायाम्। घबराना, विह्वल होना, दुःखित होना।(क्लदते, क्लदयति - चिन्तितो भवति।क्लदकः, क्लदमानः - चिन्तितः।क्लदिः, क्लदम्, क्लदनम्, क्लदनीयम्, क्लद्यम्, क्लाद्यम् - चिन्तायाम्)।

क्लन्द (क्लन्दति) = म्लाने आह्लादने, संतोषे रोदने च। क्रन्दन करना, रोना, पुकारना, बुलाना, आह्लाद होना, सन्तोष करना।(क्लन्दति - म्लायति। क्लन्दनम् - म्लानम्)।

क्लन्द (क्लन्दते, क्लन्दयति) = चिन्तने, वैकल्ये, विकलतायाम्, वैक्लव्ये। विकल होना, दुःखी होना, चञ्चल होना।(क्लन्दते, क्लन्दयति - चिन्तयति। क्लन्दकः, क्लन्दमानः - चिन्तयिता। क्लन्दिः, क्लन्दम्, क्लन्दनम्, क्लन्दनीयम्, क्लन्दयम्, क्लान्दयम् - चिन्तने)।

क्लप् (क्लपयति, क्लपयते) = अव्यक्तायाम् वाचि।अस्पष्ट बोलना, क्रूरता से बोलना।

क्लम् (क्लाम्यति) = म्लाने, ग्लानौ। श्रमित होना, थक जाना, कुम्हलाना।(क्लाम्यति - ग्लायति।क्लान्तः, क्लान्तवान्, क्लमन् - ग्लायके। क्लान्तम्, क्लन्तिः, क्लमनम्, क्लमनीयम्, क्लन्तव्यम् - म्लाने)।

क्लव् (क्लवते) = गतौ। जाना।

क्लव् (क्लवते, क्लव्यते) = भये। डरना।

क्लिद् (क्लिद्यति-क्लिद्यति) = आर्द्रीभावे।आर्द्र होना, गीला होना, गीला करना। (क्लेदन्, क्लोदकः, क्लिन्नः, क्लिन्नवान् - आर्द्रे। क्लिन्निः, क्लिन्नम्, क्लेदनम्, क्लेदनीयम्, क्लेदम् - आर्द्रीभवने)।

क्लिन्द (क्लिन्दते, क्लिन्दति) = परिदेवने, दुःखे, रोदने। दुःख होना, रोना, शोक करना। (क्लिन्दः, क्लिन्दकः, क्लिन्दमानः - दुःखके, दुःखिते। क्लिन्दिः, क्लिन्दनम्, क्लिन्दनीयम् - दुःखे। क्लिन्दा - दुःखम्, रोदनम्)।

क्लिल् (क्लिलति) = शैत्यक्रीडनयो, शीतीकरणे, शीतीभावे, क्रीडने च। शीत करना, शीत होना, खेलना। (क्लिलति - क्रीडति, शीतीकरोति। क्लिन्, क्लिलकः - शीतीकारकः। क्लिलम्, क्लेलम् क्लेलनम्, क्लेलनीयम् - शीतीकरणे)।

क्लिश् (क्लिश्यते) = श्रमे। श्रम करना, थकना। (क्लिश्यते - श्रान्तो भवति। क्लेशकः, क्लेशानः, क्लिष्टः, क्लिष्टवान् - श्रमिकः। क्लिष्टिः, क्लेशः, क्लेशनम्, क्लेशनीयम्, क्लेश्यम्, क्लेष्टव्यम् - श्रमे)।

क्लिश्ना (क्लिश्नाति) = विबाधने, कष्टे, उपतापे, परिश्रमे। क्लेश या दुःख देना, दुःखी होना, दुःख सहना। (क्लिश्नाति - दुःख्यति। क्लेशन्, क्लेशकः - कष्टं प्राप्तः। क्लिष्टम्, क्लिष्टिः, क्लेशः, क्लेशनम्, क्लेशनीयम् - कष्टे)।

क्लीब् (क्लीबते) = अधाषर्ट्ये, कोमले, भीरुतायाम्। कोमल होना, दुर्बल होना, निर्बल होना, लज्जालु होना, भीरु होना। क्लीबते - कोमलो भवति। क्लीबः, क्लीबकः, क्लीबानः - कोमलतायाम्, भीरुतायाम्। क्लीबनम्, क्लीबनीयम् - कोमलभवने)।

क्लेव् (क्लेवते) = सेवने। सेवा करना।

क्लेश् (क्लेशते) = अव्यक्तायाम् वाचि, बाधने, दुःखे श्रमे च। अस्पष्ट शब्द करना, मार डालना, बुरा व्यवहार करना, दुःख देना, सताना। (क्लेशते - दुःखितो भवति, श्रमम् करोति। क्लेश्, क्लेशकः, क्लेशमानः, क्लेश्यः क्लैश्यः - श्रमकर्तरि, दुःखिते। क्लेशिः, क्लेशुः, क्लेशनम्, क्लेशनीयम् - श्रमे)।

क्व (सर्वनाम) = कहाँ।

क्वचित् (सर्वनाम) = कहीं।

क्वण् (क्वणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, प्रतिध्वनौ। शब्द करना, क्वण क्वण शब्द करना, झंकार करना, प्रतिध्वनि होना, प्रतिध्वनि करना।

(क्वणति - वदति। क्वणः - प्रतिध्वनिः)।

क्वथ् (क्वथति) = निष्पाके, क्वथने। उबालना, पकाना, काढ़ा बनाना। (क्वथकः, क्वाथकः - पाचकः। क्वथम्, क्कथि, क्वथु, क्वाथम्, क्वाथु, क्वथ्यम्, क्काथ्यम्, क्वथनम्, क्वथनीयम्, क्वथितव्यम् - क्वथने पाके)।

क्वेल् (क्वेलति) = कम्पने, गतौ, ज्ञाने, लेखने। लिखना, जाना, जानना, कम्पित होना, हिलना। (क्वेलति - लिखति। क्वेलिता - लेखकः)।

क्षज् (क्षजते) = गतिदानयोः, दाने, गतौ, चलने च। जाना, सरकना, देना, दान करना, भेंट में देना।

क्षञ्ज (क्षञ्जते, क्षञ्जयति) = दाने, गतौ, चलने च। जाना, चलना, देना, दान करना, भेंट में देना। (क्षञ्जते, क्षञ्जयति - ददाति, चलति। क्षञ्जकः, क्षञ्जमानः - दाता, गन्ता। क्षञ्जम्, क्षञ्जिः, क्षञ्जनम्, क्षञ्जनीयम् - दाने चलने च)।

क्षञ्ज (क्षञ्जयते, क्षञ्जति, क्षञ्जते) = कृच्छ्रजीवने, सकष्टे प्राणधारणे। दुःख सहन करना, विपत्ति में रहना। (क्षञ्जः, क्षञ्जकः - दुःखिनि। क्षञ्जनम्, क्षञ्जनीयम् - सकष्टे जीवने)।

क्षण् (क्षणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, दीपने। शब्द करना, दीप्त करना। (क्षणति - दीप्यते। क्षणः - दीप्तिः, (कालविशेषः)।

क्षणु (क्षणोति, क्षणुते)) = हिंसायाम्। मारना, दुःख देना, सताना, तोड़ना। (क्षणोति, क्षणुते - हिनस्ति। क्षणुकः - घातकः)।

क्षद् (क्षदति)) = भक्षण-हिंसनयोः। खाना, भक्षण करना, मुक्की मारना, कूटना, ढंकना, मार डालना।

क्षप् (क्षपति, क्षपते, क्षपयति,क्षपयते) = संयमे, प्रेरणे। भेजना, सहन करना, संयम करना।

क्षम् (क्षमते, क्षाम्यति) = सहने। सहन करना, सहना, क्षमा करना,

समर्थ होना, रोकना। (क्षमते - सहते, क्षमाम् करोति। क्षमा, क्षामिः, क्षमणम्, क्षमणीयम, क्षान्ति - सहने)।

क्षम्प (क्षम्पयति, क्षम्पयते, क्षम्पते) = सहने, क्षान्तौ, क्षान्त्याम्। सहन करना, सहना, दया करना, चमकना। (क्षम्पयति - सहते। क्षम्पन्, क्षम्पः, क्षम्पकः - सोढरि। क्षम्पनम्, क्षपनीयम् - सहने। क्षम्पा, क्षपा - सोढरि रात्रिः वा)।

क्षय् (क्षि) (क्षयति)) = क्षये। सूक्ष्म होना, अल्प होना, न्यून होना, क्षय होना, नष्ट होना।

क्षर (क्षरति) = क्षरणे, संचलने। टपकना, झरना, गिरना, हिलना, गिराना, हिलाना, ढहाना, गलना, अनुपयुक्त होना, बहना। सम् - बहना। (क्षरति - नश्यति। आ-क्षारयते - दोष लगाता है, निन्दा करता है। क्षरन्, क्षरकः - नष्टा। क्षरणम्, क्षरणीयम्, क्षरितव्यम् - नाशे)।

क्षल् (क्षलति) = गतौ, कम्पने। जाना, सरकना, काँपना, थरथराना।

क्षार् (क्षर्) (क्षारयति, क्षारयते) = कुत्सायाम्, अवक्षेपे, निन्दायाम्। दोष लगाना, निन्दा करना, तिरस्कार करना। (आ-क्षारयते - दोष लगाता है, निन्दा करता है)।

क्षाल् (क्षल्) (क्षालयति, क्षालयते) = शौचकर्मणि। स्वच्छ करना, पवित्र करना, धोना।

क्षि (क्षयति) = क्षये। सूक्ष्म होना, अल्प होना, न्यून होना, नष्ट होना।

क्षि (क्षिणोति, क्षिणाति) = हिंसायाम्, क्लान्तौ, शोषणे चलने च। मार डालना, दुःख देना, सताना, क्षत-विक्षत करना, घाव करना।

क्षि (क्षियति) = निवासगत्योः, वासे गमने च। जाना, चलना, निवास करना, रहना, बसना। (क्षियति - निवसति। क्षयः - गृहम्। क्षित, क्षितवान्, क्षेता, क्षयकः - निवसितरि। क्षयणम्, क्षयनीयम्, क्षेतव्यम्, क्षेय्यम् - निवासे, क्षितिः - वासः, भूमिः वा)।

क्षिणु (क्षिणोति, क्षिणुते, क्षेणोति, क्षेणुते) = ताडने, हिंसायाम्। - मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना। (क्षिणकः - ताडकः)।

क्षिद् (क्षेदति) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट शब्द करना, कराहना।

क्षिप् (क्षिपति, क्षिपते, क्षिप्यति) = क्षेपे, प्रेरणे। फेंकना, उड़ाना, भेजना, प्रेरणा देना, रखना, दोष लगाना, नष्ट करना। अधि - दोष लगाना, आरोप लगाना। अव - नीचे फेंकना। आ - उपहास करना, आक्षेप करना, आकर्षण करना, खींचना। उत् - उठाना, उठा लेना। नि - रखना। पर्या - बांधना। प्र - बलपूर्वक फेंकना। वि - फैलाना। विनि - देना, छोड़ना। समा - भेजना। सम् - संक्षेप करना, नष्ट करना, आकर्षण करना, खींचना।

क्षिप् (क्षिपति, क्षिपयति) = प्रेरणे, नियमे। प्रेरणा करना, नियमन करना। (क्षिपति - नियमयति। क्षिपम्, क्षिप्तः, क्षिप्तवान्, क्षेपकः - नियन्तरि। क्षेपणम्, क्षेपणीयम्, क्षिप्तम्, क्षिप्तिः - नियमने)।

क्षिप् (क्षिप्नाति, क्षिपनीते) = हिंसायाम्, मारणे, चलने, कम्पने। हिंसा करना, चलना, कम्पन करना। (क्षिप्नाति, क्षिपनीते - कम्पते, चलति। क्षिप्तः, क्षिप्तवान् - कम्पके। क्षिप्तम्, क्षिप्तिः - कम्पने)।

क्षिप्य (क्षिप्यति) = प्रेरणे, रक्षणे। प्रेरणा करना, रक्षा करना। (क्षिप्यति - रक्षति (रखता है)। क्षिप्यन्, क्षेपकः, क्षेप्ताः, क्षिप्तः - रक्षकः, प्रेरयिता। क्षेपः, क्षेपणीयम्, क्षिप्तव्यम्, क्षिप्तिः, क्षिप्तम् - रक्षणे, आ-क्षेपकः - शंकिता)।

क्षिव् (क्षेवति, क्षीव्यति) = निरसने, निस्सारणे। थूकना, कै करना, मदोन्मत्त होना, मस्त होना। (क्षीव्यति - निरस्यति। क्षीव्यन्, क्षेवः, क्षेवकः, क्षेवितः, क्षेवितवानः, क्षेविता - निरसितरि। क्षेवणम्, क्षेवणीयम, क्षेवितव्यम्, क्षेवितम, क्षेवितिः - निरसने)।

क्षी (क्षय) (क्षयति) = नाशे, अल्पीभावे। क्षीण होना। (क्षयति - क्षीणो भवति। क्षयः - क्षीणम्)।

क्षी (क्षय) (क्षयति, क्षीणाति) = हिंसायाम्। दुःख देना, पीड़ा करना, मार डालना।

क्षीज् (क्षीजति) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट शब्द करना, कराहना, खीजना, दुःखी होकर बड़बड़ाना।

क्षीब् (क्षीबते) = मदे, स्थूलतायाम्, स्थौल्ये। स्थूल होना, मोटा होना, मत्त होना, मदोन्मत्त होना, मस्त होना। (क्षीबते - स्थूलो भवति। क्षीबः, क्षीबकः, क्षीबाणः - स्थूले)।

क्षु (क्षौति) = शब्दे, ध्वनौ, वाचालने, व्यर्थ वदने, वितण्डायाम्। व्यर्थ बोलना, वितण्डा करना, छींकना, खखारना। (क्षौति - व्यर्थ वदति। क्षवन्, क्षावकः, क्षवणः, क्षावणः - वाचाले, वैतण्डिके। क्षुत्, क्षुतिः, क्षुतम्, क्षुतव्यम्, क्षव्यम्, क्षाव्यम् - वितण्डायाम्)।

क्षु (क्षवति, क्षौति) = गतौ। जाना।

क्षुण्-क्षुद् (क्षुणत्ति, क्षुन्ते) = सम्पेषणे, चूर्णने। कूटना, पीसना, मुक्की मारना, कुचलना। (क्षुन्दन्, क्षुदानः - चूर्णके। क्षुत्, क्षोदनम् - चूर्णने)।

क्षुध् (क्षुध्यति) = बुभुक्षायाम्। क्षुधित होना, भूख लगना। (क्षोद्धा, क्षोधकः, क्षुद्धः, क्षुद्धवान् - क्षुधिते)।

क्षुभ् (क्षुभ्यति) = संचलने, कम्पने। कम्पन करना। (क्षुभ, क्षुभिः, क्षोभनम्, क्षोभनीयम्, क्षुब्धम्, क्षुब्धिः - कम्पने)।

क्षुर् (क्षुरति) = विलेखने, क्षौरकर्मणि। कतरना, चीरना, छेदना, लकीर खींचना। (क्षुरति - बालान् कृन्तति। क्षुरकः, क्षौरकः, क्षौरी - क्षौरकर्ता। क्षुरणम्, क्षुरणीयम्, क्षौरम् - क्षौरकर्मणि। क्षुरम्, क्षुरिका - कर्तन-साधने)।

क्षेड् (क्षेडयति, क्षेडयते) = अदने। भक्षण करना, खाना।

क्षेव् (क्षेवति)) = निरसने, मदे। थूकना, कै करना, मदोन्मत्त होना,

मस्त होना।

क्षै (क्षायति)) = क्षये। नष्ट होना, न्यून होना, म्लान होना।

क्षोट् (क्षोटयति, क्षोटयते) = क्षेपे। भेजना, फेंकना।

क्ष्णु (क्ष्णौति, संक्ष्णुते, क्षौति) = तेजने, तीक्ष्णीकरणे, अणिकरणे। तीक्ष्ण करना, पैना करना, तेज करना, नोक बनाना। (क्ष्णौति - अणि करोति, अग्रभागं तीक्ष्णी करोति। क्ष्णवन्, क्षवकः, क्ष्णुत् - अणिकर्तरि। क्ष्णवनम्, क्ष्णवनीयम्, क्ष्णव्यम्, क्ष्णाव्यम् - अणिकरणे तीक्ष्णीकरणे।

क्ष्मायी (क्ष्मायते, क्षमायते) = विधूनने, दाने। हिलना, काँपना, हिलाना, कँपाना, दान करना। (क्ष्मायते - ददाति। क्ष्मायकः, क्ष्मायमाणः - दातारि। क्ष्मायिः, क्ष्मायुः, क्ष्मायणम्, क्ष्मायणीयम् - दाने)।

क्ष्मील् (क्ष्मीलति) = अर्धनिमेषणे, अक्षिनिमेषे। पलक झपकना, पलक मारना। (क्ष्मीलति - अर्ध निमिषति। क्ष्मीलनम् - अर्धनिमीलनम्)।

क्ष्मै (क्ष्मायते) = सहने, धारणे। धारण करना, सहन करना। (क्ष्मायते - सहते। क्ष्मा - भूमिः। क्ष्मायकः, क्ष्मायमाणः - सहमाने। क्ष्मायिः, क्ष्माणम्, क्ष्माणीयम् - सहने)।

क्ष्विड् (क्ष्वेडति)) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट शब्द करना।

क्ष्विडा (क्ष्विड्यति) = स्नेहने, मोचने। तेलमर्दन करना, तेल लगाना, मुक्त करना, छोड़ देना, अस्पष्ट शब्द करना।

क्ष्विदा (क्ष्वेदते, क्ष्विद्यति) = स्नेह-मोचनयोः। तेलमर्दन करना, तेल चुपड़ना, मुक्त करना, छोड़ देना, अस्पष्ट शब्द करना। (क्ष्विण्णः, क्ष्वेदकः - त्याजके। क्ष्वेदनम् - मोचने)।

क्ष्वेल् (क्ष्वेलति) = चलने, कम्पने। जाना, कांपना, थरथराना, कूदना, खेलना।

(ख)

खक्ख (खक्खति) = हसने। हंसना।

खङ्ग (खङ्गति) = गतौ, गतिवैकल्ये, एकेन पादेन चलने। चलना, एक पैर से चलना।(खङ्गति - एकेन पादेन चलति। खङ्गः - एकपात्)।

खच् (खचति, खच्नाति) = प्रादुर्भावे। सम्पत्ति युक्त करना, पवित्र करना, देर से जन्म लेना।

खच् (खचयति) = खचने, बन्धने। खींच कर बांधना, खरोचना।

खज् (खजति) = मन्थे, मथने। मथना, हिलाना, मन्थन करना। (खजति - मन्थति। खजिः - मथनम्)।

खञ्ज (खञ्जति) = गतिवैकल्ये, निन्दायाम्। लंगड़ा होना, लंगड़ाना, निन्दा करना। (खञ्जति - निन्दयति। खञ्जः - निन्दा)।

खट् (खटति) = काङ्क्षायाम्, इच्छायाम्, शोधे च। चाहना, शोध करना, ढूँढ़ना। (खटति - इच्छति। खट्वा - इच्छा)।

खट्ट (खट्टयति, खट्टयते) = संवरणे, आवेष्टने। आच्छादन करना, छिपाना, ढांपना, लपेटना। (खट्टयति - आवेष्टयति, संवृणोति। खट्टः, खट्टन्, खट्टकः - आवेष्टके। खट्टनम्, खट्टनीयम् - आवेष्टनम्)।

खड् (खाडयति, खाडयते) = भेदने, पृथक्करणे। टुकड़े करना, खण्ड करना। (खाडयति - पृथग्भवति। खडन्, खडकः - पृथग्भविता। खड्गम् - पृथक्-कर्ता, (असिः)। खाडा, खाडी - युद्धम्। खडितम्, खडनम्, खडनीयम्, खडम्, खाडम् - पृथग्भवने)।

खण्ड (खण्डति, खण्डते, खण्डयति, खण्डयते) = भेदने, खण्डने, अवयवविभागे, मन्थे, अवहनने। टुकड़े करना, विभाग करना, खण्डित करना, मथना, बिलोना, कूटना।(खण्डति - निकृन्तति, विभजति। खण्डयति - त्रोटयति। आखण्डते - सर्वत्र खण्डनं करोति। खण्डः - विभागः। खण्डितम्, खण्डम्, खण्डनीयम्, खण्डिः - त्रोटने। खण्डितः, खण्डकः,

खण्डानः - खण्डनकर्तरि)।

खद् (खदति) = भक्षणे स्थैर्ये हिंसायाम् च। खाना, मार डालना, सताना, स्थिर रहना। (खदति - हिंसयति। खदिरः - भक्ष्यम्, (खैर)।

खद्-खाद् (खादयति) = आच्छादने। आच्छादित करना।

खन् (खनति, खनते) = अवदारणे, खनने। दुःख देना, खोदना। (परिखा, खेयम् - अवदारणम्। खननीयम्, खन्यम्, खान्यम्, खनम्, खानम्, खनिः, खनुः, खानुः, खन्, खान्, खननम् - अवदारणे)।

खर्ज (खर्जति) = मार्जने, शोधने, पीडायां, व्यथने पूजने च। दुःख देना, सताना, स्वच्छ करना, आतिथ्य पूजन करना, सम्मान करना।(खर्जति - शोधयति, पीडितो भवति। खर्जूः - पीडा)।

खर्द (खर्दति) = दन्तशूके, दन्तैः दशने। चबाना, दांतों से काटना। (खर्दति - दशति। खर्दः - दशकः, कुक्कुरः वा)।

खर्ब (खर्बति) = गतौ, अभिमाने। हठ करना, गर्व करना।(खर्बति - अहंकारं करोति। खर्बम, खर्बणम्, खर्बु, खर्बि - अहंकारे)।

खर्व (खर्वति) = ह्रस्वीभावे, गतौ, गत्याम्। लघु होना, जाना, चलना। (खर्वति - ह्रस्वो भवति। खर्वः - लघुः, वामनः वा (बौना)।

खल् (खलति) = संचलने संचये भ्रमणे च। स्थानान्तर करना, जाना, भ्रमण करना, एकत्र करना, संचय करना।(खलति - भ्रमति। खलः - भ्रमणशीलः। खलम् - संचयः (खलिहान)। खल् - संचारः। शृंखला - शृंखला (वस्तु-विशेषः)।

खलु (अव्यय) = कहीं, निश्चय ही, शिष्टतापूर्ण प्रश्न करने में।

खल्ल (खल्लति) = चलने, भ्रमणे। चलना, घूमना, भ्रमण करना। (खल्लति - भ्रमति। खल्लः - प्रकोटः (चारदीवारी)। खल्लनम् - श्रेणिः)।

खव्-खौ (खौनाति) = पूतिप्रादुर्भावे, पवित्रकरणे, दुर्गन्धे। सम्पत्तियुक्त करना, स्वच्छ करना, पवित्र करना, स्पष्ट करना, विलम्ब से जन्म लेना।

(खौनाति - दुर्गन्धयुक्तो भवति, खौनीतः (द्विवचन), खौनन्ति (बहुवचनम्)। खौनन्, खवकः - दुर्गन्धयुक्ते। खवनम्, खवनीयम् - दुर्गन्धीभावे)।

खष् (खषति) = हिंसार्थः। मार डालना, सताना।

खाद् (खादति) = भक्षणे, अदने। खाना। (खादति - भक्षति, अभ्यवहरति। खादनम् - अभ्यवहारः)।

खाय्-खै (खायति) = खादने, भक्षणे, अदने। खाना। (खायति - अत्ति। खायकः, खायिता - अत्तरि। खैः, खानम्, खातम्, खानि, खातिः, खीतम् - अदने। खः - अत्ता)।

खिङ्क (खिङ्कते) = गतौ। जाना, चलना।

खिट् (खेटति) = त्रासे, उत्त्रासने, भये। डराना, दुःख देना, सताना। (खेटति - बिभेति)।

खिद्-खेद् (खेदति) = खेदे, भये, त्रासे। भय दिखाना, सताना, दुःख देना।

खिद् (खिद्यते, खिन्ते) = दैन्ये, दीनतायां, दुःखे। खिन्न होना, दुःख सहन करना, दीनता प्रकट करना। (खिद्यते, खिन्ते - दीनो भवति, दुःखी, दुःखितो वा भवति। खेदानः, खेदकः - दुःखी। खित्तिः, खित्तम्, खेदः, खेदनम्, खेदनीयम्, खेत्तव्यम् - दुःखम्)।

खिन्द (खिन्दति, खिन्दते) = परिघाते, दुःखे। दुःख देना, सताना, रोकना। (खिन्दति, खिन्दते - दुःखितो भवति। खिन्दन्, खिन्दानः, खेदकः, खेता, खित्तः, खित्तवान् - दुःखिनि। खित्तः, खित्तम्, खेदनम्, खेदनीयम्, खेद्यम्, खेद्यम् - दुःखे)।

खिल् (खिलति) = खिलने, उञ्छे अवशेषे च। बीनना, उञ्छन करना, बचना, शेष रहना।

खृ (खरते) = गतौ, प्रकाशने। ज़ाना, प्रकाश करना। (खरते - प्रकाशयति। खरः - सूर्यरश्मिः)।

खु (खवते) = शब्दे, ध्वनौ, स्तवने, प्रशंसने। स्तुति करना, ध्वनि करना, शब्द करना। (खवते - स्तौति। खविः, खवकः, खवमानः - स्तावकः। खुः, खः, खवनम्, खव्यम्, खाव्यम्, खवनीयम् - स्तवने, प्रशंसने)।

खुच् (खोचति) = स्तेयकरणे, चौर्ये। चुराना। (खोचति - चोरयति। खोचा - चौर्यम्)।

खुज् (खोजति) = स्तेयकरणे, चौर्ये। चुराना, चोरी करना।

खुड् (खुडति, खोडति, खोडयति) = संवरणे संघाते हिंसने च। छिपाना, मारना, टुकड़े करना, निकालना।

खुण् (खोणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (खोणति - गर्जति। खोणः - सिंहः। खोणिः - ध्वनिः। खुण्णः - ध्वनिसमूहः (चिल्लाहट)।

खुण् (खोणते) = ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना। (खोणते - गृह्णाति। खोणः, खोणकः, खोणानः - ग्रहीतरि। खुणिः। खोणनम्, खोणनीयम् - ग्रहणे)।

खुण्ड (खुण्डयति, खुण्डयते, खुण्डति) = खण्डने। टुकड़े करना, चीरना।

खुण्ड (खुण्डते) = गतिवैकल्ये। लंगड़ा कर चलना।

खुर् (खुरति) = छेदने। कतरना, चीरना, खुरचना। (खुरति - छिनत्ति। खुरः - छेदकः, पशोः पादाग्रः वा)।

खुर्द (खुर्दते) = क्रीडायाम्। खेलना, क्रीडा करना। (खुर्दते - क्रीडते। खुर्दः, खुर्दकः, खुर्दमानः - क्रीडके, नटे)।

खेट् (खेटयति, खेटयते) = भक्षणे, रंगिणे। खाना, भक्षण करना। (खेटयति - खादति। खेटकम् - रंगिणम् (रेंगना)।

खेड् (खेडयति, खेडयते) = भक्षणे। खाना, भक्षण करना।

खेण् (खेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, संचये, गत्यां प्रेरणे सहने च। ग़ति करना, प्रेरणा करना, भेजना, सहना। (खेणति - संचयति)।

खेद्-खिद् (खेदति) = भये, खेदे, त्रासे। भय दिखाना, घबराना, सताना, दुःख देना।

खेल् (खेलति) = क्रीडने, खेलने, नृत्ये, चलने गतौ च। कम्पित होना, खेलना, जाना। (खेलति - क्रीडति, नृत्यति। खेला - विलासः। खेलिता - क्रीडिता)।

खेला (खेलायति) = विलासे, क्रीडने, खेलने, नृत्ये, चलने गतौ। जाना, विलास करना, क्रीडा करना, खेलना, नृत्य करना। (खेलायति - क्रीडति, नृत्यति। खेला - विलासः)।

खेव् (खेवते) = सेवने, आतुरे, आतुरतायाम्। आतुर होना, सेवा करना, चाकरी करना। (खेवते - आतुरो भवति। खेवः, खेवकः, खेवलः, खेवमानः, खैवः - आतुरे। खेव, खेवी, खेविः, खेवुः, खेवनम्, खेव्यम्, खैव्यम् - आतुरतायाम्)।

खै-खाय् (खायति) = खादने, अदने। स्थिर रहना, मार डालना, सताना, दुःख करना, खोदना। (खायति - अत्ति। खायकः, खायिता - अत्तरि। खैः, खानम्, खातम्, खानि, खातिः, खीतम् - अदने। खः - अत्ता)।

खोट् (खोटयति, खोटयते, खोट्टयति) = खोटे, क्षेपे, निन्दायाम्, कथने, भक्षणे। खाना, भक्षण करना, खोट होना, खोट करना, निन्दा करना, खोटे मार्ग पर चलना।

खोट्ट (खोट्टयति) = खोटे, क्षेपे, निन्दायाम्, कथने, भक्षणे। खाना, भक्षण करना, खोट होना, खोट करना, निन्दा करना, खोटे मार्ग पर चलना। (खोट्टयति - कथयति। खोट्टकः - कथकः। खोट्टनम् - कथनम्)।

खोड् (खोडयति) = क्षेपे, निन्दने। निन्दा करना, निन्दित मार्ग अपनाना।

खोर्-खोर्ऋ (खोरति) = गतिप्रतिघाते। लंगड़ाना।

खोल् (खोलति) = गतिप्रतिघाते। लंगड़ाना। (खोलति - रुणद्धि। खोला - शृंखला)।

खौल्-ख्वेल् (ख्वेलति) = गतौ, चलने, संचरणे, भ्रमणे। चलना, घूमना। (ख्वेलति - भ्रमति। ख्वेला - संचरणम्)।

ख्या (ख्याति) = प्रकथने, वचने। प्रसिद्ध करना, प्रख्यात करना, कहना, व्याख्यान करना। अभि - देदीप्यमान होना, चमकना। आ - कीर्तिमान् होना। वि - विख्यात करना, प्रख्यात करना। सु - पसन्द होना। प्रत्या - नकारना, खण्डन करना। सम् - गिनना, संकलन करना। समा - संज्ञा देना, नाम रखना। (ख्याति - कथयति। ख्यायन्, ख्यायकः, ख्याता, ख्याः - वक्तरि। ख्यानम्, ख्यातम्, ख्यातिः, ख्यातव्यम्, ख्यापनम्, ख्यापनीयम्, ख्यानम् - कथने। आख्या - नाम। प्रत्याख्यानाम्, प्रत्याख्यातम् - असत्यकथनम्)।

ख्वेल् (ख्वेलति) = गतौ। चलना, जाना, भ्रमना। (ख्वेलति - भ्रमति। ख्वेला - संचरणम्)।

(ग)

गग्घ् (गग्घति) = हसने। हंसना। (गग्घति - हसति, गग्घम् - हसनम्)।

गच्छ् (गम्) (गच्छति) = गतौ। जाना, इष्टार्थ सिद्ध होना। अनु - अनुसरण करना, अनुकरण करना। आ - आना, बीच में या किसी ओर जाना। अधि - मिलना, प्राप्त होना, पुस्तकादि पढ़ना, त्यागना, छोड़ देना। अप - लौट आना। अव - जानना। उत् - निकालना, ऊपर उठना। उप - निकट आना, उत्पन्न करना, अनुमोदन करना, मन्त्रणा देना। उपा - निकट आना। दुर् - दुःख से जाना। नि - ज्ञान प्राप्त करना। निर् - आगे जाना, बाहर जाना। पर्युत् - ऊपर उठाना। परि - घेर लेना, बाहर जाना।

प्रत्या - लौट आना। वि - शत्रु की ओर चढ़ जाना। समा - मिलना, एकत्र होना। समुप - स्वीकार करना, मान्य करना। सु - आनन्द से जाना, पार जाना। सम् - साथ जाना, मिलना, एकत्र होना। (गच्छति - याति। गन्ता - गमकः। गम्, गमनम्, गमकम्, गन्तव्यम्, गमनीयम्, गाम्यम्, गम्यम्; गतिः, गतम् - गमने)।

गज् (गजति, गाजयति, गाजयते) = शब्दे, शब्दने, मदे च। शब्द करना, मदोन्मत्त होना। (गजति - रोदिति। गजुः - शब्दकरः, कंकणम् वा (कंगन, चूड़ी)।

गञ्ज (गञ्जति) = शब्दार्थः, शब्दे, शब्दने, भ्रमणे। शब्द करना, भ्रमना, भ्रमण करना। (गञ्जति - भ्रमति। गञ्जा - भ्रामकम्, मादकम् द्रव्यम्)।

गड् (गडति, गडयति) = सेचने, घर्षणे। बहना, झरना, सींचना, टपकाना। (गडति, गडयति - घर्षति। गडकः, गडन् - घर्षकः। गडम्, गडिः, गड्डः, गडनम्, गडनीयम्, गड्यम्, गाड्यम्, गाडिः, गाडम् - घर्षणे)।

गड्ड (गड्डति) = मुखस्य एकदेशे, चिबुके। डाढ़ी आना। (गड्डति - कूर्चम् उत्पद्यते। गड्डम् - चिबुकम्)।

गण् (गणति, गणयति) = समूहे, संख्याने, गणनायाम्, शब्दे, शब्द-क्रियायाम्। शब्द करना, गिनना, मापना, मानना, समझना, समूह बनाना। अधि - स्तुति करना, गिनना। (गणयति - संख्यायति। गणकः - संख्यायकः। गणनम् - गणितम्। गणति - संख्यापयति। गणः - संख्यानम् (गणितम्)। गण् - गणितम्। गाणः - शब्दकरः, तिलादिसंपीडकम्। (कोल्हू)।

गण्ड (गण्डति) = साहाय्ये, कपोले, वदनस्य एकदेशे, मुखस्य एके अवयवे। सहायता करना, कपोल होना, गण्डमाला होना। (गण्डति - साहाय्यम् करोति। गण्डम् - कपोलः)।

गथ् (गथति) = विलोडने। विलोना, मथना। (गथति - विलोडयति।

गथन्, गथकः - विलोडयिता। गथम्, गथा, गथि, गथु, गाथु, गथितम्, गथितव्यम्, गथनम्, गथनीयम्, गथ्यम्, गाथ्यम्, गथ्, गाथ् - विलोडने)।

गद् (गदति) = व्यक्तायां वाचि, निरन्तरभाषणे। स्पष्ट बोलना, कहना। (गदति - वदति)।

गद् (गदयति, गदयते) = अव्यक्तायाम् शब्दे, देवशब्दे, मेघध्वनौ। मेघ गर्जना होना, तुतलाना। (गदयति - अव्यक्तं वदति (तुतलाता है)। गद्गदः - स्खलितवाक्)।

गद्गद् (गद्गद्यति) = अतिहर्षे वा अतिशोके वाक्स्खलनम्। गद्गद् स्वर से बोलना, रुके हुए कण्ठ से बोलना।

गध् (गध्यति) = मिश्रणे। मिश्रित होना, मिल जाना, मिश्रित करना, मिलाना)।

गन्ध (गन्धयति, गन्धयते) = परिमले, गन्धने, अर्दने, प्रेरणे, हिंसने, याचने, शोभने, लज्जायाम्। दुःख देना, मार डालना, जाना, माँगना, याचना करना, लजाना, शोभित करना। (गन्धन्, गन्धी - परिमले। गन्ध्यम्, गन्धनीयम्, गन्धनम्, गन्धः - परिमलम्। गन्धकम् - द्रव्यविशेषः। सुगन्धिः - पुष्पविशेषः। गन्धा)।

गम्-गच्छ (गच्छति) = गतौ। जाना, इष्टार्थ सिद्ध होना। अनु - अनुसरण करना, अनुकरण करना। आ - आना, बीच में या किसी ओर जाना। अधि - मिलना, प्राप्त होना, पुस्तकादि पढ़ना, त्यागना, छोड़ देना। अप - लौट आना। अव - जानना। उत् - निकालना, ऊपर उठना। उप - निकट आना, उत्पन्न करना, अनुमोदन करना, मन्त्रणा देना। उपा - निकट जाना या आना। दुर् - दुःख से जाना। नि - ज्ञान प्राप्त करना। निर् - आगे जाना, बाहर जाना। पर्युत् - ऊपर उठाना। परि - घेर लेना, बाहर जाना। प्रत्या - लौट आना। वि - शत्रु की ओर चढ़ जाना। समा - मिलना, एकत्र होना। समुप - स्वीकार करना, मान्य करना। सु - आनन्द से जाना,

पार जाना। सम् - साथ जाना, मिलना, एकत्र होना। (गच्छति - याति। गन्ता - गमकः। गम्, गमनम्, गमकम्, गन्तव्यम्, गमनीयम्, गाम्यम्, गम्यम्; गतिः, गतम् - गमने)।

गर्ज (गर्जति, गर्जयति, गर्जयते) = शब्दे, शब्दने, कलकल-ध्वनौ। कलकल ध्वनि करना, शब्द करना, गर्जना करना। (गर्जति - शब्दम् करोति, कलकलम् ध्वनति। गर्जन्, गर्जकः, गर्जितः - शब्दयितरि। गर्जनम्, गर्जनीयम् - शब्दने। गर्जनम् - ध्वनिविशेषः, गर्जना)।

गर्द (गर्दति, गर्दयति, गर्दयते) = शब्दे, कुत्सिते शब्दे, निन्दिते शब्दे। शब्द करना, कुत्सिक शब्द करना, गर्जना करना। (गर्दति - शब्दं करोति। गर्दभः - रासभः)।

गर्ध-गृध (गर्धयति, गर्धयते) = लोभे, अभिकांक्षायाम्। लोभ करना, चाहना, आशा करना। (गर्धयति - गृध्यति, अभिकांक्षति। गर्धः - गर्धकः - अभिलाषुकः। गर्धनम् - अभिकांक्षा, लोभः)।

गर्ब (गर्बति) = गतौ, दर्पे, अभिमाने, शोभने। जाना, स्वाभिमान होना। (गर्बति - शोभते। गर्बम्, गर्बणम्, गर्बु, गर्बि - स्वाभिमाने)।

गर्व (गर्वति, गर्वयते) = दर्पे माने श्रेष्ठतायाम्, अहंकारे, गतौ, गत्याम्। ज़ाना, गर्व करना, हठ करना, अभिमान करना। (गर्वयते - मानम् करोति। गर्वितः, गर्वाणः - अहंकारयुक्ते। गर्वः, गर्वणम्, गर्वणीयम् - अहंकारे। गर्वति - अभिमत्तो भवति। गर्वः - मदः, अभिमानः, अहंकारः)।

गर्ह (गर्हते, गर्हयति, गर्हयते) = कुत्सने, निन्दायाम्। दोष लगाना, निन्दा करना, दुःखित होना। (गर्हते - निन्दति। गर्हकः, गर्हमाणः - निन्दकः। गर्हयति - निन्दयति। गर्हन्, गर्हकः - निन्दके। गर्हणम्, गर्हणीयम् - निन्दायाम्)।

गल् (गलति, गालयति, गालयते) = आस्वादने, अदने, गतौ। निगलना, खाना, भक्षण करना। (गलति - निगरति। गलः, गालम् - मत्स्यनिग्रहणे

प्रयुज्यमानं कण्टकम्)।

गल् (गलयते) = स्रवणे। टपकना। अव - नीचे गिरना। नि - निगलना। वि - जाना, निकट आना, सहायता करना। परि - टपकना, डूबना, नष्ट होना, गल जाना।

गल्भ (गल्भते) = गतौ, ज्ञाने, चातुर्ये, अधाष्ट्र्ये, दृढतायाम्, दाढ्र्ये, धैर्ये। जाना, ज्ञान होना, चतुर होना, धैर्य रखना, साहस करना। (गल्भते - जानाति। गल्भः, गल्भकः, गल्भानः - विदुषि। गल्भनम्, गल्भनीयम्, गल्भिः, गल्भुः - चातुर्ये)।

गल्ल (गल्लति) = गतौ, क्रोधेन दन्तैः अधरम् दशने। जाना, क्रोध में दाँतों से होंठ काटना। (गल्लति - क्रोधेन दन्तैः अधरम् दशति)।

गल्ह (गल्हते) = कुत्सने, निन्दायाम्। दोष लगाना, निन्दा करना। (गल्हते - निन्दति। गल्हकः, गल्हुकः - निन्दकः। गल्हिः, गल्हुः, गल्हनम्, गल्हनीयम् - निन्दायाम्)।

गवेष् (गवेषयति, गवेषयते, गवेषते) = मार्गणे, अन्वेषणे। ढूँढ़ना, पता लगाना, खोजना, प्रयत्न करना। (गवेषयति - अन्वेषयति। गवेषयन् - अन्वेषकः। गवेषणम् - अन्वेषणम्)।

गह् (गहयति) = भीषणे, हिंसागत्योः, घनत्वे। घना होना, निबिड़ होना। (गहति - भीषयति। गहनम् - वनम्)।

गा (गाते) = गतौ, गाने। जाना, गमन करना, गायन करना। (गायते - गानम् करोति। गायकः, गायमानः - गायकः। गाः, गयः, गायनम्, गायनीयम्, गायम् - गाने, संगीते)।

गा-जिगा (जिगाति) = स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना।

गाढ् (गाढति) = तीव्रगतौ, शीघ्रगत्याम्। तीव्र गति से चलना। (गाढति - शीघ्रम् चलति। गाढम् - शीघ्र-गमनम्)।

गाथ् (गाथते) = प्रतिष्ठालिप्सयोः ग्रन्थे च, आस्पदे, कथाश्रावणे च।

प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनाना। (गाथते - कथां श्रावयति। गाथमानः - कथायाः श्रावकः। गात्, गाथनम्, गाथा, गाथनीयम्, गाथ्यम् - कथायाम्)।

गाध् (गाधते) = प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च, आस्पदे, कथाश्रावणे च। प्रतिष्ठा होना, ग्रन्थ बनाना, कथा सुनना, ढूँढ़ना, ठहरना, रहना, ग्रन्थ बनाना। (गाधते - प्रतिष्ठितो भवति। गात्, गाध्, गाधनम्, गाधा, गाधिः - कथानके। गाधमानः - कथायाः श्रावकः)।

गाह् (गाहते) = विलोडने, नाशने, मर्म-भेदे च। विलोडन करना, फेरना, हिलाना, नष्ट करना, मर्म भेद करना। अव - स्नान करना, अवगाहन करना। वि - स्नान करना, कांपना। (गाहते - विलोडते। गाहकः, गाहमानः - विलोडकः। गाहिः, गाहा, गाहनम्, गाहनीयम्, गाह्यम् - विलोडन-कर्मणि)।

गिण् (गेणति) = मापने, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। मापना, शब्द करना। (गेणति - मापयति। गेणुः - शाब्दिकः, मापकः)।

गिण्ड (गिण्डति) = जन्मनि, जनने। जन्म लेना, जनना। (गिण्डति - उत्पद्यते। गिण्डा - जन्म)।

गिल् (गिलति, गेलति) = लेहने, अदने, भक्षणे। निगलना, खाना, भक्षण करना। (गिलति - लिह्यति। गेलति - निगरति। गिलः - निगरिता। गिलनम् - निगरणम्)।

गिल्ल (गिल्लति) = लेहने, अदने, भक्षणे। निगलना, खाना, भक्षण करना। (गिल्लः - लेहकः। गिल्लनम् - लेहनम्। गिल्लनीयम् - लेढुं योग्यम्)।

गील् (गीलति) = अदने, भक्षणे। निगलना, खाना, भक्षण करना। (गीलति - निगरति। गीलः - निगरिता। गीलिः - निगरणम्। गीलुः - मुखस्थं द्रवम् (जलम्)।

गृ (गरति) = सेचने, घर्षणे। सींचना, गीला करना, घर्षण करना। (गरति - घर्षयति)।

गृ (गारयते) = विज्ञाने, गत्याम्, निगरणे, वमने, बहिर्गमने। समझना, जानना, निगलना, डकारना, वमन करना। (गिरति - गच्छति, निगिलति। उद्गारः, उद्गरणम्, उद्गिरणम्, उद्गीर्णम् - बहिरागमने (डकार, वमन)।

गृज (गृजति, गर्जति) = शब्दे, शब्दने, मुखेन सीत्कारे। गर्जना करना, पुकारना, सीटी बजाना। (गृजः - सीत्कारवत् (सीटी के समान) शब्दकर्ता पक्षिविशेषः)।

गृञ्ज (गृञ्जति) = शब्दे, शब्दने, मुखेन सीत्कारे। गर्जना करना, पुकारना, सीटी बजाना। (गृञ्जति – मुखेन सीत्कारं करोति (सीटी बजाता है) गृञ्जः - सीत्कारवत् (सीटी के समान) शब्दकर्ता पक्षिविशेषः)।

गृध-गर्ध (गर्धयति, गर्धयते) = लोभे, अभिकांक्षायाम्। लोभ करना, चाहना, आशा करना। (गर्धयति - गृध्यति, अभिकांक्षति। गर्धः - गर्धकः - अभिलाषुकः। गर्धनम् - अभिकांक्षा, लोभः)।

गृध (गृध्यति) = लोभे, अभिकांक्षायाम्, बालाकांक्षायाम्। लोभ करना, चाहना, आशा करना। (गृध्यति - बालाकांक्षाविष्टो भवति। गृद्धः, गृद्धवान्, गर्धकः, गर्धा, गृध्नुः - बालाकांक्षिणि। गर्धनम्, गर्धनीयम्, गृदधम्, गृद्धिः, गर्धव्यम्, गार्ध्यम्, गर्ध्यम्, गृत् - बालाकांक्षायाम्)।

गृभ् (गृभ्णाति) = ग्रहणे। ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना। (गृभ्णाति - गृह्णाति, ग्रहणम् करति)।

गृह (गृह्यते, गृह्णाति) = ग्रहणे। लेना, स्वीकार करना। (गृह्यते - गृह्णाति, ग्रहणम् करति)।

गॄ (गिरति-गिलति) = निगरणे, बहिर्गमने, वमने। खाना, निगलना। (गिरति - निगिलति। उद्गारः, उद्गरणम्, उद्गिरणम्, उद्गीर्णम् - बहिरागमने (डकार, वमन में)। गर्तम् - निगरिता, गुहा वा)।

गॄ (गृणाति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना। नि, उत् - वमन करना।(गृणाति - शब्दयति। गर्णन्, गर्ता - शब्दयिता। गीर्णम्, गूर्णम्, गूरणीयम्, गूर्यम्, गूरम् - शब्दने। आगरम् - सार्वत्रिकः शब्दः)।

गॄ (गरयति, गारयते) = विज्ञाने, वैभवे। वैभव होना, समझना, जानना, समझाना। समुत् - उच्च स्वर से पुकारना, ऊपर फेंकना।(गरयति - वैभवयुतो भवति। गराणः - वैभवी। गारणम् - वैभवम्)।

गु (गुवति) = मल–त्यागे, पुरीषोत्सर्गे। मल त्यागना।

गु (गवते) = मनने, आशंसने, अव्यक्ते शब्दे, शब्दे च। अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, मनन करना।(गवते - आशंसते, मन्यते। गः, गवकः, गवमानः - आशंसकः। मन्ता। गुः, गविः, गव्यम्, गाव्यम्, गवनम्, गवनीयम् - मनने)।

गुज (गुजति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, गुञ्जा-रव करना, गूंजना। (गुजति - शब्दम् करोति (गूंजता है)। गुजन्, गोजकः, गोजा - शब्द-कर्तरि)।

गुज् (गोजति) = अव्यक्ते शब्दे, शब्दे, शब्दने। अस्पष्ट बोलना, शब्द करना।

गुज् (गोजति) = स्तेयकरणे, चौर्ये। चुराना। (गोजति - मुष्णाति)।

गुञ्ज (गुञ्जति) = शब्दे, शब्दने, अव्यक्ते शब्दे, आकर्षणे। अस्पष्ट बोलना, शब्द करना, गुञ्जा-रव करना (भौंरे की ध्वनि)। (गुञ्जति - गुञ्जा-रव करति, आकर्षयति)।

गुट् (गुटति) = गतौ, गमने। जाना।

गुड् (गुडति) = रक्षायाम्। रक्षण करना, पालन करना। (गुडति - रक्षति। गोडः, गोडकः - रक्षके। गोडा - रक्षिका)।

गुड् (गोडति) = माधुर्ये। मधुर होना।(गोडति - मधुरो भवति। गुडम् - मधुरम्, मिष्टम् द्रव्य विशेषः)।

गुण् (गुणयति, गुणयते) = गणनायाम्, गुणने, आमन्त्रणे, अभिमुखं भूत्वा वार्ताकरणे। बुलाना, आमन्त्रण करना, उपदेश करना, गुणा करना, गुणन करना, विचार-विमर्श करना।(गुणयति - गुणनं करोति। गुणयन् - गुणनकर्ता। गुणनम्, गुणनीयम्, गुणकम् - गणनायाम्)।

गुण् (गोणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (गोणति - शब्दयति। गुणः - शब्दः, गुणः)।

गुण्ठ (गुण्ठति, गुण्ठयति, गुण्ठयते) = वेष्टने रक्षणे आलस्ये तृषायां च। तृषा होना, घेरना, आवरण डालना, रक्षा करना। (गुण्ठति - तृष्यति। गुण्ठः - तृषा)।

गुण्ठ (गुण्ठति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां, अवतरणे च। हिंसा करना, गति करना, अवतरण करना, उतरना।(गुण्ठति - अवतरति। गुण्ठिः - गर्तः, तडागः)।

गुण्ठ (गुण्ठति, गुण्ठयति, गुण्ठयते) = वेष्टने रक्षणे आलस्ये तृषायां च। घेरना, आच्छादन डालना, रक्षा करना। (गुण्ठति - तृष्यति। गुण्ठः - तृषा)।

गुण्ड (गुण्डयति, गुण्डयते) = रक्षणे वेष्टने परिभ्रमणे च। घेर लेना, घेरना, पीसना, पूर्ण करना, संरक्षण करना।(गुण्डयति - वेष्टयति। गुण्डः, गुण्डी, गुण्डुः - रक्षकः)।

गुद् (गुदति, गोदते) = क्रीडायाम्। खेलना, क्रीडा करना।

गुध् (गोधते) = क्रीडायाम्। खेलना, क्रीडा करना।

गुध् (गुध्यति) = परिवेष्टने। लपेटना, घेरना।(गुध्यति - वेष्टयति। गुध्यन्, गोधः, गोधकः - वेष्टके। गुध्या, गोधनम्, गोधनीयम्, गोध्यम्, गोधितव्यम्, गुद्धिः, गुद्धम् - वेष्टने)।

गुध् (गुध्नाति) = रोषे, कोपे। क्रोध करना। (गुध्नाति - रुष्यति, कुप्यते। गोधन्, गोधकः - कोपके। गोधनम्, गोधनीयम् - कोपने)।

गुन्थ (गुन्थति) = गतौ, कौटिल्ये, कुटिलतायाम्। जाना, टेढ़ा जाना, वक्र होना, टेढ़ा होना, वक्र करना, टेढ़ा करना, दुष्टता करना, नमन करना, नमाना। (गुन्थति - वङ्खति)।

गुन्द्र (गुन्द्रयति, गुन्द्रयते, गुन्द्रते) = अनृतभाषणे। अनृत बोलना, झूठ कहना।

गुप् (गुप्यति) = व्याकुलत्वे। व्याकुल होना, भ्रान्त होना, व्याकुल करना, भ्रान्त करना। (गुप्यति - व्याकुलो भवति। गुप्तः, गुप्तवान्, गोप्ता, गोपः, गोपकम् - व्याकुले। गुप्तम्, गुप्तव्यम्, गोपनम्, गोपनीयम्, गोप्यम् - व्याकुलत्वे)।

गुप् (गोपति, गोपयति, गोपायति, गोपायते) = रक्षणे, पालने, भासार्थः। प्रकाश होना, चमकना, रक्षा करना। (गोपयति, गोपायति - रक्षति। गोपः - रक्षकः। गोपनम्, गोपनीयम् - रक्षणम्)।

गुप् (जुगुप्सते) = गोपनकुत्सनयोः, रक्षायाम्, निन्दने। लुकाना, छिपाना, दोष लगाना, निन्दा करना। (जुगुप्सते - निन्दति, कुत्सयति। गुप्, गोपः, जुगुप्सकः, जुगुप्समानः - कुत्सायाम्)।

गुफ् (गुफति) = ग्रन्थे, सन्दर्भे। गूंथना, गुम्फन करना, रचना करना। (गुफति - ग्रथ्नाति, गुम्फति, संयोजयति। गोफन्, गोफकः - ग्रन्थके। गोफनम्, गोफनीयम् - ग्रन्थने)।

गुम्फ (गुम्फति) = संयोजने, ग्रन्थे, सन्दर्भे। गूंथना, गुम्फन करना, संयोजन करना, रचना। (गुम्फति - संयोजयति (गूँथता है)। गुम्फः, गुम्फन्, गुम्फकः - संयोजकः। गुम्फनम्, गुम्फनीयम् - सम्मिश्रणे, संयोजने)।

गुर् (गुरते, गूरयते, गोरयते) = उद्यमने। प्रयत्न करना, उद्योग करना। आ - निन्दा करना। अव - निन्दा करना। उप - समीप बुलाना। (गुरते -उद्योगम् करोति। गूरयते - उद्योगम् करोति, प्रयतते। गुरुः - उद्योगी, आचार्यः। गुर्वी - उद्योगिनी)।

गुर्द (गूर्दते) = नर्तने, क्रीडायाम्। नृत्य करना, क्रीडा करना, खेलना। (गुर्दते - नृत्यति। गुर्दः, गुर्दकः, गुर्दमानः - नर्तके। गुर्दम् - गुदम्, गुर्दनम्, गुर्दनीयम्, गुर्दिः - नर्तने)।

गुर्द (गुर्दयति, गुर्दयते) = निकेतने, आमन्त्रणे। रहना, वास करना, बसना, आमन्त्रण करना, बुलाना।

गुर्व (गुर्वति) = उद्यमे, उद्योगे। प्रयत्न करना, उद्योग करना। (गुर्वति - उद्यमम्, कार्यम् वा करोति। गुर्वः - उद्योग-कर्ता। गुर्वणम् - कर्मः। गुर्वी - कर्मकरः)।

गुल् (गोलति) = अदने, भक्षणे। खाना, निगलना। (गोलति - निगरति। गुलः - दन्तः। गुलिका - ग्रासः)।

गुल्फ (गुल्फति) = गतौ, विस्तारे, जानु-गत्याम्। घुटने के बल चलना, विस्तार करना, फैलाना। (गुल्फः - विस्तारः)।

गुल्ल (गुल्लति) = अदने, भक्षणे। खाना। (गुल्लति - अत्ति)।

गुह् (गूहति, गूहते, गोहति, गोहते) = हिंसागत्योः, संवरणे, आच्छादने। हिंसा करना, गति करना, छिपाना, वस्त्रादि से ढांकना। (गूहति, गूहते - आच्छादयति। गुहा - आच्छादः, कन्दरा वा (गुफा)। गूहन्, गूहकः, गूहमानः - आच्छादकः। गूह्यम् गुह्यकः, गुह्णम् - आच्छादः, रहस्यम् वा। उपगूहनम् - देहेन आच्छादनम्, आलिङ्गनम् वा)।

गू (गुवति) = पुरीषोत्सर्गे, मलविसर्जने। मल विसर्जन करना। (गुवति - हदति, मलम् विसर्जति। गूथम् - मलम्)।

गूड् (गोडति) = निवासे, गृहे। रहना, निवास करना, घर बनाना। (गोडति - निवसति। गूडम् - निवासस्थानम्। गूडुः - निवासस्थानम् (नीडम्)।

गूर् (गूरयते) = उद्यमने, भक्षणे। प्रयत्न करना, उद्योग करना, भक्षण करना, खाना।

गूर् (गूर्यते) = ताडने, हिंसागत्योः। मार डलना, दुःख देना, जीर्ण

होना, पुराना होना, जाना, चलना। आ - निन्दा करना। अव - निन्दा करना। उप - समीप जाना। (गूर्यते - ताडयति। गूराणः, गूरः, गूरकः, गूर्णः, गूर्णवान् - ताडके। गूरणम्, गूरणीयम्, गूर्यम्, गूर्तव्यम् - ताडने)।

गूर् (गुरते) = उद्यमे, उद्योगे। प्रयत्न करना, उद्योग करना। (गुरते - उद्योगम् करोति। गुरुः - उद्योगी, आचार्यः)।

गूर्द (गूर्दते) = क्रीडायाम्। क्रीडा करना, खेलना।

गूल् (गूलति) = अदने, भक्षणे। खाना। (गूलति - भक्षति। गूलम् - भक्ष्यम्, गुडम् वा)।

गूह् (गूहति) = सहने, हिंसागत्योः। सहन करना, हिंसा करना, जाना। (गूहति - सहते। गूहनम् - सहनम्)।

गेणृ (गेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, लेखने, गत्याम् प्रेरणे सहने च। गति करना, प्रेरणा करना, सहना। (गेणति - लिखति)।

गेप् (गेपते) = कम्पने, गतौ, चलने, लघुकरणे। कांपना, हिलना, जाना, स्थलान्तर करना, लघु होना। (गेपते - लघुः भवति। गेपः, गेपकः, गेपानः - लघौ (वामने)। गेपिः, गेपुः, गेपनम्, गेपनीयम् - लघुकरणे)।

गेव् (गेवते) = सेवने, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, सेचन करना, घर्षण करना। (गेवते - घर्षति। गेवकः, गेवमानः - घर्षके। गेवनम्, गेवनीयम् घर्षणे)।

गेष् (गेषते) = अन्विच्छायाम्। ढूँढ़ना, पता लगाना।

गेह् (गेहति) = हिंसागत्योः, कम्पने, गम्भीरे। हिंसा करना, गति करना, कम्पन करना। (गेहति - कम्पयति। गेहनम् - गम्भीरम्)।

गै (गायति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, गाना। उत्, प्र - उच्च स्वर से गाना या उच्च स्वर से कहना। वि - निश्चयपूर्वक कहना। (गायति - गानम् करोति। गायकः, गायिता - गायके। गायित्री, गायत्री - गानम्, छन्दः वा)।

गोज् (गोजति) = कष्टे। कष्ट होना। (गोजति - कृच्छ्रे पतति। गोजुः - कृच्छ्रम्)।

गोञ्ज (गोञ्जति) = कष्टे। कष्ट होना। (गोञ्जति - कृच्छ्रे पतति। गोजुः - कृच्छ्रम्)।

गोड् (गोडति) = बन्धने। बाँधना। (गोडति - बन्धयति। गोडा - भित्तिः)।

गोम् (गोमयति, गोमयते) = उपलेपने, संश्लेषणे। लीपना, पोतना। (गोमयति - उपलिपति। गोमनम् - लेपनम्)।

गोष्ट (गोष्टते) = संघाते। मिलकर रहना, एकत्र होना, बटोरना।

गोष्ठ (गोष्ठते) = संघाते। मिलकर रहना, एकत्र होना, बटोरना।

गोह् (गोहति) = गोपने, रक्षणे, पालने, भासार्थः। प्रकाश होना, चमकना, बोलना, रक्षा करना। (गोहति - गोपयति)।

ग्रथ् (ग्रथ्नाति) = सन्दर्भे, संयोजने। ग्रन्थ लिखना, सन्दर्भ लगाना। (ग्रथ्नाति - संयोजयति)।

ग्रन्थ (ग्रन्थयति, ग्रन्थते) = सन्दर्भे, संयोजने। ग्रन्थ लिखना, सन्दर्भ लगाना। (ग्रन्थयति - संयोजयति। ग्रन्थते - ग्रन्थम् लिखति। ग्रन्थिकः - संयोगः। ग्रन्थिः - संयोजिका (गाँठ)। ग्रन्थः, ग्रन्थकः, ग्रन्थमानः - सन्दर्भ-लेखके। ग्रन्थिः, ग्रन्थनम्, ग्रन्थनीयम्, ग्रन्थम्, ग्रन्था - सन्दर्भे)।

ग्रन्थ (ग्रन्थयति) = बन्धने। बांधना, गांठ लगाना। उत् - छोड़ देना, मुक्त करना।

ग्रन्थ (ग्रन्थयति) = अतिहासे, सन्दर्भे, मेलने। अधिक हँसना, सन्दर्भ लगाना, मेल होना। (ग्रन्थयति - अतिहसति। ग्रन्थन्, ग्रन्थकः - अतिहासके। ग्रन्थः, ग्रन्थनम्, ग्रन्थनीयम् - अतिहासे)।

ग्रस् (ग्रासयति, ग्रासयते) = ग्रहणे। घेर लेना, हरण करना, लेना, निगलना। (ग्रसयति - गृह्णाति। ग्रासः - ग्रहणम्)।

ग्रस् (ग्रसते) = अदने, भक्षणे। खाना। (ग्रसते - भक्षति। ग्रसकः, ग्रसमानः - खादकः। ग्रसिः, ग्रसुः, ग्रासः, ग्रसनम्, ग्रसनीयम् - अदने)।

ग्रह् (गृह्णाति, गृह्णीते) = उपादाने, स्वीकारे, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना। अनु - कृपा करना, अनुग्रह करना। अव - अटकाना। उत् - विश्वास करना। उप - कृपा करना, भरना, प्रतिबन्ध करना, अटकाव करना। परि - घरना, पकड़ना, लेना। प्रति - अनुमोदन देना, गले लगाना, आलिङ्गन करना, जीतना, प्रतिग्रह करना, लेना, अंगीकार करना। वि - झगड़ना, अलग अलग करना। सम् - बटोरना, एकत्र करना। (गृह्णाति, गृह्णीते - स्वीकरोति (पकड़ता है)। गृह्णन्, गृहीता, ग्रहीता, ग्राहकः - स्वीकर्ता। ग्रहः, ग्रहणम् - स्वीकारणम्। गृहाः - दाराः। गृहीतम्, गृहयम्, ग्राहयम्, गृहीतव्यम्, ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम् - ग्रहणे)।

ग्राम् (ग्रामयति, ग्रामयते) = आमन्त्रणे, संघाते, मन्त्रणायाम्। बुलाना, बुद्धि पूर्वक कहना, एकत्र होना। (ग्रामयति, ग्रामयते = आमन्त्रयति, ग्रामः = एकत्र वासाः)।

ग्रु (ग्रुवते) = शब्दे। शब्द करना।

ग्रुच् (ग्रोचति) = स्तेयकरणे, चौर्ये। चुराना, चोरी करना। अव - चादर आदि से मुख छिपाना। (ग्रोचति - चोरयति। ग्रोचः - चौर्यम्)।

ग्रुञ्च (ग्रुञ्चति) = गतौ, गमने, विप्रलम्भने। जाना, विप्रलम्भन होना। (ग्रुञ्चति - विप्रलम्भते। ग्रुञ्चः - विप्रलम्भनम्)।

ग्रेव् (ग्रेवति) = सेचने, घर्षणे, निगरणे। निगलना। (ग्रेब्, ग्रेवः, ग्रेवकः, ग्रैव्यः, ग्रेवमानः - निगरीतरि। ग्रैविः, ग्रेविः, ग्रेवुः, ग्रेवा, ग्रेवणम्, ग्रेवणीयम् - मुखस्थे द्रव्ये, ग्रासः)।

ग्लस् (ग्लसते) = अदने, भक्षणे। खाना, भोजन करना। (ग्लसते - अत्ति। ग्लसकः, ग्लसमानः - भोजकः। ग्लसिः, ग्लसुः, ग्लस्तम्, ग्लस्तिः, ग्लसनम्, ग्लसनीयम् - भोजने)।

ग्लह् (ग्लहति, ग्लहते, ग्लहयति) = ग्रहणे। लेना, स्वीकार करना।

ग्ला (ग्लपयति, ग्लापयति) = ग्लाने, ग्लापने, कष्टे, हर्षक्षये। मुरझाना, म्लान होना, ग्लानियुक्त होना, जम्हाई लेना।

ग्लुच् (ग्लोचति) = कूर्दने, स्तेयकरणे। चोरी करना, कूदना। (ग्लोचति - कूर्दते। ग्लोचः - कूर्दनम्)।

ग्लुञ्च (ग्लुञ्चति) = निगूहे, रहस्ये, गतौ, गमने। जाना, स्थानान्तर करना। (ग्लुञ्चति - निगूहति। ग्लुञ्चः - रहस्यम्)।

ग्लेप् (ग्लेपते) = पराधीने, दैन्ये कम्पने, गतौ चलने च। पराधीन होना, दरिद्र होना, जाना, हिलना, कांपना। (ग्लेपते - पराधीनो भवति। ग्लेपः, ग्लेपकः, ग्लेपानः - पराधीनभवितरि। ग्लेपिः, ग्लेषुः, ग्लेपनम्, ग्लेपनीयम् - पराधीनभवने)।

ग्लेव् (ग्लेवते) = श्वयथौ, श्वयिते, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, फूलना, सेचन करना, घर्षण करना। (ग्लेवते - श्वयितरि। ग्लेव्, ग्लेवः, ग्लेवकः, ग्लेव्यः, ग्लैव्यः, ग्लेवमानः - श्वयितरि। ग्लेवनम्, ग्लेवा, ग्लेवनीयम्, ग्लेविः, ग्लेवुः - श्वयथौ)।

ग्लेष् (ग्लेषते) = अन्विच्छायाम्, अन्वेषणे। ढंढना, शोध करना। (ग्लेषते - अन्विषति। ग्लेषकः, ग्लेषमाणः - अन्वेषकः। ग्लेष्, ग्लेषणम्, ग्लेषणीयम् - अन्वेषणे)।

ग्लै (ग्लायति) = कष्टे, हर्षक्षये। म्लान होना, ग्लानियुक्त होना, जम्हाई लेना। (ग्लायति - कष्टम् भजते। ग्लैः, ग्लानिः, ग्लानम् - कष्टे)।

ग्लै (ग्लायति) = हर्षे। हर्ष होना, प्रसन्न होना। (ग्लायति - हर्षितो भवति। ग्लौः - हर्षः)।

ग्लैप् (ग्लैपते) = याचने, दैन्ये, दाने। याचना, मांगना, दीन होना, दान करना। (ग्लैपते - याचते। ग्लैप्, ग्लैपकः, ग्लैपमानः - याचके। ग्लैपिः, ग्लैपुः, ग्लैपनम्, ग्लैपनीयम् - याचने)।

(घ)

घ (अव्यय, निपात) = ही।

घग्घ (घग्घति) = हसने। हँसना, उपहास करना।

घघ् (घघति) = हसने। हँसना, उपहास करना।

घट् (घटयति, घटते) = व्यवहारे, भुवि, चेष्टायाम्। होना, रचना करना।(घटयति - व्यवहरति। घटते - व्याप्रियते। घटकः, घटमानः, घट्, घटिः, घटः, घटा, घटनम् - भविता)।

घट् (घाटयति, घाटयते) = संघाते, सहभावे संग्रामे। घोंटना, हिलाना, बटोरना, एकत्र करना, मार डालना। उत् - उद्घाटन करना।(घाटयति - सह भवति, युध्यते वा)।

घट् (घटयति, घटयते, घाटयति) = अल्पी भुवि, भासार्थः। अल्प होना, चमकना, प्रकाशित होना।(घाटयति - अल्पी भवति)।

घट् (घटते, घटयति) = चेष्टायाम्, व्यवहारे, व्यापारे। चेष्टा करना, व्यवहार करना, व्यापार करना।(घटते - व्याप्रियते। घटयति - व्यवहरति। घटकः, घटमानः - भविता। घट्, घटिः, घटः, घटा, घटनम्, घटनीयम्, घट्यम्, घाट्यम् - व्यापारे। घटिका - घटी। घटः - पात्रम्, कुम्भः, देहः वा। घटकः - घटम्। घटनम्, घटनीयम् घट्यम्, घाट्यम्, उद्घाटः - घटनायाम्)।

घट्ट (घट्टते, घट्टयति, घट्टयते) = चलने, कम्पने। जाना, स्थानान्तर करना, कम्पन करना। परि - फैलाना, घोटना। वि - मांजना, धोना, बिगाड़ना।(घट्टयति - कम्पते)।

घट्ट (घट्टति) = कठोरे, खण्डने। कठोर होना, खण्डन करना। (घट्टति - कठोरः भवति। घट्टः, घट्टिः - कठोरः)।

घण् (घणोति-घणुते) = घ्राणे, दीप्तौ, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। चमकना, प्रकाशित होना, शब्द करना।

घणु (घणोति, घणुते) = घण्टानादे। घण्टा-ध्वनि करना।(घणोति, घणुते - घण्टानाद इव ध्वनयति। घणन्, घणानः, घणकः - घण्टानादकर्तरि)।

घण्ट (घण्टति, घण्टयति, घण्टयते) = भासार्थः, भाषार्थः, निर्णये, निश्चये। चमकना, प्रकाशित होना, शब्द करना, बोलना, निश्चय करना, निर्णय करना।(घण्टति - निश्चिनोति, निर्णयं करोति। घण्टयति - कथयति, निघण्टुः - निर्णयः)।

घरट्ट (घरट्टति) = हिंसायाम्, मारणे। हिंसा करना, मार डालना। (घरट्टति - मारयति। घरट्टकः - घातकः। घरटः, घरट्टः - पेषणी (चक्की)।

घर्ण (घर्णति) = दर्पे, अभिमाने। दर्प होना, अभिमान होना।(घर्णति - मत्तो भवति)।

घर्ब (घर्बति) = दर्पे, अभिमाने, गतौ। दर्प होना, अभिमान होना, जाना।(घर्बम्, घर्बणम्, घर्बु, घर्बि - स्वाभिमाने)।

घष् (घषते) = घर्षणे। घर्षण करना, घिसना।

घस् (घसति) = अदने। खाना।

घंस (घंसते) = सेचने। सींचना, प्रोक्षण करना।

घा (अव्यय, निपात) = ही।

घात् (हन्) (घातति, घातयति) = हिंसायाम्। मारना, हिंसा करना।

घिणु (घिणोति, घिणुते) = छिङ्ग-ध्वनौ। छींकना, छींकने की ध्वनि करना, (घिणकः - छिङ्ग-ध्वनिकर्ता। घिण्, घिणः, घेणः - छिङ्ग-ध्वनौ)।

घिण्ण (घिण्णते) = विभागे, ग्रहणे। विभाग करना, लेना।(घिण्णते - विभजति। घेण्णुः। घिण्णकः, घिण्णनः - विभजितरि। घिण्णनम्, घिण्णनीयम् - विभागे)।

घृ (घरति, घारयति, घारयते) = प्रस्रवणे, सेचने, घर्षणे। गीला

करना, तरडा देना, सींचना, बूंद बूंद टपकना।(घरति - सिंचति।घर्तव्यम्, घरणीयम्, घार्यम् - सिञ्चनयोग्ये द्रव्ये)।

घृ (जिघर्ति) = क्षरणदीप्त्योः, नाशे, औष्ण्ये, प्रकाशे च। टपकना, क्षरित होना, चमकना, प्रकाशित होना। (जिघर्ति - नाशयति, प्रकाशते। जघरन्, जघरः, जघर्ता, घृतः, घृतवान्, घरः, घारः - प्रकाशे, नाशके। घृतिः, घृतम्, घर्तव्यम्, घरणम्, घरणीयम्, घर्यम्, घार्यम् - प्रकाशे, नाशने। घर्मः - औष्ण्यम्)।

घृण् (घूर्णति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, भ्रमणे। चक्राकार घूमना, लोटना, शब्द करना।(घूर्णति - भ्रमति। घूर्णः - वक्रता (घुमाव)।

धृण् (घृणोति, घर्णोति, घृणुते, घृर्णुते) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना।(घृणोति, घृणुते - प्रकाशते। घृणकः - प्रकाशकः। घृणः - प्रकाशः)।

घृण्ण (घृण्णते) = गतौ, घृण्णने, अपनोदे, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना, स्वीकार करना, धक्का देना।(घृण्णते - अपनुदति (धक्का देता है)। घृण्णः, घृण्णकः, घृण्णानः, घृण्णनम्, घृण्णनीयम् - अपनोदने, (धक्का)।

घृष् (घर्षति) = संघर्षे। पीसना, कूटना, घिसना।(घर्षति - संघर्षम् करोति। घर्षकः, घर्षिका, घृष्टा - संघर्षके। घृषिः घृष्टिः, घृषत्, घर्षणम्, घृषाणम् - संघर्षे, आतपे सूकरे वा। घृष्टम् - संघृष्टम्)।

घु (घवते) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना।(घवते - हुँकरोति। घवकः, घवमानः - हुँकर्ता। घुः - हुँकारः। घः, घिवः, घव्यम्, घाव्यम्, घवनम्, घवनीयम् - हुँकारकर्मणि, घः - हुँकारः, मेघो वा)।

घुज् (घोजति) = नियन्त्रणे, स्तेयकरणे, चौर्ये। नियन्त्रण करना, चुराना।(घोजति - चोरयति, नियन्त्रयति। घोजुः - नियन्त्रणम्)।

घुट् (घुटति) = प्रतिघाते, प्रतिकारे, प्रतिबन्धे, रक्षणे। मारना, घुटते रहना, प्रतिकार करना, प्रतिघात करना, प्रतिबन्ध लगाना, रक्षण करना।

(घुटति - प्रतिघातयति (बदले में मारता है)। घुटः, घोटः, घोटकः - प्रतिघातके)।

घुट् (घोटते) = परिवर्तने, परावर्तने, नृत्ये। लौटना, पीछे आना, परिवर्तन करना, नृत्य करना। (घोटते - नृत्यति। घोटकः, घोटमानः, घोटिका, घुटिका, घुट्, घुटिः, घोटनम्, घोटनीयम्, घुट्यम्, घोट्यम्, घौटयम्, घोटा - नृत्ये)।

घुट्ट (घुट्टते) = चलने, गतौ। जाना, चलना।(घुट्टते - चलति। घुट्टः, घुट्टकः, घुट्टमानः - गन्तरि। घुट्टिः, घुट्टुः, घुट्टनम्, घुट्टनीयम् - चलने)।

घुड् (घुडति) = प्रतिघाते। प्रतिकार करना, मार डालना।

घुण् (घुणति) = भ्रमणे। चक्राकार घूमना, लोटना। (घुणति - भ्राम्यति। घोणन्, घुणन्, घोणकः - भ्रमणकर्ता। घुणः - भ्रमणशीलः, क्रिमिः वा। घुणिः, घोणनम्, घोणनीयम् - भ्रमणकर्ता)।

घुण् (घुणति) = गन्धने, ग्रहणे। ग्रहण करना, गन्ध लेना, सूँघना। (घोणति - जिघ्रति। घोणा - घ्राणः, नासिका। घोणनम्, घोणनीयम् - ग्रहणे)।

घुण्ण (घुण्णते) = पीडने, ग्रहणे। पीडा करना, लेना। (घुण्णते - पीडयति। घुण्णा, घुण्णकः, घुण्णानः, घुण्णनम्, घुण्णनीयम् - पीडयितरि)।

घुर् (घुरति) = भीमार्थशब्दयोः, भये, भयप्रदे, शब्दे च। भयंकर होना, शब्द करना, घुर्राना, घूरना। (घुरति - बिभेति, शब्दयति। घोरी, घोरकः, घोरन् - भयप्रदे। घोरम्, घोरणम्, घोरणीयम् - भये)।

घुर्द (घूर्दते) = शब्दे, ध्वनौ, क्रीडायाम्। शब्द करना, खेलना। (घूर्दते - ध्वनि करोति। घुर्दः, घुदकः, घुर्दमानः - शब्दकर्तरि। घुर्दः, घुर्दा, घुर्दनम् - मेघशब्दे)।

घुर्व (घुर्वति) = निकृन्तने, हिंसायाम्। हिंसा करना, काटना।(घुर्वति

- निकृन्तति। घुर्वकः - सिंहः)।

घुष् (घोषति) = अविशब्दने, शब्दे, ध्वनौ। चुपके काम करना, शब्द करना, घोष करना।(घोषति - शब्दयति। घोषः, घोषणम् - ध्वनिः, उच्चैः ध्वनिना विज्ञापनम्)।

घुष् (घोषयति) = उत्सर्गे, सामान्ये। सामान्य होना, उत्सर्ग करना। (घोषयति - सामान्यं भवति)।

घुष् (घोषयति, घोषयते) = विशब्दने, उच्चैः शब्दने, घोषणायाम्। मन में विचार कर कहना, प्रशंसा करना, घोषित करना, विशब्द करना।आ - मिलकर रोना, ढिंढोरा पीटना।(घोषयति - विशेषेण उच्चैः शब्दयति, घोषणां करोति। घोष्, घोषकः - विशब्दयिता। घुष्टिः, घोषः, घोषणम्, घोषणीयम्, घोषा - उच्चैर्वदनम् - उच्चैः शब्दने, घोषणायाम्)।

घुष् (घुषते) = कान्तिकरणे, अन्धकारनिवारणे। स्वच्छ करना, चमकाना। (घुषते - अन्धकारम्, विस्मरणम्, स्खलनम् वा निवारयति, त्यजति, अपमार्ष्टि। घुषकः, घुषमाणः - विस्मरणस्य, अन्धकारस्य, स्खलनस्य वा त्यागी। घुषिः, घुष्टिः, घुष्टम्, घुषणम्, घुषणीयम्, घुष्यम् - स्खलनस्य परित्यागे)।

घुंष (घुंषते) = कान्तिकरणे। स्वच्छ करना, चमकाना।

घूर् (घूर्यते) = खटखटाकरणे, हिंसा-वयोहान्योः। हिंसा करना, खटखटा करना, दुःख देना, वृद्ध होना, पुराना होना।(घूर्यते - खटखटा करोति। घूराणः, घूरकः, घूर्णः, घूर्णवान् - खटखटायकः। घूरणम्, घूरणीयम्, घूर्यम्, घूर्ति - खटखटाकरणे)।

घूर्ण (घूर्णते, घूर्णति) = भ्रमणे। चक्राकार घूमना।(घूर्णते - भ्रमति। घूर्णकः, घूर्णानः - भ्रमणकर्तरि। घूर्णम्, घूर्णितम् - भ्रमणे। घूर्णन्, घूर्णः, घूर्णितः, घूर्णितवान् - चक्रवद्-भ्रमके। घूर्णनम्, घूर्णनीयम् - चक्रवद्-भ्रमणम्)।

घेण् (घेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, गत्यां रिङ्गणे, प्रेरणे सहने

खनने च। गति करना, रेंगना, भेजना, खोदना, जोड़ना।(घेणति - रिङ्गति। घेणा - खननम्)।

घेव् (घेवते) = वपने, सेचने, घर्षणे। बोना, सींचना, प्रोक्षण करना, घर्षण करना।(घेवते - वपति (बोता है)। घेवकः, घेवमानः - वप्तरि। घेवनम्, घेवनीयम् - वीजवपने)।

घोण् (घोणति) = ग्रहणे, गन्धने। ग्रहण करना, गन्ध लेना, सूँघना। (घोणति - जिघ्रति। घोणा - नासिका। घोणनम्, घोणनीयम् - ग्रहणे)।

घोर् (घोरति) = गतिचातुर्ये। चतुराई से चलना।

घ्रा-जिघ्र (जिघ्रति) = गन्धोपादाने, घ्राणे। सूंघना, चूमना।(जिघ्रति - गन्धं गृह्णाति। घ्रायकः, जिघ्रन्, जिघ्राणः - गन्धग्रहीतरि। घ्रातम्, घ्राणम्, घ्रीतम्, घ्रीतिः, घ्रेयम्, घ्रातव्यम्, घ्राणीयम्, घ्राः, घ्रः - घ्राणे)।

घ्रु (घ्रवते) = शब्दे। शब्द करना।

(ङ)

ङु (ङवते) = अदने, भोजने, शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना। (ङवते - खादति। ङवकः, ङवमानः - खादकः। ङ, ङवनम्, ङ्वनीयम् - खाद्यम्)।

(च)

च (अव्यय) = और।

चक् (चकति, चकयति, चकते) = तृप्तौ, प्रतिघाते, शीतीभावे, प्रतिमारणे, ताडने, भये, चलने। तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, चकमा देना, धोखा देना।(चकते - चलति। चक्रम् - रथादि-अंगम्। चकितम् - भीतम्, भयम्। चकः, चकमानः - भीरौ। चक्, चकिः, चकनम्, चकनीयम्, चक्यम्,

चाक्यम् - शीतीभावे। चकति, चकयति - शीतीभवति। चकः, चककः, चकन् - शीतीभवितरि। चकि, चकु, चकनम्, चकनीयम्, चक्यम्, चाक्यम्, चाकम्, चक्, चाक् - शीतीभावे। चाकः, चाकिः, चाकलः - रजके। चाकली - रजकी)।

चकास् (चकास्ति, चकास्ते, चकाष्टि) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना। (चकास्ति - प्रकाशते। चकाष्टि - प्रकाशते। चकासन्, चकासकः - प्रकाशके। चकास्तिः, चकास्तम्, चकास्तव्यम्, चकासनम्, चकासनीयम्, चकासम्, चकास्यम् - प्रकाशे)।

चक्क (चक्कते, चक्कयति, चक्कयते) = उन्मृदने, गतौ, धावने, व्यथने, तृप्तौ, संघाते, प्रतिघाते च। धुलाना, तृप्त करना, प्रतिघात करना, एकत्र करना, दुःख देना, दुःख पाना। (चक्कते - उन्मृदयति (धुलाता है)। चेक्कः, चक्ककः, चक्कमानः - धावके। चक्कः चेक्कु, चक्कुः - कर्पाससंघाते)।

चक्ष् (चष्) (चष्टे) = व्यक्तायां वाचि, कथने, दर्शने, सन्दर्भे, अनुमोदने। स्पष्ट बोलना, कहना, देखना। आ - देखना। (चष्टे - कथयति। चक्षाणः, चक्षकः, चक्षा - कथकः, अनुमोदकः। चक्षणम्, चक्षणीयम् - कथनम्, अनुमोदनम्। चक्षुस् - नेत्रम्)।

चञ्च (चञ्चति) = अल्पगतौ, गमने, अनृतभाषणे। जाना, चलना, कूदना, हिलना, झूँठ बोलना। (चञ्चति - अनृतभाषणम् करोति। चञ्चा — अनृत-भाषणम्)।

चट् (चटति, चाटयति, चाटयते) = भेदने, विभागे, माने, मापने प्रेषणे। विभाग करना, मान करना, मापन करना, प्रेषण करना, मार डालना, तोड़ना। उत् - उच्चाटन करना। (चटति - प्रेषति। चाटयति - विभजति)।

चट् (चटति) = वर्षावरणयोः। बरसना, ढांकना, तम्बू-कनात लगाना।

चण् (चणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, दाने गतौ दीप्तौ च। दान करना, देना, जाना, शब्द करना। (चणति, चणयति - ददाति। चणन् -

दाता। चणः, चणकः - दानी। चणितव्यम्, चणनम्, चणनीयम्, चण्यम्, चाण्यम्, चणि, चणु, चाणु, चाणम्, चण्, चाणम् - दाने। चणति - दीप्यते। चणः - दीप्तिः (चमक)।

चण्ड (चण्डते, चण्डयति, चण्डयते) = तैक्ष्ण्ये, दुष्टतायाम्, कोपे, क्रोधे। कोप करना, क्रोध करना, घूंसा मारना। (चण्डति - दौष्ट्यम् आचरति। चण्डः - दुष्टः, कोपाविष्टः। चण्डी, चण्डा, चण्डालः - दुष्टा, कोपाविष्टायाम्। चण्ड-मारुतः - झञ्झावातः)।

चत् (चतति, चतते) = याचने, परिभाषणे, पटुतायाम्, चातुर्ये। मांगना, याचना करना, जाना, पटु होना, बोलना, परिभाषण करना, चतुर होना। (चतति, चतते - याचते। चत्, चात्, चतन्, चतकः, चतमानः - याचके। चतम्, चातम्, चत्यम्, चात्यम्, चतनम्, चतनीयम् - याञ्चायाम्। चतुरः, चत्वरः, चत्वारः - पटुतायाम्)।

चतुः (संख्या) = चार (04)।

चतुःपञ्चाशत् (संख्या) = चौवन (54)।

चतुःषष्टिः (संख्या) = चौंसठ (64)।

चतुरशीति (संख्या) = चौरासी (84)।

चतुर्दश (संख्या) = चौदह (14)।

चतुर्नवति (संख्या) = चौरानवे (94)।

चतुर्विंशः (संख्या) = चौबीस (24)।

चतुश्चत्वारिंशः (संख्या) = चौवालीस (44)।

चतुस्त्रिंशः (संख्या) = चौंतीस (34)।

चतुस्सप्तति (संख्या) = चौहत्तर (74)।

चत्वारिंशत् (संख्या) = चालीस (40)।

चद् (चदति, चदते) = प्रशंसने, स्तुतौ, याचने, गत्याम्। प्रशंसा

करना, स्तुति करना, मांगना, जाना। (चदति, चदते - प्रशंसयति। चदन्, चदकः, चदमानः - स्तावके। चदनम्, चदनीयम्, चद्यम्, चाद्यम्, चदनम्, चादम् - स्तुतौ)।

चन (अव्यय) = ही।

चन् (चनति, चनयति, चनयते) = संभक्तौ, मिश्रणे, शीले, शब्दे, शब्दक्रियायाम्, हिंसार्थः, श्रद्धोपहननयोः। दुःख देना, मार डालना, शब्द करना, विश्वास करना। (चनः - प्राप्तः शीलः। चानम् - आयुधविशेषः)।

चन् (चनति) = स्मरणे। स्मरण करना। (चनति - स्मरति। चनः, चनकः, चनन् - स्मर्ता। चननम्, चननीयम्, चन्यम्, चान्यम्, चानम्, चन्, चनु, चानु - स्मृत्याम्)।

चन्द (चन्दति) = आह्लादने दीप्तौ सन्तोषानन्दयोः प्रकाशे च। चमकना, आनन्द पाना, सन्तोष करना। (चन्दति - आनन्दितः प्रकाशितो वा भवति। चन्द्रः - चन्द्रमाः)।

चन्न (चन्नति) = सौन्दर्ये, भूषणे, संभक्तौ, मिश्रणे। (चन्नति - भूषति, सुन्दरो भवति। चन्नः - सुन्दरः पुरुषः। चन्निः - सुन्दरी। चन्नम् - सौन्दर्यम्)।

चप् (चपति) = सान्त्वने, सन्तोषे, सन्तुष्टीकरणे। शान्त करना, समझाना। (चपति - सन्तुष्टो भवति्)।

चप् (चपयति, चपयते) = परिकल्कने, चूर्णने। पीसना, कूटना, चूर्ण करना, ठगना। (चपयति - चूर्णयति)।

चप् (चपयति, चपयते) = गत्याम्, रक्षणे, क्षान्तौ, सहने। जाना, रक्षा करना, सहन करना। (चपलः - चञ्चलः। चपला - विद्युत्। चापम् - धनुः)।

चब् (चबति) = निपातने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। निपातन करना, गिराना, मर्दन करना। (चबति - निपातयति। चबकः - तडागः। चबुकः -

कशा (चाबुक)।

चम् (चमयति, चामयति) = ग्लासनावनुवमश्वनकम्यमि। खाना, पाना। (चमयति, चामयति - गण्डूषं करोति)।

चम् (चमति, चम्नोति) = अदने, भक्षणे। खाना, पाना। आ - (आचमति) - आचमन करना। वि - (विचमति) - खाना। (चमति - भक्षति। चमरी - भक्षिका, गवयी वा (नील गाय)। चामरः - भक्षकः। चमूः - सेना)।

चम्प (चम्पति) = गत्याम्, रक्षणे, क्षान्तौ, सहने। जाना, रक्षा करना, सहन करना। (चम्पयति - रक्षति। चम्पा, चम्पकः - रक्षकः, वृक्षविशेषः वा)।

चम्ब (चम्बति) = भय-दर्शने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, भय दिखाना। (चम्बति - भयम् दर्शयति)।

चय्-चि (चयति, चयते, चययति, चययते, चिनोति, चिनुते, चिपयति, चिपयते) = चयने, सहभावे। ढूँढ़ना, चुनना, साथ होना, एकत्र करना। अप - नाश करना, विध्वंस करना। सम् - संचय करना, जोड़ना। उप, सम् - पाना, प्राप्त करना। निर् - निश्चय करना, ठहराना। विनिर् - ठीक निश्चय करना। (चिनोति चिनुते - सह भवति। चेता, चितः, चितिवान्, चयन् चयानः, चयकः - सह भवितरि। चित्, चयनम्, चयनीयम्, चेतव्यम्, चयः - सहभावे। चितिः - चयनम्)।

चय् (चयते) = गतौ, परिहासे। जाना, परिहास करना। (चयते - गच्छति, परिहासम् करोति। चयकः, चायकः, चयमानः, चय्यः, चाय्यः - परिहासकर्तरि। चयिः, चयुः, चयनम्, चायम् - परिहासे)।

चर् (चरति) = गतौ भक्षणे वीरकार्ये प्रतियत्ने च। जाना, खाना, आचरण करना, वीरता दिखाना, प्रयास करना। अति - आज्ञा भंग करना। अत्या - अत्याचार करना। अभि - ठगना, जादू टोना करना, ध्यान देना। अनु - अनुसरण करना, अनुकरण करना। आ - कर्म करना, आचरण करना। उत् - आज्ञा भंग करना, देश से निकाल देना। उत् - ऊपर जाना,

उच्चारण करना। उप - सेवा करना, सम्मान करना, निकट जाना। परि - सेवा करना। प्र - प्रसिद्ध करना, आचरण करना। व्यभि - दुष्कर्म करना, व्यभिचार करना। सम् - साथ जाना। सम् - ऊपर चढ़ना। समा - प्रसिद्ध करना, अच्छा आचरण करना। वि - घूमना। (चरति - चलति, भक्षति। चरयति - पुनः कार्यम् करोति)।

चरण् (चरण्यति) = गतौ। जाना।

चर्क (चर्कते) = तृप्तौ प्रतिघाते च। तृप्त करना, प्रतिघात करना। (चर्कते - प्रतिघातयति, ताडयति। चर्कः, चर्कमाणः, चर्ककः - प्रतिघातके। चर्किः, चर्कणम्, चर्कणीयम्, चार्क्यम् - प्रतिघाते)।

चर्च (चर्चति) = विमर्शे, परिभाषणे, हिंसने, तर्जने च। बोलना, विमर्श करना, चर्चा करना, गाली देना, निन्दा करना, दुःख देना, विचारना, ढूँढ़ना। (चर्चति - विमर्शयति। चर्चा, चर्चिका - विमर्शः)।

चर्च (चर्चयति, चर्चयते) = अध्ययने। पढ़ना, अध्ययन करना, पदच्छेद करना। (चर्चयति - पठति। चर्चन्, चर्चकः, चर्चः - पाठकः। चर्चनम्, चर्चनीयम् - पाठे। चर्चा चर्चिका - विचारणायाम्)।

चर्च (चर्चते) = प्रशस्तवाचने, दीप्तौ, प्रकाशे, विचारणे। प्रशंसा करना, चमकना, प्रकाश करना, शंका करना, विचार करना। (चर्चते - शंकते। चर्चकः, चर्चमानः - शंकिता। चर्चा, चर्चम्, चर्चिः, चर्चुः, चर्चनम्, चर्चनीयम्, चर्च्यम् - विचारणे)।

चर्च्च (चर्च्चति) = परिभाषणतर्जनयोः, अतिवदने, शङ्कायाम्, झंकारशब्दे च। अधिक बोलना, झंकार करना, शंका करना। चर्च्चति - शङ्कते। चर्च्चन्, चर्च्चकः, चर्च्चितः, चर्च्चितवान् - शङ्कितरि। चर्च्चा - शङ्का। चर्च्चनम्, चर्च्चनीयम्, चर्च्चितव्यम्, चर्च्चितम् - रवणम् (चिल्लाना)।

चर्ब (चर्बति) = गतौ अदने च। जाना, खाना, चबाना।

चर्व (चर्वति, चर्वयति) = भक्षणे, अदने, नृत्यकर्मणि, गतौ, गत्याम्। खाना, चबाना, नृत्य करना। (चर्वति - भक्षति, दन्तैः पिंशयति। चर्वः - भक्षकः। चर्वणम् - भक्ष्यम्, चर्वणम् - दन्तैः पेषणम्)।

चर्ह (चर्हते) = नृत्यकर्मणि, प्रयत्ने, व्यवसाये। प्रयत्न करना, व्यवसाय करना, नृत्य करना। (चर्हते - नृत्यति। चर्हः। चर्हिः, चर्हणम्, चर्हणीयम् - नृत्यकर्मणि। चर्हकः, चर्हमाणः - नर्तकः)।

चल् (चलति, चलयति, चालयति) = कम्पने, गतौ। हिलना, कांपना, चलना। (चलति - कम्पते। चलन्, चलकः - कम्पिता। चलि, चालि, चलु, चालु, चलनम्, चलितम्, चलितव्यम्, चलनीयम्, चल्यम्, चाल्यम्, चालम् - कम्पने। अचला - भूमिः। अचलः - पर्वतः)।

चल् (चलति) = विलसने। खेलना, क्रीडा करना। (चलति - विलसति। चलन्, चलकः - क्रीडितरि)।

चल् (चालयति, चालयते) = अवलम्बने, कम्पयने, पालने, भरणे, भृतौ। पालना, बढ़ाना। (चालयति - वृक्षो लतां कम्पयति, चालयति, अवलम्बयति)।

चव् (चवति) = गतौ, चलने, पीडा-निवारणे। चलना, पीड़ा दूर करना। (चवति - पीडां निवर्तयति। चविः - मूलिका, ओषधिः)।

चष् (चषति, चषते) = भक्षणे, खाद्ये। खाना। (चषति, चषते - भक्षयति। चषण्, चषाणः, चट्, चाट् - भक्षयितरि। चषकः - पानपात्रम्। चषिः, चष्टिः, चषणम्, चषणीयम्, चष्यम्, चाष्यम् - खाद्ये)।

चष् (चक्ष) (चष्टे) = व्यक्तायां वाचि, कथने, दर्शने, सन्दर्भे, अनुमोदने, दर्शने। स्पष्ट बोलना, कहना, देखना। आ - देखना। (चष्टे - कथयति। चक्षाणः, चक्षकः, चक्षा - कथकः, अनुमोदकः। चक्षणम्, चक्षणीयम् - कथनम्, अनुमोदनम्। चक्षुस् - नेत्रम्)।

चष्क (चष्कयति) = व्यथने। व्यथित होना। (चष्कयति - व्यथयति। चष्कम्, चष्ककः - व्यथकः)।

चह् (चहति, चहयति, चहयते, चाहयति, चाहयते) = परिकल्कने, धौत्ये, औषध-गुटिकायाम्। ठगना, दुष्कर्मी होना, गर्वीला होना, पीसना, कूटना, गुटिका बनाना। (चहयति - गुटिका भवति। चहनम् - गुटिका। चहति - धौर्त्यम् आचरति। चाहकः - धूर्तः। चहनम्, चग्लम्, चग्लिः, चाहः, चक् - धौर्त्ये)।

चाकश् (चाकशति) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना। (चाकशन्, चाकशकः - प्रकाशकः। चाक्यः, चाकष्टम्, चाकशनम्, चाकशनीयम्, चाकष्टव्यम्, चाकशम्, चाकश्यम् - प्रकाशे)।

चात्-चातय् (चातयति) = नाशे। नाश होना, नाश करना।

चाय् (चायति, चायते) = पूजानिशामनयोः, अर्चने, श्रवणे च। पूजा करना, सम्मान करना, सुनना, जानना, समझना। (चायति, चायते - अर्चति। चायन्, चायमानः, चायकः - अर्चकः, पूजकः। चाय्, चायम्, चायनम्, चायनीयम्, चाय्यम् - पूजने निशामने च)।

चार् (चारयति, चारयते) = संशये, असंशये, निश्चये। संशय होना, निश्चय करना, संशय रहित होना। वि - विचार करना, संशय रहित होना। (चारयति - निश्चिनोति)।

चि (चयति, चयते, चययति, चययते, चिनोति, चिनुते, चिपयति, चिपयते) = चयने, सहभावे। ढूँढ़ना, बटोरना, एकत्र करना, साथ होना। अप - नाश करना, विध्वंस करना। सम् - संचय करना, जोड़ना। उप, सम् - पाना, प्राप्त करना। निर् - निश्चय करना, ठहराना। विनिर् - ठीक निश्चय करना। (चिनोति चिनुते - सह भवति। चेता, चितः, चितिवान्, चयन् चयानः, चयकः - सह भवितरि। चित्, चयनम्, चयनीयम्, चेतव्यम्, चयः - सहभावे। चितिः - चयनम्)।

चिकित् (चिकेत्ति, चिकित्ति, चिकित्सति) = ज्ञाने। जानना। (चिकित्सिन्, चिकित्सकः, चिकित्सुः - ज्ञातरि)।

चिकित्स (चिकित्सति) = गृहे, पीडानिवारणे, ज्ञाने। जानना, निवास करना, रहना, रोग का प्रतिकार करना, चिकित्सा करना, शासन करना, नष्ट करना। वि - आशंका करना, विश्वास न करना। (चिकित्सा - रोगपरीक्षा, रोगनिवारणम्। चिकित्सुः - वैद्यः)।

चिकृ (चिकरते) = गतौ, पल्लवे। जाना, पल्लवित होना। (चिकरते - पल्लवितो भवति। चिकरः - पल्लवम्, केशः)।

चिक्क (चिक्कयति, चिक्कयते) = व्यथने। पीड़ा करना, दुःख देना।

चिट् (चेटति, चेटयति) = परप्रैष्ये, प्रैष्ये, माने, मापने, प्रेषणे च। सेवक होना, आज्ञा का पालन करना, फटकना। (चेटति - माति, मानयति, सेवते वा। शूर्पेण निष्पवनक्रियाम् करोति वा। चेटी - सेविका, दासी)।

चिणु (चिणोति, चिणुते) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना। (चिणोति, चिणुते - ध्वनिम् करोति। चिणकः - ध्वनिता। चिण्, चिणी, चिणम् - शब्दः)।

चित् (चेतति, चेतयते) = सम्यग्ज्ञाने, संचेतने, सन्देहे, संशये। विचार करना, चिन्तन करना, स्मरण करना। (चेतयति - शङ्कते। चितिः - ज्ञानम्। चेतति - जानाति। चित् - ज्ञानम्। चितिः - ज्ञानम्। चित्तम् - ज्ञानम्। चेतः - मनः। चित्तवान् - ज्ञानवान्।

चित्र (चित्रयति, चित्रयते) = चित्रकरणे, विचित्रदर्शनयोः, ज्ञाने, दर्शने च। चित्र बनाना, जानना, आश्चर्य करना, आश्चर्य से देखना। (चित्रयति - जानाति, चित्रम् करति। चित्री, चित्रकः - ज्ञातरि। चित्रकारः। चित्रणम्, चित्रणीयम् - ज्ञाने, चित्रकरणे)।

चिन्त (चिन्तयति, चिन्तयते, चिन्तति) = चिन्तने, स्मृत्याम्। चिन्तन करना, स्मरण करना, चिन्ता करना। (चिन्तयति - स्मरति। चिन्तन्, चिन्तकः - स्मर्ता)।

चिर् (चेरयति) = वियोजनसंपर्चनयोः, मेलने, वियोगे कूटे च। वियोग

होना, मिलना। (चेरयति - मिलति)।

चिरन्तनम् (अव्यय) = पुरातन, प्राचीन।

चिरम् (अव्यय) = बहुत समय तक।

चिरि (चिरिणोति) = चिन्तने, हिंसायाम्, जिघांसायाम्। पीड़ा करना, दुःख देना, चिन्तन करना। (चिरिणोति - चिन्तयति। चेरन्, चेरकः, चेरः - दुःखी, चिन्तकः। चेरणम्, चेरितव्यम् - पीडायाम्)।

चिरेण् (अव्यय) = बहुत समय तक।

चिर्ब (चिर्बति) = रुजायाम् पीडायाम्, रोगे। (चिर्बति - पीडा भवति। चिर्बणम्, चिर्बम्, चिर्बु, चिर्बि, पीडायाम्। चिर्बुलम् - आच्छादनम्)।

चिल् (चिलति, चेलति) = विकर्तने, वेष्टने, आच्छादने, वसने, अदने, भक्षणे, शैथिल्ये, शिथिलतायाम्। कपड़े पहनना, खाना, शिथिल होना, आच्छादित करना, ढकना, काटना। (चिलति - आच्छादयति। चेलति - कृन्तति, दशति। चिलः - कृन्तकः। चिल् - कृन्तकः। चेलः, चेलुः - वृश्चिकः। चेलम् - आच्छादनीयं वस्त्रम्। चेला - आच्छादकः, उत्तरीयम् (दुपट्टा)।

चिल्ल (चिल्लति) = शैथिल्ये भावकरणे च। मुक्त करना, ढीला करना, मन का भाव दिखाना, कामबुद्धि से वर्तना। (चिल्लति - शिथिलो भवति)।

चिल्ल .(चिल्लति) = अदने, भक्षणे, छिद्रे। खाना। (चिल्लति - भक्षति, छिद्रयति, फूत्करोति। चिल्लिः - छिद्रम्)।

चिह्न (चिह्नयति) = संकेते। चिह्न करना।

चीक् (चीकयति, चीकति) = आमर्षणे, विमर्शे। विचार करना, विमर्श करना, सहन करना, सहना, असहिष्णु होना, छूना, स्पर्श करना। (चीकयति - विचारयति)।

चीव् (चीबति) = आदाने, संवरणे। लेना, स्वीकार करना, धारण

करना, पहनना।

चीभ् (चीभति, चीभते) = कत्थने, पूजने, मानने। प्रशंसा करना, स्तुति करना, व्याजस्तुति करना। (चीभते - मान्यो भवति। चीभः, चीभकः, चीभानः - मान्ये। चीभिः, चीभनम्, चीभनीयम् - मानने)।

चीय् (चीयति, चीयते) = आदाने, संवरणे। लेना, स्वीकार करना, धारण करना, पहनना।

चील् (चीलति) = अदने, भक्षणे, भरणे। खाना, भरना। (चीलति - भरति। चीलः, चीलिः - वस्त्रनिर्मिता कोथली (थैली)।

चीव् (चीबयति, चीबयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

चीव् (चीवति, चीवते) = हिंसने, आदाने, संवरणे। हिंसा करना, लेना, संवरण करना। (चीवति, चीवते - मारयति। चीवन्, चीव्यः, चीवः, चीवकः - घातके। चीवनम्, चीवनीयम् - हिंसा)।

चीव् (चीवयति) = पीडने, भाषार्थाः। बोलना, पीड़ा देना। (चीवयति - पीडयति)।

चृत् (चर्तयति, चर्तति) = संदीपने। प्रकाशित करना, चमकाना, जलाना।

चृत् (चृतति) = हिंसा-ग्रन्थनयोः। पीड़ा करना, मार डालना, एकत्र कर बांधना, गूंथना।

चृप् (चर्पति) = संदीपने। प्रकाशित करना, चमकाना।

चु (चवते) = गतौ। जाना, चलना। (चवते - चलति। चवकः, चवमानः - चलिता। चवनम्, चवनीयम् - गमने)।

चुक्क (चुक्कयति, चुक्कयते) = दुःखे, व्यथने। दुःख देना, दुःख होना।

चुच्-चुच्य (चुच्यति) = अभिषवे, मन्थने, छेदने, विकर्तने। अर्क निकालना, स्नान करना, मथना, काटना। (चुच्यति - कृन्तति। चुचिः -

खण्डः)।

चुट् (चोटति, चुटति, चोटयति, चोटयते) = छेदने, प्रैष्ये माने च, मापने प्रेषणे च। कतरना, भेजना, मापन करना, चोट मारना, छोटा होना, कलाहीन होना। (चोटति - परिमापयति। चोटुः - वितस्तम्)।

चुट् (चुटति) = भ्रमणे, छेदने, विकर्तने। घूमना, काटना, चोट लगना। (चुटति - भ्रमति, विकर्तयति। चुटः, चोटकः - भ्रमके। चोटः - आघातः)।

चुट् (चोटयति) = छेदने, विदारणे। चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना, खोदना, खुरचना, काट्ना। (चोटयति - विदारयति। चोटन्, चोटकः - विदारकः। चोटनम्, चोटनीयम् - विदारणम्, विभजनम्)।

चुट्ट (चुट्टति, चुट्टयति, चुट्टयते) = वेष्टने, अल्पीभावे, न्यूनतायाम्, अल्पतायाम्। न्यून होना, अल्प होना। (चुट्टयति - वेष्टयति। चुट्टति - अल्पीभवति। चुट्टकः - वेष्टकः। चुट्टा - नीचैरवतरणम्। चुट्टः - अल्पम्)।

चुड् (चुडति) = संवरणे। लपेटना, घेरना, छिपाना।

चुड्ड् (चुड्डति) = भावकरणे, मैथुनसंभ्रमे। बर्तना, मैथुन करना, कामक्रीडा करना, अभिप्राय सूचित करना, सङ्केत करना। (चुड्डति - मैथुनम् करोति। चुड्डम् - मैथुन-सम्भ्रमः)।

चुण् (चुणति) = छेदने, विकर्तने। काटना। (चुणति - कृन्तति। चुणन्, चोणः, चोणकः - विकर्तरि। चोणनम्, चोणनीयम् - विकर्तने)।

चुण् (चूणयति) = पूरणे। पूर्ण करना। (चूणयति - पूरयति। चुणकः - पूरकः। चुणनम्, चूणनीयम् - समापने)।

चुण्ट (चुण्टति) = अल्पीभावे। अल्प होना, परिमित होना।

चुण्ट (चुण्टयति) = विदारणे, रिङ्गणे, निशामने, तीक्ष्णीकरणे, छेदने, छिद्रकरणे। कतरना, तोड़ना, चूंटियां भरना, नोचना। (चुण्टयति - विदारयति, रिङ्गति। चुण्टः - रिङ्गकः। चुण्टनम्, चुण्टनीयम् - निशामनम्,

तीक्ष्णीकरणम् (धार लगाना)।

चुण्ड (चुण्डति) = अल्पीभावे। न्यून होना, अल्प होना, चुटकी भर परिमाण होना (चुण्डति = अल्पीभवति। चुण्डी - चुटकी भर)।

चुण्ड (चुण्डयति) = छेदने, अन्तर्गमने, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। कतरना, तोड़ना, हिंसा करना। (चुण्डति - छेदति, अन्तर्गच्छति। चुण्डः - छेदकः, मूषकः प्राणिविशेषः वा)।

चुत् (चोतति) = आसेचने, अल्पावरोधे, स्रवणे। गीला होना, गीला करना, चूना, टपकना।

चुद् (चोदयति, चोदयते) = संचोदने, प्रेरणे। प्रेरणा करना, पूछना, प्रश्न करना, प्रार्थना करना। (चोदयति - प्रेरयति। चोदन्, चोदकः - प्रेरके। चोदनम्, चोदनीयम् - प्रेरणायाम्)।

चुन्द (चुन्दति, चुन्दते) = निशामने, श्रवणे। सुनना। (चुन्दति, चुन्दते - शृणोति)।

चुप् (चोपति) = मन्दायाम् गतौ, कुण्ठायां गतौ, शनैर्गतौ। धीरे-धीरे चलना। (चोपति - शनैर्गच्छति। चोपः - मन्दगतिः)।

चुब् (चुबति) = दैन्ये, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, दीनतापूर्वक प्रार्थना करना। (चुबति - दैन्येन प्रार्थयति, मर्दयति। चुबुकम् - मर्दनम्, कूचम् वा)।

चुम्ब (चुम्बति, चुम्बते) = वक्त्रसंयोगे, मर्दन-क्रियायाम्। चूमना, चुम्बन करना, मर्दन करना। (चुम्बति - ओष्ठाभ्यां स्पृशति, चुम्बुकः - मुखस्पर्शः। चुम्बनम् - ओष्ठाभ्याम् स्पर्शनम्)।

चुम्ब (चुम्बयति, चुम्बयते) = हिंसायाम्। हिंसा करना, मार डालना।

चुर् (चोरयति, चोरयते) = स्तेये, मोषणे, चौर्ये। चुराना। (चोरयति - मुष्णाति। चोरः, चौर्यम् - चुरायाम्)।

चुरण् (चुरण्यति) = चौर्ये। चुराना।

चुल् (चोलति) = शृंगारे, द्रावकरणे पाकाग्निकुण्डे च, मैथुने, सम्भ्रमे, पाककरणे च। अपना अभिप्राय बताना, पकाना, मैथुन करना, शृंगार करना। (चोलति - शृंगारम् करोति। चोलिः - उरस्य आच्छादन-वस्त्रम्)।

चुल् (चोलयति, चोलयते) = समुच्छ्राये। बढ़ाना, ऊँचा करना, भिगोना, डुबोना।

चुलुम्प (चुलुम्पति) = छेदने अन्तर्भावे च। कतरना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना, डोलना। उत् - झूलना।

चुल्ल (चुल्लति) = भावकरणे, द्रावकरणे, पाकाग्निकुण्डे, मैथुने सम्भ्रमे पाककरणे च। अभिप्राय बताना, पकाना, मैथुन करना। (चुल्लति - मैथुनं पाकम् वा करोति। चुल्लिः - पाकाग्न्याधारः (चूल्हा)। चुल्लनम् - मैथुनम्, सम्भ्रमः। चुल्लकः - मैथुन-संभ्रमवान्)।

चुष् (चूषति) = चूषणे, पाने, पानक्रियायाम्। चूसना। (चूषति - पिबति। चोषकः - पानकर्ता। चोष्यम् - पातुं योग्यम्)।

चुष्क (चुष्कयति) = यथने। झांकना। (चुष्कयति - निगूढम् पश्यति (झांकता है)। चुष्कन्, चुष्ककः - निगूढम् पश्यकः (झांकनेवाला)।

चुह् (चोहति) = परिकल्कने, धौर्त्ये। ठगना। (चोहति - वञ्चयति। चोहः - वञ्चकः, बहुरूपः (बहुरूपिया)।

चूच् (चूच्यति) = अभिषवे, मन्थने। स्नान करना, मथना, काटना, अर्क निकालना। (चूच्यति - स्नाति। चूचकम् - स्नानम्, स्तनाग्रभागो वा)।

चूण् (चूणयति) = संकोचे, पूरणे। संकोच करना, पूर्ण करना, समापन करना। (चूणयति - पूरयति। चुणकः - पूरकः। चुणनम्, चूणनीयम् - समापने)।

चूर् (चूर्यते) = दाहे, ज्वलने। जलाना। (चूर्यते - ज्वलति। चूरकः, चूरः - ज्वलिता। चूर्णम्, चूर्तिः, चूर्तव्यम् - ज्वलने)।

चूर्ण (चूर्णयति, चूर्णयते) = संकोचने, प्रेरणे, चूर्णने। चूर्ण करना, पीसना, दबाना, प्रेरणा करना, आकर्षण करना, सिकुड़ना, खींचना, संकोच करना। सम् - टुकड़े-टुकड़े कर देना। (चूर्णयति - प्रेरयति। चूर्णितः - प्रेरितः। चूर्णम् - चूर्ण। चूर्णितः - प्रेरितः)।

चेत् (अव्यय) = यदि।

चेल् (चेलति) = चलने, गतौ। कम्पित होना, हिलना। (चेलति - चलति। चेलनम् - चलनम्)।

चेष्ट (चेष्टते) = चेष्टायाम्, व्यवहारे। चेष्टा करना। (चेष्टते - व्यवहरति, क्रियाम् करोति। चेष्टकः, चेष्टमानः - व्यवहर्तरि)।

च्यव्-च्यु (च्यावयति, च्यावयते) = हसने सहने च। हंसना, सहना, सहन करना। (च्यावयति - हसति, सहते)।

च्यु-च्यव् (च्यवते) = नाशने, हसने, सहने, तरणे, गतौ। हँसना, सहना, सहन करना, नष्ट करना, तैरना, गिरना, गिर पड़ना, भटकना, जाना, जानना, पाना, उतराना (च्यवते - तरति (उबराता है)। च्यवकः, च्यवमानः - तारकः (उबरानेवाला)। च्यवनम्, च्यवनीयम् - तरणम् (उबराना)।

च्युत् (च्योतति) = आसेचने। सींचना, भिगोना, बहना।

च्युस् (च्योसयति, च्योसयते) = हसने सहने विमोचने, हिंसायाम् च। हंसना, सहन करना, मुक्त करना, छोड़ देना, पीड़ा देना, मार डालना॥

च्वन् = संभक्तौ, मिश्रणे। अलग करना, मिलाना।

च्वन्न = संभक्तौ, मिश्रणे। अलग करना, मिलाना।

(छ)

छद् (छादयति, छादयते) = संवरणे, आच्छादने। आच्छादित करना, ढकना। (छादयति - संवृणोति। छदन्, छादकः - संवारके। छदः - लघुः आवरकः। आच्छादनम्, आच्छादनीयम् - संवरणे। छत्रम् - छदः, लघुः

आवरकः, वर्षातपनिवारकम् वा)।

छद् (छदति, छदयति, छदयते, छादयति, छादयते) = अपवारणे, कपटे। हटाना, छिपाना, बचाना, कपट करना।(छदयति - कपटम् करोति। छद्मन्, छदकः - कपटिनि)।

छद् (छदति) = ऊर्जने। बलवान् होना या करना।

छन्द (छन्दयति, छन्दयते, छन्दति) = ग्रहणे, आदाने, अर्जने, बले प्राणने, संवरणे, आच्छादने। ग्रहण करना, अर्जन करना, बल होना,प्राण होना, ढकना, आच्छादन करना, लपेटना।

छन्न (छन्नति) = ग्रहणे, संभक्तौ, मिश्रणे।अलग करना, मिलाना, ग्रहण करना। (छन्नति - गृह्णाति। छन्नः - निगृहीतः। नखछन्नम् - नखनिकृन्तकः)।

छम् (छमति) = अदने, भक्षणे।खाना।(छमति - अत्ति।छमनम् - भोज्यवस्तुः।आछमनम् - गण्डूषकरणम्)।

छम्प (छम्पयति) = गतौ, कूर्दने।जाना, कूदना।(छम्पयति - कूर्दते। छम्पन्, छम्पः, छम्पकः - कूर्दके।छम्पनम्, छम्पनीयम् - कूर्दनम्)॥

छर्छ (छर्छति) = भये, परिभाषण-तर्जनयोः, अतिवदने, झंकारे, शब्दे च।अधिक बोलना, झंकार करना।(छर्छति - बिभेति।छर्छा - भयम्।छर्छरः - भयंकरः (अग्निः)।छर्च्छति - झंकारम् करोति।छर्च्छुः, छर्च्छकः, छर्च्छन्, छर्च्छितः, छर्च्छितवान् - झंकारकर्तरि।छर्च्छनम्, छर्च्छनीयम्, छर्च्छितव्यम् - झंकारे)।

छर्द (छर्दयति, छर्दयते) = सन्दीपे, कथने, वमने। सम्यक् दीपन करना, कहना, उद्गार होना, वमन होना (छर्दयति - वमति, उद्गिरति। छर्दकः - उद्गारकः।छर्दिः, छर्दनम् - उद्गारे।छर्दन्, छर्दकः - वमके। छर्दिः, छर्दनम्, छर्दनीयम् - वमने)।

छष् (छषति, छषते) = हिंसायाम्।मारना।(छषति, छषते - मारयति।

छट्, छाट्, छषः, छाषः, छषकः, छषण, छषमाणः - हिंसकः। छषणम्, छषणीयम् - हिंसनम्)।

छा - छो (छयति) = छेदने। कतरना, काटना, छांटना।(छयति - छिनत्ति।छोः, छायः, छायकः, छायन्, छायिता, छितः, छितवान् - खण्डितरि छेत्तरि। छायनम्, छायनीयम्, छितिः, छितुः - खण्डने)।

छिणु (छिणुति, छिणुते) = वीणा-रवे, वीणा-शब्दे। वीणा बजाना, वीणानाद करना।(छिणुति, छिणुते - वीणा-शब्दयति। छिणन्, छिणानः, छिणकः - वीणावादके।छिण्, छिणनम्, छिणनीयम्, छिणु, छिणि - वीणा-नादे)।

छिद् (**छिन्**) (छिनत्ति, छिन्ते) = द्विधाकरणे, एकस्य भागद्वयकरणे। छेदना, काटना, दो टुकड़े करना, छिन्न-भिन्न करना। आ - बलपूर्वक टुकड़े करना। उत् - हिंसा करना, कतरना। वि - अलग करना, अलग होना।(छिनत्ति, छिन्ते - द्विधाकरोति।छित्, छेत्ता, छेदकः, छेदी, छिन्दन् - द्विधाकारके। छित्तिः, छित्तम्, छेत्तव्यम्, छेदनम्, छेदनीयम्, छिदा, छेद्यम् - द्विधाकरणे)।

छिद्र (छिद्रयति, छिद्रयते) = छिद्रकरणे, भेदने।छेद करना।(छिद्रयति - कर्णम् वेधयति। छिद्रकः - कर्ण-वेधकः)।

छिन् (छिद्) (छिनत्ति, छिन्ते) = द्विधाकरणे, एकस्य भागद्वयकरणे। छेदना, काटना, दो टुकड़े करना, छिन्न-भिन्न करना। आ - बलपूर्वक टुकड़े करना।उत् - हिंसा करना, कतरना। वि - अलग करना या अलग होना।(छिनत्ति, छिन्ते - द्विधाकरोति।छित्, छेत्ता, छेदकः, छेदी, छिन्दन् - द्विधाकारके। छित्तिः, छित्तम्, छेत्तव्यम्, छेदनम्, छेदनीयम्, छिदा, छेद्यम् - द्विधाकरणे)।

छिल् (छेलति) = अदने, भक्षणे, ग्रहणे। खाना, लेना, ग्रहण करना। (छेलति - गृह्णाति, भक्षति। छिलः - ग्राही, संदंशिका (संडसी)।

छिल्ल (छिल्लति) = अदने, भक्षणे, विभागे। खाना, विभाग करना। (छिल्लति – विभजति। छिल्लः - विभागः)।

छील् (छीलति) = अदने, भक्षणे, ग्रहणे, कर्षणे। खाना, लेना, ग्रहण करना, खींच लेना। (छीलति - आकर्षति)।

छृद् (छृणत्ति-छृन्ते) = दीप्ति-देवनयोः, प्रकाशे क्रीडने च। चमकना, प्रकाशित होना, क्रीडा करना, खेलना। उत् - कै करना, वमन करना। (छृणत्ति, छृन्ते - प्रकाशयति, क्रीडति। छृत्तः, छृत्तवान्, छर्दन्, छर्दानः, छर्त्ता, छर्त्तकः - प्रकाशके क्रीडके च। छृत्तिः, छृत्तम्, छर्दनम्, छर्दनीयम्, छर्दिः - प्रकाशे)।

छृद-छर्द (छर्दयति, छर्दयते) = सन्दीपे, कथने, वमने। सम्यक् दीपन करना, कहना, उद्गार होना, वमन होना (छर्दयति - वमति, उद्गिरति। छर्दकः - उद्गारकः। छर्दिः, छर्दनम् - उद्गारे। छर्दन्, छर्दकः - वमके। छर्दिः, छर्दनम्, छर्दनीयम् - वमने)।

छृप् (छर्पयति, छर्पयते, छर्पति) = संदीपने। सम्यक् दीपन करना, प्रकाश करना, दीप जलाना, जलाना।

छु (छवते) = गतौ, कूर्दने। चलना, कूदना। (छवते - कूर्दते। छवकः, छवमानः - कूर्दकः। छवनम्, छवनीयम्, छव्यम्, छाव्यम्, छविः - वैहायस्याम् गतौ, कूर्दने)।

छुट् (छुटति, छोटयति) = निपातने, विभजने, छेदने, विदारणे, विकर्तने। कतरना, तोड़ना, छोटा करना, गिराना, उड़ेलना। (छुटति - निपातयति (उड़ेलता है)। छुटः, छोटकः - निपातयितरि। छोटनम्, छोटनीयम् - निपातने। छोटयति - विभजति। छोटन्, छोटकः - विभक्तरि। छोटनम्, छोटनीयम् - विभजनम्)।

छुट्ट (छुट्टयति) = चलने, कम्पने, शुषणे, शोषणे। चलना, कम्पन करना, सूखना, सुखाना। (छुट्टयति - शुष्यति)।

छुड् (छुडति) = संवरणे। ढकना, आच्छादित करना।

छुप् (छुपति) = संस्पर्शे। छूना, स्पर्श करना। (छुपति - स्पृशति। छोपन्, छोपकः, छुप्तः, छुप्तवान् - स्पर्शके। छोपनम्, छोपनीयम्, छुप्तम्, छुप्तिः - स्पर्शे)।

छुर् (छुरति) = छेदने, विकर्तने। कतरना, तोड़ना, काटना। (छुरति - कृन्तति। छुरिका, छुरः, छुरकः - विकर्तरि। छोरणम्, छोरणीयम् - विकर्तने)।

छेद् (छेदयति, छेदयते) = द्वैधीकरणे, एकस्य द्वित्वे। कतरना, छेद करना, काटकर या चीर कर एक का दो करना। वि - पृथक, पृथक् करना। (छेदयति - द्वैधीकरोति, विदारणेन द्वित्वम् आपादयति। छेत्ता, छेदकः, छेदी - विदारके। छेदनम्, छेदनीयम्, छेद्यम् - विदारणे)।

छेल् (छेलति) = गतौ। जाना।

छेलृ (छेलर्ति) = गतौ। जाना।

छो (छयति) = छेदने। कतरना, छांटना। (छयति - छिनत्ति। छोः, छायः, छायकः, छायन्, छायिता, छितः, छितवान् - खण्डितरि, छेत्तरि। छायनम्, छायनीयम्, छितिः, छितुः - खण्डने)।

(ज)

जक्ष (जक्षिति) = भक्षण-हसनयोः, अदने हसने च। खाना, हंसना। (जक्षिति - अत्ति, हसति। जक्षन्, जक्षकः - भक्षकः, हसिता च। जक्षणम्, जक्षणीयम् - खाद्यम्)।

जग् (जगते) = गतौ, आदाने, ग्रहणे। जाना, लेना, ग्रहण करना। (जगते - घर्षते। जागुः - प्लुतगमनम्। जागम् - गम्यम् स्थानम्)।

जघृ (जिघर्ति, जघर्ति) = क्षरणदीप्त्योः, नाशे प्रकाशे च। टपकना, क्षरित होना, चमकना, प्रकाशित होना। (जिघर्ति - नाशयति, प्रकाशते।

जघरन्, जघरः, जघर्ता, घृतः, घृतवान्, घरः, घारः - नाशके। घृतिः, घृतम्, घर्तव्यम्, घरणम्, घरणीयम्, घर्यम्, घार्यम् - नाशने)।

जघ्न् (हन) (हन्ति) = हिंसागत्योः। मार डालना, किसी प्रकार समाप्त करना, प्राप्त करना, जाना। अभि - मुख से बजाना। नि, परि - समूल नष्ट करना। प्र - ऊपर रखना, प्रहार करना, मारना, ठोकना। प्रति - विरुद्ध पक्ष का खण्डन करना। व्या - प्रतिबन्ध करना, रोकना। सम् - हिंसा करना, मारना, एकत्र करना, बटोरना। आ (आहते) - ठोकना, मारना।

जङ्क्ष (जङ्क्षति) = घोरवासिते, रौद्रभाषणे, काङ्क्षायां च। चाहना, रौद्रभाषण करना। (जङ्क्षति - अस्पष्टम् भाषते। जक्षः - अस्पष्टम् भाषकः, पक्षिविशेषः वा)।

जङ्घ (जङ्घति) = गतौ-गत्याम्, उत्थापने। जाना, उत्थापन करना, उठाना। (जङ्घति - उत्थापयति। जङ्घा - जघनम्)।

जज् (जजति) = उपद्रवे, युद्धे, संग्रामे। युद्ध करना, मारना। (जजति - उपद्रवम् करोति)।

जजन् (**जन्**) (जजन्ति) = जनने, प्रसवे। उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना। (जजन्ति - प्रसूते)।

जञ्ज (जञ्जति, झजति) = भ्रमे, युद्धे, संग्रामे। युद्ध करना, लड़ाई करना, मारना। (झजति - भ्रमति, युद्धम् करोति)।

जट् (जटति) = संघाते, संश्लेषे, हिंसने। एकत्र होना, हिंसा करना। (जटति - संश्लिष्यति)।

जठ् (जठति) = धारणे। धारण करना। (जठति - धारयति। जठरः - उदरम्)।

जण् (जणति) = ज्ञाने, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। जानना, शब्द करना। (जणति - जानाति। जणिः - ज्ञाता। जाणः - बुद्धिमान्)।

जन् (जायते, जनयति) = प्रादुर्भावे, उत्पत्तौ। उत्पन्न होना, उत्पन्न करना। (जायते - उत्पद्यते। जनयति - उत्पादयति। जायमानः, जनिता, जनकः - उत्पादके, पितरि। जन्, जानुष्, जनिः, जननम्, जननीयम्, जन्मन् - उत्पत्तिकर्मणि। जननी, जनयित्री - मातरि। जनिता, जनन्, जनितवान्, जन्तः, जन्यः, जान्यः, जनकः, जनयिता, जानः - उत्पादयितरि। जननी, जनयित्री, जनित्री - जन्मदात्र्याम्। जननम्, जननीयम्, जनितव्यम्, जनिः, जन्तिः, जन्तम्, जन्मन् - उत्पादने। जन्तुः - जीवः)।

जन्-जजन् (जजन्ति) = जनने, प्रसवे। उत्पन्न होना, प्रकट होना, उत्पन्न करना। (जजन्ति - प्रसूते)।

जन्त्र (जन्त्रयति) = सूचने। सूचना देना। (जन्त्रयति - सूचयति। जन्त्रकः सूचकः। जन्त्रम्, जन्त्रणम्, जन्त्रणीयम् - सूचना)।

जप् (जोपति) = कुण्ठायां गतौ, शनैर्गतो। मन्द गति से चलना, धीमे चलना। (जोपति - शनैः गच्छति। जोपः - मन्दगतिः)।

जभ् (जभति) = परिहासे, मैथुने। मैथुन करना, परिहास करना। (जभति - विनोदयुक्तम् वाक्यम् वदति। जभ्, जभनम्, जभ्यम्, जाभ्यम्, जम्भव्यम् जब्धव्यम्, जभनीयम् - विनोदे। जम्भा, जब्धा, जाभकः - विनोदवाक्यस्य वक्तरि)।

जभ् (जभते) = गात्रविनामे। जम्हाई लेना।

जम् (जमति) = अदने, भक्षणे, गतौ। खाना, भक्षण करना, निगलना, गति करना। (जमति - निगलति। जमः - निगलितो भक्षितो मनुष्यः। जमनम् - भक्षणम्ः, अदनम्)।

जम्भ् (जम्भति, जम्भयति, जम्भयते, जम्भे) = नाशने ताडने, गर्वे, अभिमाने। नष्ट करना, ताडना करना, अभिमत्त होना। (जम्भति - अभिमत्तो भवति। जम्भयति - ताडयति। जम्भे - ताडयति। जम्भनीयम् - ताडने)।

जम्भ (जम्भते) = गात्रविनामे, शरीरालस्ये। जम्हाई लेना, आलस्य

होना। (जम्भते - अलसो भवति। जम्भकः, जम्भानः - अलसे। जम्भिः, जम्भनम्, जम्भनीयम् - आलस्ये)।

जर्च (जर्चति) = परिभाषणे, तर्जने। गप्प करना, बोलना, कहना। (जर्चति - गप्पयति, गप्पम् वदति। जर्चनम् - गप्पवदनम्)।

जर्ज (जर्जति) = परिभाषणे, भये, हिंसायाम्, निन्दायाम्, भर्त्सने, तर्जने। बोलना, कहना, डराना, हिंसा करना, निन्दा करना, दोष लगाना, ताड़ना करना।

जर्ज्ज (जर्ज्जति) = परिभाषणे, तर्जने, अतिवदने, झंकारशब्दे च। गप्प करना, बोलना, कहना, झंकार करना। (जर्ज्जति - अतिवदति। जर्ज्जः, जर्ज्जम्, जर्ज्जकः - अतिभाषिणि। जर्ज्जनम्, जर्ज्जनीयम् - अतिभाषणे, जर्ज्जरः, जर्ज्जरी - वाद्यभेदे)।

जर्झ (जर्झति) = परिभाषणे, भर्त्सने। बोलना, कहना, निन्दा करना, दोष लगाना, बुरा-भला कहना।

जल् (जलति) = घातने, चलने, भ्रमणे, औष्ण्ये, तीक्ष्णे, सम्पन्नतायाम् च। तीक्ष्ण होना, उष्ण होना, तेजस्वी होना या करना, पैना करना, श्रीमान् होना, धनवान् होना, सम्पन्न होना। (जलति - वाष्पम् उच्चैः गच्छति। जलम् - औष्ण्यम्। जालम् - वाष्पः। जालन्ध्रः - जालम् धारकः, गवाक्षः वा)।

जल् (जलति, जालयति, जालयते) = अपवारणे, धान्ये, आर्द्रीभावे। आर्द्र होना, ढांकना, निवारण करना, जाल से ढांकना। (जलति - आर्द्री भवति। जलन्, जलिता - आर्द्रीकर्ता। जलम् - पयः। जलकम् - स्थानम्। जालम् - आनायः। जालन्ध्रम् - गवाक्षम्। जालु - कीलकम्। जालिः - संयोजकः। जलारी - जलमार्गः। जलिनी - लघुजलाश्रयः। जलनम्, जलनीयम्, जल्यम्, जाल्यम् - स्रोतसि)।

जल् (जलयति) = अपवारणे, तृषानाशने। प्यास बुझाना, दूर करना। (जलयति - तृषाम् शमयति। जलम् - पानीयम्। जलकम् - स्नानम्।

जालम् - मत्स्यादीनां निग्राहकः। जालकारः - मत्स्यहा (मछुआ)।

जल्प (जल्पति) = व्यक्तायां वाचि, विस्पष्टवाक्ये। बहुत बोलना, व्यर्थ बोलना। (जल्पति - वदति। जल्पकः, जल्पी - बहुभाषी)।

जल्ल (जल्लति) = प्रवाहे, भ्रमणे। बहना, भ्रमना। (जल्लति - प्रवहति। जल्लडिः, जल्लाडिः, जल्लरिः - नदीधारा। जल्लः - भ्रमणसाधनम्, यष्टिका वा)।

जष् (जषति) = भोजने, दशने, हिंसायाम् च। मार डालना, पीड़ा देना, खाना। (जषति - भक्षयति। जषः - भक्षकः, भक्ष्यः, मत्स्यः वा। जषिः - ग्रासः। जष्यम् - ग्रासः। जषणम् - दशनम्)।

जस् (जस्यति, जासयति, जासयते) = ताडने, हिंसायाम्। मार डालना, पीड़ा देना, ताड़ना करना, उपेक्षा करना। (जासयति - ताडयति। जस्यति - ताडयति। जासयति - हिनस्ति। जसकः - घातकः। जसनम्, जसनीयम् - हिंसने। जासः, जसः, जसकः, जसन् - ताडके। जसनम्, जसनीयम् - ताडनक्रियायाम्)।

जस् (जस्यति) = मोक्षणे, त्यागे। मुक्त करना, छोड़ देना। (जस्यति - त्यजति। जस्तः, जस्तवान्, जसन्, जस्ता - मोचके, त्यजके। जसम्, जासम्, जस्तम्, जस्तिः, जस्तव्यम्, जसनम्, जसनीयम्, जस्यम्, जास्यम् - त्यागे)।

जंस् (जंसयति, जंसयते) = रक्षणे, पालने, मोक्षणे। पालन करना, संरक्षण करना, मुक्त करना, छोड़ देना। (जंसयति - पालयति। जंसः - पालकः)।

जह् (जहति) = हिंसायाम्, गत्याम्, प्रसारे। हिंसा करना, चलना, फैलना। (जहति - प्रसरति। जाहरः - नगरम्)।

जहा - हा (जहाति) = गतौ, त्यागे। छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना। (जहाति - त्यजति। जहन्, जहकः, हाता, हायकः -

त्याजके। जहत्, जहनम्, जहनीयम् - त्यागे)।

जाङ्क्ष (जाङ्क्षति) = घोरवासिते च रौद्र-भाषणे, अस्पष्टम् भाषणे च काङ्क्षायां च। चाहना, रौद्रभाषण करना, अस्पष्ट बोलना। (जाङ्क्षति अस्पष्टम् भाषते। जाक्षः - अस्पष्टम् भाषकः, पक्षिविशेषः वा)।

जागृ (जागर्ति) = निद्राक्षये, निद्रापनये। जगना, नींद न लेना। (जागर्ति - निद्रां परित्यजति। जाग्रन्, जाग्रकः - त्यक्तनिद्रः (जागा हुआ)। जागरूकः, जाग्रत्, जागरणम्, जागरणीयम्, जागरम् - निद्रात्यागे)।

जातु (अव्यय) = कुछ भी, सम्भवतः, कदाचित्।

जान-ज्ञा (जानाति, जानीते, ज्ञास्यति) = अवबोधने, मारणे, प्रसन्नतायाम्, उपवेशने। जानना, समझना, प्रसन्न होना, मारना। अनु - अनुमोदन करना, आज्ञा करना, स्वीकार करना, मान्य करना। अप - छिपाना, आच्छादित करना। अप - नहीं जानना। अव - अपमान करना, मान खण्डन करना। उप - प्रथम जानना, पहले समझना। परि - जान लेना, परिज्ञान कर लेना। प्र - अच्छी तरह जानना। सम् - प्रतिज्ञा करना, प्रण करना, वचन देना, अंगीकार करना, स्वीकार करना, अनुमोदन करना, आज्ञा करना। प्रत्यभि - पहचानना। वि - स्पष्ट जानना। सम् - उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करना, अच्छी तरह जानना, समझना। (जानाति - अवबुध्यते। जानीते - अवबुध्यति। ज्ञाता - अवबोद्धा। ज्ञानम्, ज्ञेयम् - ज्ञातुम् योग्ये। ज्ञातव्यम् - ज्ञातुम् योग्यम्)।

जाप् (जापति) = आलस्ये, अलसीभावे तृषायां वा। आलस्य होना, प्यास लगना। (जापति - तृष्यति। जापः - तृषितः। जापुः - तृषा)।

जि (जयति) = विजये, जये, अभिभवे च। सर्वोत्कर्ष से रहना, सब से बढ़ के होना, जीतना, पराभव करना। वि - जीतना। परा - पराजित होना, पराजय करना। (जयति - शत्रुम् विजयते। जितम् - विजितम्। जेता - विजेता। जयः - विजयः। जेता, जित्, जीयः - विजयिनि। जेयम्,

जयनम्, जय्यम्, जेतव्यम्, जयनीयम् - विजययोग्ये। जिष्णुः - विजयी। जितम्, जितिः - विजयः)।

जिगा-गा (जिगाति) = स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना।

जिघृ-घृ (जिघर्ति) = क्षरण-दीप्त्योः, नाशे प्रकाशे च। टपकना, क्षरित होना, चमकना, प्रकाशित होना। (जिघर्ति - नाशयति, प्रकाशते। जघरन्, जघरः, जघर्ता, घृतः, घृतवान्, घरः, घारः - नाशके। घृतिः, घृतम्, घर्तव्यम्, घरणम्, घरणीयम्, घर्यम्, घार्यम् - नाशने)।

जिघ्र-घ्रा (जिघ्रति) = गन्धोपादाने, घ्राणे। सूंघना, चूमना। (जिघ्रति - गन्धम् गृह्णाति। घ्रायकः, जिघ्रन्, जिघ्राणः - गन्धग्रहीतरि। घ्रातम्, घ्राणम्, घ्रीतम्, घ्रीतिः, घ्रेयम्, घ्रातव्यम्, घ्राणीयम्, घ्राः, घ्रः - घ्राणे)।

जिञ्ज (जिञ्जति) = कष्टे, हिंसायां गत्यां च। हिंसा करना, कष्ट होना, गति करना। (जिञ्जति - कष्टायते)।

जिन् (जिनति) = संभक्तौ, मिश्रणे। अलग करना, मिलाना। (जिनति - त्यजति। जिनः - त्यागी)।

जिन्न (जिन्नति) = जये, संभक्तौ, मिश्रणे। जीतना, अलग करना, मिलाना। (जिन्नति - जयति। जिन्नः - जयी, तपस्वी)।

जिम् (जेमति, जेमते) = अदने, भक्षणे, दाने, अर्पणे। खाना, भक्षण करना, जेमना। (जेमति - भक्षति, ददाति, अर्पयति। जेमिनम् - भोजनम्)।

जिरि (जिरिणोति) = हिंसायाम्, जिघांसायाम्, विकर्त्तने। हिंसा करना, दुःख देना, काटना। (जिरिणोति - विकर्तयति। जेरन्, जेरकः, जेरः - विकर्तके। जेरणम्, जेरणीयम्, जेर्यम्, जैर्यम् - विकर्त्तने, जिरिः - विकर्तकः, क्रिमिः वा)।

जिल् (जेलति) = अदने, भक्षणे, पाने। ख़ाना, पीना। (जेलति - पिबति। जिलालः - मत्कुणः)।

जिल्ल (जिल्लति) = अदने, भक्षणे, क्षरणे। खाना, ग्रहण करना,

झरना।(जिल्लति - श्चोतति, पात्ररन्ध्रात् जलादि क्षरति)।

जिन्व-जिवि (जिन्वयति, जिन्वयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। दीप्त होना, प्रकाशित होना, बोलना।

जिवि-जिन्व (जिन्वति) = प्रीणने, शीतीभावे, रोचने, रुचने, प्रसन्नतायाम्, मोचने च।सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, आनन्द पाना, मुक्त करना, छोड़ देना।(जिन्वति - रोचते।जिव्वः - रोचकः।जिव्वनम्, जिव्वु, जिव्वि - प्रिये)।

जिषु (जेषति) = सेवने, सेचने, घर्षणे।सेवा करना, घर्षण करना, प्रोक्षण करना, सींचना। (जेषति - घर्षयति। जेष्टा - घर्षकः। जेषित्वा, जिष्ट्वा - घर्षयित्वा)।

जिह् (जिहीते) = गतौ।जाना, जानना, पाना, चलना।(जिहीते - गच्छति)।

जिह्न (जिहर्ति) = प्रसह्यकरणे, बलात्कारे।बलात्कार करना।

जिह्री-ह्री (जिह्रेति) = लज्जायाम्, त्रपायाम्। लज्जित होना, लजाना। (जिह्रेति - त्रपते। ह्रेता, ह्रीतः, ह्रीतवान्, ह्रयन्, ह्रयः, ह्रयकः, ह्रायः - त्रपमाणे। ह्रीः, ह्रीतिः, ह्रीतम्, ह्रेतव्यम्, ह्रय्यम्, ह्राय्यम्, ह्रयणम्, ह्रयणीयम् - लज्जने)।

जील् (जीलति) = अदने, भक्षणे, चर्वणे।खाना, चबाना।(जीलति - दन्तैः अन्नादिकम् पिंषयति, चर्वति।जीलः, जीलिः - पेषकः)।

जीव् (जीवति) = प्राणधारणे, प्राणनक्रियायाम्। जीना, प्राणवान् होना।आ - आजीविका चलाना।उप - उदर निर्वाह के लिए पराधीन होना, चाकरी करना।सम्, प्र - सुख से रहना, सुखी होना।(जीवति - प्राणिति। जीवः - प्राणः।जीविः - प्राणिः।जीवितम् - वेतनम्)।

जृ (जरयति, जीर्यते) = वयोहानौ, वृद्धौ, वृद्धत्वे, स्तुतौ।जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, स्तुति करना।(जरयति - स्तौति, वर्द्धति, केशान्

श्वेती करोति)।

जृम्भ (जृम्भते) = विकसने, प्रकाशने। विकसित होना, प्रकाशित होना।

जृष् (जृषति) = वयोहानौ, वृद्धत्वे। जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना।

जु (जवते) = गतौ, धावने, तीव्रे, क्षिप्रे।जाना, क्षिप्र जाना, भागना, दौड़ना। (जवते - त्वरते। जवकः, जवमानः - क्षिप्रकारी। जः, जवः, जवनम्, जवमानम्, जवनीयम्, जव्यम्, जाव्यम्, जविः - तीव्रे, क्षिप्रे।

जुङ्ग (जुङ्गति) = वर्जने, परित्यागे, भ्रंशने।त्यागना, छोड़ देना, वर्जित करना, फिसलना।(जुङ्गति - भ्रंशति।जुङ्गः - भ्रंशनम् (फिसलना)।

जुड् (जुडति) = गतौ, बन्धने च।जाना, बांधना, जोड़ना।(जुडति - गच्छति।जोडः, जोडा - युग्मः (जोड़ा)।जोडुः, जोडनम् - सुयोजनम् (जोड़ना), प्रबन्धः)।

जुड् (जोडयति, जोडयते) = बन्धने प्रेरणे प्रेषणे च।बांधना, प्रेरणा करना, भेजना, चूर्ण करना, पीसना।(जुडति - बध्नाति (कसकर बांधता है)। जोडः - बन्धकः।जोडा - बन्धिका। जोडुः - सहभावे, साहाय्यम्। जोडिः, जोडनम्, जोडनीयम्, जोडी, जोडनम् - - बन्धनम्)।

जुड् (जोडयति) = व्यभिचारे। व्यभिचार करना, जोड़ा बनाना। (जोडयति - व्यभिचरति।जोडः - व्यभिचारी।जोडा - व्यभिचारिणी)।

जुण्ड (जुण्डयति) = प्रेरणे प्रेषणे च।प्रेरणा करना, भेजना, पीसना, चूर्ण करना।

जुत् (जोतते) = भाषणे, शब्दने, भासने। बोलना, शब्द करना, प्रकाशित होना, चमकना।(जोतते - वदति।जोतकः, जोतः, जोतमानः - वदितरि।जोतनम्, जौत्यम्, जुतिः, जोतनीयम्, जुत्, जोत्यम्, जौत्यम् - भाषणे)।

जुन् (जुनति) = गतौ, कम्पने। जाना, हिलना, कांपना।

जुन् (जोनति) = संभक्तौ, मिश्रणे, जये। अलग करना, मिलाना, जीतना। (जोनति - जयति। जोनिकः - रज्जुकः। जोनिः - क्षुदा)।

जुन्न (जुन्नति) = परिभ्रमणे, संभक्तौ, मिश्रणे। परिभ्रमण करना, अलग करना, मिलाना। (जुन्नति - परिभ्रमति। जन्नः - परिभ्रमकः, यायावरः)।

जुप् (जोपति) = कुण्ठायां गतौ, शनैः गतौ। धीमे चलना। (जोपति - शनैः गच्छति। जोपः - मन्दगतिः)।

जुष् (जोषयति, जोषयते, जोषति) = परितर्कणे अदने, भक्षणे, हिंसायाम्। विचार करना, पीड़ा करना, मार डालना, ढाहना, दुलारना। (जोषति - भक्षयति। जोष्टा - भक्षयिता। जुष्टम् - भक्षितम्। जुष्टिः, जोषः - खाद्यम्)।

जुष् (जोषयति) = वितर्के, विवेके, विवेचने। विवेक होना, विवेचना करना। (जोषयति - विवेचयति। जोट्, जोड्, जोषकः - विवेकिनि। जोषणम्, जोषणीयम्, जोष्यम् - विवेचने)।

जुष् (जुषते) = प्रीतिसेवनयोः, प्रेम्णि, सेवायाम् अदने, भक्षणे च। सेवा करना, प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना। (जुषते - प्रीतिम् करोति। जुष्टः, जुष्टवान् - प्रेमी। जुष्टम्, जुष्टिः, जुट्, जोषम्, जोषणीयम्, जोष्यम् - प्रीतौ)।

जुहु (जुहोति, जुहुते) = दानादानयोः, दाने, तर्पणे, आदाने, ग्रहणे च। देना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, तृप्त करना। (जुहोति, जुहुते - ददाति, गृह्णाति च। होता, हवकः, हावकः, हवन्, हावनः, हुतः, हुतवान् - ग्रहीतरि च। हवनम्, हवनीयम्, हव्यम्, हाव्यम्, हविस्, हुतः, हुतिः - दाने आदाने च)।

जूप् (जूपति) = आलस्ये, अलसीभावे तृषायाम् वा। आलस्य होना, प्यास लगना। (जूपति - अलसो भवति। जूपः - अलसः। जूपुः - आलस्यम्)।

जेष् (जेषते) = गतौ। जाना। (जेषते - चलति। जेषकः, जेषमाणः - गन्तरि। जेट्, जेषणम्, जेषणीयम्, जेषा, जेष्यम् - चलने)।

जेह् (जेहते) = गतौ, विचारणे। विचार करना, उत्कण्ठापूर्वक यत्न करना, जाना। (जेहते - विचारयति। जेहकः, जेहमानः - विचारकः। जेहिः, जेहनम्, जेहनीयम् - विचारणे)।

जै (जायति) = क्षये, नाशे। क्षीण होना, ह्रास (ह्रास) होना, न्यून होना, अल्प होना, क्षय होना। (जायति - अल्पीभवति। जायमानः - अल्पीकृतः। जैः, जः, जानिः, जानम्, जीनम् - क्षये)।

ज्ञप् (ज्ञपयति) = मारणे, नर्तने, विवदने, नियोगे, नियोजने, प्रेरणायाम्, स्मारके। मारना, नृत्य करना, विवाद करना, आज्ञा करना, प्रेरणा करना, लगाना। (ज्ञपयति - मारयति, नृत्यति, विवदति। ज्ञपकम् - स्मारके)।

ज्ञप् (ज्ञापयति, ज्ञापयते) = अवबोधने, मारणे, तोषणे, प्रीणने, निशामने च। जानना, समझना, सिखाना, समझाना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना, मारना, ठोकना, तीक्ष्ण करना, पैना करना, देखना। (ज्ञापयति - जानाति। ज्ञप्तः - ज्ञाता। ज्ञपनम्, ज्ञप्तिः, ज्ञापकम् - स्मारके)।

ज्ञा-जान (जानाति, जानीते, ज्ञास्यति) = अवबोधने, ज्ञाने। जानना, समझना। अनु - अनुमोदन करना, आज्ञा करना, स्वीकार करना, मान्य करना। अप - छिपाना, आच्छादित करना, नहीं जानना। अव - अपमान करना, खण्डन करना। उप - प्रथम जानना, पहले समझना। परि - जान लेना, परिज्ञान कर लेना। प्र - अच्छी तरह जानना। सम् - प्रतिज्ञा करना, प्रण करना, वचन देना, अंगीकार करना, स्वीकार करना, अनुमोदन करना, आज्ञा करना। प्रत्यभि - पहिचानना। वि - स्पष्ट जानना। सम् - उत्कण्ठापूर्वक स्मरण करना, अच्छी तरह जानना, समझना। (जानाति - अवबुध्यते। जानीते - अवबुध्यति। ज्ञाता - अवबोद्धा। ज्ञानम्, ज्ञेयम् - ज्ञातुं योग्ये। ज्ञातव्यम् - ज्ञातुं योग्यम्)।

ज्ञा-जान (जानाति, जानीते, ज्ञास्यति) = अवबोधने, ज्ञाने, मारणे, प्रसन्नतायां, उपवेशने। जानना, समझना, मारना, हिंसा करना, प्रसन्न होना, बैठना।

ज्ञाप् (आ–ज्ञापयति, ज्ञापयते) = आज्ञायाम्, मारणे, नर्तने, विवदने, नियोगे, नियोजने, प्रेरणायाम्, स्मारके। आज्ञा करना, मारना, नृत्य करना, विवाद करना, प्रेरणा करना, लगाना। (ज्ञापयति - स्मारयति, प्रेरयति। ज्ञपयति - मारयति, नृत्यति, विवदति। ज्ञपकम्, ज्ञापकम् - स्मारके)।

ज्ञीस् (ज्ञीसयति) = विवेके। विवेक होना। (ज्ञीसयति - विवेकी भवति। ज्ञीसकः - विवेकी। ज्ञीसनम् - विवेकः)।

ज्या (ज्यानाति) = वयोहानौ, वृद्धत्वे। जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना। (ज्यानाति - जीर्णो भवति। ज्यायान्, ज्यैष्ठः - वृद्धे। ज्या - ज्यानम्, ज्यानीयम् - प्राचीने, जीर्णे)।

ज्यु (ज्यवते) = गतौ, धावने, तीव्रे, क्षिप्रे। जाना, क्षिप्र जाना, भागना, दौड़ना, निकट आना, निकट जाना। (ज्यवते - धावति। ज्यवकः, ज्यवमानः - धावकः। ज्यविः, ज्यवनम्, ज्यवनीयम् - धावनम्)।

ज्युत् (ज्योतते) = भासने। कान्तिमान् होना, चमकना, प्रकाशित होना।

ज्रि (ज्रयति, ज्राययति, ज्राययते) = वयोहानौ, जये, अभिभवे। जीतना, जय पाना, अल्प होना, न्यून होना, वृद्ध होना, जीर्ण होना।

ज्रिण्-ज्री (ज्रिणाति) = वयोहानौ, वृद्धत्वे। जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना।

ज्वर् (ज्वरति) = तापे, औष्ण्ये, रोगे। ज्वर आना, रोगी होना। (ज्वरति, ज्वरयति - तीव्रम् सन्तपति। ज्वरकः, ज्वरन् - उष्णः। ज्वरः, ज्वरणम्, ज्वरणीयम्, ज्वर्यम्, ज्वार्यम् - तापे, औष्ण्ये)।

ज्वल् (ज्वलति, ज्वलयति, ज्वालयति) = ज्वलने, दीप्तौ, द्योतने,

प्रकाशे। जलना, जलाना, प्रकाशित होना, प्रकाशित करना। (ज्वलति, ज्वलयति, ज्वालयति - प्रकाशते। ज्वलः, ज्वलनम्, ज्वलकः, ज्वलन्, जाज्वल्यमानः, ज्वाली - प्रकाशयितरि। ज्वलिः, ज्वलुः, ज्वाला - प्रकाशे)।

ज्विदा (ज्वेदति) = अव्यक्ते शब्दे, अव्यक्तध्वनौ। अस्पष्ट ध्वनि करना। ज्वेदति - शनैः, अव्यक्तम् वदति। ज्विण्णः - शनैः भाषकः)।

(झ)

झट् (झटति) = संघाते। जुटाना, एकत्र होना, तलवार के एक वार से ही मारना, झटका करना।

झटिति (अव्यय) = शीघ्र।

झण् (झणति) = उत्सुकतायाम्, त्वरणे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, उत्सुक होना। (झणति - उत्सुको भवति। झणः - उत्सुकः। झाणः - त्वरः)।

झम् (झमति) = अदने, भक्षणे। खाना, भक्षण करना। (झमति - भोजयति। झमकः - भुक्तभोजनः। झमनम् - आहारः। झामः - अदनम्)।

झर्झ (झर्झति, झर्झरति) = परिभाषण-हिंसा-तर्जनेषु, निन्दायाम्, अतिवदने, झर्झरशब्दे, झंकारशब्दे। अधिक बोलना, कहना, झंकार करना, झर्झर शब्द करना, निन्दा करना, दोष लगाना, मार डाला, दुःख देना। (झर्झति - झर्झरशब्दम् करोति)।

झर्झर (झर्झरति) = परिभाषण-हिंसा-तर्जनेषु, निन्दायाम्, भये, भय-दर्शने च। अधिक बोलना, कहना, झर्झर शब्द करना, निन्दा करना, दोष लगाना, भय दिखाना, डराना, मार डालना, दुःख देना। (झर्झरति - भयं दर्शयति। झर्झन्, झर्झकः - भयदर्शकः। झर्झनम्, झर्झनीयम् - भयम्। झर्झरः - जलप्रवाहध्वनिः, झर्झर-ध्वनिः, ताली, सीटी ध्वनि)।

झल्ल (झल्लति) = अदने-भक्षणे। ख़ाना।

झष् (झषति) = हिंसार्थः, हिंसायाम्, अदने, भक्षणे। मार डालना, दुःख देना, खाना। (झषति - भक्षयति, निगिरति। झषः - भक्षकः, भक्ष्यः, मत्स्यः वा)।

झष् (झषति) = आदान-संवरणयोः। ग्रहण करना, लेना, वस्त्रादि धारण करना।

झिम् (झेमति) = अदने, भक्षणे। खाना। (झेमति - भुङ्क्ते। झेमनम् - भोजनम्, आहारः)।

झिल् (झिलति) = अदने, भक्षणे। खाना।

झिल्ल (झिल्लति) = अदने, भक्षणे। खाना।

झील् (झीलति) = अदने, भक्षणे। खाना।

झॄ (झृणाति) = वयोहानौ, वृद्धत्वे। जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, नष्ट होना, झरना।

झॄ (झीर्यति) = वयोहानौ, वृद्धत्वे। जीर्ण होना, वृद्ध होना, पुराना होना, नष्ट होना, झरना।

झु (झवति) = गतौ, कूर्दने। जाना, चलना, कूदना। (झवकः, झवमानः - कूर्दितरि। झ, झु, झवः, झविः, झवनम्, झवनीयम्, झव्यम्, झाव्यम् - कूर्दने)।

(ञ)

ञु (ञवते) = विस्मरणे, शब्दे, ध्वनौ। विस्मरण होना, भूल जाना, शब्द करना। (ञवते - विस्मरति। ञवकः, ञवमानः - विस्मर्ता। ञ, ञवनम्, ञवनीयम् - विस्मरणम्)।

(ट)

टङ्क (टङ्कति, टङ्कयति, टङ्कयते) = बन्धने, कीलने। बांधना, टांकना, जोड़ना। (टङ्कयति - कीलयति। टङ्कः - कीलम्, मुद्रा)।

टम्ब (टम्बति) = मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, खींचना। (टम्बति - आकृषति)।

टल् (टलति) = वैक्लव्ये, दुःखे श्रमे। विह्वल होना, दुःखित होना, हृद्रोगी होना। (टलति - दुःख्यति। टलन्, टलः, टलकः - श्रमी। टलिः, टलनम्, टलनीयम्, टलितव्यम्, टल्यम्, टाल्यम्, टालम् - श्रमे)।

टल् (टलति) = चरणे, अदने, भक्षणे। ख़ाना, चरना। (टलति - चरति)।

टल्ल (टल्लति) = अदने, भक्षणे, चयने। खाना, चुनना। (टल्लति - चिनोति)।

टव् (टवते) = गतौ, सिञ्चने। गति करना, सींचना, छिड़कना। (टवते - सिञ्चति (छिड़कता है)। टवकः, टवमानः - सिञ्चिता। ट, टु, टविः, टवनम्, टवनीयम्, टव्यम्, टाव्यम् - सिञ्चने)।

टिक् (टेकते) = गत्यर्थः, गतौ, टेकने। जाना, टेकना, टिकाना।

टीक् (टीकते) = गतौ, खेलने, क्रीडने, वर्णने, टेकने। जाना, खेलना, वर्णन करना, टिकना, टेकना, टिकाना। (टीकते - क्रीडति। टीकते - वर्णयति। टीकुरः - वर्णयिता। टीका, टीकुः - वर्णनम्)।

टीक् (टीकयति) = बन्धने, प्रचारे। बाँधना, प्रचार करना। (टीकयति - प्रचारयति। टीककः - प्रचारकः। टीका - प्रचारः)।

टु (टव्) (टवते) = गतौ, सिञ्चने। गति करना, सींचना, छिड़कना। (टवते - सिञ्चति (छिड़कता है)। टवकः, टवमानः - सिञ्चिता। ट, टु, टविः, टवनम्, टवनीयम्, टव्यम्, टाव्यम् - सिञ्चने)।

ट्वल् (ट्वलति) = वैक्लव्ये, दुःखे, चूर्णने, श्रमे। चूर्ण करना, श्रम

करना, विह्वल होना, दुःखित होना।(ट्वलति - चूर्णयति।ट्वलः, ट्वलकः, ट्वलन् - चूर्णयिता।ट्वलनम्, ट्वलनीयम्, ट्वल्यम्, ट्वालम् - चूर्णने)।

(ठ)

ठल् (ठलति) = खनने, अदने, भक्षणे।खाना, खनन करना।(ठलति - खनति।ठलः - खनकः, वन्यो मृगविशेषः वा)।

ठल्ल (ठल्लति) = अदने, भक्षणे।खाना।(ठल्लः - भक्षकः, वन्यमृगः वा)।

ठव् (ठवते) = गतौ, वञ्चने। ठगना। (ठवते - वञ्चति, ठवकः, ठवमानः - वञ्चकः। ठ, ठु, ठविः, ठवनम्, ठवनीयम्, ठव्यम्, ठाव्यम् - वञ्चने)।

ठु (ठव्) (ठवते) = गतौ, वञ्चने।ठगना।(ठवते - वञ्चति, ठवकः, ठवमानः - वञ्चकः। ठ, ठु, ठविः, ठवनम्, ठवनीयम्, ठव्यम्, ठाव्यम् - वञ्चने)।

(ड)

डप् (डापयते) = संघाते, सहभावे। एकत्र करना, बटोरना, राशि करना।(डापयते - सहयोगी भवति। डपन्, डपकः - सहगन्तरि)।

डम्ब (डम्बति) = मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, अधिक खाना। (विडम्बति - अत्यन्तम् भक्षयति, मर्दनम् करोति वा)।

डल् (डलति) = अदने, भक्षणे, विकसने, विभजने।खाना, विकसना, विभाजन होना।(डलति - विभजते। डलः, डालः - विकासः।पड्डलिः - पदा डलति इति भ्रमरः)।

डल्ल (डल्लति) = अदने, भक्षणे, विकसने, विभजने।खाना, विभाजन

करना, विकास करना। (डल्लति - पदा ताडयति। डल्लः - विकासः)।

डव् (डवते) = गतौ, ऋजुभावे। जाना, सीधा जाना, सीधा होना। (डवते - ऋजु भवति। डवकः, डवमानः - ऋजुः। ड, डु, डवि, डवनम्, डवनीयम्, डव्यम्, डाव्यम् - ऋजुभावे)।

डह् (डहति) = परिकल्कने, वञ्चने, धौर्त्ये। धूर्तता करना। (ढक्, डक्, डहुः - वञ्चकः, पुष्पविशेषः वा)।

डिण्ड (डिण्डति) = आह्वाने, हिंसागत्योः, हिंसायाम्, गत्याम् च। हिंसा करना, गति करना, आह्वान करना।(डिण्डति - आह्वयति।डिण्डिमः - आघोषविशेषः (डूंडी)।

डिप् (डिप्यति, डिपति, डेपयति, डेपयते) = क्षेपे, रक्षणे, स्थापने। रक्षण करना, स्थापन करना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, निन्दा करना। (डिप्यति - रक्षति, स्थापयति। डेपन्, डेपकः, डिप्तः, डिप्तवान्, डेप्ता - रक्षके।डिप्तिः, डेप्तव्यम्, डेपनम्, डेपनीयम्, डेप्यम्, डैप्यम्, डेपः, डिप् - रक्षणे, स्थापने)।

डिप् (डेपयति, डेपयते) = संघाते, शृङ्गारे।एकत्र करना, बटोरना। (डेपयति - शृङ्गारयति।डेपन्, डेपकः - शृङ्गारके।डेपनम्, डेपनीयम् - शृङ्गारे)।

डिप् (डिपति) = पेक्षे, कम्पने, वाक्ये कथने।कहना, कम्पन करना। (डिपति - कथयति। डेपः, डेपकः - कम्पयितरि। डेपनम्, डेपनीयम् - कथने)।

डिम्भ (डिम्भति) = गतौ, धारणे, घर्षणे।धारण करना, घर्षण करना, जाना। (डिम्भति - याति, गच्छति। डिम्भः - गमनः,शवः वा)।

डिह् (डिहति) = सीवने, परिकल्कने, धौर्त्ये। धूर्तता करना, सीना, सिलना। (डेहारः - चर्म सीवकः। डेहनम् - सीवने)।

डी (डयते, डीयते) = विहायसा गतौ, पक्षिणां गतौ। आकाश में

उड़ना, जाना। अव - आकाश से उतरना। उत् - ऊपर उड़ना। परि - चक्राकार उड़ना। प्र - चपलता से उड़ना। सम् - समूह के साथ उड़ना। समुत् - ठहर-ठहर कर धीरे-धीरे उड़ना। (डीयते - विहायसा गच्छति, डयते - आकाशे चरति। डयकः, डयमानः - आकाशचारी। प्रडीनम् - पक्षिणाम् अवतरणम्। उड्डीनम् - पक्षिणाम् उपरिगमनम्। डय्यम्, डाय्यम्, डयनम्, डयनीयम् - आकाशगमने। डीनः, डयानः - पक्षी। डीतिः, डयनम्, डयनीयम् - पक्षिगत्याम्)।

डीप् (डीपयति) = क्षेपे, गत्याम्, कूर्दने। कूदना। (डीपयति - कूर्दते। डीपन्, डीपकः - कूर्दितरि। डीपनम्, डीपनीयम् - कूर्दने)।

डु (डव्) (डवते) = गतौ, ऋजुभावे। जाना, सीधा जाना, सीधा होना। (डवते - ऋजु भवति। डवकः, डवमानः - ऋजुः। ड, डु, डवि, डवनम्, डवनीयम्, डव्यम्, डाव्यम् - ऋजुभावे)।

डुण्ड (डुण्डति) = निकृन्तने, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां कूर्दने च। हिंसा करना, गति करना, काटना। (डुण्डति - निकृन्तति। डुण्डः - कूर्दनम्। डुण्डुः - जलचरपक्षिविशेषः। डुण्डुभः - पक्षी)।

डुम्ब (डुम्बति) = क्रीडने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, खेलना। (डुम्बति - क्रीडति। डुम्बः - क्रीडनम्)।

डुम्भ (डुम्भति) = क्रीडने, धारणे, घर्षणे। धारण करना, घर्षण करना, खेलना। (डुम्भति - क्रीडते। डुम्भः - क्रीडकः)।

डुल् (डोलयति, डोलयते) = उत्क्षेपे। ऊपर फेंकना, झूलना, झुलाना।

डुह् (डोहति) = सीवने, परिकल्कने, धौर्त्ये। धूर्तता करना, चमड़ा सिलना। (डोहति - चर्म सीव्यति। डेहारः - चर्म सीवकः। ढक् (डक्), डेहनम् - सीवने। डहुः - पुष्पविशेषः)।

डोल (डोलति) = गतिचातुर्ये, गतिप्रावीण्ये। लटकना, झूलना। (डोलति - लम्बते। डोला - झूला। डोलुः - वाद्यविशेषः, ढोलः वा)।

(ढ)

ढण् (ढणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, समूहे, संघाते, सहभावे। एकत्र करना, राशि करना, एकत्र होना, शब्द करना। (ढणति - एकत्रो भवति, नदति, शब्दयति। ढणः - घण्टा)।

ढण्ढ (ढण्ढति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (ढण्ढति - शब्दयति। ढण्ढः - शब्दः)।

ढल् (ढलति) = अदने, भक्षणे, पाने। खाना, पीना। (ढलति - जलं गड़गड़ध्वनिसहितं पिबति)।

ढल्ल (ढल्लति) = कम्पने, अदने, भक्षणे। खाना, कम्पन करना। (ढल्लति - कम्पयति)।

ढव् (ढवते) = गतौ, शब्दाग्निसंयोगयोः, ध्वनौ अग्निसंयोगे च। धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना, जाना। (ढवते - ध्माति। ढवकः, ढवमानः - ध्माता। ढ, ढु, ढविः, ढवनम्, ढवनीयम्, ढव्यम्, ढाव्यम् - ध्माने)।

ढु-ढव् (ढवते) = गतौ, शब्दाग्निसंयोगयोः, ध्वनौ, अग्निसंयोगे च। धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना, जाना। (ढवते - ध्माति। ढवकः, ढवमानः - ध्माता। ढ, ढु, ढविः, ढवनम्, ढवनीयम्, ढव्यम्, ढाव्यम् - ध्माने)।

ढुण् (ढोणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (ढोणति - शब्दयति)।

ढुण्ढ (ढुण्ढति) = अन्वेषणे, अनुसन्धाने। ढूँढना। (ढुण्ढति - अन्वेषयति। ढुण्ढिः - अन्वेषकः)।

ढोल् (ढोलति) = क्रीडने, गतिचातुर्ये, गतिप्रावीण्ये। खेलना। (ढोलति - क्रीडति)।

ढौक् (ढौकते) = गतौ, शब्दे। जाना, स्थानान्तर करना, शब्द करना। उप - आगे या समीप रखना। (ढौकते - शब्दयति। ढौका - नदी)।

(ण)

णव-णु (णवते) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (णवते - वदति। णवकः, णवमानः - वदिता। णः, णवनम्, णवनीयम् - वाक्यम्, भाषा)।

णो (नः) (सर्वनाम) = हमारा, हमारे लिए, हमको।

णौ (नौ) (सर्वनाम) = हम दोनों।

(त)

तक् (तकति) = हसने, उपहासे, सहने। उपहास करना, ठठ्ठा करना, सहना, सहन करना, उपहास-प्रत्युपहास करना। (तकति - हसति)।

तक्क (तक्कति) = हसने, उपहासे, सहने। उपहास करना, ठठ्ठा करना, सहना, सहन करना, उपहास-प्रत्युपहास करना। (तक्कति - हसति)।

तक्ष (तक्षति) = त्वचने, तक्षणे, तनूकरणे। आच्छादित करना, छीलना। अनु - पैना करना, धार लगाना। सम् - टुकड़े करना, घाव करना। (तक्षति - तक्षणं करोति। तक्षन् - तक्षणकर्ता)।

तक्ष (तक्षति) = वचने। बोलना। (तक्षति - वदति। तक्षः - वदिता)।

तक्ष (तक्षते) = हिंसायाम्। मारना, हिंसा करना। (तक्षते - हिनस्ति। तक्षकः - हिंसकः। तक्षणम्, तक्षणीयम् - हिंसायाम्)।

तङ्क (तङ्कति) = कृच्छ्रजीवने, कष्टमये जीवने, परिश्रमे। दुःख (तङ्गी) से दिन बिताना। (तङ्कति - परिश्राम्यति। तङ्कः - परिश्रमः)।

तङ्क (तञ्च) (तनक्ति, तङ्क्ते) = संकोचने, म्लाने। संकुचित होना, संकोच होना। (तनक्ति, तङ्क्ते - म्लायति। तक्तः, तक्तवान्, तक्ता,

ताक्तः - म्लाायके। तक्तिः, तक्तम् - म्लाने संकोचने)।

तङ्ग (तङ्गति) = गत्यर्थः, कम्पने, अपपातने। जाना, कांपना, हिलना, ठोकर लग के गिर पड़ना।

तञ्च (तञ्चति) = गतौ, गमने, वञ्चने, म्लाने, संकोचने। जाना, वञ्चना करना, संकोच करना, म्लान करना। (तञ्चति - वञ्चयति। तञ्चः - वञ्चनम्। तञ्चन्, तञ्चानः, तञ्चकः - म्लाायके। तञ्चनम्, तञ्चनीयम्, तञ्चम् - म्लाने, संकोचने)।

तञ्ज (तञ्जयति) = निन्दने, भाषार्थाः, भासार्थः। चमकना, प्रकाशित होना, निन्दा करना। (तञ्जकः, तञ्जनम्, तञ्जनीयम् - निन्दायाम्)।

तट् (तटति) = गतौ, तीरे, उच्छ्राये, भृतक-कर्मणि। ऊँचा होना, वृद्धिगत होना, चाकरी करना। (तटति - तडागं गच्छति। ताटः, तटाकः - तडाकः, तटिनी - तटयुक्तः। तटित् - विद्युत्। तटित्वान् - मेघः। तटम् - तीरम्। तटतटा - जलधारा)।

तड् (ताडयति, ताडयते) = गतौ, ताडने, आघाते, छिद्रकरणे, बन्धने। मारना, ताड़न करना, घर्षण करना, छिद्र करना। (ताडयति - घर्षयति, छिद्रयति। तडादः - नद्याः बन्धः। तडी - नदी। तडा - बन्धनम्)।

तड् (ताडयति, ताडयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

तण्ड (तण्डते) = ताडने, खण्डने। मारना, ताड़न करना। (तण्डते - त्रोटते, खण्डयति। तण्डकः, तण्डानः - खण्डयितरि। वितण्डः - हस्ती, कुतर्कः)।

तण्ड (तण्डति) = समूहे, संङ्घाते। एकत्र होना। (तण्डति - सम्मर्दनं (भीड़) भवति। तण्डुः, तण्डः - समूहः)।

तत् (अव्यय) = इसलिए।

तत्-तद् (सर्वनाम) = वह, उस ने। (नपुंसकलिंग)

ततः (अव्यय) = उससे, उसके बाद, तब, फिर।

ततस्ततः (अव्यय) = इसके आगे, कहते चलिए।

तत्र (अव्यय) = वहाँ।

तथा (अव्यय) = उस प्रकार।

तथा हि (अव्यय) = तो फिर, जैसे (सविस्तार वर्णन)।

तथैव (अव्यय) = उसी तरह।

तदा (अव्यय) = तब।

तदानीम् (अव्यय) = तब।

तन् (तानयति, तानयते, तनति) = श्रद्धोपकरणयोः, शब्दोपकरणयोः, शब्दे उपकरणे हनने च। विश्वास करना, आश्रय देना, सहाय करना, शब्द करना, पीड़ा करना, दुःख देना। वि, सम् - बढ़ाना, लम्बा करना।(तानयति - शब्दयति। तानन्, तानकः, तान् - शब्दके। तानम्, तानकम् - शब्दने)।

तन्-तनु (तनोति, तनुते) = शब्दे, उपकरणे, वर्णने, विस्तारे। विस्तार करना, फैलाना, बढ़ाना, श्रद्धा-उपकार-शब्द करना। (तनोति, तनुते - सविस्तरं ब्रवीति। तन्वन्, तन्वानः, तन्तः, तन्तवान्, तन्ता - विस्तारके। तननम्, तननीयम्, तन्यम्, तान्यम्, तन्तव्यम् - विस्तरे)।

तनक् - तङ्क (तञ्च) (तनक्ति, तङ्क्ते) = संकोचने - म्लाने। संकुचित होना, संकोच होना, म्लान होना। (तनक्ति, तङ्क्ते - म्लायति। तक्तः, तक्तवान्, तक्ता, ताक्तः - म्लायके। तक्तिः, तक्तम् - म्लाने संकोचने)।

तन्तस् (तन्तस्यति) = दुःखे। दुःखी होना।

तन्त्र (तन्त्रयति, तन्त्रयते) = प्रसारे, विस्तारे, प्राधान्ये, कुटुम्बधारणे। फैलाना, कुटुम्ब पोषण करना, प्रधान होना।(तन्त्रयति - कुटुम्बं पोषयति। तन्त्रकः - कुटुम्बपोषकः। तन्त्रणम् - कुटम्बधारणम्)।

तन्त्र (तन्त्रयति) = दर्शने। देखना, दिखाना।(तन्त्रयति - दर्शयति। तन्त्रकः - दर्शकः। तन्त्रम्, तन्त्रणम्, तन्त्रणीयम् - दर्शने)।

तन्द् - तन्त्र (तन्त्रयति, तन्त्रयते) = प्रसारे, विस्तारे, प्राधान्ये, कुटुम्बधारणे, आलस्ये, तन्द्रायाम्। फैलाना, कुटुम्ब पोषण करना, प्रधान होना, आलस्य होना, तन्द्रा होना।

तप् (तपति, तपते, तप्यते, तापयति, तापयते) = ऐश्वर्ये, दाहे, सन्तापे च, दुःखे, निन्दायां, हिंसने। तप्त होना, जलना, जलाना, तप्त करना, ऐश्वर्ययुक्त होना। अनु - पश्चाताप करना। परि, सम् - पश्चात्ताप करना। (तपति - दुःखितो भवति, प्रकाशयति वा। तप्यते - ऐश्वर्ययुक्तो भवति। तप्यः, तप्तः, तप्तवान्, तपकः - ऐश्वर्ययुक्तः। तपनः - सूर्यः। ताप्ती, तप्तम्, तप्तिः, तपनीयम्, तप्यम् - ऐश्वर्ये)।

तप् (तापयति) = दाहे, तृषायाम्। दाह होना, तृषा होना। (तापयति - तर्षयति। तपन्, तापकः - तर्षके। तापः, सन्तापः - तृषायाम्)।

तम् (सर्वनाम) = उसको। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तम् (ताम्यति) = काङ्क्षायाम्, इच्छायाम्, ग्लानौ। इच्छा करना, चाहना, दुःखित होना, ग्लानि होना (ताम्यति - इच्छति। तमन्, तान्तः, तमितः, तमितवान्, तमिता, तमकः, तमी, तामः - इच्छुके। तमिस्, तमिस्रम् - रात्रिः। तमनम्, तम्यम्, ताम्यम्, तामसम् - इच्छायाम्)।

तम्ब (तम्बति) = निवासे, मर्दने, मर्दन-क्रियायाम्। मर्दन करना, निवास करना। (तम्बति - निवसति। तम्बः - गृहम्। तम्बुः - राजगृहम् (तम्बू)। तम्बालिः - भाण्डम्)।

तय् (तयते) = गतौ, रक्षणे, चुम्बने। जाना, संरक्षण करना, चुम्बन करना।(तयते - चुम्बति। तयः, तयकः, तयमानः, तय्यः - चुम्बितरि। तयिः, तयुः, तयनम्, तयनीयम् - चुम्बने)।

तया (सर्वनाम) = उसके द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

तयोः (सर्वनाम) = उन दोनो का, उन दोनो में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

तर्क (तर्कयति, तर्कयते) = ऊहने, विवादे, भाषार्थः, भासार्थो वा। बोलना, कहना, प्रकाशित होना, चमकना, तर्क करना, कल्पना करना, वाद करना, शंका करना। (तर्कयति - ऊहयति। तर्कः - ऊहः, विवादः)।

तर्ज (तर्जति, तर्जयते) = भर्त्सने, निन्दायां, गालिप्रदाने, सन्तर्जने, भये। दोष लगाना, निन्दा करना, डराना। (तर्जयते - भीषयते। तर्जन्, तर्जकः - भयप्रदे। तर्जनम्, तर्जनीयम् - भये)।

तर्ज (तर्जति) = भर्त्सने, निन्दायां, गालिप्रदाने, आकर्षणे। आकर्षण करना, निन्दा करना, गाली देना। (तर्जति - आकर्षति। तर्जनम् - आकर्षणम्)।

तर्ज (तर्जति) = व्यथने, व्यसने। दुःख होना, पीड़ा होना। (तर्जति - दुःखयति। तर्जः - पीडा)।

तर्ण-तृण् (तर्णति) = अंकुरणे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, अंकुरित होना। (तर्णति - अङ्कुरितो भवति। तृणः - घासः)।

तर्द (तर्दति, तर्दयति) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना। (तर्दयति - हिंसयति। तर्दुः - हिंसकः। तर्दति - मारयति)।

तर्हि (अव्यय) = तब, तो।

तल् (तालयति, तालयते) = प्रतिष्ठायाम्, वपने। पूर्ण होना, स्थापन करना, बैठाना, बोना, सिद्ध करना। (तालयति - वपति (सस्यम्)। तलम् - अधोभागः)।

तव (सर्वनाम) = तुम्हारा। (त्रिलिंग)

तंस (तंसयति, तंसयते) = अलङ्कारे, शृङ्गारे। सजाना, अलंकृत करना। अव - सजाना, अलंकृत करना। (तंसति - अलङ्करोति। तंसः - आभरणम्। तंसनम् - अलङ्करणम्। तंसितम् - अलङ्कृतम्)।

तस् (तस्यति) = उपक्षये, रक्षणे, स्थापने। रक्षा करना, स्थापना करना, फेंकना, उड़ा देना, भेजना, खोदना, कुम्हलाना। (तस्यति - रक्षति। तस्तः, तस्तवान्, तस्ता, तसकः, तसन् - रक्षके। तसनम्, तसनीयम्,

तस्तव्यम्, तस्यम्, तास्यम्, तसम्, तासम् - रक्षणे)।

तस्मात् (अव्यय) = इसलिए।

तस्मात् (सर्वनाम) = उससे (अपादान, अलग होना) (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तस्मिन् (सर्वनाम) = उसमें। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तस्मै (सर्वनाम) = उस के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तस्य (सर्वनाम) = उसका (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तस्याः (सर्वनाम) = उसका, उससे। (स्त्रीलिंग)।

तस्याम् (सर्वनाम) = उसमें। (स्त्रीलिंग)।

तस्यै (सर्वनाम) = उसके लिए। (स्त्रीलिंग)।

ताः (सर्वनाम) = उन सब ने, उन सब को। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।।

तान् (सर्वनाम) = उनको, उन सबको। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

तानि (सर्वनाम) = उन सबने, उन सबको। (नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

ताभिः (सर्वनाम) = उन सब द्वारा। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

ताभ्यः (सर्वनाम) = उन सब के लिए, उन सब से। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

ताभ्याम् (सर्वनाम) = उन दोनों द्वारा, उन दोनों के लिए, उन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

ताम् (सर्वनाम) = उस को। (स्त्रीलिंग)।

ताम्ब (ताम्बति) = दीप्तौ, दीपने, प्रकाशने, मर्दनक्रियायाम्। चमकना, प्रकाशित होना। (ताम्बति - दीप्यते। ताम्बरम् - ताम्रम्)।

ताय् (तायते) = सन्तानपालनयोः, सन्ताने रक्षणे च। संरक्षण करना, फैलाना, लम्बा करना। (तायते - रक्षति। तायकः, तायमानः, तायः, ताय्यः - रक्षितरि। तायिः, तायी - रक्षके, जनन्याम्। तायुः, तायनम्, तायनीयम् -

रक्षायाम्)।

तावत् (अव्यय) = तब तक।

तासाम् (सर्वनाम) = उन सब के। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

तासु (सर्वनाम) = उन सब में। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

तिक् (तिक्नोति) = गतौ, हिंसने, जिघांसायाम्। जाना, हल्ला करना, चाल चलना, मारने या दुःख देने का प्रयत्न करना। (तिक्नोति - मारयति। तिक्तः, तिक्तवान्, तेकन्, तेक्ता, तेककः, तिक - घातकः। तिक्मम् - घर्मः। तेकनम्, तेकनीयम्, तिक्तिः, तेक्यम्, तैक्यम्, तेक्तव्यम् - हिंसने। तेकुः - प्राणवायोः ऊर्ध्वगमनम्)।

तिक् (तेकते) = गत्यर्थः, भ्रमणे, तेकने। जाना, भ्रमण करना, डकार आना। (तेकते - भ्रमति, डकार आता है। तेकः, तेकुः, तेकी, तिकुरः - भ्रमणशीलं वस्तुः)।

तिक्ष (तिक्षु) (तिक्ष्णोति) = जिघांसायाम्। दम लगाना। (तिक्ष्णोति - दम लेता वा छोड़ता है। तिक्, तेक्षः, तेक्षन्, तेक्षकः - दम लगाने वाला। तिक्षणम्, तेक्षणम्, तेक्षणीयम्, तेक्ष्यम्, तैक्ष्यम् - दमे)।

तिग् (तिग्नोति) = गतौ, स्वेदने, जिघांसायाम्। जाना, हल्ला करना, चाल चलना, मारने या दुःख देने का प्रयत्न करना। (तिग्नोति - स्विदयति। तिग्, तेगन्, तेगकः, तेगः, तेग्यः - स्वेदवान्। तेगुः - प्राणवायोः ऊर्ध्वगमनम्, वृक्षविशेषः)।

तिघ् (तिघ्नोति) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना।

तिज् (तेजते, तेजयति, तेजयते) = निशातने, निशाने, प्रभावे। तीक्ष्ण करना, पैना करना, धार लगाना, चमकाना। (तेजयति - प्रभावयति। तेजस्वी - प्रभावजनकः। तेजस् - प्रभावः)।

तितिक्ष (तितिक्षते) = तीक्ष्णीकरणे, शातने, क्षमायां, सहने, प्रकाशने च। क्षमा करना, सहना, प्रकाश करना, चमकना। (तितिक्षते - तीक्ष्णीकरोति,

सहते, प्रकाशते। तितिक्षकः, तितिक्षमाणः - तीक्ष्णीकर्तरि, सोढरि। तितिक्षिः, तितिक्षुः, तितिक्षणम्, तितिक्षा - सहने)।

तिन्त्र (तिन्त्रयति) = आम्लकरणे, अम्लीभावे। अम्ल होना, अम्ल करना, खट्टा होना, खट्टा करना। (तिन्त्रयति - अम्लीभवति। तिन्त्रकः - अम्लः। तित्रिणी - तिन्तिडीका (इमली)।

तिप् (तेपते) = क्षरणे, क्षरणार्थः। प्रोक्षण करना, सींचना, झरना, टपकना। (तेपते - सिञ्चति। तेपकः, तेपानः - सिञ्चकः। तिप्, तिपिः, तिपुः, तेपनम्, तेपनीयम् - सेचने)।

तिम् (तिम्यति) = आर्द्रभावे, आमे अपक्वे (सजले)। आर्द्र होना। (तिम्यति - आर्द्रीभवति। तिम्यन्, तिमिता, तिमितवान्, तेमकः - अपक्वे (सजले)। तेमः, तेमनम्, तेमनीयम्, तिमितव्यम्, तिमितम्, तिमितिः - आर्द्रे)।

तिरः (अव्यय) = तिरछे ।

तिर्यक् (अव्यय) = तिरछे।

तिल् (तिलति, तेलयति, तेलयते) = गतौ, स्नेहने, स्निग्धीकरणे। तेल लगाना, स्निग्ध होना, चिकना होना। (तिलति, तेलयति - स्निह्यति, स्निग्धो भवति। तिलः - स्नेहनद्रव्यविशेषः, धान्यम्। तैलम् - तिलानां स्नेहः। तैलिकः - तैलोत्पादकः। तैलिकः - तिलपीडनयन्त्रम् (धानी कोल्हू)।

तिल्ल (तिल्लति) = गतौ, प्रकाशने। जाना, प्रकाशित होना। (तिल्लति - प्रकाशितो भवति। तिल्ला - ज्योतिर्लता)।

तिष्ठ (स्था) (तिष्ठति, तिष्ठते) = गतिनिवृत्तौ, गत्यवरोधे आसादने, उपवेशने। स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना, विनती करना, गिड़गिड़ाना, अपना अभिप्राय दूसरे को समझाना। अधि - पदारूढ़ होना, ऊपर रहना, ऊपर बैठना, जीतना, बढ़ना, अधिक होना। अनु - यथाशास्त्र वर्तना, उपयोग करना, सटे रहना, लटकना। अव - सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना, थमना, स्थिर रहना। आ - निश्चयपूर्वक बुलाना, योजना

बनाना, नियमित करना, अधिरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उत् - खड़ा होना, आसन से उठना, ढूँढ़ना, खोजना। उप - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, प्रसन्न करना, सम्भावना करना, रहना, जाना, आलिङ्गन करना, प्राप्ति की इच्छा करना, मिलने का हेतु रखना। नि - रखना, स्थापित करना। पर्यव - अचल होना, स्थिर होना। प्र - जाना, आगे जाना। प्रोत् - आसन पर से उठना, खड़ा रहना। प्रति - प्रतिष्ठित होना, खड़े रहना, परमेश्वरार्पित होना। वि - अलग खड़ा रहना, दूर खड़ा रहना, थकना, बाट जोहना। व्यव - आज्ञा करना। सम् - अच्छा होना, भला होना, निकट होना, पूर्ण होना, एकमत होना। समा - आचरण करना। समुत् - उठ खड़ा होना। सम्प्र - प्रवास करना, परदेश जाना, आगे जाना। (तिष्ठति - आसीदति। तिष्ठन्, तिष्ठान्, स्थायिता, स्थानकः, स्थानिकः, स्थापकः - आसीदितरि। स्थानम्, स्थापनम्, स्थेयम्, स्थानीयम्, स्थितम्, स्थितिः, स्थः, स्थाः - उपवेशने)।

तिष्ठ (स्था) (तिष्ठते) = विनती करना, गिड़गिड़ाना, अपना अभिप्राय दूसरे को समझाना।

तीक् (तीकति, तीकते) = गत्यर्थः। जाना।

तीक्ष (तीक्ष्णोति) = उपवेशने, जिघांसायाम्। बैठना। (तीक्ष्णोति - उपविशति। तीक्षन्, तीक्षकः, तीक्ष्णः - उपवेशकः। तीक्ष्णम्, तीक्षणम्, तीक्षणीयम् - उपवेशने)।

तीम् (तीम्यति) = आर्द्रीभावे। आर्द्र होना, गीला होना।

तीर् (तीरयति, तीरयते) = कर्मसमाप्तौ, कार्यान्ते। पूर्ण करना, समाप्त करना, पार लगाना। (तीरयति - समापयति। तीरयन्, तीरकः - पूरके। तीरम्, तीरणम्, तीरणीयम् - समापने)।

तीव् (तीवति) = स्थौल्ये, फूत्कारे च। मोटा होना, तुन्दिल होना, फूत्कार करना। (तीवति - फूत्करोति, स्थूलो भवति। तीवः, तीवनः, तीवरः

- स्थूलो मनुष्यः)।

तीव् (तेवति) = रुजायाम्, रोगे। रोगी होना। (तेवति - रुग्णः, रिक्तो वा भवति)।

तृक्ष (तृक्षति)) = गतौ, गमने। जाना। (तृक्षति - चलति। तृक्षकः - गन्ता)।

तृण् (तृणति, तृणोति, तृणुते, तर्णोति, तर्णुते) = अदने प्रीणने, चरणे, भक्षणे। घास खाना, चरना। (तृणति - चरति। तृणोति, तृणुते - अत्ति। तृणकः - अत्ता। तृणम् - घासः)।

तृण्-तर्ण (तर्णति) = अंकुरणे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, अंकुरित होना। (तर्णति - अङ्कुरितो भवति। तृणः - घासः)।

तृद् (तृणत्ति, तृन्ते, तर्दति) = हिंसानादरयोः, हिंसने अनादरे च। मार डालना, दुःख देना, अवज्ञा करना, अनादर करना, देना, दान करना, खाना, भक्षण करना। (तृणत्ति, तृन्ते - हिनस्ति, अनादरं करोति। तर्दन्, तर्दानः, तर्दकः - घातके अनादरके। तर्दुः - हिंसकः। तर्दनम्, तर्दनीयम्, तृद्, तृत्तम्, तृत्तिः, तर्त्तव्यम् - मारणे, प्रीति-अभावे)।

तृप् (तृप्यति, तृप्नोति, तर्पति) = तृप्तौ शीतीभावे। तृप्त होना, प्रसन्न होना, तृप्त करना, प्रसन्न करना। (तृपति - तृप्तो भवति। तृपन्, तृप्तवान्, तृप्तः, तृपकः - तृप्ते)।

तृप् (तर्पयते, तर्पति, तर्पयति, तृप्नोति) = शीतीभावे, प्रीणने, प्रेमणि। शीत होना, शान्त होना, प्रेम करना। (तृप्नोति - शान्तो भवति। तर्पन्, तर्पकः, तृप्तः, तृप्तवान् - शमी। तर्पणम्, तर्पणीयम्, तृप्तिः, तृप्तम्, तर्प्तव्यम् - शीतीभावे। तर्पयति - शीतीभवति। तृप्तः, तर्पकः - शीतयुक्ते। तर्पणम्, तृप्तिः, तर्पणीयम् - शीतीकरणे)।

तृप् (तृप्यति) = प्रीणने, शीतीभावे, शान्तीभावे। शीत होना, शान्त होना, प्रेम करना। (तृप्यति - शान्तो भवति। तर्प्ता, तृप्तः, तृप्तवान्, तर्पत्,

तर्पकः - शान्तभावुके, तृप्ते। तृप्, तृप्तम्, तृप्तिः, तर्पणम्, तर्पणीयम्, तर्प्यम्, तार्प्यम्, तार्पम् - शान्तकरणे)।

तृफ् (तृफति) = तृप्तौ। तृप्त होना या करना।

तृम्प (तृम्पति) = तृप्तौ, शीतीभावे। तृप्त होना, तृप्त करना, शान्त होना, प्रेम करना। (तृम्पति - शान्तो भवति। तृम्पन्, तृम्पकः - शान्तः। तृम्पणम्, तृम्पणीयम् - शान्तभावे)।

तृम्फ (तृम्फति) = तृप्तौ। तृप्त होना, तृप्त करना।

तृष् (तृष्यति) = पिपासने, पिपासायाम्। प्यास लगना, इच्छा करना, उत्कण्ठित होना, चाहना। (तृष्यति - पिपासते। तर्षम्, तर्षकः, तर्ष्टा, तृष्टः, तृष्टवान् - पिपासके। तृष्टा, तृष्टिः, तृष्यम्, तर्षणम्, तर्षणीयम्, तर्षितव्यम्, तर्ष्यम्, तार्ष्यम् - पिपासने)।

तृषु = क्षिप्र, शीघ्र (अव्यय)।

तृह् (तृहति, तृणेढि) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना। (तृणेढि - हिनस्ति। तृट्, तृढः, तृढवान् - हिंसके। तर्हणम्, तर्हणीयम् - हिंसने)।

तृह् (तृहति, तृणेढि) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना। (तृहति - हिनस्ति। तृट्, तृहः, तृहन् - मारके। तृहती - मारयित्री)।

तृंह् (तृंहति) = हिंसायाम्। हिंसा करना, मारना। (तृंहति - मारयति। तृंहन्, तृंहकः, तृंहः - हिंसके। तृंहणम्, तृंहणीयम् - मारणम्)।

तॄ (तरति) = प्लवन-संतरणयोः, पारगमने तरणे च। पार जाना, जल पर तैरना, जीतना, नौकादि साधन से जल के पार जाना। अव - उतरना। आ - भाड़ा देकर नाव पर चढ़ जाना। उत् - ऊपर से जाना, उत्तर देना, पार जाना। दुस् - संकट से पार जाना। निस् - सुख से तैर जाना, मुक्ति पाना। प्र - जीतना। वि - जाना, देना। सम् - तैर कर जाना। (तरति - पारं गच्छति। तरिः - नौका। तरः - परिधिः। तारम्, तरणिः, तारणः, तरुः, तार्यम् - पारगन्तुं योग्यम्। उत्तरणम् - जलादि-निमग्नस्य उपर्य्यागमनम्

(उबराना)। तारणम् - पारगमनम्। उत्तरणा - पत्रम् (दलम्)। तीरम् - तटम्। तीर्णम् - पारं गतम्)।

तु (तौति, तवीति) = गतिवृद्धिहिंसासु। जाना, बढ़ना, दुःख देना, मार डालना, पूर्ण करना।

तु = क्षिप्र, शीघ्र, द्रुत (अव्यय, निपात)।

तु - तू (अव्यय) = तो, परन्तु, और अब।

तुङ्ग (तुङ्गति) = वर्जने, परित्यागे। छोड़ना, परित्याग करना।

तुज् (तोजति, तोजयति, तोजयते) = हिंसाबलदाननिकेतनेषु - मारणे, बले, दाने, निवासे च। रहना, वसति करना, बलवान् होना, ग्रहण करना, लेना, चमकना, प्रकाशित होना, दुःख देना, मार डालना। (तोजति - मारयति)।

तुञ्ज (तुञ्जति) = बन्धने, पालने हिंसायां चलने मारणे गमने च। बाँधना, रक्षा करना, प्रतिपालन करना, संभालना, मार डालना। (तुञ्जति - बन्धयति)।

तुञ्ज (तुञ्जयति, तुञ्जयते) = हिंसाबलदाननिकेतनेषु, मारणे, बले, दाने, निवासे च। मार डालना, बलवान् होना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना, चमकना, प्रकाशित होना। (तुञ्जयति - बलवान् भवति। तुञ्जा - शक्तिः)।

तुञ्ज (तुञ्जयति, तुञ्जयते) = निन्दने, भासार्थः। निन्दा करना, चमकना, प्रकाशित होना। (तुञ्जयति - निन्दति। तुञ्जकः - निन्दकः। तुञ्जनम्, तुञ्जनीयम् - निन्दा)।

तुट् (तुटति) = कलहे। झगड़ा करना, दुःख देना। (तुटति - कलहं करोति। तुट्, तोटः, तोटकः - कलहशीले। तोटम्, तोटनम्, तोटनीयम्, तुटितम् - कलहे)।

तुड् (तोडति, तुडति) = तोडने, खनने, दुःखे। तोड़ना, कतरना,

ख़नन करना, दुःख देना। (तुडति - खनति। तुडः, तोडः, तोडकः - खनके)।

तुड्ड (तुड्डति) = अनादरे। अपमान करना, अनादर करना।

तुण् (तुणति) = गतौ, अंकुरितभवने, कौटिल्ये। जाना, अंकुरित होना, टेढ़ा होना, वक्र होना, अनुचित नीति से वर्तना।(तुणति - अङ्कुरितो भवति (उगता है)। तुण्णा - अङ्कुरितभवनम्। तुणम् - अङ्कुरम्, घासः)।

तुण्ट (तुण्टति) = स्तेये, चोर्ये। चुराना।(तुण्टति - चोरयति। तुण्टः - चौरः)।

तुण्ड (तुण्डति, तुण्डते) = तोडने, खादने, भक्षणे, स्तेये, चोर्ये। खाना, तोड़ना, कतरना, दुःख देना, दबाना। (तुण्डति - खादति। तुण्डम् - मुखम्। तुण्डः - खण्डम्। तुण्डुः - चौर्येण भक्षणम्। तुण्डः - चौरः। तुण्डा - चौरी)।

तुत्थ (तुत्थयति, तुत्थयते) = आवरणे। ढकना, आच्छादित करना, फैलाना, स्तुति करना।

तुद् (तुदति, तुदते) = व्यथने, दुःखे। दुःख देना, पीड़ा करना, घाव करना। (तुदति - दुःखितो भवति। तुदन्, तुत्तः, तुत्तवान् - दुःखिनि। तोदनम्, तोदनीयम्, तोत्तव्यम्, तोदः, तोद्यम् - दुःखे)।

तुन्द (तुन्दति) = स्थौल्ये। मोटा होना, तुन्दिल होना।

तुप् (तोपति, तुपति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, मार डालना, दुःख देना। (तुपति - हिनस्ति। तोपति - मारयति। तोपः - घातकः (अस्त्रविशेषः)। तोपन्, तोपकः, तुप्तः, तुप्तवान् - घातके। तोपनम्, तोपनीयम्, तुप्तिः, तुप्तम् - हनने)।

तुफ् (तोफति, तुफति) = भर्त्सनहिंसयो, निन्दायां हिंसने मारणे, कर्तने। काटना, मार डालना, निन्दा करना, दुःख देना।(तुफति - विकृन्तति। तोफन, तोफकः - कर्तकः। तोफनम्, तोफनीयम् - कर्तने)।

तुभ् (तोभते, तुभ्यति, तुभ्नाति) = ताडने, हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना।(तोभते - ताडयति। तोभकः, तोभमानः - ताडिता। तुभ्, तुभिः, तोभम्, तोभ्यम्, तौभ्यम्, तुब्धिः, तुब्धम्, तोभनीयम् - ताडनायाम्। तुभ्यति - ताडयति। तोभन्, तोभकः, तुब्धः, तुब्धवान्, तोब्धा - कशायाम् (चाबुक)। तुब्धिः, तुब्धम्, तोब्धव्यम्, तोभनम्, तोभनीयम्, तोभः, तोभ्यम्, तुप् - ताडनक्रियायाम्)।

तुभ् (तुभ्नाति, तुभ्नीते) = ताडने, हिंसायाम्, मारणे। मार डालना, दुःख देना। (तुभ्नाति, तुभ्नीते - ताडयति। तुब्धः, तुब्धवान् - ताडयितरि। तुब्धम्, तुब्धिः - ताडने)।

तुभ्य (सर्वनाम) = तुम्हारे लिए। (त्रिलिंग)

तुभ्यम् (सर्वनाम) = तुम्हारे लिए। (त्रिलिंग)

तुम्प (तुम्पति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां, दूषणे, ताडने, हिंसने मारणे। मार डालना, दुःख देना, निन्दा करना, गाली देना। (तुम्पति - दूषयति, ताड्यति। तुम्पन्, तुम्पकः - कशा। तुम्पनम्, तुम्पनीयम् - ताडनम्। तुम्पुरः - दूषकः। तुम्पः - गालिः)।

तुम्फ (तुम्फति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने मारणे, खटखटाकरणे। निन्दा करना, मार डालना, दुःख देना।(तुम्फति - भषति। तुम्फन्, तुम्फकः - भषके। तुम्फनम्, तुम्फनीयम् - खटखटाकारके)।

तुम्ब (तुम्बति, तुम्बयति, तुम्बयते) = अर्दने, मर्दने, विकसने, निवासे। विकसित होना, निवास करना, मार डालना, दुःख देना।(तुम्बति - विकसति, महद् भवति, निवसति च)।

तुम्ब (तुम्बयति, तुम्बयते) = कथने, अदर्शने, अर्दने, प्रापणे। कहना, ध्वनि करना, अन्तर्निहित होना, गुप्त होना, नष्ट होना, प्राप्त होना,।(तुम्बयति - कथयति)।

तुर् (तुतोर्ति) = त्वरणे, शीघ्रतायाम्, शैघ्र्ये। जल्दी जाना, त्वरा

करना।(तुतोर्ति - शैघ्र्यम्, शीघ्रताम् वा करोति।तोरन्, तोरकः, तुर्तवान्, तुतिः, तोर्ता - त्वरके।तुरुकः - त्वरकः, बौद्धः वा)।

तुरण् (तुरण्यति) = त्वरायाम्।तीव्र जाना, त्वरा करना।

तुर्व (तुर्वति, तूर्वति) = हिंसायाम्।मार डालना, दुःख देना।(तुर्वति - कण्डूयति, क्षतं वा करोति)।

तुल् (तोलति, तोलते, तोलयति, तोलयते) = द्रवणे, परिमाणे, उन्माने।तोलना।(तोलते - परिमाति (तोलता है)।तुला - तोलन-साधनम् (तराजू)। तुलिः, तुलुः, तुलनम्, तुल्यम्, तौल्यम्, तुलितम् - परिमाणे। तोलयति - उन्मानं करोति।तुल्यम्, तुलनम्, तुलनीयम् - तोलने)।

तुल्ल (तुल्लते, तोल्लते) = द्रवणे, परिमाणे, उन्माने। तोलना। (तोल्लते - परिमाति (तोलता है)।तुल्लकः, तुल्लमानः, तुल्लिः, तुल्लुः, तुल्लनम्, तुल्लनीयम् - तोलने)।

तुवि = बहुत, अनेक, अधिक (अव्यय, वैदिक उपसर्ग)।

तुष् (तूषति, तुष्यति) = प्रीतौ, तुष्टौ, तृप्तौ। सन्तुष्ट होना, तृप्त होना।(तूषति - तृप्तो, आनन्दितो वा भवति।तोषः - संतोषः।तुष्टिः - सन्तोषः।तुष्यम् - संतोषयितुं योग्यम्।तोषा - आनन्दः।तुष्यति - आनन्दति। तुष्टः, तुष्टवान्, तोषकः, तोष्टा - संतोषिणि।तोषः, तोष्यम्, तौष्यम्, तुष्टम्, तोष्टव्यम्, तोषणम्, तोषणीयम् - संतोषे)।

तुस् (तोसति) = शब्दे, ध्वनौ, अल्पीभावे च। शब्द करना, ध्वनि करना, अल्प होना। (तोसति - ध्वनयति। तोसकः - ध्वनयिता। तुसारः, तुसः, तुस्यः, तुस्ति, तुस्, तुसितम् - अल्पे)।

तुह् (तोहति) = हिंसागत्योः, शीतीकरणे च। हिंसा करना, गति करना, शीत करना। (तोहति - शीतं करोति। तुहिनम् - हिमम्। तोहुः - व्याधदृष्टिः)।

तुह् (तोहति) = अर्दने, याञ्चायाम्। मार डालना, दुःख देना,

मांगना।(तोहति - भिक्षयति)।

तू - तु (अव्यय) = तो, परन्तु, और अब।

तूड् (तूडति) = तोडने।अनादर करना, तोड़ना, कतरना।

तूण् (तूणति, तूणयते) = पूरणे, भरणे, कुटिलत्वे। भरना, पूर्ण करना, कुटिल होना।(तूणयते - भरति।तूणति - पूरयति।तूणम्, तूणीरम् - भरणः, इषुधिः वा)।

तूरी (तूर्यते) = गति-त्वरण-हिंसनयोः, शीघ्रतायाम् हिंसने च।शीघ्रता करना, हिंसा करना, दुःख देना।(तूर्यते - शैघ्र्यम् आचरति।तूराणः, तूरकः - त्वरिता।तूर्णम्, तूरणम्, तूरणीयम्, तूर्यम् - शीघ्रतायाम्)।

तूल् (तूलति, तूलयति, तूलयते) = निष्कर्षे, लाघवे।त्याग करना, लघु होना, निकाल देना, अल्पभार होना।(तूलति - लघुः भवति)।

तूष् (तूषति) = तुष्टौ।सन्तुष्ट होना, तृप्त होना, तृप्त करना, आनन्दित करना।

तूष्णीम् (अव्यय) = मौन, चुप।

ते (सर्वनम) = तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे लिए, वे सब, उन्होंने, उन सब ने। (पुल्लिंग) (बहुवचन), उन दोनों को, उन दोनों ने। (स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग)।

तेज् (तेजति) = पालने। पालन करना, रक्षा करना।

तेन (सर्वनाम) = उससे, उसके द्वारा।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तेप् (तेपते) = क्षरणार्थः, कम्पने च।सींचना, प्रोक्षण करना, झरना, छानना, कम्पन करना, हिलना।

तेभिः (सर्वनाम) = उन सब द्वारा।

तेभ्यः (सर्वनाम) =उनके लिए, उनसे, उन सब के लिए।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

तेम् (तेमति) = रुजायाम्, रोगे। रोग होना, कटु होना। (तेमति - कटुरसो (तीता) भवति। तेवनम्, तेवम्, तेमु, तेमि, तेमितम् - कटुरसः (तीता - चरपरा)।

तेव् (तेवते) = रुजायाम्, रोगे, देवने, दुःखे। दुःख होना, खेल करना, क्रीड़ा करना, रोना, शोक करना। (तेवते - दुःखितो भवति। तेवकः, तेवमानः - दुःखिनि। तेवनम्, तेवम, तेविः, तेवुः, तेवनीयम् - दुःखे)।

तेषाम् (सर्वनाम) = उनका। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

तेषु (सर्वनाम) = उनमें। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

तेसु (सर्वनाम) = उनमें (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

तैः (सर्वनाम) = उनके द्वारा, उन सब द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

तौ (सर्वनाम) = वे दोनो, उन दोनों ने, उन दोनों को। (पुल्लिंग)।

त्य (सर्वनाम) = उस ने।

त्यज् (त्यजति) = हानौ, त्यागे, दाने। छोड़ना, त्यागना, देना, दान करना। (त्यजति - जहाति। त्यक्, त्यक्ता, त्यक्तवान्, त्याजकः, त्याजी, त्यागी - त्यागकर्तरि। त्यजनम्, त्यजनीयम्, त्याज्यम्, त्यक्तम्, त्यक्तिः - त्यागे)।

त्यत्-त्यद् (सर्वनाम) = उसने, वह (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

त्यम् (सर्वनाम) = वह, उसने, उस को। (नपुंसकलिंग, पुल्लिंग)।

त्यया (सर्वनाम) = उस द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

त्ययोः (सर्वनाम) = उन दोनों के, उन दोनों में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

त्यस्मात् (सर्वनाम) = उस से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

त्यस्मिन् (सर्वनाम) = उस में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

त्यस्मै (सर्वनाम) = उस के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

त्यस्य (सर्वनाम) = उस के। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

त्यस्याः (सर्वनाम) = उस से, उस के। (स्त्रीलिंग)।

त्यस्याम् (सर्वनाम) = उस में। (स्त्रीलिंग)।

त्यस्यै (सर्वनाम) = उस के लिए। (स्त्रीलिंग)।

त्याः (सर्वनाम) = उन सब ने, उन सब को। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

त्यान् (सर्वनाम) = उन सब को। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

त्यानि (सर्वनाम) = उन सब ने, उन सब को। (नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

त्याभिः (सर्वनाम) = उन सब द्वारा। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

त्याभ्यः (सर्वनाम) = उन सब के लिए। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

त्याभ्यः (सर्वनाम) = उन सब से। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

त्याभ्याम् (सर्वनाम) = उन दोनों द्वारा, उन दोनों के लिए, उन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

त्याम् (सर्वनाम) = उस को। (स्त्रीलिंग)।

त्यासाम् (सर्वनाम) = उन सब के। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

त्यासु (सर्वनाम) = उन सब में। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

त्ये (सर्वनाम) = उन सब ने। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

त्ये (सर्वनाम) = उन दोनों ने, उन दोनों को। (नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

त्येन (सर्वनाम) = उस द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

त्येभ्यः (सर्वनाम) = उन सब के लिए, उन सब से। (त्रिलिंग) (बहुवचन)।

त्येषाम् (सर्वनाम) = उन सब के। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

त्येषु (सर्वनाम) = उन सब में।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

त्यैः (सर्वनाम) = उन सब द्वारा।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

त्यौ (सर्वनाम) = उन दोनों को।(पुल्लिंग)।

त्रा - त्रै (त्रायते) = पालने, रक्षणे। संरक्षण करना, पालन करना, पोषण करना, बचाना। (त्रायते - रक्षति। त्राता, त्रायकः, त्रायमाणः - रक्षकः। त्रातम्, त्राणम्, त्रायणम्, त्रायणीयम्, त्रायम् - रक्षणे)।

त्रख् (त्रखति) = गत्यर्थः। जाना, स्थानान्तर होना, हिलना।।

त्रङ्क (त्रङ्कते) = गत्यर्थः, वक्रगतौ। जाना, स्थानान्तर होना, हिलना, वक्र होना।(त्रङ्कते - वक्रो भवति। त्रङ्कः - वक्रो, प्राणिविशेषः, उष्ट्रः वा)।

त्रङ्ख (त्रङ्खति) = गत्यर्थः। जाना, स्थानान्तर होना, हिलना।

त्रन्द (त्रन्दति) = चेष्टायाम्, उद्यमे, गतौ। प्रयत्न करना, उद्यम करना।(त्रन्दति - गच्छति, चेष्टयति)।

त्रप् (त्रपते) = लज्जायाम्। लज्जित होना, डरना।(त्रपते - लज्जितो भवति। त्रप्ता, त्रपिता, त्रपकः, त्रयमाणः - लज्जितरि। त्रपिः, त्रपुः, त्रपणम्, त्रपणीयम् त्रपा - लजने)।

त्रयस्त्रिंशः (संख्या) = तैंतीस (33)।

त्रयोदश (संख्या) = तेरह (13)।

त्रयोविंशः (संख्या) = तेईस (23)।

त्रस् (त्रासयति, त्रासयते) = भये, सहने, धारण-ग्रहण-वारणेषु। पकड़ना, हरण करना, बलपूर्वक लेना, अस्वीकार करना, प्रतिबन्ध करना, डराना।(त्रासयति - सहते)।

त्रस् (त्रस्यति, त्रसति) = उद्वेगे, घर्मे वेगे। डरना, दौड़ जाना। (त्रस्यति - उद्विजति। त्रस्यन्, त्रस्यकः, त्रस्तः, त्रस्तवान् - उद्वेजितरि। त्रस्तिः, त्रस्तम्, त्रस्तव्यम्, त्रसनम्, त्रसनीयम्, त्रस्यम्, त्रास्यम् - वेगे)।

त्रंस् (त्रंसयति, त्रंसयते) = भये, भाषार्थः, भासार्थो वा। भय होना, डरना, बोलना, कहना, चमकना। (त्रंसयति - बिभेति। त्रंसः, त्रंसकः - भेतरि। त्रंसम्, त्रंसनम्, त्रंसनीयम् - भयम्)।

त्रास् (त्रासयति, त्रासयते) = भये, सहने, धारण-ग्रहण-वारणेषु। पकड़ना, हरण करना, बलपूर्वक लेना, अस्वीकार करना, प्रतिबन्ध करना, डराना।(त्रासयति - सहते)।

त्रि (संख्या) = तीन (03)।

त्रिचत्वारिंशत् (संख्या) = तैंतालीस (43)।

त्रिनवति (संख्या) = तिरानवे (93)।

त्रिपञ्चाशत् (संख्या) = तिरपन (53)।

त्रिंशत् (संख्या) = तीस (30)।

त्रिषष्टिः (संख्या) = तिरसठ (63)।

त्रिसप्तति (संख्या) = तिहत्तर (73)।

त्रुट् (त्रुटति, त्रुट्यति, त्रोटयते) = छेदने। कतरना, तोड़ना, टूटना, संशय निवारण करना।(त्रुटति - छिनत्ति (तोड़ता है)। त्रोटकः, त्रुटः - छेत्तरि। त्रुटिः, त्रोटनम्, त्रोटनीयम् - छेदने)।

त्रुड् (त्रोडते) = त्रोडने, मारणे। तोड़ना, मारना।(त्रुण्डुः - तुण्डम्, त्रुण्डिः - त्रोडने। त्रुण्डणम्, त्रुण्डणीयम् - हिंसायाम्)।

त्रुण्ड (त्रुण्डते) = त्रोडने, मारणे। तोड़ना, मारना। (त्रुण्डते - मारयति। त्रुण्डः, त्रुण्डकः, त्रुण्डाणः - हन्तरि)।

त्रुप् (त्रोपति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना।(त्रोपति - मारयति)।

त्रुफ् (त्रुम्फति, त्रोफति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना।(त्रोफति, त्रुम्फति - मारयति। त्रुम्फः - घातकः। त्रुम्फणम् - हिंसनम्)।

त्रुम्प (त्रुम्पति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना। (त्रुम्पति - मारयति)।

त्रुम्फ (त्रुम्फति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना। (त्रुम्फति - मारयति। त्रुम्फः - घातकः। त्रुम्फणम् - हिंसनम्)।

त्रूण् (त्रूणयति) = आशायाम्, इच्छायाम्। इच्छा करना, आशा करना। (त्रूणयति - इच्छति। त्रूणन्, त्रूणकः, त्रूणः - इच्छुके। त्रूणनम्, त्रूणनीयम् - इच्छायाम्)।

त्रै (त्रायते) = पालने, रक्षणे। संरक्षण करना, पालन करना, पोषण करना, बचाना। (त्रायते - रक्षति। त्राता, त्रायकः, त्रायमाणः - रक्षकः। त्रातम्, त्राणम्, त्रायणम्, त्रायणीयम्, त्रायम् - रक्षणे)।

त्रौक् (त्रौकते, त्रीकते) = गत्यर्थः, गतौ, अधोपतने। जाना, गिरना। (त्रीकते - पतति। त्रौकः - अधोपतनभूतः, प्राणिविशेषः सस्यविनाशकः वा (टिड्डी)।

त्र्यशीति (संख्या) = तिरासी (83)।

त्व (सर्वनाम) = तुम।

त्वक्ष (त्वक्षति) = तनूकरणे। छीलना, रेतना, पैना करना, कृश होना, छाल निकालना। (त्वक्षति - तक्षणं करोति। त्वक्षकः, त्वक्षन् - तक्षणकर्ता)।

त्वङ्ग (त्वङ्गति) = गत्यर्थः, कम्पने च। जाना, कांपना हिलना। (त्वङ्गति - कम्पते। त्वङ्गः - कम्पनम्)।

त्वच् (त्वचति) = संवरणे, त्वचनकर्मणि, आच्छादने। आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना। (त्वचति - चर्म भवति, संवृणोति। त्वक् - चर्म। त्वच् - उपरि अवयवः (छिलका)। त्वक्तिः, त्वक्तम्, त्वचनम्, त्वचनीयम्, त्वक्तव्यम् - त्वचनकर्मणि। त्वचन्, त्वचकः, त्वक्तः, त्वक्तवान् - त्वचयितरि)।

त्वच् (त्वचयति) = ग्रहणे। ग्रहण करना, खाल खींचना। चूंटिया

भरना।

त्वञ्च (त्वञ्चति) = गतौ, गमने। जाना। (त्वञ्चति - गच्छति। त्वञ्चः - गमनम्)।

त्वत् (सर्वनाम) = तुम से। (त्रिलिंग)।

त्वम् (सर्वनाम) = तुम, तुम ने। (त्रिलिंग)।

त्वया (सर्वनाम) = तुम्हारे द्वारा। (त्रिलिंग)।

त्वयि (सर्वनाम) = तुम में। (त्रिलिंग)।

त्वर (त्वरते, त्वरयति) = सम्भ्रमे, शीघ्रतायाम्। शीघ्रता करना, शीघ जाना। (त्वरते, त्वरयति - शीघ्रताम् आचरित। त्वरकः, त्वरमाणः, त्वरन् - शीघ्रकारी। त्वरिः, त्वरम्, त्वरणम्, त्वरितम्, त्वर्यम्, त्वार्यम्, त्वरितव्यम्, त्वरणीयम् - शीघ्रतायाम्)।

त्वरा (त्वरते, त्वरयति) = सम्भ्रमे, शीघ्रतायाम्। शीघ्रता करना, शीघ जाना। (त्वरते, त्वरयति - शीघ्रताम् आचरित। त्वरकः, त्वरमाणः, त्वरन् - शीघ्रकारी। त्वरिः, त्वरम्, त्वरणम्, त्वरितम्, त्वर्यम्, त्वार्यम्, त्वरितव्यम्, त्वरणीयम् - शीघ्रतायाम्)।

त्वा (सर्वनाम) = तुमको, तुम्हें, तुम्हारे, तुम्हारे द्वारा।

त्वाम् (सर्वनाम) = तुम को। (त्रिलिंग)।

त्विष् (त्वेषति, त्वेषते) = दीप्तौ, प्रकाशे, कुटिलगतौ। प्रकाशित होना, चमकना, कुटिल गति करना। अव - रहना, देना, दान करना। (त्वेषति, त्वेषते - प्रकाशते। त्विषन्, त्विषमाणः - प्रकाशकः। त्विट्, त्विषिः, त्विषा, त्विषणम्, त्विषणीयम्, त्विष्यम्, त्वैष्यम्, त्विष्टिः, त्विष्टम् - प्रकाशे)।

त्वे (सर्वनाम) = तुम, तुम्हारे लिए, तुम में।

त्सर् (त्सरति) = छद्मगतौ, कुटिलगतौ। टेढ़ा जाना, कपटपूर्वक जाना, छिपकर जाना। (त्सरति - कुटिलम् गच्छति। त्सरुः - छुरिका)।

(थ)

थर्व (थर्वति) = गतौ, अस्थिरे, हिंसायाम्, हिंसने। जाना, अस्थिर होना, हिंसा करना।(अथर्वन् - अविचलः, अहिंसकः)।

थिप् (थेपते) = थेपने, क्षरणार्थः। सींचना, थेपना, थोपना।

थुड् (थुडति) = समीपगमने, संवरणे। समीप जाना, आच्छादित करना, लपेटना, ढांकना।(थुडति - उपागच्छति, उपयुङ्क्ते।थुडः, थोडकः, थोडः - समीपं गन्तरि।थोडनम्, थोडनीयम् - समीपगमनम्)।

थुर्व (थूर्वति) = हिंसार्थः। मार डालना, दुःख देना।

थेप् (थेपते) = क्षरणार्थः, आवरणे, आच्छादने, प्रोक्षणे। सींचना, थोपना, आवरण चढ़ाकर छिपाना।

(द)

दक्ष (दक्षते) = दक्षतायाम्, वृद्धौ शीघ्रार्थे वृद्धौ शीघ्रे च, वर्धने त्वरायां च। समृद्ध होना, शीघ्र कार्य करना, चतुर होना, दक्ष होना।(दक्षते - वर्धते, त्वरति। दक्षिः, दक्षुः, दक्षणम्, दक्षा, दक्षणीयम्- त्वरणे। दक्षम् - चतुरः, कुशलः। दक्षिणम् - दक्षिणा दिक्, दक्षिणपार्श्वम् वा। दक्षिणा - समृद्धिः)।

दक्ष (दक्षते) = हिंसने चलने च। जाना, मार डालना। (दक्षते, दक्षयति - हिनस्ति। दक्षः, दक्षकः, दक्षमाणः - घातके। दक्षिः, दक्षा, दक्षणम्, दक्षणीयम्, दक्ष्यम्, दाक्ष्यम- हिंसायाम्)।

दघ् (दघ्नोति) = घातने पालने च। मारना, दुःख देना, संरक्षण करना, पोषण करना।

दङ्घ (दङ्घति) = त्यागे, पालने। त्याग करना, छोड़ देना, पालन करना, रक्षा करना)।

दड्ड (दड्डति) = धारणे, सहने। धारण करना, सहना।(दड्डति - सहते)।

दण्ड (दण्डति) = हिंसागत्योः, हिंसायां दण्डने, गत्यां च। हिंसा करना, गति करना। (दण्डति - ताडयति। दण्डम् - दण्डम् (डण्डा), सर्वस्वापहरणम्, आक्रमणम्। दण्डी - दण्डयुक्तः)।

दण्ड (दण्डयति, दण्डयते) = दण्डनिपातने। शासन करना, दण्ड देना।(दण्डयति - दण्डं ददाति। दण्डकः, दण्डयन् - दण्डप्रदाता। दण्डम् - दण्डम्, काष्ठम् (यष्टिका)। दण्डी - दण्डयुक्तः, संन्यासिविशेषः वा, राजा, यमः, भिक्षुः वा)।

दद्-दा (ददते, ददाति) = दाने। दान करना, देना, त्याग करना। (ददते, ददाति - यच्छति, दानम् करोति। ददः, ददकः, ददानः - दातरि। ददिः, ददनम्, ददनीयम् - दाने)।

दध् (दधते) = धारणे, घर्षणे। धारण करना, पालन करना, देना, अर्पण करना।(दधते - घर्षयति। धत्, दधकः, दधानः - संघर्षके। दधनम्, दधनीयम्, दध्यम्, दधा, दद्धम्, दद्धिः - घर्षणे)।

दधन् (दधन्ति) = धान्ये। उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना। (दधन्ति - धान्यं भवति। दधन्, धनकः, धन्यः, धन्ता, धनाढ्यः - भाग्यवति। धनम्, धननम्, धननीयम्, धन्तिः, धन्तम्, धन्तव्यम्, धान्यम्, धानम् - भाग्ये)।

दधा (दधाति, धत्ते) = धारणपोषणयोः, सहने रक्षणे च। धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना, पास रखना। अनुसम् - अनुसंधान करना, ढूँढ़ना। अपि - आच्छादन करना, प्रकट करना, दिखाना, बोलना, कहना, सम्भाषण करना। अभिसम् - जीतना, पराजय करना। सम् - अव - सावधान रहना, ध्यान देना। आ - स्वीकार करना, अंगीकार करना, करना, स्थापित करना। उप - सहायता

करना। नि - ऊपर लेना, ऊपर करना, बीच में या ऊपर स्थापन करना, उत्पन्न होना, पैदा होना, धरना, धारण करना। परि - वस्त्रादि धारण करना, परिधान करना। प्र - मुख्य होना, प्रथम होना, प्रेरणा करना, भेज देना। प्रणि - धारण करना, स्वीकार करना, मान्य करना, श्रेष्ठ पद पाना, गुप्त रहना, छिपकर रहना। प्रतिवि - प्रतिकार करना, निवारण करना। वि - कहना, धर्म सम्बन्धी कार्य करना, पसन्द करना, पूरा करना, पूर्ण करना, आज्ञा करना, वचन देना, देना। व्यव - छिपाना। सम् - स्थापन करना, रखना, एकत्र करना, बटोरना, लक्ष्यवेध करना, निशाना लगाना। सम्प्र, प्रतिसम् - चर्चा करना, वाद-विवाद करना। समा - समाधान करना, सिखाना। सन्नि - समीप रखना, समीप आना। (दधाति, धत्ते - सहते। धाता, विधाता - ब्रह्म। धायन्, धायमानः, धायकः - सोढा (धर्ता)। धानम्, धायम्, धापनम्, धापनीयम्, धातव्यम् - सहने)।

दन्व (दन्वति) = गत्यर्थः। जाना, स्थानान्तर करना।

दभ् (दाभयति, दाभयते) = क्षेपे, निन्दने, आज्ञायाम्। निन्दा करना, आज्ञा देना।

दम् (दाम्यति) = दयायाम्, उपशमे, सहने। शान्त करना, दमन करना, जीतना, स्वाधीन करना, सन्धि करना। (दाम्यति - दयते, दयां करोति। दमी, दमन्, दमिता, दमितः, दान्तः, दमितवान् - दयालौ। दान्तिः, दमनीयम्, दमितम्, दमितव्यम्, दम्यम् - दयायाम्)।

दम्भ (दम्भयति, दम्भयते) = क्षेपे, अभिमाने। निन्दा करना, अभिमान होना, आज्ञा करना। (दम्भति - मिश्रयति। दम्भकः - मिश्रकः)।

दम्भ (दभ्नोति) = दम्भने, अहंकारे। दम्भ होना, अहंकार होना, ठगना, वञ्चना करना, धोखा देना, ढोंग करना, चीरना, फाड़ना, तोड़ना। (दभ्नोति - अहंकारं दर्शयति। दम्भन्, दम्भकः - दम्भकर्ता। दम्भोलिः - गर्जनम्, स्तनयित्नुः। दम्भः, दम्भनम्, दम्भनीयम् - अहंकारे)।

दय (दयते) = गति-रक्षण-हिंसा-दानेषु। देना, लेना, जाना, पालन करना, सम्भालना, दया करना, मार डालना, दुःख देना। (दयते - ददाति। दयालुः, दयकः, दयमानः, दय्यः, दाय्यः, दायकः, दायी - दातरि। दयुः, दयिः, दय्यम्, दायम्, दयनम्, दयनीयम् - दाने)।

दरिद्रा (दरिद्राति) = दुर्गतौ, दारिद्र्ये। दरिद्र होना, दुःखित होना, कृश होना। (दरिद्राति - धनहीनो भवति। दरिद्रः, दरिद्रकः - धनहीनः। दरिद्रा, दरिद्राणम्, दरिद्राणीयम्, दारिद्र्यम् - धनाभावे)।

दल् (दलति, दालयति, दालयते) = दलने, विशेषणे, खण्डने, विशरणे विदारणे च। कुम्हलाना, म्लान होना, चीरना, फाड़ना, टुकड़े करना। (दलति - खण्डयति। दालयति - विदारयति। दलः, दालम्, दालः - द्वयोः समयोः एकतरो भागः)।

दव्-दु (दवति) = गतौ। जाना। (दवति - सुगन्धमागच्छति। दवनम् - पत्रम् (दलम्)। दोता, दूः, दावकः, दवः, दावः - अग्नौ। दावम् - वनाग्नौ। दोतव्यम्, दवनीयम्, दाव्यम् - वाष्पे)।

दवि = विशेष, वैदिक उपसर्ग।

दश् (दाशयते) = दर्शने। देखना, दिखाना। (दाशयते - दर्शयति)।

दश (संख्या) = दस (10)।

दश् (दशति) = दशने। डसना, दाँतों से काटना। (दशति - कृन्तति (काटता है)। दक्, दष्टवान्, दष्टा - दशके। दशनः - दन्तः। दन्दशूकः - क्षतकर्ता, सर्पादिः। दंशम्, दंशनीयम्, दंश्यम्, दांश्यम्, दष्टम्, दष्टिः - दशने)।

दंश (दंशयति, दंशयते) = दंशन-दर्शनयोः। डसना, काटना, दंश मारना, देखना। (दंशयति - दशति। दंशन्, दंशकः - कर्तके (काटने वाले में)। दष्टम्, दष्टिः, दशनम्, दंशनीयम् - दशनक्रियायाम्)।

दंश (दंशयति, दंशयते) = कर्तने, भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना,

डंक मारने के समान बोलना। उप - संकट में पड़ना। सम् - नोचना। (दंशयति - कृन्तति। दंशकः - दंशः। दंष्ट्रा - दशनम्। दंशनम्, दंशनीयम् - कर्तने)।

दस् (दस्यति) = उपक्षये, रक्षणे, स्थापने। नष्ट होना, नष्ट करना। (दस्यति - रक्षति। दस्तः, दस्तवान्, दसन्, दसकः, दस्ता - रक्षके। दसनम्, दसनीयम्, दस्तव्यम्, दस्तिः, दस्तम्, दसम्, दासम्, दस्यम्, दास्यम् - रक्षणे)।

दस् (दासयते) = दंशन-दर्शनयोः। डसना, देखना। (दासयते - देखता है, काटता है, डसता है)।

दंस (दंसयते) = दंशन-दर्शनयोः। डसना, देखना। (दंसयते - देखता है, काटता है, डसता है)।

दंस (दंसयति, दंसयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना, कठोर बोलना।

दस्त (दस्तयति) = विकारे। विकार होना। (दस्तयति - विकारो जायते। दस्तुः - विकारः)।

दह् (दहति) = दहने, दग्धकरणे। जलाना, नष्ट करना, दुःख देना, दग्ध करना। परि - पूरी तरह जला देना। (दहति - दग्धं करोति। दहनम् - ज्वालः। धक्, दग्धम्, दग्धि, दाहः - घर्मे, तापे। दहनम् - ज्वलनम्, श्मशानम् वा)।

दंह् (दंहयति) = रक्षणे। रक्षा करना।

दा (ददाति, दत्ते) = दाने। देना, सौंपना, लौटाना, रखना। आ - लेना, अंगीकार करना। परि - देना, सौंपना, ऋण देना, पुकार देना। प्र - देना। व्या - उघाड़ना, खोलना। समा - चुन कर लेना। (ददाति, दत्ते - दानं करोति। दाता, दायन्, दायमानः, दापकः - दाता। दानम्, दापनीयम्, दातव्यम्, दायम् - दाने)।

दा (दाति) = लवने, कर्तने। काटना, कुतरना, तोड़ना। (दाति - कृन्तति। दायन्, दायकः, दाता, दाः, दः - लवितरि। दानम्, दातिः, दायनीयम्, दाय्यम्, दातव्यम् - लवने)।

दा - यच्छ (यच्छति) = दाने। देना, सौंपना, लौटाना, रखना। आ - लेना, अंगीकार करना। परि - देना, सौंपना, ऋण देना। प्र - देना। व्या - उघाड़ना, खोलना। समा - चुन कर लेना। (यच्छति - ददाति। दः, दाः, दाता, दायकः, दानी - दातरि। दानम्, देयम्, दापनम्, दातव्यम्, दानीयम्, दायम्, दितम्, दितिः - दाने)।

दान् (दानति, दानते, दानयति, दानयते, दीदांसति, दीदांसते) = अवखण्डने, खण्डकरणे, विभजने, आर्जवे। खण्डन करना, तोड़ना, चीरना, सीधा करना, सरल करना। (दानयति, दानयते - विभजति (चीरता है)। दीदांसति, दीदांसते - विभजति। दीदांसन्, दीदांसमानः, दीदांसकः - विभजितरिः। दीदांसा, दानम्, दाननम्, दाननीयम् - विभजने)।

दाय (दायति, दायते) = दाने। देना, दान देना, पारितोषिक देना।

दालिम्ब (दालिम्बति) = हसने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, हँसना। (दालिम्बति - हसति)।

दाश् (दाशति, दाशते; दाशयते) = दाने। देना। (दाशति, दाशते - ददाति। दाशः - दानी। दाशनम्, दाशनीयम्, दाश्यम् - दाने)।

दाश् (दाश्नोति) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना।

दास् (दास्नोति) = जिघांसायाम्, विकर्तने। काटना। (दास्नोति - कृन्तति। दासः, दासन्, दासकः - विकर्तके। दासनम्, दासनीयम् - विकर्तने)।

दास् (दासति, दासते) = दाने, दास्यभावे। देना, सौंपना। (दासति, दासते - ददाति, दास्यं करोति। दासः - दानी, दास्यकर्मकर्ता)।

दिग्-दिह् (देहति, देग्धि-दिग्धे) = उपचये, रूपे, वृद्धौ। रूप बनाना, बढ़ना, जमाना, लीपना, पोतना। (देग्धि, दिग्धे - रूपयति। देग्धा, देहन्,

देहकः, दिग्धवान्, दिक् - रूपयितरि। देहनम्, देह्यम्, दैह्यम्, दैहम्, दिग्धिः, दिग्धम्, देहनीयम्, देग्धव्यम् - रूपणे। देहः - रूपम्, शरीरम् वा)।

दिधिष् -धिष् (दिधेष्टि) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (दिधेष्टि - शब्दयति। धिट्, धेषन्, धेष्टा, धेषकः, धिष्टवान्, धिष्टः - शब्दयितरि। धिष्टिः, धिष्टम्, धेष्टव्यम्, धेष्ट्यम्, धैष्ट्यम्, धेषणम्, धेषणीयम् - शब्दने)।

दिन्व-दिव् (दिन्वति) = नृत्ये, प्रीणने, शीतीभावे। नृत्य करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, आनन्दित करना, आनन्दित होना। (दिन्वति - नृत्यति। दिव्वः - नृत्यकर्ता। दिव्वनम्, दिव्वुः, दिव्वि - नृत्ये)।

दिव् (दीव्यति) = क्रीडने, विजये, युद्धे, अस्थैर्ये, प्रशंसायाम्, मदे, स्वप्ने, प्रकाशे, चलने च। तेजस्वी होना, चमकना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, गर्व करना, प्रीति करना, जाना, लेना, खेलना, जीतना, व्यापार करना, लेना, क्रय-विक्रय करना, भूलना, गर्व होना, निद्रित होना, चाहना। (दीव्यति - क्रीडति। देवः, दीव्यन् - प्रकाशकः। देवी, दीव्यती - प्रकाशयित्री। देवनम्, देवनीयम्, देव्यम् - क्रीडायाम्। दैवम्, दैवः - दिव्यम्। देवता, देवत्वम् - दिव्यता। दिवा, देविका, दैविकम् - दैवप्रकाशः)।

दिव् (देवयति, देवयते) = अर्दने, वृद्धौ, मर्दने। वृद्धि करना, मर्दन करना, पीस डालना, पीडा देना। (देवयति - वर्धयति। देवनम् - वर्धनम्)।

दिव् (देवयते) = परिकूजने, गाने। दुःखी देना, शोक करना, रोना, आक्रोश करना, गाना। (देवयते - गायति। देवनम्, देवनीयम् - गाने)।

दिवा (अव्यय) = दिन में।

दिवे (अव्यय) = दिन।

दिवे दिवे (अव्यय) = प्रतिदिन।

दिश् (दिशति, दिशते) = अतिसर्जने, सङ्केते, निरूपणे। दिखाना, समझाना, आज्ञा करना, कहना, बोलना, देना, पारितोषिक देना। अप -

वेषान्तर करना। आ - आज्ञा करना, देखना, बुलाना। उत् - प्रसिद्ध करना, प्रकट करना, दिखाना। उप - उपदेश करना। निर् - समझाना, विस्तारपूर्वक कहना। प्र - निश्चित करना। प्रतिसम् - पीछे लौटाना, पीछे देना। व्यप - बहाना करना। विनिर् - स्पष्ट कहना। सम् - स्पष्ट करना, दिखाना, सूचना देना। समा - मान्य करना। समुप - दूर की वस्तु सङ्केत से दिखाना। (दिशति - निरूपयति। देशिकः, देष्टा, दिशन्, दिष्टः, दिष्टवान् - निरूपके। दिक्, दिशा - दिशायाम्। दिश्यम् - दिशि भवं वस्तुः। देशः - दिशि भवम्, स्थानम्, नगरम्, राज्यम् वा। देशनम्, देशनीयम्, देश्यम् - निरूपणे)।

दिष्ट्या (अव्यय) = भाग्य से, हर्ष सूचक।

दिष्ट्या वृध् (अव्यय) = बधाई।

दिह्-दिग् (देहति, देग्धि, दिग्धे) = उपचये, रूपे, वृद्धौ। रूप बनाना, बढ़ना, जमाना, लीपना, पोतना। (देग्धि, दिग्धे - रूपयति। देग्धा, देहन्, देहकः, दिग्धवान्, दिक् - रूपयितरि। देहनम्, देह्यम्, दैह्यम्, दैहम्, दिग्धिः, दिग्धम्, देहनीयम्, देग्धव्यम् - रूपणे। देहः - रूपम्, शरीरम् वा)।

दी (दीयते) = क्षये। ह्रास (ह्रास) होना, झरना, नष्ट होना। (दीयते - क्षयति। दीनः, दयानः - क्षययुक्तः। दीनम्, दयनम्, दयनीयम् - क्षयक्रिया)।

दीक्ष (दीक्षते) = मौग्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु, जीवने, यजने, उपनयने, नियमे, व्रते, आह्वाने च। दीक्षा देना, उपदेश देना, उपनयन करना, नियम-व्रत करना, आदेश देना। (दीक्षते - दीक्षां गृह्णाति। दीक्षितः, दीक्षकः, दीक्षाणः - दीक्षाग्रहीतरि)।

दीधी (दीधीते) = दीप्तिदेवनयोः, प्रकाशे क्रीडने च। चमकना, प्रकाशित होना, खेलना, क्रीडा करना। (दीधीते - प्रकाशते। दीधीतवान्, दीधीतः, दीधीयकः, दीधीयानः, दीधीता, दीधायकः - प्रकाशके। दीधितः, दीधितम्, दीधितव्यम्, दीधयनम्, दीधयनीयम्, दीधव्यम्, दीधय्यम्, दीधाय्यम्, दीधायम्, दीधयम् - प्रकाशे)।

दीप् (दीप्यते) = दीप्तौ, प्रकाशे। प्रकाशित होना, चमकना।(दीप्यते - प्रकाशते। दीपानः, दीप्तः, दीप्तवान् - प्रकाशितरि। दीप्रः, प्रदीपः, दीपकः - महति दीपे। दीपालिका - लघु दीपम्। दीप्तम्, दीप्तिः, दीपनम्, दीपनीयम्, दीप्यम्, दीप्तम्, दीप्तव्यम् - प्रकाशने)।

दृ (दृणोति) = हिंसायाम्। दुःख देना, मार डालना।

दृ (आद्रियते) = आदरणे, आदरे। आदर करना, सत्कार करना। (द्रियते - आदरं करोति। द्रियः, द्रियमाणः - आदरकर्ता)।

दृक्-दृश्-पश्य (पश्यति) = प्रेक्षणे, अवलोकने। देखना। उत् - ऊपर देखना, विचार करना, संशय करना, शंका करना। (पश्यति - अवलोकयति। पश्यन् - द्रष्टा। पश्यन्ती - द्रष्ट्री। द्रष्टा, दृष्टवान् - प्रेक्षके। दृक्, दृश्यम्, दृष्टिः, दृश्यमानम्, दृष्टव्यम्, दर्शनम्, दर्शनीयम्, दार्ष्ट्र्यम् - द्रष्टुं योग्ये। दर्श्यः - दर्शनम्)।

दृढ् (दर्दति) = धारणे, सहने। सहना। (दर्दति - सहते। दृढम् - बलवत्)।

दृद्-दृढ् (दर्दति) = धारणे, सहने। सहना।(दर्दति - सहते। दृढम् - बलवत्)।

दृप् (दृप्यति) = हर्षमोहनयोः प्रहर्षणे आनन्दे, विमोचने सन्तोषे। आनन्दित होना, प्रसन्न होना, मोहित होना, गर्वित होना।(दृप्यति - संतुष्टो भवति। दृप्ता, दृप्तः, दृप्तवान् - सन्तुष्टे। दृपदः - आनन्दः हर्षः, सुखम्। दृप्तम्, दृप्तिः, दर्पणम्, दर्पणीयम्, दर्पितव्यम्, दर्पितम्, दर्प्यम्, दार्प्यम् - आनन्दे मोचने च)।

दृप् (दृपते, दृपति) = उत्क्लेशे, कष्टे, श्रमे। पीड़ा करना, दुःख देना।

दृप् (दर्पयति, दर्पयते, दर्पति) = संदीपने। प्रकाश करना।

दृफ् (दृफति) = उत्क्लेशे, कष्टे, श्रमे। पीड़ा करना, दुःख देना।

(दृफति - कष्टायते। दृफन्, दृफकः - कष्टभोक्तरि। दृफणम्, दृफणीयम् - कष्टे)।

दृभ् (दर्भयति, दर्भयते, दर्भति) = सन्दर्भे, संमिश्रणे। डरना, सम्बन्ध लगाना, सन्दर्भ लगाना। (दर्भयति - मिश्रयति। दर्भकः, दर्भः - मिश्रकः। बर्हिः। दर्भणम्, दर्भणीयम् - मिश्रणे)।

दृभ् (दृभति) = हसने, अतिशयेन हसने, ग्रन्थे, सन्दर्भे। हँसना, अधिक हँसना, पीड़ा करना, दुःख देना, रचना, गूँथना।(दृभति - अतिशयेन हसति। दर्भन्, दर्भकः, दर्भणम्, दर्भणीयम् - हसने)।

दृम्प (दृम्पति) = उत्क्लेशे, कष्टे, श्रमे। पीड़ा करना, दुःख देना।

दृम्फ (दृम्फति) = उत्क्लेशे, कष्टे, श्रमे। पीड़ा करना, दुःख देना, कष्ट होना। (दृम्फति - कष्टं भुङ्क्ते। दृम्फन्, दृम्फकः - कष्टभोक्तरि। दृम्फणम्, दृम्फणीयम् - कष्टे)।

दृक्-दृक्ष् (दृक्षसे) = प्रेक्षणे, अवलोकने। देखना। उत् - ऊपर देखना, संशय करना, शंका करना। (दृक्षसे - अवलोकयति)।

दृष् (दर्षति) = धारणे, प्रवाहे, वहने, सहने। बहना, सहना (दर्षति - वहति, सहति। दृषत्, दर्षाणः, दृषिः, दृषः, दृषुः, दृष्टिः, दर्षणम्, दर्षकम्, दृट् - सहने)।

दृह (दर्हति, दृहयति) = वृद्धौ, जिघांसायाम्, हिंसने। बढ़ना, वृद्धि करना, हिंसा करना।(दृहयति - मारयति। दृक्, दृण्, दृट्, दृङ्, - घातके)।

दृंह (दृंहति) = वृद्धौ। बढ़ना, वृद्धि करना।(दृंहति - वर्धते। दृंहस्, दृंहिः, दृंहुः, दृंहणम्, दृंहितम् - वृद्धौ)।

दॄ (दरति, दरयति) = भये। डरना।(दरति, दरयति - बिभेति। दरः, दरकः, दरन् - भीरुः। दर्तव्यम्, दरणीयम्, दरणम्, दर्यम्, दार्यम्, दरिः, दॄ - भयेन श्वयथौ (भय से हाथ-पैर फूलना)।

दॄ (आद्रियते, आदररिष्यते) = आदरणे, आदरे। सत्कार करना,

आदर करना।

दॄ (दृणाति) = विदारणे, विकर्तने। विदीर्ण करना, चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना। (दृणाति - विदारयति। दूर्तः, दूर्तवान् - विदारके। दूरम् - विप्रकृष्टम्। दूर्तम्, दूर्तिः, दूरणम्, दूरणीयम्, दूर्यम् - विदारणे)।

दॄ (दारयति) = भये। (दारयति - भाययति। दारुणम् - भयम्)।

दॄ (दृणाति) = छेदने विदारणे विकर्तने। चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना।

दृप् (दृप्यति) = दर्पे। गर्व करना।

दु-दव् (दवति) = गतौ। जाना। (दवति - सुगन्धम् आगच्छति। दवनम् - पत्रम्, दलम्)।

दु-दुन् (दुनोति, दुनुते) = उपतापे, परितापे, ज्वलने। दुःख भोगना, जलना, तप्त करना, जलाना। (दुनोति, दुनुते - ज्वलति। दवन्, दवानः, दोता, दवकः, दुतः, दुतवान् - ज्वलितरि। दावम्, दवः, दावः - वनाग्निः। दवनम्, दवनीयम्, दोतव्यम्, दुतिः - ज्वलने। दूः, दावकः - अग्नौ। दोतव्यम्, दवनीयम्, दाव्यम् - वाष्पे)।

दुःख (दुःखयति, दुःखयते, दुःख्यति) = दुःखे। दुःख देना, छल करना। (दुःखयति - दुःखं भुङ्क्ते। दुःखी - दुःखयुक्तः)।

दुर्व (दूर्वति) = हिंसायाम्, पीडां निवारणे च। दुःख देना, सताना, पीडा दूर करना। (दुर्वति - पीडां निवारयति। दूर्वा - पीडा निवारकः, तृणविशेषः (दूब)।

दुल् (दोलयति, दोलयते) = उत्क्षेपे। उछलना, उठाना, फेंकना, डोलना, हिलना, झूला झुलाना। (दोलयति - उत्क्षिपति। दोलन्, दोलकः - उत्क्षेपके। दोलनम्, दोलनीयम् - उत्क्षेपणे। दोला - झूला। आन्दोलम् - शिविका (डोली)।

दुवस् (दुवस्यति) = परिताप-परिचरणयोः। पीड़ित होना या करना,

सेवा करना, परिचर्या करना।

दुष् (दुष्यति) = वैकृत्ये, दुष्कृत्ये। दुष्टाचरण करना, दुष्ट रीति से वर्तना, दूषित होना। प्रा - प्रसिद्ध होना, प्रकट होना। (दुष्यति - वैकृत्यं करोति। दोहा, दोषन्, दोषकः, दुष्टः, दुष्टवान् - दुष्टे। दुष्टम्, दुष्टिः, दोषम्, दोष्यम्, दौष्यम्, दूषणम्, दूष्यम् - दूषणे)।

दुह (दोहति, दोग्धि, दुग्धे) = गतौ, प्रपूरणे, दोहने, अर्दने, याञ्चायाम्। दोहना, रिक्त करना, लेना, खींचना, हिंसा करना। (दोहति - गच्छति। दोग्धि, दुग्धे - दोहनं करोति। दोग्धा, दोग्धवान्, दोहन्, दोहानः, दोहकः, धुक् - दोहनकर्तरि। दोहनम्, दोहनीयम्, दोग्धव्यम्, दोह्यम्, दौह्यम्, दुग्धम्, दुग्धिः, दोहलम् - दोहनकर्मणि। दोग्ध्री - दोहनकर्त्री)।

दू (दूयते) = परितापे, श्रमे। दुःख में जर्जर होना, दुःख सहन करना, दुःख देना, पीड़ा करना। (दूयते - श्राम्यति। दूतः, दूतवान्, दूनः, दवः, दाव्यम्, दवानः, दवकः - श्रमिणि। दूतः, दूतिः, दवनम्, दवनीयम्, दव्यम्, दाव्यम् - श्रमे)।

दू-दव् (दवति) = गतौ, आगमने, वाष्पे, दाहे। ज़ाना, गति करना। (दवति - आगच्छति। दोता, दूः, दावकः, दवः, दावः - अग्नौ। दावम् - वनाग्नौ। दोतव्यम्, दवनीयम्, दाव्यम् - वाष्पे)।

दूरम् (अव्यय) = दूर।

दूल्-दुल् (दोलयति, दोलयते) = उत्क्षेपे। उचकना, उछलना, उठाना, फेंकना, डोलना, हिलना, झूला झुलाना। (दोलयति - उत्क्षिपति। दोलन्, दोलकः - उत्क्षेपके। दोलनम्, दोलनीयम् - उत्क्षेपणे। दोला - झूला। आन्दोलम् - शिविका (डोली)।

दूष् (दूष्यति) = वैकृत्ये, दुष्कृत्ये। दुष्टाचरण करना, दुष्ट रीति से वर्तना, दूषित होना, दूषित करना। प्रा - प्रसिद्ध होना, प्रकट होना। (दुष्यति - वैकृत्यं करोति। दोहा, दोषन्, दोषकः, दुष्टः, दुष्टवान् - दुष्टे। दुष्टम्,

दुष्टिः, दोषम्, दोष्यम्, दौष्यम्, दूषणम्, दूष्यम् - दूषणे)।

दे (दायति) = शोधने।(दायति - परिशोधयति।दायकः - परिशोधकः। देः, दैः, दः, दायनम्, दायम्, दानम्, दातम्, दीनम्, दीतम् - शोधने)।

दे (दयते) = रक्षणे। संरक्षण करना, पोषण करना।

दे-दै (दायते) = रक्षणे। संरक्षण करना, पोषण करना। (दायते - रक्षति। दायकः, दायमानः, दाता - रक्षकः। दायम्, दा, दानम्, दायनम्, दानीयम् - रक्षणे)।

देव् (देवते) = पूजने, देवने, दुःखे। पूजा करना, खेलना, क्रीड़ा करना।(देवते - पूजयति।देवलः, देवलकः - देवोपजीवी (पुजारी)।देवकः, देवमानः - पूजयितरि। देवनम्, देवनीयम्, देविः, देवुः, देव्यम् - पूजने)।

दै (दायति) = शोधने। शुद्ध करना। (दायति - परिशोधयति। दायकः - परिशोधकः। देः, दैः, दः, दायनम्, दायम्, दानम्, दातम्, दीनम्, दीतम् - शोधने)।

दो (द्यति-द्यति) = अवखण्डने, दाने, दयायाम् च। दान करना, दया करना, कतरना, विभाग करना। (द्यति - अवखण्डयति। दायन्, दायकः, दितः, दितवान् - अवखण्डितरि। दानम्, दापनीयम्, दातव्यम्, दितम् - खण्डने। दाता - ददिता - दानकर्ता)।

दोल् (आन्दोलति) = गतिचातुर्ये, गतिप्रावीण्ये। लटकना, झूलना। (आन्दोलति - सर्वत्र लम्बते। आन्दोलम् - शिविका (पालकी))।

दोषा (अव्यय) = रात में।

द्यु-द्यु (द्यौति) = अभिगमने, सम्मुखगमने। शत्रु पर आक्रमण करना, आगे जाना, समीप जाना।(द्यौति - अभिमुखं गच्छति।द्युत्, द्यवन्, द्यवकः, द्यावः - अभिमुखं गन्तरि।द्यविः, द्यवनम्, द्यवनीयम, द्युतम, द्युतिः, द्युतव्यम् - अभिमुखं गमने)।

द्युत् (द्योतते) = दीप्तौ, प्रकाशे।चमकना, प्रकाशित होना।(द्योतते

- प्रकाशते।द्योतकः, द्योतमानः - प्रकाशकः।द्युत, द्युतिः, द्योतनम्, द्योतनीयम्, द्युत्यम्, द्यौत्यम् - प्रकाशे)।

द्यै (द्यै) (द्यायति) = न्यक्करणे, धिक्कारे। धिक्कार करना, तिरस्कार करना।(द्यायति - धिक्-करोति।द्यैः, द्यानम्, द्यानिः - धिक्कारे)।

द्रम् (द्रमति) = गतौ, गमने, पोषणे। जाना, पोषण करना। (द्रमति - पुष्णाति। द्रतः, द्रमः, द्रामः, द्रमणः, द्रन्ता - पोषकः। द्रतिः - पोषणम्)।

द्रम्म (द्रम्मति) = प्रभुत्वे, गतौ, गमने। प्रभुत्व होना, गति करना। (द्रम्मति - प्रभवति। द्रम्मः - प्रभुः, स्वामी। द्रम्मिः - स्वामिनी)।

द्रा (द्राति) = कुत्सायां गतौ, नीचगत्याम्। भाग जाना, लज्जित होना, निन्दा करना, दोष लगाना, उड़ जाना। (द्राति - निन्दति। द्रायन्, द्रापकः, द्राता - निन्दकः। द्राणम्, द्रापणम्, द्रापणीयम्, द्राति, द्रातव्यम्, द्राय्यम् - निन्दायाम्)।

द्राक् (अव्यय) = शीघ्र, तुरन्त।

द्राख् (द्राखति) = शोषणालमर्थयोः, शोषणे शृङ्गारे च। सूख जाना, शुष्क होना, संवारना, शोभित करना, शक्तिमान् होना, निषेध करना, मना करना, तृप्त करना। (द्राखति - म्लायति। द्राखनम् - शोषणं मण्डनं च)।

द्राघ् (द्राघते) = सामर्थ्ये आयामे आयासे सूचने, पीडायाम् ऋजुभावे च।पीडित होना, सीधा होना, सरल होना, शक्तिमान होना, लम्बा करना, तानना।(द्राघते - पीडितो भवति, ऋजु भवति।द्राघकः, द्राघणः, द्राघमाणः - सूचके। द्राघूया - ऋजुः। द्राघम्, द्राघि, द्राघु, द्राघणम्, द्राघणीयम्, द्राघ्यम् - सूचने, ऋजुभावे च)।

द्राङ्क्ष (द्राङ्क्षति) = घोरवासिते, रौद्रभाषणे, काङ्क्षायाम्। कठोर बोलना, कांव-कांव शब्द करना, इच्छा करना, चाहना।(द्राङ्क्षति - कठोरभाषणं करोति। द्राङ्क्षः - काकः)।

द्राड् (द्राडते) = विशरणे, तक्षणे। छीलना, चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना, कुचल देना। (द्राडते - तक्षति। द्राड्, द्राडः, द्राडकः, द्राडानः - तक्षके)।

द्राह् (द्राहते) = निद्राक्षये, निक्षेपे, जागरणे। जगना, जागृत रहना, निक्षेप (गिरवी) रखना। (द्राहते - जगर्ति। द्राहकः, द्राहमानः - जागरिता। द्राहिः, द्राहणम्, द्राहणीयम्, द्राहा, द्राह्यम् - जागरणे)।

द्री (द्रियते) = आदरणे, आदरे। आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना। (द्रियते - आदरं करोति। द्रियः, द्रियमाणः - आदरकर्ता)।

द्रु (द्रवति) = गतौ, प्रवाहे। जाना, अनुसरण करना। अभि - तैरना, आ - भाग जाना, विमुख होना। वि - मार डालना, भाग जाना। समा - एकत्र होकर भागना। समुप - भेंटना, मिलाप होना, भाग जाना। (द्रवति - विलीनो भवति (पिघलता है)। दृः, द्रुः, द्रोता, द्रावकः - मेघे। द्रवणम्, द्रावणम्, द्रुवम्, द्रोतव्यम्, द्राव्यम्, द्रवणीयम्, द्रव्यम् - जलप्रवाहे)।

द्रुण् (द्रुणति) = हिंसागतिकौटिल्येषु। पीड़ा करना, दुःख देना, समीप आना या जाना, टेढ़ा करना, वक्र होना। (द्रुणति - गच्छति। द्रोणः - प्राणिविशेषः, भ्रमरः वा। द्रोणी - नौः)।

द्रुह् (द्रुह्यति, द्रुह्णोति) = जिघांसायाम्, ताडने, हिंसने। द्वेष करना, मारने के लिए प्रयत्न करना। (द्रुह्यति, द्रुह्णोति - ताडयति, मारयति। द्रोही, द्रोहकः, द्रोहन् - ताडयितरि, घातके। द्रोहः, द्रोहणम्, द्रोहणीयम् - ताडने, हिंसने)।

दृह् (दर्हति, दृहयति) = वृद्धौ, जिघांसायाम्, हिंसने। बढ़ना, वृद्धि करना, हिंसा करना। (दृहयति - मारयति। दृक्, दृण्, दृट्, दृङ्, द्रोही, द्रोहकः, द्रोहन् - घातके। द्रोहः, द्रोहणम्, द्रोहणीयम् - हिंसने)।

द्रू -द्रूण् (द्रूणाति, द्रूणीते) = गतौ, हिंसायाम। जाना, स्थानान्तर करना, चोट पहुँचाना, मार डालना। (द्रूणाति, द्रूणीते - ताडयति। द्रूणः,

द्रूणवान्, द्रोणः - ताडयितरि)।

द्रेक् (द्रेकते) = शब्दोत्साहयोः, ध्वनौ उत्साहे च, शब्दोत्साहे, अस्पष्टार्थके वाक्ये। शब्द करना, उत्साह में अस्पष्ट बोलना, बढ़ना, वृद्धिगत होना, बड़प्पन या आनन्द प्रकट करना। (द्रेकते - ध्वनयति। द्रेकः, द्रेककः, द्रेकमानः - अस्पष्टार्थ-वाक्यस्य वक्तरि। द्रेक्, द्रेकः, द्रेकनम्, द्रेकनीयम्, द्रेक्यम् - स्पष्टार्थके वाक्ये)।

द्रै (द्रायति, नि-निद्रायति) = स्वप्ने, निद्रायाम्। सोना, नींद लेना। (निद्रायति - स्वपिति। द्रैः - निद्रा। द्राणम्, द्राणः - निद्रायाम्। विनिद्रितम् - जागृतम्)।

द्वयशीति (संख्या) = बयासी (82)।

द्वा (संख्या) = दो (02)।

द्वात्रिंशत् (संख्या) = बत्तीस (32)।

द्वादश (संख्या) = बारह (12)।

द्वाविंशः (संख्या) = बाईस (22)।

द्वि (संख्या) = दो (02)।

द्विचत्वारिंशत् (संख्या) = बयालीस (42)।

द्विष् (द्वेष्टि, द्विष्टे) = अप्रीतौ, अहिते। मत्सर करना, द्वेष करना, शत्रुता करना। (द्वेष्टि, द्विष्टे - मात्सर्ये करोति। द्विषन्, द्विषाणः, द्वेष्टा, द्वेषकः, द्विष्टवान् - द्वेषके, अप्रीतिकर्तरि। द्विष्टिः, द्विष्टम्, द्वेषः, द्वेषणम्, द्वेषणीयम्, द्वेष्यम्, द्वैष्यम्, द्वैषम्, द्वेष्टव्यम् - अहिते)।

द्विषष्टि (संख्या) = बांसठ (62)।

द्वृ-द्वृ (द्वरति) = वरणे, आच्छादने, स्वस्थाने, छिद्रे। स्वीकार करना, अपनाना, आच्छादित करना, रोकना, छिद्र करना, अनादर करना। (द्वरति - छिद्रं करोति। द्वारम् - गमनमार्गः। द्वर्ता, द्वरकिः, द्वरकः - आच्छादनकर्तरि। द्वरणम्, द्वृतिः, द्वृतम्, द्वृ, द्वर्तव्यम्, द्वरणीयम्, द्वार्यम् -

स्वस्थाने)।

(ध)

धक् - दह् (दहति) = दहने, तापे, दग्ध-करणे। जलाना, नष्ट करना, दुःख देना, दग्ध करना। धक्, दग्धम्, दग्धि, दाहः - घर्मे (तापे)।

धक्क (धक्कयति, धक्कयते) = नाशने। नष्ट करना, हटाना धक्का देना।

धज् (धजति) = गतौ, गत्याम्। जाना, चलना। (धजति - गच्छति चलति। धजः - गमने)।

धण् (घणति) = शब्दे। शब्द करना।

धन् (धनति) = गतौ, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, चलना, गति करना। (धनति - चलति)।

धन् (दधन्ति) = धान्ये। उत्पन्न करना, फलना, बौर लगना। (दधन्ति - धान्यं भवति। दधन्, धनकः, धन्यः, धन्ता, धनाढ्यः - धनवान्। धनम्, धननम्, धननीयम्, धन्तिः, धन्तव्यम्, धान्यम्, धानम् - धान्ये)।

धन्व (धन्वति) = गतौ। जाना, स्थानान्तर करना।

धम्-ध्मा (धमति) = शब्दाग्निसंयोगयोः, ध्वनौ अग्निसंयोगे गतौ च। चलना, जाना, जानना, पाना, वाद्य बजाना, धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, आग लगाना, प्रदीप्त करना, जलाना। (धमति - शब्दयति, मुखेन अग्निः ज्वलयति। अग्निध्माः - अग्नेः मुखेन प्रज्वालकः। ध्मः, ध्माः, ध्मानम्, ध्मानीयम्, ध्मेयम्, ध्मातव्यम्, ध्मीतम्, ध्मीनम् - ओष्ठौ संयुज्य शब्दने)।

धव् (धवति) = शासने, गतौ, चलने। चलना, गति करना, शासन करना। (धवति - शास्ति। धवः - राजा)।

धष्क (धष्कयति) = नाशे। नाश करना, भर्त्सना करना। (धष्कयति

- भर्त्सयति। धष्कन्, धष्ककः - भर्त्सकः। धष्कम्, धष्कणम्, धष्कणीयम् - भर्त्सने)।

धा (दधाति, धत्ते) = धारणपोषणयोः, सहने रक्षणे च। धारण करना, पहनना, पोषण करना, रक्षण करना, देना, दान करना। अनुसम् - अनुसंधान करना, ढूँढ़ना। अपि - आच्छादन करना, प्रकट करना, दिखाना, बोलना, कहना, सम्भाषण करना। अभिसम् - जीतना, पराजय करना। सम् - अव - सावधान रहना, ध्यान देना। आ - स्वीकार करना, अंगीकार करना, करना, स्थापित करना। उप - सहायता करना। नि - ऊपर लेना, ऊपर करना, बीच में या ऊपर स्थापन करना, उत्पन्न होना, धारण करना। परि - वस्त्रादि धारण करना, परिधान करना। प्र - मुख्य होना, प्रथम होना, प्रेरणा करना, भेज देना। प्रणि - धारण करना, स्वीकार करना, मान्य करना, श्रेष्ठ पद पाना, गुप्त रहना, छिपकर रहना। प्रतिवि - प्रतिकार करना, निवारण करना। वि - कहना, धर्म सम्बन्धी कार्य करना, चाहना, प्रिय मानना, पूर्ण करना, आज्ञा करना, वचन देना। व्यव - छिपाना। सम् - स्थापन करना, रखना, एकत्र करना, लक्ष्यवेध करना। सम्प्र - प्रतिसम् - चर्चा करना, वाद-विवाद करना। समा - समाधान करना, सिखाना। सन्नि - समीप रखना, समीप आना। (दधाति, धत्ते - सहते। धाता, विधाता, धायन्, धायमानः, धायकः - सोढा, धर्ता। धानम्, धायम्, धापनम्, धापनीयम्, धातव्यम् - धारणे, सहने)।

धाः (धारति, धारयति, धारयते) = धारणपोषणयोः, सहने रक्षणे च। धारा होना, धार बाँधना, पोषण करना, रक्षण करना, देना।

धाव् (धावति, धावते) = शीघ्रगमने, गतिशुद्ध्योः, शीघ्रगत्याम्, शब्दे, शुद्धौ। जाना, भागना, मलरहित करना, धोना, स्वच्छ करना, स्वच्छ होना। अनु - जाना, समझना, पीछे भागना। अभि - समीप आना या जाना। आ - उतरना। परि - शीघ्र भागना। समुप - भेंट के लिए दौड़ना। (धावति,

धावते - शीघ्रं गच्छति (दौड़ता है), वृत्तं ददाति। धावन्, धावकः, धावमानः - शीघ्रगन्ता। धावनम्, धावनीयम्, धावितः, धविः, धावः, धावा, धाव्यम् - धावने, शीघ्रगमने (दौड़ने के अर्थ में)।

धि (धियति) = धारणे। रखना, युक्त होना, धारण करना। (धियन्, धीयितः, धीयितवान्, धेयिता, धियः, धियकः - सोढरि। धीयितिः, धीयितम्, धेयितव्यम्, धीयनम्, धीयनीयम् - सहने)।

धिक्ष (धिक्षते) = सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु। प्रदीप्त करना, जलाना, जीवित रहना, श्रान्त होना, थक जाना। (धिक्षति - जीवति। धिक्षः, धिक्षकः, धिक्षणः- प्राणधारके (जीवितरि)। धिक्षः, धिक्षिः, धिक्षुः, धिक्षा, धिक्षणः, धिक्षणम्, धिक्षणीयम् - जीवने)।

धिनु (धिनोति, धिन्नोति) = प्रीणने, प्रेमणि। सन्तुष्ट होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, समीप जाना, आना। (धिन्नोति - प्रीतिं करोति। धेवः, धेवन्, धेवकः - प्रेमिणि। धेवनम्, धेवनीयम्, धेव्यम्, धैव्यम् - प्रीतिकर्मणि)।

धिव् (धिवति, धिवोति) = प्रीणने, प्रेमणि। सन्तुष्ट होना या करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, समीप जाना, आना। (धिवति, धिवोति - प्रीतिं करोति। धेवः, धेवन्, धेवकः - प्रेमिणि। धेवनम्, धेवनीयम्, धेव्यम्, धैव्यम् - प्रीतिकर्मणि)।

धिष् (दिधेष्टि) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (दिधेष्टि - शब्दयति। धिट्, धेषन्, धेष्टा, धेषकः, धिष्टवान्, धिष्टः - शब्दयितरि। धिष्टिः, धिष्टम्, धेष्टव्यम्, धेष्ट्यम्, धैष्ट्यम्, धेषणम्, धेषणीयम् - शब्दने)।

धी (धीयते, धयते) = आधारे, अनादरे। बुद्धि, प्रज्ञा होना। धारण करना, आधार होना, अनादर करना, उपेक्षा करना। अन्तर् - गुप्त होना, छिप जाना। (धयते - अनादरं करोति। धीनः, धयानः - अनादरिता। धीनम्, धीतिः, धयनम्, धयनीयम् - अनादरे)।

धीव् (धीवति) = छिद्रे, स्थौल्ये, स्थूलीभावे। मोटा होना, छिद्र करना। (धीवति - छिद्रं करोति, स्थूलो भवति)।

धृ (धरति, धरते, धारयति, धारयते) = अवध्वंसने, धारणे, सहने, हूर्छने - कौटिल्ये। धारण करना, रखना, गिर पड़ना, नष्ट होना। अव, निर् - सत्य करके दिखाना। (धरति, धरते - सहते। धृत्, धरन्, धरमाणः, धारकः धरकः - सोढरि। धरा, धरित्री, धृत्, धरणी, धारणी, धरः, घृतिः, धरणम्, धारणम्, धारणा, धरणीयम्, धर्मम्, धृतम्, धर्तव्यम्, धरणम्, धर्यम्, धार्यम् - सहने। धारा - अजस्रप्रवाहः। धारिः - मार्गः)।

धृ (ध्रियते) = अवस्थाने। रहना, स्थिर रहना, धारण करना, रखना, युक्त होना। (ध्रियते - स्थिरो भवति। ध्रियः, ध्रियमाणः - स्थिरः। ध्रीः, ध्रयणम्, ध्रयणीयम् - स्थैर्यभावे)।

धृज् (धर्जति) = गतौ, गत्याम्। जाना, स्थानान्तर होना। (धृजति - गच्छति, चलति। धृजः - गमने)।

धृञ्ज (धृञ्जति) = गतौ, गत्याम्। जाना, स्थानान्तर होना।

धृष् (धर्षयति, धर्षयते, धर्षति) = स्मयने, अल्पहासे, प्रसहने। जीतना, पराभव करना। (धर्षयति - स्मयते। धर्षन्, धर्षकः - स्मायके। धृष्टम्, धृष्टिः, धर्षणम्, धर्षणीयम् - स्मयने)।

धृष् (घृष्णोति) = प्रागल्भ्ये, चातुर्ये। गर्व करना, अपने को बड़ा समझना, चतुर होना। (धृष्णोति - चतुरो भवति। धर्षन्, धर्षकः, धृष्टः, धृष्टवान् - चतुरः। धर्षणम्, धर्षणीयम्, धृष्टम्, धृष्टिः - चातुर्ये)।

धृष् (धर्षति) = धारणे। धारण करना, कर्षण करना। (धर्षति - कर्षति। धर्षः, धर्षकः, धृष्णुः - आकर्षकः। धृषिः, धृष्टिः, धर्षणम्, धृषः, धृषुः, धृट् - कर्षणे)।

धृष् (धृषति, धर्षति) = शक्तिसम्बन्धे, परिवञ्चनया ग्रहणे। (धृष्टुः, धृष्टः, धर्षकः, धर्षाणः - वञ्चके। धृष्टिः, धर्षणम्, धर्षणीयम्, धर्षः - परिवञ्चनया

ग्रहणे)।

धृ (धृणति) = विदारणे। चीरना, फाड़ना, टुकड़े-टुकड़े करना। नष्ट करना।

धु- धुनु (धुनोति, धुनुते) = कम्पने, चलने। काँपना, हिलना, हिलाना। (धुनोति, धुनुते - कम्पते। धवन्, धवानः, धेता, धुतः, धुतवान्, धवकः - कम्पके। धुतिः, धुतम्, धोतव्यम्, धवनम्, धवनीयम् - कम्पने। धवः - कम्पनम)।

धुक्ष (धुक्षते) = सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु, क्षुधायाम्, श्रमे, जीवने च। प्रदीप्त करना, जलाना, जीना, श्रान्त होना या थक जाना। (धुक्षते - क्षुधितो भवति, श्रान्तो भवति। धुक्षः, धुक्षकः, धुक्षाणः - क्षुधिते। धुक्षिः, धुक्षुः, धुक्षणम्, धुक्षा, धुक्षणीयम् - क्षुत्कर्मणि)।

धुज् (धुजति) = गतौ, गत्याम्। जाना, चलना। (धुजति - चलति। धुजः - गमने)।

धुर्व (धूर्वति) = हिंसार्थः। मार डालना या दुःख देना।

धू (धावयति) = कम्पने। कम्पन करना। (धावयति - कम्पते। धावन्, धावकः - कम्पके। धावनम्, धावनीयम् - कम्पने)।

धू (धुवति) = कम्पने, विधूनने, त्वचने। नोचना, कम्पित करना, काँपना। (धुवति - त्वचयति। धूतः, धूतवान् - त्वचके। धूतम्, धूतिः, धूननम् - त्वचने)।

धू (धवति, धवते, धावयति, धावयते, धूनोति, धुनुते, धुनाति, धुनीते, धूनयति, धूनयते) = कम्पने। कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना। अव - नष्ट करना, जाना। वि - प्रकम्पित करना, क्षोभित करना। (धुनाति, धुनीते - कम्पते। धूतः, धूतवान्, धवः, धावकः, धवन्, धवानः, धविता - कम्पितरि। धवनम्, धवनीयम् - कम्पनम्)।

धू (धौति)= शोधना, शुद्ध करना, कम्पन करना, नोचना, कम्पित

करना, काँपना, कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना।

धून् (धूनोति, धुनुते, धुनाति, धुनीते, धूनयति, धूनयते) = कम्पने। कम्पाना, कम्पित होना, हिलाना, क्षोभित करना। अव - नष्ट करना, जाना। वि - प्रकम्पित करना, क्षोभित करना। (धुनाति, धुनीते - कम्पते)।

धूप् (धूपायति) = तापे, सन्तापे, दुःखे। उष्ण करना, तपाना। (धूपायति - आतपं करोति। धूपः - आतपः)।

धूप् (धूपयति, धूपयते, धूपायति) = परिमले, भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना। (धूपयति, धूपायति - परिमलयति। धूपः - धूप इति द्रव्यम्)।

धूर् (धूर्यते) = हिंसागत्योः। मार डालना या दुःख देना, समीप जाना या आना। (धूर्यते - हिनस्ति। धूराणः, धूरकः, धूर्णः, धूर्णवान् - हिंसके। धूरणम्, धूरणीयम्, धूर्तिः - मारणे। धूर्तः - हिंसकः, मत्तः, कपटाचारी वा)।

धूश् (धूशयति, धूशयते) = कान्तिकरणे, प्रकाशे। शोभित होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, शृंगारयुक्त होना, अलंकृत होना। (धूशयति - प्रकाशयति। धूशः - प्रकाशकः। धूशनम्, धूशनीयम् - प्रकाशे)।

धूष् (धूषयति, धूषयते) = कान्तिकरणे, प्रकाशे। शोभित होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, शृंगारयुक्त होना, अलंकृत होना।

धूस् (धूसयति, धूसयते) = सामीप्ये, कान्तिकरणे, प्रकाशे। समीप होना, शोभित होना, कान्ति होना, प्रकाश होना, शृंगारयुक्त होना, अलंकृत होना। (धूसयति - समीपं भवति। धूलिधूसरः - स्वशरीरे धूलि प्रक्षेपकः। धूसनम्, धूसनीयम् - धूलिप्रक्षेपणे)।

धे-धय् (धयति) = पाने, प्राशने, पालने। प्राशन करना, पालना, पीना। (धयति - पिबति। धायकः - पायकः। धैः, धेः, धः, धायनम्, धातम्, धीनम्, धीतम्, धयनम्, धम्, धयत् - पाने)।

धोर् (धोरति) = गतिचातुर्ये, गतिप्रावीण्ये। अच्छी रीति से गमन

करना, चतुराई से चलना, शीघ्र चलना।

धोल् (धोलति) = कम्पने, गतिचातुर्ये, गतिप्रावीण्ये। कम्पन करना, उत्तम गति करना, चतुराई से चलना, शीघ्र चलना। (धोलति - कम्पते। धोलः - कम्पनकरः, तोरणम्)।

ध्मा-धम् (धमति) = शब्दाग्निसंयोगयोः, ध्वनौ अग्निसंयोगे च। धौंकना, फूँकना, मुंह से वंशी आदि वाद्य बजाना, आग सुलगाना, प्रदीप्त करना, जलाना। (धमति - शब्दयति, मुखेन अग्निः ज्वलयति। शङ्खध्माः - शङ्खस्य धमकः। अग्निध्माः - अग्नेर्मुखेन प्रज्वालकः। ध्मः, ध्माः, ध्मानम्, ध्मानीयम्, ध्मेयम्, ध्मातव्यम्, ध्मीतम्, ध्मीनम् - ओष्ठौ संयुज्य शब्दने।

ध्यै (ध्यायति) = चिन्तायाम्, विचारे। ध्यान करना, चिन्तन करना, मनन करना, विचार करना। नि - शोधना, ढूँढ़ना। (ध्यायति - ध्यानं करोति, विचारयति। ध्याता, ध्याः, ध्यायकः - चिन्तके। ध्यानम्, ध्येयम्, ध्यातव्यम्, ध्यानीयम् - ध्याने)।

ध्रज् (ध्रजति) = गतौ, गमने। जाना, स्थानान्तर होना। (ध्रजति - गच्छति, चलति। ध्रजः - गमने)।

ध्रञ्ज (ध्रञ्जति) = गतौ, गमने। जाना, स्थानान्तर होना।

ध्रण् (ध्रणति) = शब्दे। वाद्यादिकों का शब्द करना, बाजा बजाना।

ध्रश् (ध्रश्नाति) = निर्धारणे, उञ्छे, कणशः आदाने, चालने, कम्पने, एकैकशः आदाने। उञ्छन करना, चुनना, बीनना, थोड़ा-थोड़ा चुनना, थोड़ा-थोड़ा एकत्र करना। (ध्रश्नाति - निर्धारयति। ध्रश्नन्, ध्रशकः - निर्धारयिता। ध्रष्टिः, ध्रशनम्, ध्रशनीयम् - निर्धारणे। ध्रष्टः - निर्धारितः)।

ध्रस् (ध्रस्नाति, ध्रासयति, ध्रासयते) = उञ्छे, एकैकशः आदाने, निर्धारणे, उत्क्षेपे, उड्डयने। बीनना, एक-एक करके चुगना, ऊपर फेंकना, उड़ा देना। (ध्रासयति - उड्डीयते। ध्रसन्, ध्रसकः, ध्रासः = उड्डयितरि। ध्रसनम्, ध्रसनीयम् - उड्डयने)।

ध्रस् (ध्रासयति) = उत्क्षेपे, उड्डयने। ऊपर फेंकना, उड़ना। (ध्रासयति - उड्डीयते। ध्रसन्, ध्रसकः, ध्रासः = उड्डयितरि। ध्रसनम्, ध्रसनीयम् - उड्डयने)।

ध्राख् (ध्राखति) = शोषणालमर्थयोः, शोषणे शृङ्गारे च। शुष्क होना, सूखना, संवारना, सजाना, शृंगार करना, शोभित करना, निषेध करना, निवारण करना, पूर्ण करना। (ध्राखति - म्लायति। ध्राखनम् - शोषणं मण्डनं च)।

ध्राघ् (ध्राघते) = सामर्थ्ये। योग्य होना, समर्थ होना।

ध्राङ्क्ष (ध्राङ्क्षति) = घोरवासिते, रौद्रभाषणे, कटुशब्दे, काङ्क्षायाम् च। (ध्राङ्क्षति - कौवे के समान कांव-कांव शब्द करना, चाहना। (ध्राङक्षति - कटुशब्दयति)।

ध्राड् (ध्राडते) = विशरणे तक्षणे, विभजने। छीलना, चीरना, टुकड़े करना, फाड़ना। (ध्राडते - विभजति। ध्राड्, ध्राडः, ध्राडकः, ध्राडानः - विभाजके। ध्राडनम्, ध्राडनीयम्, ध्राड्यम् - विभजने)।

ध्री (ध्रियते) = अवस्थाने। स्थिर होना। (ध्रियते - स्थिरो भवति। ध्रियः,ध्रियमाणः - स्थिरः। ध्रीः, ध्रयणम्, ध्रयणीयम् - स्थैर्यभावे)।

ध्रु-ध्रुव् (ध्रुवति) = गतिस्थैर्ययोः, गत्यां स्थिरतायां च, गतिस्थैर्ये, निश्चले, चलने च। गति करना, जाना, गमन करना, अचल होना, स्थिर होना। (ध्रुवति - चलति, स्थिरो भवति। ध्रुवम् - निश्चयः। ध्रुवति - कम्परहितो भवति। ध्रुवम् - निश्चलम्)।

ध्रेक् (ध्रेकते) = शब्दोत्साहयोः, ध्वनौ, उत्साहे, शब्दोत्साहे, स्पष्टार्थके वाक्ये च। शब्द करना, स्पष्ट कहना, उत्साह होना, बढ़ना, बहुत होना, हर्षित होना, आनन्दित होना। (ध्रेकते - स्पष्टं वदति। ध्रेकः, ध्रेककः, ध्रेकमानः - स्पष्टवक्तरि। ध्रेक्, ध्रेकिः, ध्रेकनम्, ध्रेकनीयम्, ध्रेक्यम् - स्पष्टे वाक्ये)।

ध्रै (ध्रायति) = तृप्तौ, शीतीभावे। शीत होना, तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। (ध्रायति - शीतो भवति। ध्रैः, ध्राणम्, ध्राणिः - शैत्ये)।

ध्वज् (ध्वजति) = गतौ, गमने। जाना, स्थानान्तर करना। (ध्वजः - गमने)।

ध्वञ्ज (ध्वञ्जति) = गतौ, गमने। जाना, स्थानान्तर करना।

ध्वण् (ध्वणति) = शब्दार्थः। शब्द करना।

ध्वन् (ध्वनति, ध्वनयति, ध्वनयते, ध्वानयति, ध्वानयते) = शब्दे, ध्वनौ, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (ध्वनति - आर्त्तशब्दं करोति। ध्वनिः - शब्दः। ध्वनयति, ध्वानयति - शब्दं करोति। ध्वनयति - शब्दयति। ध्वनयन् - शब्दकः। ध्वनिः, ध्वानः - शब्दकर्तरि)।

ध्वन् (ध्वनति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना। (ध्वनति - वदति। ध्वनन्, ध्वनकः - वाचालः। ध्वनिः, ध्वानः - शब्दनम्)।

ध्वंस् (ध्वंसते) = गतौ, दूरीभावे, ध्वंसने, चूर्ण्ने, नाशने, अवस्रंसने च। चूर्ण होना या करना, जाना, नीचे गिरना, नष्ट होना। वि - नष्ट होना। (ध्वंसते - दूरीभवति, नश्यति। ध्वंसकः, ध्वंसमानः, ध्वस्तः ध्वस्तवान् - ध्वंसकर्तरि। ध्वंसिः, ध्वंसः, ध्वंसा, ध्वंसनम्, ध्वंसनीयम्, ध्वंसिः - दूरीभावे)।

ध्वाङ्क्ष (ध्वाङ्क्षति) = घोरवासिते, रौद्रभाषणे, काङ्क्षायां। कांव-कांव शब्द करना, इच्छा करना, चाहना। (ध्वाङ्क्षति - घोरं ध्वनति)।

ध्वृ (ध्वरति) = हूर्छने। टेढ़ा करना, नमाना, वक्र करना, मार डालना, वर्णन करना।

(न)

न (अव्यय) = नहीं।

न केवलम् (अव्यय) = न केवल, अपि या किन्तु के साथ।

नः (सर्वनाम) = हमको, हमारे लिए, हमारा, (त्रिलिंग)

नक्क (नक्कयति, नक्कयते) = नाशने। उच्छेद करना, नष्ट करना।

नक्तम् (अव्यय) = रात्रिः। रात में।

नक्ष (नक्षति) = गतौ, गमने, आगमने। जाना, समीप जाना, आना, पहुंचना। (नक्षति, प्रणक्षति - आयाति। नक्षकः - आगन्ता)।

नख् (नखति) = गतौ, अङ्कुरणे। जाना, स्थानान्तर करना, अङ्कुरण होना, उगना। (नखति - अङ्कुरितो भवति। नखः - अङ्कुरः, अङ्गुल्यग्रावयवविशेषः वा)।

नङ्ख (नङ्खति) = अङ्कुरणे, गतौ। जाना, स्थानान्तर करना, अङ्कुरण होना, उगना। (नङ्खति - अङ्कुरितो भवति)।

नज् (नजते) = व्रीडायाम्। लज्जित होना।

नञ्ज (नञ्जति) = विस्मरणे, हिंसागत्योः, हिंसायां, नाशे, गत्यां च। हिंसा करना, गति करना। (नञ्जति - विस्मरति, नाशयति। नञ्जम्, नञ्जु, नञ्जिः, नञ्जनम् - विषे। नञ्जुरुलः - भूनागः। नञ्जडम् - मांसम्)।

नट् (नटति, नाटयति, नाटयते) = नाट्ये, नृतौ, नृत्ये, अवस्यन्दने, अवस्पन्दने। नृत्य करना, गिरना, झरना, बहना, दिखाना, कम्पित होना, हिलना, धीरे-धीरे सरकना। (नटति - नृत्यं करोति। नटकः - नर्तकः। नटति, नटयति - नृत्यति। नटः, नटकः, नाटकः, नटन् - नर्तके। नटिः, नटुः, नटनम्, नटनीयम्, नट्यम्, नाट्यम् - नर्तने)।

नट् (नाटयति, नाटयते) = नाट्ये, नृतौ, नृत्ये, अवस्कन्दने, कम्पने, भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, अभिनय करना।

नड् (नाडयति, नाडयते) = अवस्यन्दने। गिरना, पतन होना।

नथ् (नाथयति, नाथयते) = अवस्यन्दने। कम्पन करना। (नाथयति - कम्पते। नाथः - कम्पकः। नथनम्, नथनीयम् - कम्पने)।

नद् (नदति) = अव्यक्ते शब्दे, अव्यक्तध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना,

शब्द करना। प्र -समुद् - घण्टा या पशु के समान शब्द करना। व्यनु - निनादित करना, शब्दों से भर देना। (नदति - अव्यक्तं ध्वनति)।

नद् (नादयति, नादयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, शब्द करना। (नादयति - झङ्करोति। नादः - झङ्कारः)।

ननु (ननोति, ननुते) = शङ्कायाम्, विचारे। विचार करना। (ननोति, ननुते - विचारयति। ननः, नन्तः, नन्तवान्, नन्ता, नान् - विचारके। नाना - कुड्मलम्। नानुः - कण्ठाभरणम्। नन्यम्, नान्यम्, नन्तिः, नन्तम्, नन्तव्यम्, नननम्, नननीयम्, ननकम्, नानकम्, नानम् - विचारणे)।

ननु (अव्यय) = प्रश्नार्थक, सम्बोधनार्थक, निश्चय ही।

नन्द (नन्दति) = समृद्धौ। आनन्द पाना, प्रसन्न होना, समृद्ध होना, वृद्धि होना। आ - सुखी होना, आनन्दित होना। अभि - इच्छा करना, चाहना, प्रशंसा करना, स्वीकार करना। प्रति - उपकार मानना, धन्यवाद करना। (नन्दति - समृद्धो भवति। नन्दनः - समृद्धः)।

नप (**नप**ति, **नप**ते) **=** पहुंचना, जानना, पाना, शब्द करना, झंकार करना, चमकना।

नभ् (नभते, नभ्यति, नभ्नाति) = हिंसायाम्, मारणे, व्याप्तौ, मध्ये, केन्द्रे च। नष्ट होना, दुःख देना या मार डालना, मध्य में स्थित होना, केन्द्र होना। (नभते - मारयति। नभ्यति - हिनस्ति। नभकः, नभमानः - मारयिता। नभ्, नभिः, नभनः, नभनीयम्, नभ्यम्, नाभ्यम्, नब्धिः, नब्धम् - हिंसायाम्। नभ्नाति, नभ्नीते - मारयति)।

नम् (नमति) = प्रह्वत्वे, शब्दे, नमस्कारे। नमस्कार करना, वन्दना करना, सम्मान देना, नमना। (नमति - नमस्करोति। नन्ता - नमस्कर्ता। नमनम् - नमस्कारः। नम्यः - नमस्करणीयः)।

नम्ब (नम्बति) = पूजने, विश्वसने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। पूजा करना, विश्वास करना। (नम्बति - पूजयति। नम्बुः - विश्वासः)।

नय् (नयते) = गतौ, रक्षणे, त्राणे, चलने च। जाना, हिलना, पहुँचना, संरक्षण करना। (नयति - रक्षति। नयकः, नायकः, नय्यः, नाय्यः, नयमानः - रक्षितरि। नयः नयिः, नयुः, नायः, नयनम्, नयनीयम् - रक्षणे। नाय् - श्वा। नायी - शुनी)।

नर्द (नर्दति) = शब्दे, अव्यक्तध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना। (नर्दति - अव्यक्तं ध्वनति)।

नल् (नलति) = गन्धे, दुर्गन्धे, बन्धने। सूंघना, दुर्गन्ध आना, बांधना। (नलति - दुर्गन्धयति। नलिनम् - कमलम्। नालम् - छिद्रम्। नाली - जलादिसंचरणी)।

नल् (नलति) = अदने, भक्षणे, प्रवाहे, नलिकायाम्। ख़ाना, प्रवाह होना, नल होना, नलिका होना, नल में प्रवाहित करना। (नलति - नाड्या जलमायाति। नालम् - छिद्रम्। नालः, नालिका - नलम्)।

नल् (नालयति, नालयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

नल्ल (नल्लति) = अदने, भक्षणे, स्पृहायाम्। खाना, इच्छा करना, चाहना। (नल्लति - स्पृहयते)।

नव (संख्या) = नौ (09)।

नवचत्वारिंशत् (संख्या) = उनचास (49)।

नवति (संख्या) = नब्बे (90)।

नवत्रिंशत् (संख्या) = उनतालीस (39)।

नवदश (संख्या) = उन्नीस (19)।

नवनवति (संख्या) = निन्यानवे (99)।

नवपञ्चाशत् (संख्या) = उनसठ (59)।

न वरम् (अव्यय) = किन्तु।

नवविंशतिः (संख्या) = उनतीस (29)।

नवविंशत्या = उनतीस (29)।

नवषष्टिः (संख्या) = उनहत्तर (69)।

नवसप्तति (संख्या) = उन्यासी (79)।

नवाशीति (संख्या) = नवासी (89)।

नश् (नश्यति) = अदर्शने, अदृश्यभावे। खो जाना, नष्ट होना, दिखाई नहीं देना।(नश्यति - अदृष्टं भवति। नष्टा, नष्टः, नशन्, नाशकः - अदर्शके। नष्टम् नष्टिः, नाशः, नश्यः, नाश्यः, नष्टव्यम् - अदर्शने)।

नष्क (नष्कयति, नष्कयते) = नाशने। उच्छेद करना, नष्ट करना। (नष्कयति - नश्यति। नष्कन्, नष्ककः - नष्टा। नष्कम्, नष्कणम्, नष्कणीयम् - नाशने)।

नस् (नसते) = कौटिल्ये। टेढ़ा होना, वक्र होना, धोखा देना, नम जाना। (नसते - कुटिलमाचरति। नसकः नसमानः - कौटिल्याचरितरि (धोखा देने वाले)। नस्, नसा, नस्यम्, नासिः, नसुः, नसनीयम् - कौटिल्याचारे)।

नह् (नह्यति, नह्यते) = बन्धने। बांधना, अड़ाना। सम् - शस्त्र धारण करना, कवच पहनना। उप - लपेटना। नि - कसकर बाँधना। अभि - सब ओर से बांधना। (नह्यति, नह्यते - बध्नाति। नट्, नाढा, नाढः, नाढवान्, नहन्, नहानः, नहतः, नहकः - बन्धके। उपानह्, उपानट् - पादबन्धकः, पदत्राणः वा (जूता)। नाढम्, नाढिः, नहनम्, नहनीयम्, नह्यम्, नाह्यम्, नाहम्, नक्तव्यम् - बन्धने)।

नंह् (नंहति, नंह्यति, नंह्यते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

न हि (अव्यय) = नहीं।

नाथ् (नाथति, नाथते) = वाच्ञोपतापैश्वर्याशीषु, रक्षणे, आशीर्वादे, शासने आश्चर्ये आशिषि याचने च। शासन करना, रक्षा करना, याचना करना, मांगना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना, स्वस्तिवाचन

करना। (नाथते - रक्षते। नाथः, नाथकः, नाथमानः - रक्षके, राजनि वा। नाथ्, नाथिः, नाथनम्, नाथनीयम्, नाथ्यम् - प्रभुतायाम्)।

नाध् (नाधते) = वाच्ञोपतापैश्वर्याशीषु, रक्षणे, आशीर्वादे, शासने आश्चर्ये आशिषि याचने च। शासन करना, रक्षा करना, याचना करना, मांगना, रोगी होना, श्रीमान् होना, आशीर्वाद देना, स्वस्तिवाचन करना। (नाधते - शास्ति। नाधः, नाधकः, नाधमानः, नाधमानः - शासके। नाधा - शासिका। नाध्, नाधिः, नाधनम्, नाधनीयम्, नाध्यम् - शासने)।

नाना (अव्यय) = विविध, विभिन्न।

नाम (अव्यय) = नाम, नाम वाला।

नाय् (नाययति) = हेतौ, कारणे। हेतु होना, कारण होना।(नाययति - हेतुर्भवति। नायः, नायकः - हेतुकर्ता। नायनम्, नायनीयम् - कारणम्)।

नास् (नासते) = श्वासध्वनौ, शब्दे, ध्वनौ। खुर्राटा मारना, घर्राटा मारना, नाक खरखराना। (नासते - ध्वनिं करोति। नासकः, नासमानः - शब्दकर्तरि। नासा, नासिका - घ्राणेन्द्रियम्। नासनम्, नासनीयम्, नास्यम्, नासिः, नासा - श्वासध्वनौ)।

नि (अव्यय) = विना, बाहर, निश्चित।

निः (अव्यय) = विना, बाहर, निश्चित।

निक्-निज्-निनिक् (नेनेक्ति, नेनिक्ते) = शौचशोषणयोः, शीले, शुष्कीभावे च। शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालना। (नेनेक्ति नेनिङ्ते - दुःखितो भवति, शुष्यति। नेक्ता, निक्तः, निक्तवान्, नेजन्, नेजानः, निज नेजनः - शीलवति। नेजनम्, नेक्तव्यम्, नेजनीयम्, नेज्यम्, नैज्यम्, नैजम्, निक्तिः, निक्तम् - शीले)।

निकषा (अव्यय) = निकट।

निक्ष (निक्षति) = चुम्बने। चुम्बन लेना, चूमना।(निक्षति - चुम्बयति। निक्षः - चुम्बकः)।

निङ्क्-निञ्ज (निङ्क्ते) = शुद्धौ। स्वच्छ करना, निर्मल करना। (निङ्क्ते) - शोधति। निञ्जः, निञ्जकः, निञ्जकवान्, निञ्जानः - शोधके। निञ्जा, निञ्जनम्, निञ्जनीयम्, निङ्तव्यम्, निञ्ज्यम्, निङ्क्तिः, निङ्क्तम् - शुद्धौ)।

निज-निनिक्-निक् (नेनेक्ति, नेनिक्ते) = दुःखे, शौच-शोषणयोः, शीले, शुष्कीभावे च। शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालना। (नेनेक्ति नेनिङ्ते - दुःखितो भवति, शुष्यति। नेक्ता, निक्तः, निक्तवान्, नेजन्, नेजानः, निज नेजनः - शीलवति। नेजनम्, नेक्तव्यम्, नेजनीयम्, नेज्यम्, नैज्यम्, नैजम्, निक्तिः, निक्तम् - शीले)।

निञ्ज (निङ्क्ते) = शुद्धौ। स्वच्छ करना, निर्मल करना। (निङ्क्ते - शोधति। निञ्जः, निञ्जकः, निञ्जकवान्, निञ्जानः - शोधके। निञ्जा, निञ्जनम्, निञ्जनीयम्, निङ्तव्यम्, निञ्ज्यम्, निङ्क्तिः, निङ्क्तम् - शुद्धौ)।

निड् (नेडति) = निवासे, गृहे। निवास करना। (नेडति - निवसति। नीडम् - वयसाम् आवासः (घोंसला)।

नितराम् (अव्यय) = अत्यन्त।

निद् (नेदति, नेदते) = कुत्सासंन्निकर्षयोः, निन्दने, सामीप्ये च। दोष लगाना, निन्दा करना, समीप जाना या पहुँचना। (नेदति, नेदते - निन्दति। निद्, नेदः, नेदन्, नेदमानः - कुत्सके। निदिः, निदा, नेदनम्, नेदनीयम्, निद्यम् (निद्यम्), नैद्यम् (नैद्यम्) - निन्दायाम्)।

निनिक्-निक्-निज् (नेनेक्ति, नेनिक्ते) = शौचशोषणयोः, शीले, दुःखे, शुष्कीभावे च। शुद्ध करना, स्वच्छ करना, पालना। (नेनेक्ति नेनिङ्ते - दुःखितो भवति, शुष्यति। नेक्ता, निक्तः, निक्तवान्, नेजन्, नेजानः, निज नेजनः - शीलवति। नेजनम्, नेक्तव्यम्, नेजनीयम्, नेज्यम्, नैज्यम्, नैजम्, निक्तिः, निक्तम् - शीले)।

निन्द (निन्दति) = कुत्सायाम्, निन्दायाम्। निन्दा करना, दोष लगाना, धिक्कारना। (निन्दति - कुत्सयति। निन्दा - कुत्सा)।

निन्व-निव्व (निन्वति) = सेचने सेवने च। भिगोना, गीला करना, सींचना, सेवन करना। (निन्वति - बिन्दुं त्यजति। निव्वः - बिन्दुसेचकः। निव्वनम्, निव्वुः, निव्विः - विन्दुपाते)।

निपुरः (अव्यय) = मुख्य।

निम्ब (निम्बति) = अम्ले, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। अम्ल होना, खट्टा होना। (निम्बति - अम्ली भवति। निम्बा, निम्बः, निम्बि, निम्बुलिः - अम्ला, वृक्षविशेषः वा)।

नियुतः (संख्या) = दस लाख (10,00,000)।

निरस्य (निरस्यति) = विस्तारे, प्रसारणे। विस्तार करना, फैलाना। (निरस्यति - प्रक्षिपति, विस्तारयति। हस्तौ निरस्यति - हस्तयति, हस्तौ विस्तारयति। पादौ निरस्यति - पादयति, पादौ विस्तारयति। शिरो निरस्यति - मस्तकयति, शिरो विस्तारयति। जिह्वाम् निरस्यति - जिह्वयति, जिह्वां विस्तारयति। मेढ्रं निरस्यति - मेढ्रयति, मेढ्रं विस्तारयति)।

निर्यात (निर्यातयति) = प्रतिदाने, आदाने, धने, धान्ये, अतिक्रमे च। निर्यात करना, प्रतिदान करना, लेना। (निर्यातयति - धनं धान्यं वा गृह्णाति, उपभुङ्क्ते। निर्यातः - प्रतिग्राहकः। निर्यातनम् - मूल्यम्)।

निल् (निलति) = गहने, अरण्ये, निर्जने, मिथ्याबोधे, अपबोधे च। निर्जन होना, सुनसान होना, गहन वन होना, मिथ्याबोध होना, घना होना, दृढ़ होना, जमना, छिप जाना। (निलति - निर्जनीभवति। निलम् - वनम्)।

निल्, नील् (नेलति) = जृम्भणे, गण्डूषकरणे, अदने, भक्षणे। खाना, कुल्ला करना, जम्हाई लेना। (नेलति - जृम्भते गण्डूषं वा करोति। नेलिः - जृम्भणम्, गण्डूषकरणम्)।

निल्ल (निल्लति) = अदने, भक्षणे, चुम्बने। खाना, चूमना। (निल्लति

- चुम्बते। निल्लः, निल्लिः - - चुम्बकः)।

निवास् (निवासयति, निवासयते) = निवासे, आच्छादने। आच्छादित करना, लपेटना, ठहराना। (निवासयति - आच्छादयति। निवासयन् - आच्छादकः। निवासनम् - आच्छादनम्)।

निश् (नेशति) = समाधौ, तृषाशान्त्याम्, तमसि। तृषा शान्त होना, प्यास न होना, तमस् होना, अन्धकार होना, रात्रि होना, शान्ति से विचार करना, मनन करना, ध्यान लगाना। (नेशति - तृषा न भवति। निशा, निशीथिनी, निशुः - रात्रि। निशितम्, निशातम्, निशातनम् - तमः)।

निशम् (निशामयति) = निशामने, परिचये। परिचय करना, पहचानना। (निशामयति - परिचिनोति)।

निष् (नेषति) = प्रापणे, सेचने, घर्षणे। प्राप्त करना, ले जाना, सेचन करना, घर्षण करना। (नेषति - सिंचति। नेषिता, नेष्टा, निषः, निषकः, निषुः - संघर्षयितृषु। निष्टम् - घर्षितम्। निषाणः - घर्षकः)।

निष्क (निष्कयते) = परिमाणे। मापना, तोलना, गिनना। (निष्कयति - परिमापयति। निष्कम् - एतन्नामकं परिमाणम्, एतन्नाम्नी मुद्रा वा)।

निष्क (निष्कते) = गतौ। जाना, प्रवाह होना, बहना। (निष्कते - वहति। निष्कम् - प्रवाहः, एतन्नाम्नी मुद्रा वा)।

निंस् (निंस्ते) = चुम्बने। चूमना। (निंस्ते - चुम्बति। निंसः, निंस्तवान्, निंसकः, निंसानः - चुम्बके। निंसम्, निंसनम्, निंसनीयम्, निंस्तव्यम्, निंस्तिः, निस्नम्, निंस्यम् - चुम्बने)।

नी (नयति, नयते) = प्रापणे, गतौ। पहुँचाना, प्राप्त होना, मार्ग दिखाना, पाना, मिलना, ले जाना। अनु - याचना करना, मांगना, अनुकरण करना, कृपा करना। अप - ले जाना, हरण करना, आकर्षण करना, खींचना। अभि - चिह्नों से दिखाना, संकेत करना, अभिनय करना, कृपालु होना। आ - लाना। उत् - ऊपर उठाना। उप - समीप ले जाना, पारिश्रमिक

देकर समीप ले जाना। दुर् - बुरी रीति से बरतना। निर् - प्राप्त होना, मिलना, पाना, ठहरना, निश्चय करना। परि - विवाह करना, ढूँढ़ना। प्र - शिक्षा करना, प्रीति करना दुलारना, प्यार करना। वि - ले जाना, विनय करना, ऋण चुकाना, ऋण देना। विनिर् - न्याय से विचार करना, न्याय करना। सम् - एकत्र करना, बटोरना। समा - एकत्र करना। (नयति, नयते - चलति, प्रापयति। सेनानीः - सेनानायकः। ग्रामणीः - ग्रामनायकः, ग्राममुख्यः। नायकः - नेता। नायकी - नेत्री। नेता - राजा। नेत्री - रानी। नयः - न्यायः। नीतव्यम्, नेतव्यम्, नेयम्, नयनीयम्, नीतम्, नीतिः, नय्यम्, नाय्यम् - नयने)।

नीच् (नीच्यति) = दास्ये। दासत्व करना।

नीचैः (अव्यय) = नीच, नीचे।

नीनु (नीनोति, नीनुते) = सम्बोधने, आमुखीभावे। अभिमुख होना, अभिमुखकरना। (नीनोति, नीनुते - अभिमुखं करोति। नीन्तः, नीन्तवान्, नीनः, नीनुः, नीन्ता - अभिमुखं कर्तरि। नीननम्, नीननीयम्, नीन्तव्यम्, नीन्यम्, नीन्तम्, नीन्तिः - अभिमुखीकरणे)।

नील् (नीलति) = अभिभवे, वर्णे, आच्छादने रञ्जने च। रंगना, रंगाना, नीलरंग लगाना। (नीलति - आच्छादयति, अभिभवति = चढ़ता है। नीलम् - नीलरागः। नीलिमा - रागविशेषः)।

नीव् (नीवति) = स्थौल्ये, स्थूलीभावे। मोटा होना। (नीवति - श्वयते। नीवनः, नीवः, नीवरः - श्वयथुः)।

नृत् (नृत्यति) = गात्रविक्षेपे, नर्तने, नृत्ये। नाचना, नृत्य करना। (नृत्यति - नर्तनं करोति। नृत्यन्, नृत्तः, नृत्तवान् - नर्तके। नृत्तम्, नृत्तिः, नृत्यम् - नर्तने)।

नृ (नृणति) = नये, चलने, गतौ। चलना, ले जाना। (नृणाति - चलति। नरन्, नर्ता, नृ, नरः - गन्तरि। नरी, नारी - गन्त्री। नर्तव्यम्,

नरणम्, नरणीयम्, नर्यम्, नार्यम्, नारम् - गमने)।

नॄ (नरति, नरयति) = नये, विनये। (नरति, नरयति - विनीतो भवति। नरः, नॄ, नरकः, नर्ता - विनम्रे। नर्तव्यम्, नरणीयम्, नरणम्, नर्यम्, नार्यम् - मृदुनि, कोमले। नरी - भीरुः)।

नु (नौति, आ—नुते) = स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना। आ—नुते - दुःख से रोना। (नौति - प्रशंसति। नुत्, नवन्, नवकः - स्तोता। नवन्, नवम्, नव्यम्, नवीनम्, नाव्यम्, नावम्, नवनीयम्, नुतव्यम्, नुतिः, नुतम्, नुत्यम्, नुतव्यम् - स्तुतौ प्रशंसायाम्)।

नु (अव्यय) = निश्चय ही, शीघ्र ही।

नु-नव् (नवते) = शब्दे- ध्वनौ। शब्द करना, निश्चय करना। (नवते - निश्चिनोति। नवकः, नवमानः - निश्चेता। न, नु, नवनम्, नवनीयम्, नुवति - निश्चये)।

नु-नुव् (नुवति) = स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना। (नुवति - स्तौति। नूतः, नूतवान् - स्तोतरि। नूः, नूतिः - स्तवने)।

नुणुम्ब (नुणुम्बति) = श्रमे, कर्षणे, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। श्रम करना, कृषि करना। (नुणुम्बति - श्रमं करोति। नुणुम्बः - कर्षकः)।

नुद् (नुदति, नुदते) = प्रेरणे, कथने। भेजना, प्रेरणा करना, कहना, जाना। अप - दूर करना। निर् - बाहर फेंकना, त्याग करना, स्वीकार करना, मान्य करना। वि - प्रसन्न करना। सम् - हांकना, चलाना। (नुदति - कथयति। नुदन्, नुत्तः, नुत्तवान्, नोदकः - कथयितरि। नुत्तिः, नुत्तम्, नोदः, नोदनम्, नोदनीयम् - कथने)।

नू (नुवति) = स्तवने, स्तुतौ। प्रशंसा करना, स्तुति करना। (नुवति - स्तौति। नूतः, नूतवान् - स्तोतरि। नूः, नूतिः - स्तवने)।

नूनम् (अव्यय) = निश्चय ही।

नूनु-णूनु (नूनोति, नूनुते) = निश्चये। निश्चय करना। (नूनोति,

नूनुते - निश्चिनोति। नून्तः, नून्तवान्, नूनकः, नून्ता - निश्चेतरि। नूनम्, नूननम्, नूननीयम्, नून्तम्, नृन्तिः, नून्तव्यम्, नून्यम्, नौन्यम् - निश्चये)।

नेद् (नेदति, नेदते) = कुत्सासन्निकर्षयोः, सम्बन्धने च। दोष लगाना, निन्दा करना, समीप जाना, आना। (नेदति, नेदते - सम्बन्धयति। नेद्, नेदकः, नेदुरः, नेदमानः - सम्बन्धयितरि। नेदिः, नेदुः, नेदनम्, नेदनीयम् - सन्निकर्षे)।

नेम (अव्यय) = अर्ध।

नेष् (नेषते) = गतौ, कूर्दने। जाना, समीप जाना। (नेषते - कूर्दते। नेट्, नेषकः, नेषमाणः - कूर्दके। नेषणम्, नेषणीयम् - कूर्दने)।

नो (नः) (सर्वनाम) = हमको, हमारे लिए, हमारा। (त्रिलिंग)

नौ (सर्वनाम) = हम दोनों को, हम दोनो का, हम दोनो के लिए।

नौ (नायति) = प्लवने। तैरना। (नायति - तरति। नौः, नावम्, नावा - नौकायाम्। नः - प्लावकः)।

(प)

पक्ष (पक्षति, पक्षते, पक्षयति, पक्षयते) = विभागे, विभजने, परिग्रहे। ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, एक पक्ष में होना, विभाग करना। (पक्षते - विभजते। पक्षः -विभागः। पक्षकः, पक्षमाणः - विभक्ता। पक्षी - पक्षयुक्तः, आकाशचारी प्राणीः वा। पक्षिणी - पक्षयुक्ता)।

पच् (पचते) = जीर्णभुवि, व्यक्तीकरणे, प्रकाशने। व्यक्त करना, प्रकाश करना, प्रसिद्ध करना, जीर्ण होना। (पचते - जीर्णो भवति। पचः, पक्, पचकः, पाचकः, पचमानः - जीर्णभवितरि। पचिः, पचुः, पच्यम्, पचनम्, पाचनम्, पाचुः, पाचनीयम् - व्यक्तीकरणे)।

पच् (पचति, पचते) = पाके। पकाना। (पचति, पचते - पाकं करोति। पचन्, पचमानः, पाचकः, पक्, पाक्, पचकः, पक्ता - पक्तरि। पक्वम्,

पक्तव्यम्, पचनम्, पचनीयम्, पच्यम्, पाच्यम्, पाकम् - पाके)।

पञ्च (पञ्चते) = व्यक्तीकरणे, प्रकाशने, व्यवहारे। प्रसिद्ध करना, विस्तारपूर्वक कहना, व्यवहार करना, व्यापार करना।(पञ्चते - व्यवहरति। पञ्चकः - व्यापारी। पञ्चा - गृहस्य सर्वेषु दिक्षु भवः स्थानविशेषः (बरांडा, बरण्डा)। पञ्चम् - प्रसिद्धम्, अपूर्वम्। पञ्ची, पञ्चकः, पञ्चमानः - व्यवहारिके। पञ्चनम्, पञ्चनीयम् - व्यवहारे)।

पञ्च (पञ्चयति, पञ्चयते) = विस्तारे, विस्तारवचने। फैलाना। (पञ्चयति - विस्तारयति। पञ्चनम्, पञ्चनीयम् - विस्तारः)।

पञ्च (संख्या) = पाँच (05)।

पञ्चचत्वारिंशत् (संख्या) = पैंतालीस (45)।

पञ्चत्रिंशत् (संख्या) = पैंतीस (35)।

पञ्चदश (संख्या) = पन्द्रह (15)।

पञ्चविंशः (संख्या) = पच्चीस (25)।

पञ्चषष्टिः (संख्या) = पैंसठ (65)।

पञ्चाशत् (संख्या) = पचास (50)।

पञ्चाशीति (संख्या) = पच्चासी (85)।

पञ्छ (पच्छयति) = कुट्टने, वर्णे, रागे, विभागे। रंगना, विभाग करना।(पच्छयति - रजति। पच्छा - हरितः, पच्छी)।

पञ्ज (पञ्जति) = प्रकाशने, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। प्रकाश करना, हिंसा करना, गति करना।(पञ्जति - प्रकाशते। पञ्जुः - प्रकाशः, महादीपः वा। पञ्जरम् - प्रकाशम्, गृहम् वा)।

पट् (पटति) = गतौ, गमने, आच्छादने। जाना, स्थानान्तर करना, आच्छादन करना।(पटति - आच्छादयति। पटः - वस्त्रम्, द्विपटी (दुपट्टा)।

पट् (पटयति, पटयते) = ग्रन्थे। गूंथना, लपेटना, हिस्से करना।

पट् (पाटयति, पाटयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना। उत् - समूल नष्ट करना, जड़ से उखाड़ना। वि - भाग करना, विदारण करना, चीरना।(पाटयति - शब्दयति। पटनम्, पटनीयम्, पट्यम्, पट्यम् - शब्दे)।

पट्ट (पट्टति) = भद्रासने, भद्रपीठे, मङ्गलपीठे। शुभ आसन पर बैठना।(पट्टति - शुभासने उपविशतिः। पट्टम् - पट्टाभिषेकः)।

पठ् (पठति) = व्यक्तायां वाचि, व्यक्तववने, अध्ययने। पढ़ना, सीखना। (पठति - अधीते। पाठः - पठितुं योग्यः। पठनम् - अध्ययनम्)।

पड्ड (पड्डति) = मदे, गर्वे। गर्व होना।(पड्डति - गर्वते। पड्डः - स्थूलः। पड्डा - गर्विता, नवयौवना वा)।

पण् (पणति, पणते, पणायते, पणायति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, व्यवहारे स्तुतौ च। उद्योग करना या व्यापार करना, शब्द करना, प्रशंसा करना, स्तुति करना। (पणति - व्यवहरति। पण्यम्, पणम् - विक्रयार्हे द्रव्यम्। पणते, पणायते - व्यवहरति। पणिनः - व्यवसायी, वैश्यः। विपणः, पण्यवीथिका - आपणश्रेण्याम्। पाणिः, पणकः, पणानः - व्यवहर्तरि। पणिः, पणुः, पणनम्, पणनीयम्, पण्यम् - मूल्ये)।

पण्ड (पण्डति, पण्डते) = गतौ, प्रसरे, प्रसारे, धारणे, सहने। जाना स्थानान्तर करना, फैलना, सहना।(पण्डते - प्रसरति। पण्डति - सहते। पण्डा - बुद्धिः। पण्डितः - बुद्धिमान्, विद्वान्। पण्डकम् - प्रसरणशीलः। पण्डुः, पण्डिः, पण्डनम्, पण्डनीयम्, पण्ड्यम् - चलने। पण्डारः, पण्डारि - संचालके)।

पण्ड (पण्डयति, पण्डयते) = श्वेतवर्णे, रोगे, नाशने, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। नष्ट करना, हिंसा करना, गति करना।(पाण्डुः, पाण्डुरः - श्वेतवर्णे, रोगे)।

पत् (पतति, पतयति, पतयते, पत्यते) = गतौ, ऐश्वर्ये। गिरना,

उतरना, चढ़ना, उड़ना, श्रीमान् होना, शक्तिमान् होना, अमानवी पराक्रम करना। अति - जीतना, श्रेष्ठ होना, वर्चस्वी होना। अभि, अव - उतरना। आ - जाना, प्राप्त होना, उपस्थित होना। उत् - ऊपर चढ़ना, उड़ना। नि - घटित होना, मिलना, प्राप्त होना। निर् - भाग जाना, छिपना। परि - शीघ्र जाना। प्रनि - साष्टाङ्ग नमस्कार करना। विनि - पीछे लौटना। सम् - साथ जाना, मिलना, प्राप्त होना। समा - शुद्ध करना, स्वच्छ करना। समुत् - भाग जाना, उड़ जाना। सन्नि - आगे जाना, बाहर जाना। (पतयति - गच्छति। पतति - आकाशे चलति, अधो गच्छति (गिरता है, उतरता है)। पतन्, पतितः, पतकः - अधोगन्ता। पत्यम्, पात्यम्, पतनम्, पतनीयम् - अधोगमने। पतिः - शासकः। पताका, पताकी - ध्वजा)।

पथ् (पथति, पाथयति, पाथयते) = प्रक्षेपे, गतौ। जाना, उड़ाना, फेंकना, त्याग देना। (पथति - गच्छति। पथन्, पथकः - गन्ता। पथिः, पथः - मार्गः। पाथेयम् - पथि भक्षितुं योग्यं द्रव्यम्। पथनम्, पथनीयम्, पथ्यम्, पाथ्यम् - गमने)।

पद्-पड् (पदयते) = गतौ, भूषणे। चलना, जाना, जानना, पाना, भूषित होना, भूषित करना।

पद् (पद्यते-पद्यते, पदयते) = गतौ, भूषणे। स्थानान्तर करना। अभि - देखना, जानना, समझना। अनु - अनुसरण करना। आ - होना, मिलना, प्राप्त होना, संकट या कष्ट का अनुभव करना, आना, उत्पन्न करना। उप - उत्पन्न होना, मिलना, प्राप्त होना, समीप रहना, चिपके रहना। प्र - प्राप्त करना, उत्पन्न करना, प्रारम्भ करना। प्रवि - ठहराना, स्थापन करना। प्रति - पाना, अनुमोदन देना, स्वीकार करना, छोड़ देना, मुक्त करना। वि - दुःख अनुभव करना, विपत्तिग्रस्त होना। व्या - मार डालना या दुःख देना। व्युत् - मूल तत्व को ढूँढ़ना, मनन करना। सम् - वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना, ढूँढ़ना, मनन करना। समा - पहुँचना, उपस्थित

होना, पूर्ण करना, समाप्त करना। उत् - उत्पन्न होना। (पद्यते - भूषणं धारयति। पदानः, पत्तः, पत्तवान् - भूषणधारकः। पदकम् - भूषणम्। पतस्यः - भूषणः, नीलमणिः। पदवी - भूषणम्, ऐश्वर्यम्। पदयते - गच्छति। पदानः - गमकः। पदम्, पदनम्, पदनीयम्, पद्यम् (पद्यम्) - गमने। पदम्, पत्, पादः - चरणे। पत्तम् - भगः)।

पन् (पनते, पनायते, पनायति) = व्यवहारे स्तुतौ च। प्रशंसा करना, स्तुति करना। (पनते, पनायते - स्तौति। पनकः, पनानः - स्तोतरि। पननम्, पन्यम्, पननीयम् - स्तुतौ)।

पन्थ (पन्थयति, पन्थयतेः, पन्थते) = गतौ। जाना, घूमना। (पन्थयति - गच्छति। पान्थः, पथिकः, पन्थन् - गन्त्रि, पथिके। पन्थनम्, पन्थनीयम् - गमने। पथिन् - मार्गः, पथिकः, यात्री वा)।

पम्प (पम्पयति) = क्षान्तौ, सहने। सक्षम होना, सहना। (पम्पयति - सहते। पम्पः, पम्पकः, पम्पन् - सहनशीले)।

पम्पस् (पम्पस्यति) = दुःखे। दुःखी होना।

पय् (पयते) = गतौ, रक्षणे। जाना, बहना, रक्षा करना।। (पयते - रक्षति। पयकः, पायकः, पय्यः, पाय्यः, पयमानः - रक्षितरि। पयुः, पयनम्, पयनीयम् - रक्षणे। पयिः, पायिः - रक्षणीयः, दरिद्रः वा। पायुः - गुदम्। पयस् - जलम्, दुग्धम्)।

पयस् (पयस्यति) = प्रसृतौ। फैलाना, विस्तार करना।

पर (उपसर्ग) = पराया, अन्य, दूसरा, परे, पश्चात्, बाद में।

परम (अव्यय) = परम।

परमम् (अव्यय) = परम, परन्तु, फिर।

परश्वः (अव्यय) = परसों।

परा (उपसर्ग) = पीछे, विपरीत।

परावतो = दूर (परावतः = दूर (सर्वनाम, अव्यय)।

परि (उपसर्ग) = सभी ओर।

परितः (अव्यय) = सभी ओर।

परु–पर्व (पर्वति) = पूरणे, भरणक्रियायाम्, विभागे, प्रख्याने, प्रसिद्धौ। प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना, पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।(पर्वति - प्रथते। पर्वः, पार्वणः - विभागः, प्रख्यानः, उत्सवदिनम् वा, विभागः, अङ्गुल्यादीनाम् अस्थिसन्धिः वा)।

पर्ण (पर्णयति, पर्णयते) = हरितीभावे। हरा करना, हरा होना। (पर्णयति - हरितो भवति। पर्णम् - हरितम्, पत्रम् वा। पर्ण्यम् - पत्रवान्। पर्णशाला - पर्णमयी कुटी)।

पर्ण-पृण् (पर्णति) = पल्लवे, अपनयने। पल्लवित होना, ले जाना। (पर्णति - पल्लवितो भवति। पर्णः - पल्लवः, दलम्)।

पर्द (पर्दते) = कुत्सित शब्दे, निन्दिते शब्दे। अपान वायु छोड़ना। (पर्दते - निन्दितं शब्दयति। पर्दकः, पर्दमानः - निन्द्यशब्दके। पर्दुः - निन्द्यशब्दकर्ता)।

पर्प (पर्पति) = गतौ, गत्याम्। जाना।

पर्ब (पर्बति) = गतौ, गत्याम्, सम्पीडने, भोजने। जाना, सम्पीडन करना। (पर्बति - सम्पीडयति। पर्बन् - भोजनम्)।

पर्व (पर्वति) = पूरणे, भरणक्रियायाम्, विभागे, प्रख्याने, प्रसिद्धौ। प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना, पूर्ण करना, पूरा करना, भरना, विभाग करना)।(पर्वति - प्रथते। पर्वः, पार्वणः - विभागः, प्रख्यानः, उत्सवदिनम् वा, विभागः, अङ्गुल्यादीनाम् अस्थिसन्धिः वा)।

पर्ष (पर्षते) = स्नेहने, तैले, स्निग्धीकरणे। तेल लगाना, स्निग्ध होना, चिकना होना। (पर्षते - स्निग्धो भवति। पर्षः, पर्षकः, पर्षमाणः - स्नेहयुक्ते। पर्षिः, पर्षुः, पर्षणम्, पर्षणीयम् - स्नेहने)।

पल् (पलति) = गतौ, निष्पत्तौ, फलितभावे, धावने, म्लाने। जाना,

भागना। (पलति - पलितो भवति, फलं ददाति, पुष्पितो भवति। पललम् - म्लानता। पलायनम् - धावनम्। पल् - फलम्)।

पल् (पलयति) = लवन-पवनयोः, छेदने उड्डयने च। काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना, उड़ना। (पलयति - लुनाति, उड्डयते। पलायनम् - लवनम्, उड्डनम्)।

पल् (पालयति, पालयते) = रक्षणे, पालने। रक्षा करना। (पालयति - रक्षति। पालकः - रक्षकः। पालः, पालनम्, पालनीयम् - पालने)।

पल्पूल् (पल्पूलयति, पल्पूलयते) = लवन-पवनयोः। काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना।

पल्यूल् (पल्यूलयति, पल्यूलयते) = लवन-पवनयोः। काटना, कतरना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना, गिराना।

पल्ल (पल्लति) = निष्पत्तौ, फलितभावे। फलित होना, परिणाम होना, पल्लवित होना। (पल्लति - पल्लवितो भवति। पल्लवः - फलितः, पल्लवितः, नवीनं दलम् वा)।

पश् (पाशयति, पाशयते, पशयति, पशयते) = गतौ, नाशे, बन्धने। बांधना, बेड़ी डालना, गांठ बांधना, फांस लगाना, जाना। (पाशयति - आवेष्टयति, नानाप्रकारेषु देहेषु कष्टं भुङ्क्ते। पशुः - जीवः। पाशः - बन्धनकर्त्री रज्जुः)।

पंश (पंशयति) = नाशे, त्रोटने। नाश होना, तोड़ना, काटना। (पंशयति - त्रोटयति। पंशन्, पंशकः - त्रोटकः। पंशम्, पंशनम्, पंशनीयम् - त्रोटने। पांशा, पांशलः - विकर्तनसाधनम्)।

पश्य-दृश् (पश्यति) = प्रेक्षणे, अवलोकने। देखना। उत् - ऊपर देखना, विचार करना, संशय करना, शंका करना। (पश्यति - अवलोकयति। पश्यन् - द्रष्टा। पश्यन्ती - द्रष्ट्री। द्रष्टा, दृष्टवान् - प्रेक्षके। दृक्, दृश्यम्, दृष्टिः, दृश्यमानम्, दृष्टव्यम्, दर्शनम्, दर्शनीयम्, दार्ष्ट्यम् - द्रष्टुं योग्ये।

दर्श्यः - दर्शनम्)।

पष् (पषयति, पषयते, पाषयति, पाषयते) = गतौ बन्धने च। जाना, बांधना, फांस लगाना। (पषयति - गच्छति। पाषयति - बध्नाति। पाषः - पाशः, बन्धनः। पाट्, पाड्, पषः, पषकः - गन्तरि)।

पष् (पाषयति, पाषयते) = बन्धने। जाना, बांधना, फांस लगाना। (पाषयति - बध्नाति। पाषः - पाशः, बन्धनः)।

पष् (पषति) = धारणे, घर्षणे। धारण करना, घर्षण करना। (पषति - घर्षयति। पष्टम् - घृष्टम्। पषिः, पष्टिः, पषः, पषुः, पषणं, पषकम् - घर्षणे। पाषाणः - घर्षकः, घर्षणसाधनम्, अश्मा वा)।

पष्-पंस् (पषयति, पषयते, पंसयति, पंसयते; पंसति, पषति) = गतौ बन्धने च, नाशने, धारणे च। नष्ट करना, जाना, बांधना, फांस लगाना, धारण करना, घर्षण करना।(पषयति - गच्छति। पाषयति - बध्नाति। पाषः - पाशः। पाट्, पाड्, पषः, पषकः - गन्तरि। पषति - घर्षयति। पषिः, पष्टिः, पषः, पषुः, पषणं, पषकम् - घर्षणे)।

पषा (पषति, पषते) = बाधनस्पर्शयोः, बाधायाम्, स्पर्शने च।(पषति, पषते - बाधते, स्पृशति। पट्, पाट्, पषः, पाषकः, पषन्, पषमाणः - बाधके, स्पर्शके। पषिः, पष्टिः, पषणम्, पषणीयम्, पष्यम्, पाष्यम्, पाषम् - बाधायां स्पर्शे)।

पंस्-पष् (पषयति, पषयते, पंसयति, पंसयते; पंसति, पषति) = गतौ बन्धने, नाशने, धारणे, घर्षणे च। नष्ट करना, विध्वंस करना। जाना, बांधना, फांस लगाना, धारण करना, घर्षण करना।(पषयति - गच्छति। पाषयति - बध्नाति। पाषः - पाशः। पाट्, पाड्, पषः, पषकः - गन्तरि। पषति - घर्षयति। पषिः, पष्टिः, पषः, पषुः, पषणं, पषकम् - घर्षणे)।

पा-पिब् (पिबति) = पाने। पीना, प्राशन करना, सूखना, संरक्षण करना।(पिबति - पानम् करोति, पीयते, धयति। पायकः, पाता - पानकर्तरि।

पाः, पः, पानम्, पेयम्, पिबत् - पेये, पाने। द्विपः - हस्ती। पादपः - वृक्षः। पीतम् - पानक्रियया गृहीतम्। पीतिः, पानकम् - पानीये)।

पा (पाति) = रक्षणे, पालने। रक्षा करना, पालन करना। (पाति - रक्षति। पायन्, पायकः, पाता, पाः - रक्षके। पानम्, पातव्यम्, पानीयम्, पायम्, पाय्यम् - रक्षणे। पातिः - रक्षकः, अश्वः वा। पातम् - रक्षितम्। पायिः - रक्षणीयः, दरिद्रः वा। पायुः - रक्षकः, गुदा वा। पात्रम् - रक्षकः, भाजनम् वा)।

पार् (पारयति, पारयते) = कर्मसमाप्तौ, कार्यान्ते। कार्य पूर्ण करना। (पारयति - पूरयति। पारयन्, पारकः - पूरके। पारम्, पारायणम्, पारणीयम्, पारणम् - कर्मसमापने)।

पाल् (पालयति, पालयते) = रक्षणे, पालने। पालन करना, संरक्षण करना, रक्षा करना। (पालयति - रक्षति। पालकः - रक्षकः। पालः, पालनम्, पालनीयम् - पालने)।

पाष् (पाषयति, पाषयते) = बन्धने। बांधना, फांस लगाना।(पाषयति - बध्नाति। पाषः - पाशः, बन्धनः)।

पाष् (पाषति) = धारणे। धारण करना, सहना। (पाषति - सहते। पाषिः, पाषः, पाषुः, पाष्टिः, पाषणम्, पाषकम् - सहने)।

पाषण्ड (पाषण्डति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां पतने च। हिंसा करना, गति करना। (पाषण्डति - पतति। पाषण्डः - पतितः)।

पि (पियति) = गतौ। जाना, स्थानान्तर करना।

पिङ्क्-पिञ्ज (पिङ्क्ते) = वर्णे, शब्दे। रंगना, चमकीला करना, घुँघरुओं का शब्द होना।

पिच्छ (पिच्छयति, पिच्छयते) = तञ्चने, रागे, कुट्टने, विभागे। कूटना, कतरना, चीरना, बहुत दुःख देना। (पिच्छयति - रागयुक्तो भवति (रंगीन होता है), तञ्चति (जमता है)। पिच्छा - तञ्चनम्। पिच्छिलम् -

पङ्कवत् स्थानम्। पिञ्छिम् - मयूरपिच्छम्)।

पिज्-पिञ्ज (पिञ्जति, पिञ्जयति, पिञ्जयते; पेजयति, पेजयते) = हिंसा-बलादान-दान-निकेतनेषु, मारणे, बले, दाने, आदाने, निवासे, आच्छादने च। मार डालना, दुःख देना, बलवान् होना, लेना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना।(पिञ्जयति - ददाति।पिञ्जारः, पिञ्जारी - वासम्, आच्छादनम् वा (पिंजरा)।

पिञ्छ (पिञ्छयति, पिञ्छयते) = कुट्टने, विभागे।कूटना, कतरना, चीरना, दुःख देना।

पिञ्ज-पिज् (पिञ्जति, पिञ्जयति, पिञ्जयते; पेजयति, पेजयते) = हिंसा-बलादान-दान-निकेतनेषु, मारणे, बले, दाने, आदाने, निवासे, आच्छादने च। मार डालना, दुःख देना, बलवान् होना, लेना, ग्रहण करना, रहना, वसति करना।(पिञ्जयति - ददाति।पिञ्जारः, पिञ्जारी - वासम्, आच्छादनम् वा (पिंजरा)।

पिञ्ज (पिञ्जयति, पिञ्जयते) = हिक्कने, तापने, भासार्थः, भाषार्थो वा।प्रकाशित करना, तपाना, बोलना।(पिञ्जयति - हिक्कति।पिञ्जारः - हिक्का (हिचकी)। पिञ्जनम्, पिञ्जनीयम् - हिक्कनम्)।

पिञ्ज (पिङ्क्ते) = वर्णे, शब्दे। रंगना, चमकीला करना, शबद करना, घुँघरुओं का शब्द होना।

पिट् (पेटति) = शब्द-सङ्घातयोः, गाने, ध्वनौ।शब्द करना, सशब्द मारना, राशि करना, एकत्र करना, ढेर करना।(पेटति - गायति।पेटकः - गायकः। पेटिः, पेटिका - एकत्रसाधनम् (सन्दूक)।

पिट्ट (पिट्टति) = चलने, कूर्दने। चलना, कूदना। (पिट्टति - चलति, कूर्दति।पिट्टः - पक्षी)।

पिठ् (पेठति) = हिंसासंक्लेशयोः, मारणे, पीडने च।मार डालना या दुःख देना, दुःख पाना, दुःखानुभव करना।(पेठति - मारयति क्लेशयति।

पिठरम् - घातकः)।

पिठ् (पिठति) = स्थितौ, आसीदने।स्थित होना, बैठना।(पिठति - आसीदति।पिठकः - आसीदनम्।पीठः, पीठम् - आसनम्)।

पिण् (पिणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (पिणम्, पिण्याकम् - तिलादीनां निष्पिष्टं तैलरहितं चूर्णम् (खली)।

पिण्ड (पिण्डते; पिण्डयति, पिण्डयते; पिण्डति) = संघाते, सहभावे। राशि करना, ढेर करना। (पिण्डते - पिबति। पिण्डकः - पिण्डमानः - पातरि। पिण्डम् - गर्भः, संघातः। पिण्डिः - गठरी)।

पिण्ड (पिण्डति) = धारणे, सहने। (पिण्डति - सहते। पिण्डम् - सङ्घातः)।

पिण्ड (पिण्डयति) = संघाते, सहभावे। राशि करना, ढेर करना। (पिण्डयति - संघातयति। पिण्डम् - संङ्घातम्)।

पिनष्-पिष (पिनष्टि) = संचूर्णने, सम्यक् चूर्णने। चूर्ण करना, पीसना।(पिनष्टि – सम्यक् चूर्णयति।पिष्टः, पिष्टवान्, पेशकः - संचूर्णके। पिष्टम्, पिष्टिः, पेषणम्, पेषणीयम्, पेष्यम् - संचूर्णने)।

पिन्व (पिन्वति) = वपने, सेवने सेचने च। सेवा करना, प्रोक्षण करना, भिगोना, सींचना, गीला करना। (पिन्वति - बीजं वपते। पिन्वः वपनकर्ता, सिञ्चनकर्ता, कृषकः वा)।

पिपल् (पिपलति) = चलने, भ्रमणे, कार्यम् आरभणे, आरम्भणे। चलना, भ्रमण करना, कार्य आरम्भ करना। (पिपलति - कार्यम् आरभते। पिपलम् - भाटकम्)।

पिपील् (पिपीलति) = चलने, भ्रमणे, उदये। चलना, भ्रमण करना, उदय होना। (पिपीलति - उदयं गच्छति। पिपीलिका - गन्त्री, (चींटी)।

पिप्पल् (पिप्पलति) = चलने, भ्रमणे। चलना, भ्रमण करना, चाकरी करना, सेवक होना।(पिप्पलति - भृत्यत्वं स्वीकरोति।पिप्पलम् - वेतनम्।

पिप्पलादः - भृत्यः)।

पिल् (पेलति) = गतौ, प्रयाणे, चलने, भ्रमणे। चलना, जाना, प्रयाण करना। (पेलति - प्रयाति। पिल्, पिलः, पेलः, पेलुः, पिलिः, पैलम् - प्रगतिशीलः)।

पिल् (पेलति, पेलयति, पेलयते) = क्षेपे, गत्याम्, शरणे, प्रेरणे च। प्रेरणा करना, फेंकना, उड़ाना, कार्य में लगाना।(पेलति, पेलयति - शरणम् गृह्णाति, शरणम् आप्नोति। पेलन्, पेलकः - शरणम् ग्रहीतरि। पेलनम्, पेलनीयम् - शरणम् ग्रहणे)।

पिल्ल (पिल्लति) = विवदने, शब्दे, चलने, भ्रमणे। चलना, भ्रमण करना, घूमना, बोलना, शब्द करना।(पिल्लति - विवदते। पिल्लः - वत्सः। पिल्ला - वत्सा। पिल्लिः - शब्दकरः, नूपुरम् वा)।

पिव् (पिन्व्) (पिन्वति) = वपने, सेवने सेचने, दीप्तौ, प्रकाशने च। सेवा करना, प्रोक्षण करना, भिगोना, सींचना, गीला करना, चमकना, प्रकाश करना। (पिन्वति - बीजं वपते। पिन्वः - वपनकर्ता, सिञ्चनकर्ता, कृषकः वा। पिव्वनम्, पिव्वु, पिव्वि - प्रकाशः)।

पिश् (पेशति, पेशयति, पेशयते) = लगने, गतौ, अपसूचने। जाना, लगना, अपसूचना करना, चुगली करना। (पेशति - लगति। पिशितम् - अङ्गकम्। पिशङ्गम् - रक्तवर्णम्। पिशुनः - अपकार-प्रयुक्तः सूचनकर्ता (चुगली खानेवाला)।

पिश् (पिशति, पिंशते) = दीप्तौ, अवयवे, चूर्णने, अङ्गे, अपसूचने। टुकड़े करना, चीरना, व्यवस्था करना, प्रकाश करना, उज्ज्वल होना, अपसूचना करना, चुगली करना।(पिंशति, पिंशते - अङ्गं निर्माति, चूर्णयति। पिंशन्, पिंशानः, पिष्टः, पिष्टवान्, पेशकः - अङ्गनिर्मातरि, चूर्णकर्तरि। पिशितम् - म्लानम्, मांसम्। पेशी - मांसम्। पिशुनः - अपकार-प्रयुक्तः सूचनकर्ता (चुगली खानेवाला)। पैशुन्यम् - अपकार-प्रयुक्तम् सूचनम्।

पिष्टिः, पिष्टम् - यवादिचूर्णम् (आटा)। पेशलम् - दीपनम्, शोभनम् वा)।

पिंश् (पिंशयति) = भाषार्थाः। बोलना, कहना।(पिंशयति - शब्दयति। पिंशः, पिंशकः, पिंशनम्, पिंशनीयम् - शब्दे)।

पिष् (पिनष्टि) = संचूर्णने, सम्यक् चूर्णने। चूर्ण करना, पीसना, पालना।(पिनष्टि – सम्यक् चूर्णयति। पिष्टः, पिष्टवान्, पेशकः - संचूर्णके। पिष्टम्, पिष्टिः, पेषणम्, पेषणीयम्, पेष्यम् - संचूर्णने)।

पिस् (पेसति, पेसयति, पेसयते) = गतौ। जाना।

पिंस् (पिंसयति, पिंसयते) = हिंसाबलदाननिकेतनेषु, भासार्थः भाषार्थो वा। हिंसा करना, बल होना, दान करना, निवास करना, चमकना, प्रकाशित होना, बोलना। (पिंसयति - निवसति)।

पी (पीयति, पीयते) = पाने। पीना, पान करना, प्राशन करना, संरक्षण करना, सुखाना, हिंसा करना (पीनः, पयानः - पायकः। पीतिः, पयनम्, पयनीयम् - पानकर्मणि)।

पीड् (पीडति, पीडयति, पीडयते) = अवगाहने, बलात्कारे, व्यथायाम्, संक्लेशे। प्रतिकूल होना, चेष्टा करना, चेताना, दुःख देना, पीड़ा करना। (पीडति - दुःखयति। पीडा - दुःखम्। पीडयति - बलात् पीडां ददाति। पीडन्, पीडकः - पीडादातरि। पीडा, पीडनम्, पीडनीयम् - बलात्कारे)।

पीण् (पेणति) = दुर्गन्धने, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (पेणति - दुर्गन्धिः भवति। पेणति - शवयति, श्वयति। पिणम्, पीणम् - शवः)।

पील (पीलति) = प्रतिष्टम्भे, प्रतिष्ठापने। मूर्ख होना, प्रतिष्ठापन करना, गतिरोध करना, रोकना।(पीलति - प्रतिष्ठापयति। पीलुः - प्रतिष्ठा, हस्ती, वृक्षविशेषो वा)।

पील् (पीलति) = चलने, भ्रमणे। ज़ाना, चलना, घूमना।(पीलति - गच्छति। पिल्, पीलः, पीलुः, पीलिः, पीला, पीलालः - गन्ता, प्राणिविशेषनामानि

वा)।

पीव् (पीवति) = स्थौल्ये, स्थूलीभावे। मोटा करना, स्थूल होना, पुष्ट होना। (पीवति - स्थूलो भवति। पीवः, पीवरः - स्थूलः)।

पृ (पिपर्ति) = पालन-पूरणयोः। पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना, तृप्त करना।

पृ (पारयति, पारयते, परति) = पूरणे, भरणे। पूर्ण करना, भरना। (पूरयति - भरति। पूरितः, पूर्णः - पूरयितरि। पूरणम्, पूरणीयम् - भरणे, पूरणे)।

पृ-पूर् (पृणाति, पृणीते) = पालनपूरणयोः, रक्षणे भरणे च। पालन करना, रक्षा करना, भरण करना, पूर्ण करना। (पृणाति, पृणीते - पालयति, पूरयति। पूर्तम्, पूर्तिः, पूरणम्, पूरणीयम्, पूर्तव्यम्, पूर्वम्, पूर्णम् - भरणे, पूरणे। पूर्तः, पूर्तवान्, पूरः, पूरकः, परः, पराणः - पूरके। परीतः - रक्षकः)।

पृ (पृणोति, पृणुते) = प्रीतौ, प्रेमणि। प्रीति करना, तृप्त करना, सन्तुष्ट करना। (पृणोति, पृणुते - प्रीतिं करोति। परन्, पराणः, पर्ता, परः, पृतः, पृतवान् - प्रीतिकर्तरि। पृतिः, पृतम्, पृत्, परणम्, परणीयम्, पर्यम्, पार्यम्, पर्तव्यम् - प्रीतौ)।

पृ (प्रियते) = व्यायामे, आसक्तौ। किसी कृत्य में आसक्त रहना। (व्याप्रियते - आसक्तः भवति। परम्परा, परम्परिका - क्रमानुसरणम्। परा - आसक्ता)।

पृक् (पृक्ते) = सम्पर्के, संसर्गे। मिलना। (पृक्ते - मिलति। पृक्तः, पृक्तवान्, - यावके, मेलके। प्रक्तम्, पृक्तव्यम्, पृक्तिः - मिश्रणे)।

पृच् (पर्चयति, पर्चयते, पर्चति) = व्रते, संयमने, तपस्यायाम्, सम्पर्के, मेलने, स्पर्शे। व्रत करना, संयम करना, तपस्या करना, स्पर्श करना, छूना, अटकाना। (पर्चयति - व्रतम् आचरति। पर्चकः - व्रती)।

पृच् (पृङक्ते, पृक्ते, पृणक्ति) = संपर्चने, सम्पर्के, मेलने। स्पर्श

करना, छूना, संघर्ष करना, संयोग करना। (पृणक्ति, पृङक्ते - मिलति। पृक्तः, पृक्तवान्, पर्क्ता, पर्चकः - मेलके। पृक्तिः, पृक्तम्, पर्चनम्, पर्चनीयम्, पर्च्यम्, पर्क्तव्यम् - मेलने)।

पृञ्च - पृच् (पृङक्ते, पृक्ते, पृणक्ति) = संपर्चने, सम्पर्के, मेलने। स्पर्श करना, छूना, संघर्ष करना, संयोग करना। (पृणक्ति, पृङक्ते - मिलति। पृक्तः, पृक्तवान्, पर्क्ता, पर्चकः - मेलके। पृक्तिः, पृक्तम्, पर्चनम्, पर्चनीयम्, पर्च्यम्, पर्क्तव्यम् - मेलने)।

पृच्छ (पृच्छति) = ईप्सायाम्, कथने, प्रश्ने। पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना। पृच्छति - प्रश्नं करोति, कथयति। पृच्छन्, पृच्छकः, पृष्टः, पृष्टवान् - प्रश्नकर्तरि, कथयितरि। पृच्छम्, पृष्टम्, पृष्टिः - कथने)।

पृञ्ज (पृङ्क्ते) = सम्पर्के, संसर्गे, मेलने, मिश्रणे, वर्णे। मिलना, मिश्रण करना, स्पर्श करना, संघर्ष करना। (पृङ्ते - मिलति। पृञ्जकः, पृञ्जः, पृञ्जानः - यावके, मेलके। प्रञ्जा, प्रञ्जनम्, प्रञ्जनीयम् - मिश्रणे)।

पृड् (पृडति) = सुखने, सुखे। आनन्द करना, सन्तोष पाना, सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना। (पृडति - सुखयति। पृडः - सुखी। पृडनम् - सुखम्)।

पृण् (पृणति) = प्रीणने। आनन्द करना, सन्तोष पाना।

पृण् (पर्णति) = पल्लवे, अपनयने। पल्लवित होना, ले जाना। (पर्णति - पल्लवितो भवति। पर्णः - पल्लवः, दलम्)।

पृत् (पर्तति, पर्तते) = बलौ, बलात्कारे, बलात् निस्सारणे, व्याप्तौ। व्याप्त होना, बलपूर्वक निकालना। (पर्तति, पर्तते - बलात् निस्सारयति। पर्तन्, पर्तकः, पर्तमानः - बलात्कर्तरि। पृतना - बलम्)।

पृथ् (पर्थति, पर्थते, पर्थयति, पर्थयते) = प्रक्षेपणे, व्याप्तौ, प्राकट्ये, शासने। फेंकना, उड़ाना, प्रेरणा करना, भेजना, व्याप्त होना, प्रकट होना, शासन करना। (पर्थयति - प्रकटयति। पर्थति, पर्थते - प्रशास्ति। पार्थः,

पार्थिवः, पृथुः - राजा। पृथ्वी, पृथिवी - भूम्याम्। पर्थनम्, पर्थनीयम् - प्राकट्ये। पर्थनम्, पर्थनीयम्, पर्थ्यम्, पार्थ्यम् - शासने)।

पृथक् (अव्यय) = अलग।

पृश् - पृच्छ (पृच्छति) = ईप्सायाम्, कथने, प्रश्ने। पूछना, जानने की इच्छा करना, प्रश्न करना।(पृच्छति - प्रश्नं करोति, कथयति। पृच्छन्, पृच्छकः, पृष्टः, पृष्टवान् - प्रश्नकर्तरि, कथयितरि। पृच्छम्, पृष्टम्, पृष्टिः - कथने)।

पृष् (पर्षति) = गतौ, गत्याम्, ऋजु भुवि। जाना, सरल होना।(पर्षति - ऋजु भवति)।

पृष् (पर्षति) = वपने, सेचने, घर्षणे, सहने, हिंसासंक्लेशनयोः च। प्रोक्षण करना, सींचना, बोना, सहन करना, घर्षण करना, पीड़ा करना, दुःख देना, थकना, पीड़ित होना। (पृषति - वपति। पृषिता, पृष्टा, पृषन्, पृषाणः, पृषकः - घर्षयितृषु। पृष्टम् - वपनकृतम्, उप्तम् वा। पृष्टिः - वपनम्। पृषिः, पृषुः, पार्षुः, पर्षणम्, पुपृषाणम् - वपने)।

पॄ (पिपर्ति) = पालनपूरणयोः, रक्षायां भरणे च। पालन करना, पोषण करना, पूर्ण करना, भरना। (पिपर्ति - रक्षति, भरति। पर्ता, पूर्तः, पूर्तवान, परः, परकः, परन् - रक्षके। पूर्तिः, पूर्तम्, पूरणम्, पूरकम्, पूर्णम्, पूरितम्, पूर्यम्, पूरणीयम्, पूर्तव्यम्, पूरितव्यम् - भरणे)।

पॄ (पारयति, पारयते, परति) = पूरणे भरणे। पूर्ण करना, भरना। (पूरयति - भरति। पूरितः, पूर्णः - पूरयितरि। पूरणम्, पूरणीयम् - भरणे, पूरणे)।

पॄ-पूर् (पृणाति, पृणीते) = पालनपूरणयोः, रक्षणे भरणे च।(पृणाति, पृणीते - पालयति, पूरयति। पूर्तम्, पूर्तिः, पूरणम्, पूरणीयम्, पूर्तव्यम्, पूर्वम्, पूर्णम् - भरणे, पूरणे। पूर्तः, पूर्तवान्, पूरः, पूरकः, परः, पराणः - पूरके। परीतः - रक्षकः)।

पु (पवते) = गतौ, रक्षणे। जाना, रक्षा करना। (पवते - रक्षति। पवकः, पवमानः - रक्षकः। प, पु, पविः, पवः, पवनम्, पवनीयम्, पव्यम्, पाव्यम् - रक्षणे)।

पु (पवते) = पवित्रे, पवने, श्वासग्रहणे। श्वास लेना, पवन की भाँति चलना।(पवते - श्वसिति। पवः, पूः, पवनम्ः, पवमानः, पविता - श्वसितरि। पविः, पव्यम्, पाव्यम्, पवनीयम् - श्वसने। पवनम्, पावनम्, पूतम्, पूतिः - शुद्धौ। पवित्री - पवित्रकर्त्री)।

पुच्छ (पुच्छयति) = कुट्टने, विभागे। विभाग करना।(पुच्छयति - विभजति। पुच्छम् - पूंछ। पुच्छी - योनिः)।

पुञ्ज (पुञ्जति) = समूहे। समूह बनाना, एकत्र होना।

पुट् (पुटति, पुटयति, पुटयते, पोटति) = मर्दने, संसर्गे, सम्मिश्रणे, संश्लेषणे, आलिङ्गने। मरोड़ना, नष्ट करना, आलिङ्गन करना, गले लगाना, एक में एक अटकाना, गूंथना।(पुटति - आलिङ्गति। पुटयति - मिश्रयति। पुटयन्, पुटः, पुटकः - मिश्रके। पुटनम्, पुटनीयम् - मिश्रणे)।

पुट् (पोटयति, पोटयते) = सामान्ये, भासार्थः, भाषार्थो वा। सामान्य होना, चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, भाषण करना।(पोटयति - सामान्यं भवति। पोटा - समानता। पुटम्, पोटनम्, पोटनीयम्, पोट्यम्- सामान्ये)।

पुट्ट (पुट्टयति, पुट्टयते) = लघुत्वे, अल्पीभावे, अल्पतायाम्। अल्प होना, लघु होना, घटना, न्यून होना। (पुट्टयति - अल्पं भवति, लघयति। पुट्टः - लघुः। पुट्टी - लघ्वी। पुट्टनम् - पुटिका (पुड़िया)। पुट्टा - उदरम्)।

पुड् (पुडति) = उत्सर्गे, त्यागे, आच्छादने। छोड़ना, त्याग करना, आच्छादन करना, ढांकना।

पुण् (पुणति) = कर्मणि शुभे, शोभे, शोभायमाने। पवित्र होना, शुद्ध होना, शुभकृत्य करना। (पुणति - शोभते। पुणः - शोभितात्मा। पुण्यम् -

सुकृतम्)।

पुण् (पूणयति) = संघाते, सहभावे, साहाय्ये। राशि करना, ढेर करना, सहायता करना।(पूणयति - साहाय्यं करोति।पुणम् - तीरम्)।

पुण्ट (पुण्टयति, पुण्टयते) = भासार्थः भाषार्थो वा।चमकना, प्रकाशित होना, बोलना।

पुण्ड (पुण्डति) = खण्डने, धौर्त्ये, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। चूर्ण करना, पीसना, मलना।(पुण्डति - धूर्तताम् आचरति।पुण्डः - धूर्तः)।

पुथ् (पुथ्यति) = हिंसायाम्, मारणे।दुःख देना, पीड़ा करना।(पुथ्यति - हिनस्ति।पुथ्यन्, पोथिकः, पोथिः, पोथितः, पोथितवान्, पौथ्यम् - घातके। पुथिः, पुथ्या, पोथनम्, पोथनीयम्, पोथितव्यम्, पोथितम् - हिंसायाम्)।

पुथ् (पोथयति, पोथयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, अधिक बोलना। (पोथयति - अतिशब्दयति)।

पुनः (अव्यय) = फिर।

पुन्थ (पुन्थति) = हिंसानक्लेशनयोः।पीड़ा करना, दुःख देना, दुःख सहन करना।

पुरः (अव्यय) = पहले।

पुर् (पुरति) = अग्रगमने, अभिगमने।अग्रभाग में जाना, आगे जाना, मुख्य होना, अग्रसर होना। (पुरति - अग्रे गच्छति।पुरन्तः - अग्रगामी)।

पुरतः (अव्यय) = समक्ष, आगे, सामने।

पुरस्तात् (अव्यय) = पहले।

पुरा (अव्यय) = पहले।

पुरु = बहुत (सर्वनाम, अव्यय)।

पुरो (अव्यय) = पहले।

पुर्व (पुर्वयति, पुर्वयते) = निकेतने।रहना, वसति करना, आमन्त्रण

करना, बुलाना।

पुल् (पोलति, पुलति, पोलयति, पोलयते) = महत्त्वे, पूजने।पूज्य होना, बढ़ना, ऊँचा होना, राशि होना, ढेर होना।(पोलति - पूज्यो भवति। पुलस्त्यः, पुलस्तिः, पुलहः - पूज्यः, ब्रह्मणः पुत्राः वा)।

पुल् (पोलति) = निर्माणे, गतौ, क्रीडने, अलसे।गति करना, बनाना, निर्माण करना।(पोलति - निर्मापयति।पुलुः - क्रीडा।पुलः - तृणम्।पोलः, पोलुः - अलसः।पोली - अलसा स्त्री।पुलिः - व्याघ्रः।पुली - अम्लम्। पुलम् - क्षेत्रम्।पुलि, पुली - व्याधिः।पुलिनम् - प्रमत्तता)।

पुल्ल (पुल्लति) = गतौ, प्रापणे।जाना।(पुल्लिः - अम्लम्।पुलिन् - सिकता)

पुष् (पूषति) = वृद्धौ, पालने, रक्षणे।पालना, रक्षा करना, पुष्ट करना। (पूषति - वर्धते।पोषः - वृद्धिशीलः।पोषकः - वर्धकः।पोषणम् - रक्षणम्। पुष्यम् - रक्षितम्।पुष्टिः - रक्षा।पूषा - पालकः, रक्षकः वा)।

पुष् (पोषयति, पोषयते) = धारणे, वृद्धौ, पालने, रक्षणे। धारण करना, पालन करना, रक्षा करना।

पुष् (पुष्णाति) = पुष्टौ, पालने, रक्षणे। रक्षा करना, पुष्ट करना। (पुष्णाति - रक्षति।पुष्टः, पुष्टवान्, पोषकः - रक्षके।पुष्टम्, पुष्टिः, पोषणम्, पोषणीयम् - रक्षणे)।

पुष् (पोषयति) = धारणे, सहने।धारण करना, सहन करना।(पोषयति - सहते।पोषणम् - सहनम्)।

पुष् (पोषति, पुष्यति, पुष्णाति) = पुष्टौ, धारणे, पालने। पालन करना, पोषण करना।परि - सम् - उत्कृष्ट होना, पालन करना।(पुष्यति - पालयति।पोषति - पालयति।पोषन्, पोषकः, पोष्टा, पुष्टः - पालयिता। पूषन् - पोषकः।पौषणम्, पौषणीयम्, पुष्टम्, पुष्टिः, पोष्यम्, पौष्यम्, पोषितव्यम् - पालने।पोषकः - पालकः।पोषणम्, पोषाणम्, पुष्टिः, पुषिः, पुषु - धारणे

पालने च)।

पुष् (पुष्यति) = विभागे।(पुष्यति - विभजति।पुट्, पुष्टः, पुष्टवान्, पोषन्, पोषकः - विभाजके।पुष्टम्, पुष्टिः, पोषणम्, पोषणीयम् - विभजने)।

पुषण (पोषणति) = संयोजने, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, जोड़ना।(पोषणति - संयुनक्ति)।

पुष्क (पुष्कते) = गतौ, पाने, आधिक्ये, पुष्कले, समूहे।जाना, पीना, बहुत होना।(पुष्कते - पिबति।पुष्कलम् - अधिकम्, समूहः (भीड़)।

पुष्प (पुष्पति, पुष्प्यति) = गतौ, गमने, विकसने। पुष्पयुक्त होना, फूलना।(पुष्प्यति - विकसति।पुष्पति - पुष्पितो भवति।पुष्पम् - विकसितम्, कुसुमम् वा।पुष्प्यन्, पुष्पितम्, पुष्पितवान्, पुष्पितः - विकसितरि।पुष्पितम्, पुष्पितव्यम्, पुष्पणम्, पुष्पणीयम् - विकसने)।

पुंस (पुंसयति, पुंसयते) = अभिमर्दने, अभिभवे, अभिवर्धने। मर्दन करना, बढ़ना, बढ़ाना।(पुंसयति - मर्दयति।पुंसः, पुंसकः - पुरुषे)।

पुस्त (पुस्तयति, पुस्तयते) = आदरानादरयोः, ग्रन्थे, ग्रहणे।सत्कार करना, मान करना, तिरस्कार करना, अनादर करना, बांधना, लेपन करना।(पुस्तयति - ग्रन्थयति।पुस्तम्, पुस्तकम् - ग्रन्थे।पुस्तिः - ग्रहणम्)।

पू (पवते, पुनाति, पुनीते) = पवने, उत्पवने। पवित्र करना, स्वच्छ करना।(पुनाति, पुनीते - पवित्रो भवति। पूतः, पुनीतः, पूतवान् - पवित्रे। पवनः, पवमानः, पवित्रम्, पावकः, पावनम् - पावने।पूतिः - पवित्रम्।पविता - शोभनः, शुद्धः।पवित्री - शोभना, शुद्धा)।

पूज् (पूजयति, पूजयते) = पूजायाम्, अर्हणे, आदरे, सत्कारे।पूजा करना, अर्चा करना, सम्मान करना।सम् - उत्तम प्रकार से आदर सत्कार करना।(पूजयति - अर्हयति।पूजकः, पूजाकारः - पूजके)।

पूयी (पूयते) = विशरणे श्वयथौ, दुर्गन्धे च।तोड़ना, चीरना, दुर्गन्ध आना।(पूयते - श्वयति।पूयकः, पूयमानः - श्वयिरि।पूयम्, पूयिः, पूयुः,

पूयनम्, पूयनीयम् - श्वयथौ।पूयशोणितम् - दुष्टं दुर्गन्धं वा रक्तम्)।

पूर्-पृ (पृणाति, पृणीते) = पालनपूरणयोः, रक्षणे भरणे च। पालन करना, रक्षा करना, भरण करना, पूर्ण करना।(पृणाति, पृणीते - पालयति, पूरयति।पूर्तम्, पूर्तिः, पूरणम्, पूरणीयम्, पूर्तव्यम्, पूर्वम्, पूर्णम् - भरणे, पूरणे।पूर्तः, पूर्तवान्, पूरः, पूरकः, परः, पराणः - पूरके।परीतः - रक्षकः)।

पूर्-पॄ (पूर्यते, पूरयति, पूरयते) = आप्यायने, पूरणे, तृप्तौ। तृप्त करना, आनन्द करना, आनन्द होना, पूर्ण करना, भरना, सन्तोष होना, पूर्ण होना।(पूरयति - तर्पयति।पूर्यते - भरति।पूरकः, पूरितः, पूर्तः, पूर्तवान्, पूरितवान् - आप्यापके, भरके।पूर्तिः, पूर्णम्, पूरणम्, पूरणीयम्, पूर्तव्यम् - भरणे आप्यायनकर्मणि।पूरणम् - तृप्तिः)।

पूर् (पूरयति, पूरयते) = भरणे, पूरणे।पूर्ण करना, भरना, पूर्ण होना। (पूरयति - भरति।पूरतिः, पूर्णः - पूरयितरि।पूरणम्, पूरणीयम् - भरणे, पूरणे)।

पूर्ण (पूर्णति, पूर्णयति, पूर्णयते) = पूर्णे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्, संघाते। पूर्ण करना, शब्द करना, एकत्र करना, ढेर करना, राशि करना।(पूर्णति - पूर्णो भवति।पूर्णिमा - पौर्णमास्या)।

पूर्व (पूर्वति) = पूरणे, भरणक्रियायाम्।पूर्ण करना, भरना।(पूर्वति - भरति)।

पूर्व (पूर्वयति) = निकेतने, गृहे। रहना, आश्चर्य करना, बुलाना। (पूर्वयति - निकेतयति।पूर्वः - निकेतकः)।

पूर्व (सर्वनाम) = पहले।

पूर्वथा (अव्यय) = पहले।

पूर्वेद्युः (अव्यय) = पहले वाला दिन (बीता कल)।

पूल् (पूलति, पूलयति, पूलयते) = पल्लवने, संघाते। ढेर करना, बटोरना, सञ्चित करना।(पूलति - पल्लवितो भवति)।

पूष् (पूषति) = आधिक्ये, वृद्धौ। बढ़ना, अधिक होना, पोषण करना, पालन करना।

पेल् (पेलति) = गतौ, चलने, द्यूतक्रीडने। जाना, हिलना, द्यूत क्रीडा करना, जुआ खेलना। (पेलति - अक्षैर्दीव्यति। पेला - द्यूतम्। पेलिता - द्यूतक्रीडकः)।

पेव् (पेवते) = सेवने, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, नौकरी करना, शीत करना, शान्त करना। (पेवते - शीतं करोति। पेव्, पेवः, पेवकः, पेवलः, पेव्यः, पैव्यः, पेवमानः - शीतीकर्तरि)।

पेष् (पेषते) = निश्चये, प्रयत्ने। ठहराना, निश्चय करना, चपलता से यत्न करना।

पेस् (पेसति) = गतौ, पैशुन्यम्, अपकारप्रयुक्तं सूचनम्। जाना, भरना, अपकारप्रयुक्त सूचना करना, चुगली करना।

पै (पायति) = शोषणे। सूखना, कुम्हलाना। (पायति - शुष्यति। पायकः - शुष्यमाणः। पायनम्, पानम्, पातम्, पीतम्, पीनम्, पैः, पः - शुष्कीभावे)।

पैणृ (प्रैणति) = गतिप्रेरणश्लेषणेषु। आज्ञा करना, जाना, स्पर्श करना, आलिङ्गन करना।

प्याय्-प्यायी-प्यै (प्यायते) = वृद्धौ। बढ़ना, बड़ा होना, फूलना। (प्यायते - वर्धते। प्याता, प्यायकः, प्यायमानः - वर्धिता। प्या, प्यानम्, प्यायनम्, प्यायनीयम्, प्यायम् - वर्धने)।

प्याय्-प्यै (प्यायते) = क्षुधायाम्, तृषायाम्। भूख लगना, प्यास लगना। (प्यायिः, प्यायुः, प्यायनम्, प्यायनीयम् - क्षुधायाम्। प्यायः, पीतम्, पीतिः - क्षुधि। सपौतिः - तृष्णा, तृषा)।

प्युष् (प्युष्यति) = विभागे। पृथक् होना, विभाग होना। (प्युष्यति, पुष्यति - विभजति। पुट्, पुष्टः, पुष्टवान्, पोषन्, पोषकः - विभाजके।

पुष्टम्, पुष्टिः, पोषणम्, पोषणीयम् - विभजने)।

प्र (उपसर्ग) = प्रमुख, प्रकृष्ट अधिक, पर्याप्त, बहुत।

प्रकामम् (अव्यय) = पर्याप्त, बहुत।

प्रति (उपसर्ग) = सम्बन्ध में, विषय में, सभी, विलोम।

प्रतिदिनम् (अव्यय) = प्रतिदिन, नित्य।

प्रतीची (अव्यव) = पश्चिम।

प्रत्नेन = पुरातन, प्रसिद्ध द्वारा (अव्यय, सर्वनाम)।

प्रथ् (प्रथते, प्रथयति, प्रथयते) = प्रख्याने, प्रसिद्धौ। प्रसिद्ध होना, फैलना, फैलाना। (प्रथते, प्रथयति - प्रसिद्धो भवति। प्रथकः, प्रथमः, प्रथमानः - प्रसिद्धः। प्रथ्, प्रथिः, प्रथमम्, प्रथनम्, प्रथनीयम् - प्रख्यानम्)।

प्रथमः (संख्या) = प्रथम, आदि, पहला।

प्रस् (प्रसते, प्रसयति) = विस्तारे। विस्तार करना, फैलाना। (प्रसते, प्रसयति - विस्तृणाति। प्रसकः, प्रसमानः - विस्तारकः। प्रसः, प्रसिः, प्रसा, प्रसनम्, प्रसनीयम्, प्रस्यम्, प्रास्यम्, प्रासम् - सुविस्तारे)।

प्रसह्य (अव्यय) = बलात्, बलपूर्वक।

प्रा (प्राति) = पूरणे, भरणे। पूर्ण करना, भरना। (प्राति - भरति। प्रायन्, प्रायकः, प्राता - भरणकर्तरि। प्राः, प्रातिः, प्रातम्, प्रापणम्, प्रापणीयम्, प्राप्यम्, प्रायम्, प्रातव्यम् - पूरणे)।

प्रा (प्रापयति) = तर्पणे, तृप्तौ। तृप्त करना। (प्रापयति - तर्पयति। प्रायन्, प्रापकः - तर्पके। प्रापः, प्रापणम्, प्रापणीयम् - तर्पणे। प्रायशः - आधिक्येन)।

प्राक् (अव्यय) = पहले, आगे, पूर्व दिशा।

प्राची (अव्यय) = पूर्व।

प्रातः (अव्यय) = सूर्योदयकालः, प्रातः।

प्राप् (प्रापयति) = तर्पणे, तृप्तौ। तृप्त करना। (प्रापयति - तर्पयति। प्रायन्, प्रापकः - तर्पके। प्रापः, प्रापणम्, प्रापणीयम् - तर्पणे)।

प्राय (प्रायति) = तर्पणे, तृप्तौ। तृप्त करना। (प्रायन् - तर्पके)।

प्रायः (अव्यय) = प्रायः, बहुधा।

प्रायशः (अव्यय) = आधिक्येन, प्रायः, बहुधा।

प्री (प्रियते, प्रीयते) = प्रीणने, व्यायामे, प्रीतौ, प्रेमणि। प्रीति करना, दुलारना, तृप्त करना, प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना। (प्रीयते - प्रेम करोति। प्रियते - प्रीतिं करोति। प्रियः - प्रीतयिता। प्रिया - प्रीतयित्री। प्रियम् - प्रीतिः। प्रीणः, प्रयाणः - प्रीतिकर्ता। प्रीतिः, प्रयणम्, प्रयणीयम् - प्रीतिकर्मणि)।

प्री (प्रीणाति, प्रीणीते, प्रीणयति, प्रीणयते) = तर्पणे कान्तौ प्रीते प्रकाशे च। प्रीति करना, तृप्त करना, कामना करना। (प्रीणाति, प्रीणीते - तर्पयति, प्रकाशते। प्रीतः, पीतवान् - तर्पयितरि। प्रीतिः, प्रेमन् - प्रेम्णि)।

प्रु (प्रवते) = आधिक्ये, गतौ। अधिक होना, जाना, हिलना। (प्रवते - अधिकं भवति। प्रवकः, प्रवमाणः - आधिक्यम्। प्र, प्रु, प्रवः, प्रविः, प्रवणम्, प्रवणीयम्, प्रव्यम्, प्राव्यम् - आधिक्ये)।

प्रुथ् (प्रोथति, प्रोथते) = व्याप्तौ, आश्रयणे, शरणे। शरण लेना, व्याप्त होना। (प्रोथति, प्रोथते - शरणं गृह्णाति। प्रुथुलम्, प्रुथक - प्रत्येकम्। प्रुथुवी, प्रुथ्वी - पृथ्वी। प्रुथ्, प्रोथः, प्रोथकम्, प्रोथन्, प्रोथमानः - आश्रयितरि। प्रोथनम्, प्रोथनीयम्, प्रोथ्यम्, प्रौथ्यम् - आश्रयणे)।

प्रुष् (प्रुष्णाति) = स्नेहसेचनपूरणेषु, तैलक्रियायां, संघर्षे, भरणे च। सौम्य होना, स्निग्ध होना, चिकना होना, प्रोक्षण करना, सींचना, पूर्ण करना, संघर्षण करना, भरना। (प्रष्णाति - स्निग्धो भवति, सङ्घर्षति, भरति। प्रोषकः, प्रुष्टः, प्रुष्टवान् - स्नेहके, संघर्षके, भारके च। प्रुष्टम् - प्रुष्टभागः। प्रुष्टिः, प्रोषणम्, प्रोषणीयम् - स्नेहने)।

प्रुष् (प्रोषति) = दाहे, द्रवीभावे। जलाना, द्रवित करना, पिघलना, भर्जन करना, भूंजना। (प्रोषति - द्रवीकरोति। प्रुषत् - द्रवम्। प्रुष्टिः - द्रवम्। प्रुषिः, प्रुषकम्, प्रुषणम्, प्रुषाणम् - द्रवीभावे)।

प्रेङ्खोल् (प्रेङ्खोलयति, प्रेङ्खोलयते) = उत्क्षेपे। झूलना, झुलाना।

प्रेण् (प्रेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, गत्यां प्रेरणे सहने वर्धापने च। गति करना, प्रेरणा करना, वर्धापन करना, बढ़ाना, सहन करना। (प्रेणति - वर्धापयति। प्रेणः - वर्धापनम्)।

प्रेष् (प्रेषते) = गतौ। जाना, आना, भेजना।

प्रोथ् (प्रोथति, प्रोथते) = शक्तौ, पर्याप्तौ, पूर्णे, भरणे च। शक्तिमान् होना, योग्य होना, पूर्ण होना, भरना।

प्लक्ष (प्लक्षति, प्लक्षते) = अदने वक्रगतौ, कुटिलगत्याम्। वक्र चलना, लंगड़ाना, खाना।

प्ली (प्लिनाति) = गतौ। जाना।

प्लीह् (प्लेहते) = गतौ। जाना।

प्लु (प्लवते) = गतौ। जाना, उड़ना, तैरना, कूदना। उत् - ऊपर उड़ना या कूदना। वि - डूबना, मज्जन करना, जलमय होना। (प्लवते - तरति। प्लवकः, प्लवमानः - तरिता। प्लवः - मण्डूकः, लध्वी तरणिः। प्लवनम्, प्लवनीयम् - तरणम्)।

प्लुष् (प्लुष्णाति) = स्नेहसेचनपूरणेषु, तैलक्रियायां, संघर्षे, भरणे च। स्निग्ध होना, चिकना होना, स्निग्ध करना, प्रोक्षण करना, सींचना, पूर्ण करना, भरना। (प्लुष्णाति - संघर्षति। प्लुष्टः, प्लुष्टवान्, प्लोषकः - संघर्षके। प्लुष्टम्, प्लुष्टिः, प्लोषणम्, प्लोषणीयम् - संघर्षणे)।

प्लुष् (प्लोषति; प्लुष्यति) = दाहे। जलाना, भूंजना। (प्लुष्यति - दहति। प्लुट्, प्लोषन्, प्लोषकः, प्लुष्टः, प्लुष्टवान् - दाहके। प्लुष्टम्, प्लुष्टिः, प्लोषणम्, प्लोषणीयम् - दहने)।

प्लुषु (प्लोषति) = दाहे, द्रवीभावे। द्रवित करना। (प्लुष्टम् - द्रवीकृतम्। प्लोषति - द्रवति। प्लोषिता, प्लुष्टा, प्लोषकः - द्रवीभूते। प्लुट्, प्लुष्टिः, प्लुषिः - द्रवीभावे)।

प्लुस् (प्लुस्यति) = विभागे दाहे च। जलाना, विभाजन करना, बांटना।

प्लेह् (प्लेहते) = वामनीभावे, पङ्गुभावे। वामन होना, लंगड़ा होना। (प्लेहते - वामनो भवति, लङ्गते। प्लेहकः, प्लेहमानः - वामनः, पङ्गुः। प्लिहिः, प्लिहुः, प्लेहनम्, प्लेहनीयम् - वामनीभावे, पङ्गुभावे)।

प्सा (प्साति) = भक्षणे, रक्षणे। भक्षण करना, संरक्षण करना। (प्साति - भक्षति। प्सायन्, प्सायकः - भक्षकः। प्सातम्, प्सायनम्, प्सातव्यम्, प्सानीयम्, प्सायम् - खाद्ये)।

(फ)

फक्क (फक्कति) = नीचैर्गतौ, व्यभिचारे। धीरे-धीरे जाना, मन्द गमन करना, रेंगना, व्यभिचार करना, अनुचित आचरण करना, अयोग्य रीति से वर्तना। (फक्कति - व्यभिचारं करोति। फक्का - व्यभिचारः)।

फण् (फणति, फणयति, फणयते, फाणयति, फाणयते) = गतौ, रिङ्गणे, सवने, मिश्रणे, फाण्टे च। चलना, जाना, तेजोहीन करना, जल आदि डाल कर सान्द्रता अल्प करना, उष्ण जल में कुटी हुई वस्तु डालकर रस निकालना (फाण्ट बनाना)। (फणयति - रिङ्गति (रेंगता है))।।

फण् (फणति) = आश्रये, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, आश्रय लेना। (फणति - आश्रयति। फणः - सर्पस्य शिरः। फणिन् - सर्पः। फणहः - वाद्यम्)।

फर्व (फर्वति, फर्वते) = गतौ। जाना।

फल् (फलति) = निष्पत्तौ, फलितभावे। उत्पन्न करना, सफल

करना। (फलति - फलितो, फलयुक्तो वा भवति। फली - फलयुतः वृक्षः वा। फलिनी - फलयुता लता वा)।

फल् (फलति) = गतौ, विभजने, विशरणे, कर्तने। जाना, तोड़ना, चीरना, विभाग करना। (फलति - कृन्तति। फालम् - हलाग्रभागः)।

फु (फवते, फवति) = भुवि, गतौ। होना, जाना। (फवते - भवति। फवकः, फवमानः - भावुकः। फ, फु, फविः, फवनम्, फवनीयम्, फाव्यम्, फवः - भवने)।

फुल् (फोलति) = विकसने, विकासे। विकसित होना, फूलना, प्रफुल्लित होना। (फोलति - विकसितो भवति। फुलम् - विकसनम्)।

फुल्ल (फुल्लति) = विकसने, विकासे। विकसित होना, फूलना, प्रफुल्लित होना। (फुल्लति - विकसितो भवति। फुल्लः - विकासः)।

फेल् (फेलति) = गतौ, नर्तने। जाना, स्थानान्तर करना। (फेलति - नृत्यति। फेलकः - नर्तकः। फेलिः - नृत्यम्)।

फेय्-स्फाय-स्फी (स्फायते) = बढ़ना, मोटा होना, स्थूल होना।

फ्रेण् (फ्रेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, गत्यां प्रेरणे सहने थपकने च। जाना, प्रेरणा करना, भेजना, थपथपाना, सहना। (फ्रेणति - थपथपा करोति (थपकी देता है)। फ्रेणः - थपकनम्)।

(ब)

बण् (बणति) = शब्दे। शब्द करना।

बण्ट बण्टति = सेवायाम्, सेवने। सेवा करना। (बण्टति - सेवयति। बण्टः - सेवकः)।

बत (अव्यय) = खेद, दुःख, हर्ष एवं आश्चर्य।

बद् (बदति) = स्थैर्ये, स्थिरतायाम्। निश्चल होना, स्थिर होना,

स्वस्थ रहना। (बदति - स्थिरो भवति। बदरी - बदरवृक्षः)।

बध् (बाधयति) = संयमने, निश्चये। निश्चित करना। (बाधयति - निश्चिनोति। बद्धम्, बद्धिः - निश्चितीकरणे)।

बध (बधते, बाधयति, बाधयते, बध्नाति, बध्नीते) = बन्धने, निग्रहे। बांधना, बद्ध करना, हिंसा करना, मारना, वध करना, घृणा करना। आ - सभी ओर से बांधना। अनु - जोड़ना, चिपकाना, एकत्र करना, अनुसरण करना। नि - बन्धन मुक्त करना, एकत्र करना। सम् - मिलाप करना। (बध्नाति, बध्नीते - निगृह्णाति। बध्, बधः, बधकः, बधमानः - निग्रहीतरि। बद्धः, बद्धवान्, बन्धकः - निग्रहीतरि। बन्धनम्, बन्धनीयम्, बद्धम्, बद्धिः, बन्धनम्, बन्धः - निग्रहणे। बधनम्, बधनीयम्, बध्यम्, बाध्यम् - बन्धने)।

बभस्-भस् (बभस्ति) = भक्षणे, भर्त्सनदीप्त्योः, गालिप्रदाने प्रकाशे च। चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना, गाली देना। (बभस्ति - गालिं ददाति। भसः, भासः, भसकः, भासकः, भस्तः, भस्ता, भसन्, भस्तवान् - गालिप्रदातरि। भस्तिः, भस्तम्, भस्तव्यम्, भसनम्, भसनीयम्, भस्यम्, भास्यम् - अपशब्दने निन्दायां च)।

बर्ब (बर्बति) = गतौ, गत्याम्। जाना। (बर्बति - चलति। बर्बन् - वायुः)।

बर्ह (बर्हते) = क्रीडने, प्राधान्ये, प्रयत्ने, व्यवसाये। श्रेष्ठ होना, प्रयत्न करना, व्यवसाय करना। (बर्हते - क्रीडति। बर्हिणः, बर्हकः, बर्हमाणः - क्रीडकः। बर्हणम्, बर्हणीयम् - क्रीडाकर्म)।

बर्ह (बर्हयति, बर्हयते) = हिंसायाम्, मारणे, लुञ्चने। मार डालना या दुःख देना, नोचना। (बर्हयति - लुञ्चयति (नोचता है)।

बल् (बलति, बलयति, बालयति, बालयते) = गतौ, बले, शक्तौ, प्राणने, चेतने, भृतौ, रक्षणे, धान्यावरोधे, भेदने। बलयुक्त होना या करना, स्पष्ट करना, जीते रहना, धान्य सञ्चय करना, द्रव्य को रोकना। (बलति

- चेतयति, मारयति, भिनत्ति। बलूलः - शक्तिमानः। बलम् - चेतनम्। बललूः, बलीयान्, बलिष्ठः, बलवान् - बलवति। बलम् - शक्तिः, वीर्यम्)।

बलवत् (अव्यय) = अत्यन्त, बहुत।

बलात् (अव्यय) = बलपूर्वक।

बल्ल (बल्लति) = गतौ, शासने। जाना, शासन करना। (बल्लति - शास्ति। बल्लालः - शासकः, राजा)।

बल्ह (बल्हयति, बल्हते) = प्राधान्यपरिभाषणहिंसादानेषु, प्राधान्ये मुख्ये, परिभाषणे, हिंसायां, दाने, भाषार्थाः। श्रेष्ठ होना, मुख्य होना, दृढ होना, बोलना, देना, फैलाना, हिंसा करना। (बल्हते - मुख्यो भवति। बल्हयति - दृढो भवति। बाल्हिकः, बल्हणः, बल्हकः, बल्हनम्, बल्हनीयम् - प्राधान्ये)।

बष्क (बष्कते) = गतौ, परिभाषणे, भषणे। जाना, बोलना। (बष्कते - भषति। बाष्कलः - भषकः)।

बस्त (बस्तते, बस्तगते) = अर्दने। जाना, मांगना, मार डालना या दुःख देना।

बह् (बहति) = हिंसागत्योः। हिंसा करना, गति करना। (बहति - चलति, पवनचलनक्रिया वा)।

बहिः (अव्यय) = बाहर।

बहुः (अव्यय) = बहुत।

बहुधा (अव्यय) = प्रायः, बहुत प्रकार से।

बहुलम् (अव्यय) = आधिक्य, बहुत।

बह्वीः (अव्यय) = बहुत।

बाढ् (बाढति) = तीव्रगतौ, शीघ्रगत्याम्। तीव्र गति करना, शीघ्रता से चलना। (बाढति - शीघ्रं चलति। बाढम् - शीघ्रगमनम्)।

बाध् (बाधते) = विलोडने, लोटने, पीडायाम्। रोकना, अटकाव करना, बाधा देना, दुःख देना।(बाधते - पीडयति।बात्, बाधकः, बाधमानः - पीडके।बाधनम्, बाधा, बाधिः, बाधनीयम् - पीडायाम्)।

बाल् (बालयति, बालयते) = गतौ, प्राणने, चेतने, रक्षणे।बलयुक्त होना या करना, स्पष्ट करना, जीवन होना, सञ्चय करना।(बालयति - रक्षति।बालः, बालकः - कुमारः।बाला, बालका, बालकी, बालिका - कुमारी)।

बाह् (बाहते) = प्रयत्ने।यत्न करना।

बिङ्क (बिङ्कते) = गतौ, नाशे, मदे।जाना, नाश होना, मत्त होना। (बिङ्कते - नश्यति।बिङ्कणिः - मत्तः, मदयुक्तः।बिङ्कः - मदम्)।

बिट् (बेटति) = आक्रोशे, शापे, रतिविषयके शब्दे। शाप देना, आक्रोश करना, रति-विषयक वार्ता करना, गाली देना।(बेटति - रतिवार्ताम् करोति)।

बिड् (बेडति) = आक्रोशे, शापे, रति-विषयके शब्दे। शाप देना, आक्रोश करना, रति-विषयक वार्ता करना, गाली देना।(बेडति - रति-विषयके वार्ता करोति)।

बिन्द (बिन्दति) = रूपे, अवयवे।रूप बनाना, अवयव होना।(बिन्दति - रूपं धत्ते।बिन्दुः - अवयवविशेषः (बूँद)।

बिभृ (बिभर्ति, बिभृते) = धारणपोषणयोः, सहने रक्षणे च। धारण करना, पोषण करना, सहन करना, रक्षण-पालन करना।(बिभर्ति, बिभृते - सहते।भर्ता - पोषकः।भृत्, बिभ्राणः, बिभ्रन्, भृतवान्, भृतः, भरकः, भारकः, भारी - पोषके।भरणम्, भरणीयम्, भर्तव्यम्, भृतिः, भृतम् - रक्षणे)।

बिम्ब (बिम्बति) = निवासे, छायायाम्, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्।निवास करना।(बिम्बति - निवसति।बिम्बः - प्रतिच्छाया)।

बिब्ब (बिब्बयति) = आर्भटे, गर्जने।गर्जन करना, उच्च ध्वनि करना।

(बिब्बयति - उच्चैर्ध्वनति।बिब्बोकः - उच्चैर्ध्वनिता)।

बिल् (बिलति, बेलयति, बेलयते) = भेदने, संवरणे, गतौ, धावने, शोधने।आच्छादित करना, फेंकना, उड़ाना, छेद करना, चीरना।(बेलति - धावति, शोधयति।बिलम् - छिद्रम्।बिल् - भेदकः, धनुः वा)।

बिल्ल (बिल्लति) = गतौ, इषुं प्रक्षेपणे।जाना, तीर चलाना।(बिल्लति - इषुं प्रक्षिपति। बिल्लः - इषुं प्रक्षेपकः, धनुर्धारकः वा। बिल्लु; - इषुं प्रक्षेपकः, धनुः वा)।

बिल्ह (बिल्हते) = वर्णने, प्राधान्यपरिभाषणहिंसादानेषु, मुख्ये, परिभाषणे, हिंसायां, दाने च।मुख्य होना, परिभाषण करना, वर्णन करना, हिंसा करना, दान करना।(बिल्हते - वर्णयति।बिल्हकः, बिल्हमानः - वर्णयितरि।बिल्हिः, बिल्हनम्, बिल्हनीयम् - वर्णने)।

विश् (विश्यति) = प्रेरणे, सूचने। फेंकना, उड़ाना, सूचना देना। (विश्यति - सूचयति।वेशः, वेशनम्, वेशनीयम्, विष्टिः, विष्टम् - सूचने)।

बिस् (बिस्यति) = प्रेरणे।फेंकना, उड़ाना।

बिस्त (बिस्तयति) = जलोत्तरणे, जलप्रक्षेपणे।जल फेकना, तैरना। (बिस्तयति - जलं प्रक्षिपति। बिस्तः - जलप्रक्षेपकः)।

बीभत्स (बीभत्सते) = द्वेषे, अनादरे, तिरस्कारे।द्वेष करना, तिरस्कार करना।

बृक् (बर्कते) = कूर्दने, आदाने, ग्रहणे। ग्रहण करना, लेना।(बर्कते - कूर्दते।बर्करः - अजः।बर्करी - अजा)।

बृह् (बृहति, बर्हति, बर्हते, ब्रहयति) = वृद्धौ, उद्यमे, उद्योगे, भाषार्थाः, शब्दे, ध्वनौ।उठाना, उद्योग करना, बढ़ना, वृद्धि होना।(बृहति - उद्योगम् करोति।बर्हति - वर्धते।ब्रहयति - अधिकं भवति।ब्रह्मा, ब्रह्म, ब्रह्मन्, बृंहत्, बृहणम्, बृहि, बृहुः, बृहितम् - बृद्धौ।बृहती - महती।बृहन्, बर्हकः, बृहः - उद्योगिनि।बृहस्पतिः - वृहतां पतिः।बृहत्, बृहद् = बड़ा)।

बृह् (बर्हति, बर्हते) = वृद्धौ, भाषार्थाः, शब्दे, ध्वनौ। बढ़ना, वृद्धि होना, हाथी का चिंघाड़ना।(बर्हति - शब्दयति। बर्हिणः, बर्ही, बर्हम् - वृद्धौ, शब्दे)।

बृंह (बृंहति, बृंहयति) = वृद्धौ, भाषार्थाः, शब्दे च। बढ़ना, वृद्धि होना, हाथी का चिंघाड़ना।(बृंहयति - वर्धते। बृंहणम् - वर्धनम्। बृंहस्, बृंहिः, बृंहुः, बृंहणम्, बृहितम् - ढाढ़्र्ये, वृद्धौ)।

बॄ (बृणाति) = वरणे, आवरणे। ढकना, आच्छादित करना।(बृणाति - आवेष्टयति। बृतः, बृतवान्, बूरः, बूरकः, बुरन् - आवेष्टके। बूरणम्, बूरणीयम्, बूर्यम्, बूर्तम्, बूर्तिः, बूर्णम् - आवेष्टने)।

बु (बवते) = गतौ। जाना।(बवकः, बवमानः गन्ता। ब, बु, बविः, बवः, बवनम्, बवनीयम्, बव्यम्, बाव्यम् - गमने)।

बुक्क (बुक्कति; बुक्कयति, बुक्कयते) = भषणे, निन्दायाम्, भाषणे च, श्वरवे च। शब्द करना, बोलना, भौंकना, कुत्ते के समान शब्द करना। (बुक्कति - भषति। बुक्कः - कुक्कुरः। बुक्कयति - निन्दति। बुक्कन्, बुक्कः - निन्दके। बुक्कनम्, बुक्कनीयम् - निन्दायाम्)।

बुक्कय (बुक्कयति, बुक्कयते) = निन्दायाम्। निन्दा करना।(बुक्कयति - निन्दति। बुक्कन्, बुक्कः - निन्दके। बुक्कनम्, बुक्कनीयम् - निन्दायाम्)।

बुङ्ग (बुङ्गति) = वर्जने, परित्यागे, ककुदे। छोड़ना, त्याग करना, बक्र होना, ककुद्मान् (कुबड़ा) होना। (बुङ्गति - ककुद्मान् (कुबड़ा) भवति। बुङ्गः - कुकुद्मान्, बक्रः)।

बुड् (बुडति) = प्रथमे, आधारे, संवरणे, वेष्टने। प्रथम होना,, आधार होना, ढकना, आच्छादित करना। (बुडति - प्रथमो भवति। बुडः, बोडः, बोडी, बुडम् - प्रथमः, आधारः, आरम्भः वा)।

बुड्ड (बुड्डति) = उद्गमने, उपरि गमने। ऊपर जाना, ऊपर आना।(बुड्डति - उपरि आगच्छति। बुड्डा - उपरिगामी, वृद्धः)।

बुध् (बोधति; बोधते, बुध्यते) = बोधने, अवगमने, ज्ञाने। जानना, समझना। प्रति - किसी को जानना, जागना, बाट जोहना। प्रतिवि - जागना, जागृत रहना। सम् - अच्छे प्रकार जानना। अव - जानना। (बोधति, बोधते, बुध्यते - जानाति, ज्ञानाति वा। बुध्, बुधः, बोधकः - ज्ञाता। बोधनम्, बोधा, बुधिः, ज्ञानम्। बोधः, बोधायनः, बुत्, बुद्, बोधकः, बुद्धः, बुद्धवान्, बोद्धा, बोधानः - ज्ञातरि। बोधनम्, बोधनीयम्, बोध्यम्, बोद्धव्यम्, बुद्धिः, बुद्धम्, बौध्यम् - ज्ञाने। बुधः, बुधन्, बुध्नः, बुधानः - ज्ञानिनि। बोधिनी, बोधिका - ज्ञानदात्री)।

बुन्थ (बुन्थति) = धारणे, हिंसासंक्लेशयोः, वधे पीडनायां च। धारण करना, हिंसा करना, क्लेश देना। (बुन्थति - धारयति। बुन्था - धारणा, वस्त्रविशेषः वा)।

बुन्द (बुन्दति, बुन्दते) = निशामने, बोधे, सम्बुद्धौ। जानना, समझना, बूझना, सूक्ष्म दृष्टि से जानना।

बुन्ध (बुन्धयति) = हिंसायाम्। हिंसा करना, दुःख देना।(बुन्धयति - दुःखयति। बुन्धम् - दुःखम्)।

बुब्ब (बुब्बयति) = आर्भटे, गर्जने। ग़र्जन करना।(बुब्बयति - गर्जति। बुब्बा - गर्जनम्। बुब्बोकः - गर्जकः)।

बुम्ब (बुम्बयति) = आर्भटे, गर्जने, गाने। गर्जन करना, गाना।(बुम्बयति - गायति। बुम्बालः - गायकः, रागालापकः)।

बुल् (बोलयति, बोलयते) = निमज्ज्ने, सेचने, घर्षणे। जल में या विचारों में डूबना, संघर्षण करना। (बोलते - घर्षति। बोलः, बोलकः, बोलमानः - संघर्षितरि। बुलिः, बोलुः, बोलनम्, बोलनीयम् - संघर्षणे)।

बुल् (बोलयति) = मुण्डने, सम्बन्धे, निपातने। गिराना, उड़ेलना। (बोलयति - मुण्डयति। बोलः - मुण्डः। बोलुः - मुण्डनम्)।

बुल्ल (बुल्लते) = सेचने, घर्षणे। घर्षण करना, सिञ्चन करना।

(बुल्लते - घर्षति। बुल्लः, बुल्लमानः - घर्षितरि। बुल्लिः - भगः। बुल्लम्, बुल्लनम्, बुल्लनीयम् - घर्षणे)।

बुश् (बुशति) = त्यागे, उत्सर्गे। छोड़ना, त्याग करना। (बोशः - उत्स्रष्टा। बोशी - उत्स्रष्ट्री। बोशुः, बोशनम्, बोशनीयम् - त्यागे)।

बुष् (बुषति) = त्यागे, उत्सर्गे। छोड़ना, त्याग करना। (बुष्टः, बुष्टवान्, बुट्, बोषन्, बोष्टा - उत्सर्जके। बुष्टः, बुष्टिः - त्यागे)।

बुष्क (बुष्कति) = भषणे, भाषणे, श्वरवे च। बोलना, भोंकना। (बुष्कति - भषति। बुष्कः - कुक्कुरः)।

बुस् (बुस्यति) = त्यागे, उत्सर्गे। छोड़ना, त्याग करना।

बुस्त (बुस्तयति, बुस्तयते) = आदरानादरयोः। आदर करना, देना, मान देना, अपमान करना, धिक्कारना।

बूड् (बूडति) = भ्रमणे, संवरणे, वेष्टने। भ्रमण करना, भ्रमना, ढकना, आच्छादित करना। (बूडति - भ्रमति। बूडः - भ्रमकः। बूडनम्, बूडनीयम् - भ्रमणम्)।

बूल्ल (बूल्लति) = गतौ। जाना।

बेण् (बेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, अङ्कुरे गत्यां प्रेरणे सहने च। गति करना, अङ्कुरण होना, प्रेरणा देना, भेजना, सहना। (बेणति - अङ्कुरितो भवति। बेणम् - अङ्कुरण-क्षेत्रम्, गवादीनां भक्ष्यस्थानम् (चारागाह)। बेणा - कीलकम्)।

बेह् (वेहति) = प्रयत्ने, व्यवसाये। प्रयत्न करना, व्यवसाय करना। (वेहकः, वेहमानः - उद्योगी। वेहिः, वेहनम्, वेहनीयम् - उद्योगकर्मणि)।

ब्युष् (व्युष्यति) = दाहे। जलना।

ब्री (ब्रीयते) = वरणे। स्वीकार करना, ढांपना।

ब्रुड (ब्रुडति) = संवरणे, वेष्टने। ढकना, आच्छादित करना।

ब्रू (ब्रूते, ब्रवीति) = व्यक्तायां वाचि, शुद्धे वाक्ये। कहना, बोलना।

(ब्रवीति, ब्रूते - कथयति। ब्रुवन्, ब्रुवाणः, ब्रुवकः, ब्रवीता, ब्रूतः, ब्रूतवान्, ब्रूयमाणः - कथके। ब्रूतिः, ब्रूतम्, ब्रूतव्यम्, ब्रुंवणम्, ब्रूवणीयम्, ब्रव्यम्, ब्राव्यम् - कथने)।

ब्रूष (ब्रूषयति) = हिंसायाम्, मारणे। हिंसा करना, मारना। (ब्रूषयति - ताडयति। ब्रूषकः - ताडकः। ब्रूषणम्, ब्रूषणीयम् - ताडनकर्मणि)।

ब्रूस (ब्रूसयति, ब्रूसयते) = हिंसायाम्, मारणे। मार डालना, दुःख देना।

ब्ली (ब्लिनाति) = वरणे, आवरणे। ढकना, आच्छादित करना। (ब्लिनाति - आवरयति। ब्लीतः, ब्लीतवान्, ब्लयन्, ब्लयः, ब्लायः, ब्लायी - आवरके। ब्लयनम्, ब्लयनीयम्, ब्लीतम्, ब्लीतः - आवरणे)।

(भ)

भक्ष (भक्षति, भक्षते; भक्षयति, भक्षयते) = अदने। खाना। (भक्षयति - अत्ति। भक्षन्, भक्षकः - अत्तरि। भक्षितम्, भक्षणम्, भक्षणीयम्, भक्ष्यम् - खाद्ये पदार्थे)।

भक्-भग्-भज् (भजति, भजते) = सेवायाम्, सेवने, दाने, विश्राणने। देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना, भजना, भजन करना, उपभोग करना, विषय-वासना का अनुभव करना। (भजति, भजते - सेवते। भक्तः, भजकः, भाजकः, भजन्, भजमानः - सेवके, भक्ते। भक्तम् - आहारः। भक्तिः, भजनम् - सेवनम्। भक्तव्यम्, भज्यम्, भाज्यम्, भजनीयम् - सेवने)।

भज् (भाजयति, भाजयते) = विश्राणने, दाने। देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना। (भाजयति - ददाति। भाक् - दाता। भाजकः - सेवकः। भाजनम् - पाकसाधनम्, घटम्, पात्रम् वा)।

भञ्ज (भञ्जयति, भञ्जयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, कहना। वि - मापना। प्रवि - वाद करना।

भञ्ज (भञ्जति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां क्रीडने च। हिंसा करना, गति करना, क्रीडा करना, खेलना। (भञ्जति - क्रीडति। प्रभञ्जनः - वायुः। सालभञ्जा, सालभञ्जिका - क्रीडनकम् (क्रीडाविशेषः)।

भञ्ज (भनक्ति) = आमर्दने। मर्दन करना, नष्ट करना। (भनक्ति - मर्दयति। भक्तः, भक्तवान्, भाक्, भजकः, भाजकः - मर्दितरि। भङ्गः - कष्टम्)।

भट् (भटति) = भृतौ, उच्छ्राये, भृतककर्मणि। भृतककर्म करना, चाकरी करना, धारण करना, भाड़े पर लेना। (भटति - भृतकं करोति)।

भट् (भटति) = परिभाषणे, व्यक्तभाषणे। बोलना, वाद विवाद करना। (भटति, भटयति - गप्पयति। भटः, भटकः, भटन् - गप्पयिता। भटिः, भटुः, भटनम्, भटनीयम्, भट्यम्, भाट्यम् - गप्पक्रियायाम्। भाटः - भाषकः, गप्पयिता, भृतिः वा)।

भट् (भटयति) = ग्रन्थे, प्रारम्भकरणे, वीरतायाम्। प्रारम्भ करना, वीरता दिखाना। (भटयति - प्रारभ्यते। भटः - प्रारम्भकः, वीरः)।

भट्ट (भट्टति) = स्तुतौ, प्रशंसने, उच्छ्राये, भृतककर्मणि। प्रशंसा करना, चाकरी करना, धारण करना, रखना, भाड़े पर लेना। (भटति, भट्टति - प्रशंसति)।

भण् (भणति) = पाटने, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। स्पष्ट कहना, स्पष्ट बोलना, पढ़ना। प्रति - उत्तर देना। (भणति - पाटयति। भाणः - नाटकभेदः)।

भण्ड (भण्डति, भण्डते) = कुत्सायाम्, निन्दायाम्, भषणे, परिभाषणे, गप्पकर्मणि, उपहास्ये। उपहास करना, बोलना, दोष लगाना, निन्दा करना। (भण्डति -निन्दति। भण्डः - उपहासकः, नर्तकः, नटः वा। भण्डुः - उपहासः, लज्जा वा। भण्डते - उपहसति, (ताना मारता है)। भण्डः, भण्डकः, भण्डानः

- विकृतहास्यकर्तरि। भण्डु - विकृतहास्यम्। भण्डनम्, भण्डनीयम्, भण्ड्यम् - भषणे)।

भण्ड (भण्डयति, भण्डयते; भण्डते) = कल्याणे, शुभे। शुभ कर्म करना। (भण्डयति - शुभं भवति)।

भदि - भन्द (भन्दते) = कल्याणे सुखे, सौख्ये च, आनन्दे शुभे च। शुभ कर्म करना, सुखी होना। (भन्दते - शुभं भवति। भन्दः, भन्दमानः, भन्दकः - शुभं भावुके, सुखिनि च। भन्दिः, भन्दनम्, भन्दनीयम् - सुखे)।

भन्द - भदि (भन्दते) = कल्याणे सुखे, सौख्ये च, आनन्दे शुभे च। शुभ कर्म करना, सुखी होना। (भन्दते - शुभं भवति। भन्दः, भन्दमानः, भन्दकः - शुभं भावुके, सुखिनि च। भन्दिः, भन्दनम्, भन्दनीयम् - सुखे)।

भर्ज (भर्जते) = ज्वलने, पाके, पाचने। जलाना, पकाना। (भृक्, भर्जकः, भर्गः, भर्जमानः - पक्तरि। भर्जिः - शुक्तम्)।

भर्त्स (भर्त्सयते) = संतर्जने, धिक्कारे, भये, निन्दायाम्। धिक्कार करना, निन्दा करना, डराना, घुड़कना। (भर्त्सयते - निन्दति। भर्त्सन्, भर्त्सकः - निन्दके। भर्त्सनम्, भर्त्सनीयम् - निन्दायाम्)।

भर्व (भर्वति) = हिंसायाम्। मारना, हिंसा करना।

भल् (भलति) = गतौ, विकर्तने। जाना, काटना। (भलति - विकर्तयति। भलूकः, भालः - फालः। नि-भालयते = आभण्डने। निरूपण करना, वाद विवाद करना)।

भल् (भलते, भल्लते) = धारणे परिभाषणहिंसादानेषु, स्तृतौ, स्तुतौ, गालिप्रदाने, हिंसायां, दाने च। धारण करना, बोलना, गाली देना, स्तुति करना, व्याख्यान करना। (भलते - गालिं ददाति। भलकः, भालुकः, भलमानः - गालिप्रदातरि। भला, भली, भल्ला, भल्ली - स्तृतौ। भलनम्, भलनीयम् - गालिप्रदाने)।

भल् (भालयति) = आमण्डने, स्वीकारे। स्वीकार करना। (भालयति

- स्वीकरोति। भलनः, भालकः - स्वीकर्तरि। भली, भला, भलला - स्वीकारे)।

भल्ल (भल्लति, भल्लते) = गतौ, परिभाषणहिंसादानेषु, गालिप्रदाने, हिंसायां, दाने च। गाली देना, हिंसा करना, जाना, दान करना। (भल्लति - हिंसयति। भल्लते - हिनस्ति। भल्लूकः - हिंसकः, ऋक्षः वा। भल्ला - शूलम् (भाला)। भल्लः, भल्लमानः - हिंसके। भल्ला, भल्लनम्, भल्लनीयम् - हिंसायाम्)।

भवत् (सर्वनाम) = आप, आपने, आप सब को, आप से, आप के। ((उभयलिंग, पुल्लिंग)।

भवता (सर्वनाम) = आपसे, आप द्वारा। (पुल्लिंग)।

भवताम् (सर्वनाम) = आप सब के। (पुल्लिंग)।

भवति (सर्वनाम) = आप में। (पुल्लिंग)।

भवती (सर्वनाम) = आप, आप ने। (स्त्रीलिंग), आप दो (उभयलिंग)।

भवतीः (सर्वनाम) = आप सब को। (स्त्रीलिंग)।

भवतीनाम् (सर्वनाम) = आप सब के। (स्त्रीलिंग)।

भवतीभिः (सर्वनाम) = आप सब द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

भवतीभ्यः (सर्वनाम) = आप सब के लिए, आप सब से। (स्त्रीलिंग)।

भवतीभ्याम् (सर्वनाम) = आप दोनों द्वारा, आप दोनों के लिए, आप दोनों से। (स्त्रीलिंग)।

भवतीम् (सर्वनाम) = आप को।(स्त्रीलिंग)।

भवतीषु (सर्वनाम) = आप सब में। (स्त्रीलिंग)।

भवते (सर्वनाम) = आप के लिए। (पुल्लिंग)।

भवतोः (सर्वनाम) = आप दो का, आप दो में। (पुल्लिंग)।

भवत्यः (सर्वनाम) = आप सब ने। (स्त्रीलिंग)।

भवत्या (सर्वनाम) = आप द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

भवत्याः (सर्वनाम) = आप से, आप के। (स्त्रीलिंग)।

भवत्याम् (सर्वनाम) = आप में। (स्त्रीलिंग)।

भवत्यै (सर्वनाम) = आप के लिए। (स्त्रीलिंग)।

भवत्योः (सर्वनाम) = आप दोनों के, आप दोनों में (स्त्रीलिंग)।

भवत्यौ (सर्वनाम) = आप दोनों ने, आप दोनों को। (स्त्रीलिंग)।

भवत्सु (सर्वनाम) = आप सब में। (पुल्लिंग)।

भवद्भिः (सर्वनाम) = आप सब द्वारा। (पुल्लिंग)।

भवद्भ्यः (सर्वनाम) = आप सब के लिए, आप सब से (अपादान, अलग होना) (पुल्लिंग)।

भवद्भ्याम् (सर्वनाम) = आप दोनों द्वारा, आप दोनों के लिए, आप दोनों से। (पुल्लिंग)।

भवन् (सर्वनाम) = आप (सम्बोधन)।

भवन्तः (सर्वनाम) = आप सब ने। (पुल्लिंग)।

भवन्तम् (सर्वनाम) = आप को। (पुल्लिंग)।

भवन्ति (सर्वनाम) = आप सब, आप सबने (उभयलिंग)।

भवन्तौ (सर्वनाम) = आप दो, आप दो ने, आप दो को (पुल्लिंग)।

भवान् (सर्वनाम) = आप, आप ने। (पुल्लिंग)।

भष् (भषति) = भर्त्सने, निन्दायाम्। निन्दा करना, भोंकना, कुत्ते के समान शब्द करना। (भषति - गालिं ददाति, निन्दति। भषिता - निन्दिका। भषकः - निन्दकः। भषणम् - निन्दा। भषितम् - निन्दितम्)।

भस् (बभस्ति) = भक्षणे, भर्त्सनदीप्त्योः, गालिप्रदाने प्रकाशे च। चमकना, दोष लगाना, निन्दा करना। (बभस्ति - गालिं ददाति। भसः, भासः, भसकः, भासकः, भस्तः, भस्ता, भसन्, भस्तवान् - गालिप्रदातरि। भस्तिः, भस्तम्, भस्तव्यम्, भसनम्, भसनीयम्, भस्यम्, भास्यम् - अपशब्दने

निन्दायां च)।

भा (भाति) = दीप्तौ, द्योतने। चमकना, प्रकाशित होना, सुन्दर दीखना, फूँकना, धौंकना। वि, प्र - विशेष प्रकाश करना। (भाः, भायिः, भायन्, भायकः - द्योतके। भम् - नक्षत्रम्। प्रभा, भानम्, भातिः, भानीयम्, भातव्यम्, भायम् - प्रकाशे। प्रभातम् - प्रातः कालः)।

भाज् (भाजयति, भाजयते) = विश्राणने, दाने। देना, दान करना, पकाना, सिद्ध करना, अन्नादि तैयार करना, अलग करना। (भाजयति - ददाति। भाक् - दाता। भाजकः - सेवकः। भाजनम् - घटम्, पात्रम्)।

भाज (भाजयति, भाजयते) = पृथक्कर्मणि, पृथक् कार्यकरणे। टुकड़े करना, पृथक् करना। (भाजयति - पृथक्कार्य करोति। भाजयन् - पृथक् कार्यकर्ता। भाजनम् - घटः)।

भाण्ड (भाण्डति) = आधारे, आधारक्रियायाम्। धारण करना, धरना, रखना। (भाण्डति - आधरति। भाण्डम् - घटः, वासनम्, भाजनम्, पात्रम् वा)।

भाण्ड (भाण्डति) = अव्यक्तायां वाचि, अस्पष्टवाक्ये। अस्पष्ट बोलना। (भाण्डति - अव्यक्तम् उच्चारयति। भाण्डीरः - भासवाक्यम्)।

भाम् (भामते, भामयति, भामयते) = क्रोधे। घुड़कना, क्रोध करना। (भामते - क्रुद्धौ भवति। भामयति - क्रुध्यते। भामा, भामिनी - क्रुद्धायाम्। भामकः, भामानः - क्रुध्यमाने। भामिः, भामुः, भामनम्, भामनीयम्, भाम्यम् - क्रोधे)।

भाष् (भाषते) = व्यक्तायां वाचि, आलङ्कारिकवाक्ये। बोलना। परि - निन्दायुक्त वचन बोलना। सम् - दूसरे से सम्भाषण करना, उत्तम बोलना। (भाषते - वदति। भाषकः, भाषमाणः - वदितरि। भाष्, भाषणम्, भाषणीयम्, भाष्यम् - वाक्कर्मणि। भाषा - भाषणम्, वाक्यं च)।

भास् (भासते) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना। प्रति -

अचानक किसी विषय में ज्ञान होना, दिखाई देना। (भासते - दीप्यते (चमकता है)। भास्, भासकः, भासमानः - दीपितरि। भासिः, भासुः, भासनम्, भासनीयम्, भासिनी - दीपने)।

भिक्ष (भिक्षते) = भिक्षायां, याचने, लाभे च। याचना करना, मांगना, प्राप्त करना, सम्पादन करना, प्राप्त होना। (भिक्षते - याचते। भिक्षुः, भिक्षुकः, भिक्षमाणः - याचयितरि। भिक्षा, भिक्षि, भिक्षणम् भिक्षणीयम्, भिक्षम्, भैक्ष्यम् - याचने)।

भिद् (भिनत्ति, भिन्ते) = विदारणे, विकर्तने, अवयवे। विभाग करना, विभाजन करना, चीरना, तोड़ना। (भिनत्ति, भिन्ते - विदारयति। भिन्दन्, भेदकः, भेदी, भेत्ता - विदारके। भित्, भिदा, भेदनम्, भेदनीयम्, भेदः, भेदयम्, भेत्तव्यम् - विदारणे। भित्तम् - खण्डम्)।

भिल् (भेलति) = गतौ, छेदने। जाना, काटना, छेद करना। (भेलति - छेदयति। भिलम् - छेदनम्)।

भिल् (भेलते) = उन्मादे, वनप्रदेशे, वनगमने। वन जाना। (भेलते - उन्मत्तो भवति। भेलः, भेलकः, भेलमानः - उन्मत्ते। भेलिः, भेलुः, भेलनम्, भेलनीयम् - उन्मादे)।

भिल्ल (भिल्लते) = वन प्रदेशे, वनगमने। वन जाना। (भिल्लते - वने क्रीडति। भिल्लः, भिल्लकः, भिल्लमानः - वनचरे)।

भिल्ल (भिल्लति) = गतौ, क्षेपणे। जाना, फेंकना। (भिल्लति - क्षिपति। भिल्लः - क्षेपकः, व्याधः वा)।

भिषज् (भिषज्यति) = चिकित्सायाम्। चिकित्सा करना।

भिष्णज् (भिष्णज्यति) = उपसेवायाम्। चाकरी करना, सेवा करना।

भी (भाययति, भयति, बिभेति, बिभीते) = भये, उद्वेगे। डरना, घबराना। (विभेति बिभीते - उद्विजते। भीतः, भीतवान्, भेता, भयकः, भयन्, भयानः, भायी, भायुः - भीरौ। भीः, भीतिः, भीतम्, भीतव्यम्, भयनम्, भयनीयम्,

भय्यम्, भयम्, भायम् - भये)।

भृ (भरति, भरते) = भरणे, धारणे। पूर्ण करना, भरण, पोषण, धारण करना। (भरति, भरते - धारयते। भृ, भृत् - धारकः। भृतिः - धारणम्, वेतनम् वा। भृतम्, भर्तव्यम्, भरणम्, भरणीयम्, भर्यम्, भार्यम् - धारणे। भर्ता - भरणकर्ता। भार्या - भरणीया, पत्नी वा)।

भृ (बिभर्ति, बिभृते) = धारणपोषणयोः, सहने रक्षणे च। धारण करना, पोषण करना। (बिभर्ति, बिभृते - सहते। भर्ता - पोषकः। भृत्, बिभ्राणः, बिभ्रन्, भृतवान्, भृतः, भरकः, भारकः, भारी - पोषके। भरणम्, भरणीयम्, भर्तव्यम्, भृतिः, भृतम् - रक्षणे। भारम् - गुरुत्वम्)।

भृज् (भर्जते) = भर्जने, पचने, भाष्ट्र-पाके, दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना, भूँजना, तलना, सेकना। (भर्जते - ज्वलयति, पाचयति। भृक्, भर्जकः, भर्गः, भर्जमानः - पक्तरि। भर्जिः - शुक्तम्। भृजिः, भृजुः, भुक्तिः, भुक्तम्, भर्जनम्, भर्जनीयम्, भर्ज्यम्, भार्ज्यम्, भष्टम्, भष्टिः - पचने)।

भृश् (भृश्यति) = अधःपतने, नीचैः पतने। शरीर योग्यतादि से भ्रष्ट होना, च्युत होना, नीचे गिरना। (भृश्यति - अधः पतति। भर्शन्, भर्शकः, भर्ष्टः, भर्ष्टवान्, भर्ष्टा - अधः पतिता। भृशम्, भृष्टिः, भृष्टम्, भर्ष्टव्यम्, भर्शनीयम्, भर्श्यम्, भार्श्यम् = नीचैः पतने)।

भृंश् (भृंशयति, भृंशयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, भाषण करना।

भृशम् (अव्यय) = बार-बार।

भॄ (भृणाति) = भर्त्सने, निन्दायाम्, भरणे रक्षणे, पालने, धारणे च। घुड़कना, तिरस्कार करना, संरक्षण करना, पालन करना, धारण करना। (भृणाति - निन्दति। भूर्तः, भूर्तवान्, भूः, भोरकः - निन्दके। भृतम्, भृतिः, भूर्णम्, भूरणम्, भूरणीयम्, भूर्यम् - निन्दायाम्। भूरी, भूरि - वृद्धम्, अधिकम्)।

भु (भवते) = गतौ। जाना, घर्षण करना। (भवते - घर्षति। भवकः, भवमानः - घर्षिता। भ, भु, भविः, भव, भवनम्, भवनीयम्, भव्यम्, भाव्यम् - घर्षणे)।

भुज् (भुजति) = कौटिल्ये, वक्रतायाम्। वक्र होना, टेढ़ा होना। (भुजति - वक्रो भवति। भुक्, भुष्टः, भुष्टवान्, भोक्ता - वक्रे)।

भुज् (भुनक्ति, भुङ्क्ते) = पालने, रक्षणे, भोजने च। संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना। (भुनक्ति, भुङ्क्ते - रक्षति, खादति। भुक्, भोक्ता, भोजकः, भुक्तः, भुक्तवान्, भोगी - उपभोक्तरि। भुक्तिः, भुक्तम्, भोगः, भोग्यम्, भोक्तव्यम्, भोजनम्, भोजनीयम् - रक्षणे, भोजने)।

भुञ्ज-भुज् (भुञ्जते) = पालनाभ्यवहारयोः, रक्षणे, भोजने च। संरक्षण करना, पालन करना, खाना, भक्षण करना।

भुडि-भुण्ड (भुण्डते) = भरणे, आभरणे, स्वीकारे, परिधाने। पहनना, स्वीकार करना। (भुण्डते - परिदधाति, स्वीकरोति। भुण्डः, भुण्डकः, भुण्डानः - परिधातरि। भुण्डिः, भुण्डुः, भुण्डनम्, भुण्डनीयम् - आभरणे, स्वीकारे)।

भुण्ड-भुडि (भुण्डते) = भरणे, आभरणे, स्वीकारे, परिधाने। पहनना, स्वीकार करना। (भुण्डते - परिदधाति, स्वीकरोति। भुण्डः, भुण्डकः, भुण्डानः - परिधातरि। भुण्डिः, भुण्डुः, भुण्डनम्, भुण्डनीयम् - आभरणे, स्वीकारे)।

भुम्म (भुम्मयति) = आर्भटे, गर्जने। गर्जन करना, मुख से ध्वनि करना। (भुम्मयति - मुखेन ध्वनति। भुम्मकः - मुखेन ध्वनिता। भुम्भूः - मुखेन ध्वननम्)।

भुरण् (भुरण्यति) = धारण-पोषणयोः। पालन करना, धारण करना।

भू (भवति) = सत्तायाम्। (भू धातुः सत्तायां प्रयुज्यते। सा भवति, स भवति, तद्भवति। सत्तायां यथा - विरला भवन्ति सन्तः, सन्तीत्यर्थः। मङ्गले - पुत्रस्य भूतिः कार्या, मङ्गलमित्यर्थः, शुभमिति यावत्। वृद्धौ - गोत्रस्य भूतिः। वृद्धिरित्यर्थः, उन्नतिरिति यावत्। निवासे - भवनम्, गृहमित्यर्थः।

व्याप्तौ - विश्वं भवति, व्याप्नोतीत्यर्थः। अभिप्राये - इत्ययं भावः, अभिप्रायः इत्यर्थः, रहस्यमिति यावत्। शक्तौ - तन्तुर्भवति, शक्नोतीत्यर्थः, दृढो भवतीति यावत्। प्रादुर्भावे - अक्रूरो भवति, जायत इत्यर्थः, शान्तो भवतीति यावत्। गतौ - भूता, गता इत्यर्थः)। होना, रहना, उत्पन्न होना। अधि - सत्ता चलाना, शासन करना। अनु - समझना, जानना। अभि - जीतना, पीड़ा देना। उत् - उत्पन्न होना। परा - पराभव करना, जीतना। प्र - जाना, दृष्टिगोचर होना, दिखाई देना, प्रकट होना, शासन करना। प्रति - प्रतिकार में देना। परि - अपमान करना, तिरस्कार करना, पालन करना, देखना। व्यति - परस्पर मित्र होना। सम् - होना, उत्पन्न होना, समावेश होना, हो सकना। (भूः, भूमिः - भूमिः - पृथिवी। भूतिः - ऐश्वर्यम्। भुवनं - देशः। भावः - प्रकारः। भावनम् - विश्वासः। भाव्यम् - भावयितुं योग्यम्। भावुकम्, भविकम्, भव्यम् - कल्याणम्। भवितव्यम् भवनीयम् - भवितुं योग्यम्। प्रभवः - जन्म। विभवः - ऐश्वर्यम्। पराभवः - पराजयः। प्रभुः, विभुः - राजा। शम्भुः - आनन्दरूपः। शम्भूः - सुखस्थानम्)।

भू (भावयते, भावयति; भवते भवति) = प्राप्तौ। प्राप्त होना, मिल जाना, एकत्र करना, चिन्तन करना। (भावयते - गच्छति। भावनम्, भावनीयम् - गतिः)।

भू (भावयति) = अवकल्पने, कल्पनायाम्। कल्पना करना। (भावयति - कल्पयति, कल्पनां करोति। भावना - कल्पना)।

भूयः (अव्यय) = पुनः पुनः, बार-बार, बहुत।

भूयसीः (अव्यय) = पुनः पुनः, बार-बार, बहुत।

भूयिष्ठाम् (अव्यय) = पुनः पुनः, बार-बार, बहुत।

भूष् (भूषति, भूषयति, भूषयते) = अलंकारे, शृंगारे। संवारना, अलंकृत करना। (भूषयति - अलङ्करोति। भूषणम्, भूट्, भूषा, भूषणीयम् - शृङ्गारे। भूष्यम्, भूषणम्, भूषा - आभरणे। भूषितम् - अलंकृतम्)।

भेण् (भेणति) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, गत्यां प्रेरणे सहने च। जाना, प्रेरणा करना, सहना। (भेणति - सान्त्वयति। भेणम् - सान्त्वनम्, सहनम्। भेणा - विबन्धनम् (खूंटा)।

भेष् (भेषति, भेषते) = भये गतौ च। डरना, जाना। (भेषति, भेषते - बिभेति। भेट्, भेषन्, भेषमाणः, भेषकः, भेषः - भीरौ। भेषिः, भेष्टिः , भेषा, भेषणम्, भेषणीयम्, भेष्यम्, भैष्यम् - भये)।

भोः (अव्यय) = हे (आदर के साथ बुलाने में)।

भ्यस् (भ्यसते) = भये। डरना। (भ्यसते - बिभेति। भ्यसकः, भ्यासमानः - भीरुः। भ्यसिः, भ्यसनम्, भ्यसुः, भ्यसनीयम्, भ्यस्यम् - भये)॥

भ्रक्ष (भ्रक्षति, भ्रक्षते) = अदने। खाना।

भ्रज् (भ्रजति) = पाके, पचनकर्मणि, दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना, पकाना, भूँजना। (भ्रजति - पाकं करोति, प्रकाशते। भ्रजन्, भ्रष्टः, भ्रष्टवान् - पक्तरि। भ्रष्टिः, भ्रष्टम्, भ्रजनम्, भ्रजनीयम् - पाके, प्रकाशे)।

भ्रञ्ज (भृज्ञति, भृज्ञते) = पाके। पकाना, भूँजना।

भ्रण् (भ्रणति) = शब्दार्थः। शब्द करना।

भ्रम् (भ्रमति, भ्रम्यति, भ्राम्यति) = चलने, गतौ, अनवस्थाने, भ्रमणे। अस्थिर होना, भ्रमण करना, भ्रान्त होना, चक्राकार घूमना, इधर-उधर घूमना, भटकना। वि - भ्रम़ होना, क्रीडा करना, खेलना। सम् - सम्मान करना, सत्कार करना, भ्रम़ होना। (भ्रमति - चलति। भ्राम्यति - एकत्र न स्थिरो भवति। भ्रमन्, भ्रमकः, भ्रमरः, भ्रामकः, भ्रान्तः - चलितरि। भ्रमरका, भ्रमणम्, भ्रामणम्, भ्रमणीयम्, भ्रान्तिः, भ्रमा, भ्रमतिव्यम्, भ्रम्यम्, भ्राम्यम् - भ्रमणे। भ्रमन्, भ्रमकः, भ्रान्तः, भ्रान्ता, भ्रान्तवान्, भ्रमी, भ्रमरः, भ्रमरकः - व्रजनशीलः)।

भ्रंश (भ्रंशते; भ्रंश्यति) = अवस्रंसने, अधःपतने, नीचैः पतने। भ्रष्ट

होना, पतित होना, गिरना। (भ्रंश्यति - पतति। भ्रंशन्, भ्रंशकः, भ्रष्टवान्, भ्रष्टा - नीचैः पतिते। अपभ्रंशः - विकृतः शब्दः। भ्रंशनम्, भ्रंशनीयम्, भ्रष्टम्, भ्रष्टिः, भ्रष्टव्यम् - अधः पतने)।

भ्रंस (भ्रंसते) = अवस्रंसने, पतने। भ्रष्ट होना, पतित होना, गिरना।

भ्राज् (भ्राजते) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना। (भ्राजते - प्रकाशयति। भ्राट्, भ्राजमानः - प्रकाशयिता। भ्राजिः, भ्राजम्, भ्राजनम्, भ्राजनीयम् - प्रकाशे। भ्राजकः, भ्राजमानः - प्रकाशितरि। भ्राट्, भ्राजिः, भ्राजुः, भ्राजनम्, भ्राजनीयम्, भ्राज्यम् - प्रकाशे)।

भ्राश् (भ्राशते, भ्राश्यते) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना।

भ्रास् (भ्रासते) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना। (भ्रासते - प्रकाशते, दीप्यते। भ्राः, भ्रासमानः - दीपिता। भ्रासम्, भ्रासिः, भ्रासितम्, भ्रासनम्, भ्रासनीयम् - दीपने)।

भ्री (भ्रीणाति, भ्रिणाति, भ्रीणाति) = भये भरणे रक्षणे च। डरना, धारण करना, आश्रय देना, रक्षा करना, पालन करना। (भ्रीणाति - रक्षति। भ्रीतः, भ्रीतवान् - रक्षके। भ्रीतम्, भ्रीतिः - रक्षणे)।

भ्रुड् (भ्रुडति) = निमज्जने संवरणे। डूबना, बटोरना, एकत्र करना, ढकना, आच्छादित करना।

भ्रूण् (भ्रूणयते) = आशाविशंकयोः गर्भधारणे च। आशा करना, भरोसा करना, शंका करना, गर्भधारण करना।

भ्रेज् (भ्रेजते) = दीप्तौ, प्रकाशे। प्रकाशित होना, चमकना। (भ्रेजते - अल्पं प्रकाशते (टिमटिमाता है)।

भ्रेष् (भ्रेषति, भ्रेषते) = गतौ चलने, कम्पने। जाना, चलना, कम्पन करना। (भ्रेषति, भ्रेषते - कम्पते। भ्रेट्, भ्रेषः, भ्रेषकः, भ्रेषन्, भ्रेषमाणः - कम्पके। भ्रेषिः, भ्रेष्टिः, भ्रेषणम्, भ्रेषणीयम्, भ्रेष्यम्, भ्रैष्यम् - कम्पने चलने)।

भ्लक्ष (भ्लक्षति, भ्लक्षते) = अदने, भक्षणे, खाद्ये। खाना। (भ्लक्षति,

भ्लक्षते - खादति। भ्लक्षन्, भ्लक्षमाणः, भ्लक्षकः - अतिभक्षयितरि)।।

भ्लाश् (भ्लाशते, भ्लाश्यते) = दीप्तौ। प्रकाशित होना, चमकना।।

भ्लास् (भ्लासते) = दीप्तौ, प्रकाशे। प्रकाशित होना, चमकना। (भ्लासते - दीप्यते। भ्लाः, भ्लासमानः - दीप्यमानः। भ्लासम्, भ्लासनम्, भ्लासनीयम् - प्रकाशे)।

भ्लेष् (भ्लेषति, भ्लेषते) = गतौ, भये। जाना, डरना।

(म)

मक्ष (मक्षते) = दशने। डसना। (मक्षते - दशति। मक्षकः, मक्षमाणः - दंशके। मक्षुः, मक्षुकः, मक्षिका, मक्षणम्, मक्षणीयम् - दशनकर्मणि)।

मख् (मखति) = गत्यर्थौ। जाना, स्थानान्तर करना।

मग् (मगते) = आदाने, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना। (मगः — ग्रहण कर्ता, पुत्रः वा। मगा - ग्रहणसाधनम्, हस्तभाजनम् वा)।

मगध् (मगध्यति) = परिवेष्टने, नीचदास्ये च। घेरना, नीच की सेवा करना।

मघ् (मघते) = कैतवे, खनने, गतिविघ्ने, ऐश्वर्ये। ऐश्वर्य होना। (मघते - ऐश्वर्यवान् भवति। मघवन् - ऐश्वर्यवान्। मघकः - धनिनि। मघम्, मघी, मघू, मघनम्, मघनीयम्, मघ्यम् - ऐश्वर्ये)।

मङ्क् (मङ्कते) = मण्डने, भूषणे, गत्यर्थः, गतौ। संवारना, भूषित करना, अलंकृत करना, जाना। (मङ्कते - भूषयति। मङ्कः, मङ्ककः, मङ्कमानः - भूषयितरि। मङ्किः, मङ्कुः, मङ्करी, मङ्कणी, मङ्क्यम्, मङ्कनम्, मङ्कनीयम् - भूषणे)।

मङ्ख (मखति, मङ्खति) = गत्यर्थः, गतौ। जाना, स्थानान्तर करना।

मङ्ग (मङ्गति) = गत्यर्थः, गतौ, कूर्दने। जाना। (मङ्गति - उत्प्लुत्य गच्छति। मङ्गः - कूर्दकः, वानरः वा)।

मङ्घ (मङ्घति) = मण्डने। संवारना, भूषित करना, अलंकृत करना।

मङ्घ (मङ्घते) = गत्याक्षेपे, कैतवे च, खनने, गतिविघ्ने च। जाना, प्रारम्भ करना, दोष लगाना, निन्दा करना, ठगना, जुआ खेलना। (मङ्घते - खनति। मङ्घम्, मङ्घी, मङ्घू, मङ्घनम्, मङ्घनीयम्, मङ्घ्यम् - खनने)।

मच् (मचते) = कल्कने, ऋणप्रदाने। गर्व करना, दुराचारी होना, बोलना, पीसना, कूटना। (मचते - ऋणं ददाति। मचम्, मचि, मचु, मचनम्, मचनीयम्, मच्यम् - ऋणप्रदाने)।

मच्छ (मच्छति) = गतौ, परिचये। पहचानना। (मच्छति - परिचिनोति। मच्छम् - लक्षणम्, मत्स्यः वा)।

मज (मजति) = शब्दार्थः। शब्द करना, कामातुर होकर शब्द करना।

मज्ज (मज्जति) = शुद्धौ, निर्मलीकरणे। स्नान करना, नहाना, धोना, स्वच्छ करना। नि - डूबना, डुबकी लगाना। (मज्जति - निर्मलो भवति। मज्जः, मज्जकः - निर्मलभवितरि। मज्जनम्, मज्जनीयम् - शुद्धौ)।

मञ्च (मञ्चते) = धारणोच्छ्रायपूजनेषु, कल्कने, धारणे, ऋणप्रदाने। धारण करना, ऊँचा उठाना, मचान बनाना, पूजित होना। (मञ्चिका, मञ्चः, मञ्चकः, मञ्चमानः - धारके, परिधारयितरि। मञ्चनम्, मञ्चनीयम् - धारणे। मञ्चुः, मञ्चिः, मञ्चः - उच्चासनः, खट्वा वा)।

मञ्ज (मञ्जति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां मञ्जुले च। हिंसा करना, जाना। (मञ्जति - हिनस्ति। मञ्जरः - हिंसकः, विडालः वा)।

मट् (मटति) = उपद्रवे, सङ्घाते, संश्लेषे। राशि करना, ढेर करना, सञ्चित करना। (मटति - उपद्रवति। मटा - जटा)।

मट्ट (मट्टति) = भूषायाम्, शृङ्गारे। संवारना, भूषित करना, अलंकृत करना। (मट्टति - भूषयति। मटनम्, मट्टनम् - भूषणम्)।

मठ् (मठति) = मद-निवासयोः, निवासे, निवासक्रियायाम्। गर्वीला होना, रहना, वसति करना। (मठति - निवसति। मठः - निवासस्थानम्)।

मड्ड (मड्डति) = उच्चैः ध्वनौ, उच्चैः शब्दे। उच्च स्वर से बोलना। (मड्डति - उच्चैः ध्वनति। मड्डः - उच्च शब्दकर्ता, वाद्यविशेषः वा)।

मण् (मणति) = गतौ, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। अस्पष्ट शब्द करना, कहना। (मणति - कथयति। मणः - कथनम्)।

मण्ट (मण्टति) = दाहे, ज्वलने। जलना। (मण्टति - ज्वलति। मण्टः - ज्वलनम्)।

मण्ठ (मण्ठते) = शोके, दुःखे। दुःख करना, उत्कण्ठित होना। (मण्ठते - दुःखितो भवति। मण्ठः, मण्ठकः, मण्टमानः - दुःखिनि। मण्ठिः, मण्ठुः, मण्ठा, मण्ठनम्, मण्ठनीयम् - दुःखक्रियायाम्)।

मण्ड (मण्डति, मण्डयति, मण्डयते) = भूषायाम्, भूषणे, शृङ्गारे, हर्षे, विभाजने, वेष्टने, परिवेष्टने। सजाना, संवारना, अलंकृत करना, आनन्दित होना, अलग करना, लपेटना। (मण्डति - विभूषति। मण्डनम् - भूषणम्। मण्डनम्, मण्डनीयम् - आभरणे। मण्डा - शिरः। मण्डा - शीकायः (शीकाकाई, आमलकी वा)। मण्डुः, मण्डूकः - प्राणिविशेषः (मेंढक)। मण्डूकः - भेकः। मण्डी - जानोः अधः शरीरावयवः)।

मत् (सर्वनाम) = मुझसे।

मथ् (मथति) = विलोडने। मथना, विचार करना, मनन करना, हिलना।

मद् (मदति) = हर्षग्लेपनयोः। हृष्ट होना, हर्षित होना, थकना, श्रान्त होना।

मद् (मादयते) = तृप्तियोगे, स्तुत्ये, कामे। तृप्त करना, समाधान

करना, स्तुति करना, कामना करना।(मादयते - तृप्तो भवति।मत्तः, मदी, मदानः - तृप्तः।मदम् - तृप्तम्)।

मद् (माद्यति, माद्‌यति) = हर्षे, स्तुत्ये, कामे, सन्तुष्टे, सन्तोषे।हृष्ट होना, हर्षित होना, स्तुति करना, कामना करना।(माद्यति, माद्‌यति - हृष्टो भवति। मत्तः, मत्तवान्, मत्ता, मदन्, मादकः - सन्तुष्टे। मत्, मदम्, मदनीयम्, मत्तव्यम्, मत्तम् - सन्तोषे)।

मध्-मद् (मदति, मादयते, माद्‌यति) = हर्षे, स्तुत्ये, कामे, सन्तुष्टे, माधुर्ये। मधुर होना, मीठा होना।

मध् - मद् (मदति) = हर्षग्लेपनयोः। हृष्ट होना, हर्षित होना, थकना, श्रान्त होना।

मध् - मद् (मादयते) = तृप्तियोगे। तृप्त करना, समाधान करना। (मादयते - तृप्तो भवति। मत्तः, मदी, मदानः - तृप्तः। मदम् - तृप्तम्)।

मध् - मद् (माद्यति, माद्‌यति) = हर्षे। हृष्ट होना, हर्षित होना। (माद्यति, माद्‌यति - हृष्टो भवति। मत्तः, मत्तवान्, मत्ता, मदन्, मादकः - सन्तुष्टे। मत्, मदम्, मदनीयम्, मत्तव्यम्, मत्तम् - सन्तोषे)।

मध्ये (सर्वनाम) = बीच में।

मन् (मन्यते) = ज्ञाने। जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना। अनु - अनुमोदन करना, अनुमान करना। अभि - अभिमान करना, इच्छा करना, चाहना। अव - अपमान करना, भर्त्सना करना। सम् - अनुमोदन देना, स्वीकार करना।(मन्यते - जानाति। मन्ता, मनकः, मनानः, मतः, मतवान् - ज्ञानिनि। मननम्, मननीयम्, मन्तव्यम् - मननयोग्यम्)।

मन् (मानयते) = स्तम्भे, स्थित्याम्। बन्द करना, स्थिर रहना, मन्द होना, गर्वीला होना, प्रतिकूल होना, रुकना।(मानयति - उत्तिष्ठते। मनानः - उत्थायकः। मनस् - क्रमः। मननम् - स्मरणम्। मननीयम् - स्मर्तुं

योग्यम्)।

मन्-म्ना (मनति) = अभ्यासे, पुनः पुनः आवृत्तौ। विचार करना, मनन करना। (मनति - पठति अभ्यसते। म्नाः, म्नः, म्नाता मायकः - पाठके, विदुषि। म्नाम्, म्नेयम्, म्नानीयम्, म्नातव्यम्, म्नितम्, म्नितिः, आम्नायः, समाम्नायः - विद्यासु)।

मनाक् (अव्यय) = एकपक्षीय।

मनु (मनोति, मनुते) = अवबोधने, ज्ञाने। जानना, समझना, मान्य करना, स्वीकार करना, विचार करना, मानना। अनु - अनुमोदन करना, अनुमान करना। अभि - अभिमान करना, इच्छा करना, चाहना। अव - अपमान करना, भर्त्सना करना। सम् - अनुमोदन देना, स्वीकार करना। (मनोति, मनुते - जानाति। मन्वन्, मन्वानः, मन्ता, मनकः, मन्तः, मन्तवान् - ज्ञातरि)।

मन्तु (मन्तूयति, मन्तूयते) = क्रोधे, अपराधे। अपराध करना, क्रोध करना।

मन्त्र (मन्त्रयते, मन्त्रति) = विचारणे, मनने, गुप्तपरिभाषणे। गुप्त भाषण करना, मन्त्रणा करना। आ - सत्कार करना, सम्भाषण करना। नि - आमन्त्रण करना, बुलाना।(मन्त्रयति - रहसि वदति।।मन्त्री - विचारकः, सचिवः वा। मन्त्रणम् - विचारणा)।

मन्थ (मन्थति; मथ्नाति) = मन्थने, विलोडने, मन्थनकर्मणि। बिलोना, मथना, पीड़ा देना, हिंसा करना।(मन्थति, मथति - विलोडयति। मन्था - मन्थनसाधनी (मथनी)। मथनम्, मथनीयम् - मन्थनकर्मणि)।

मन्थ (मन्थति) = हिंसायाम्। हिंसा करना। (मन्थति - हिंसयति ताडयति वा। मन्था - युद्धम्)।

मन्द-मदि (मन्दते) = हर्षग्लपनयोर्मदिः, मदी हर्षे, विनाशे च, स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्ति-गतिषु। स्तुति करना, तुष्ट करना, आनन्द

करना, उन्मत्त होना, सोना, चाहना, चमकना, प्रकाशित होना। (मित्रं मदयति - हर्षयति। रिपुं मदयति - विनाशयति)।

मभ्र (मभ्रति) = गतौ, चलने, अङ्गुष्ठने, अङ्गुष्ठेन चिह्ने। जाना, स्थानान्तर करना। (मभ्रति - अङ्गुष्ठं करोति (अङ्गुष्ठेन चिह्नयति)। मभ्रन् - अङ्गुष्ठम्)।

मम (सर्वनाम) = मेरा। (त्रिलिंग)

मय् (मयते) = गतौ, क्लिष्टे कार्ये। जाना, स्थानान्तर करना, क्लिष्ट कार्य करना। (मयते - क्लिष्टं कार्यम् करोति। मयः - क्लिष्टकार्यकर्ता, गन्ता वा। मयूरः - कलापी। मयकः, मायकः, मयमानः, मायावी, मायिकः, मायी, मय्यः, माय्यः - क्लिष्टे कार्ये, मायाविनि वा)।

मया (सर्वनाम) = मेरे द्वारा।

मयि (सर्वनाम) = मुझमें।

मयूख् (मयूखति) = गतौ, रिङ्गणे। जाना। (मयूखति - पाटयति, रिङ्गति)।

मर्क (मर्कते) = कूर्दने, आदाने, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना, कूदना। (मर्कते - कूर्दते। मर्कः, मर्कटः - वानरः)।

मर्च (मर्चयति, मर्चयते) = शब्दार्थः। शब्द करना।

मर्ब (मर्बति) = गतौ, गत्याम्। जाना, चलना। (मर्बति - रहस्यं गच्छति। मर्बन् - स्वल्पः प्रकाशः)।

मर्व (मर्वति) = पूरणे, भरणक्रियायाम्। पूर्ण करना, भरना। (मर्वति - भरति। मर्वः - भरणम्, पूरणम्, विस्तारः, भक्ष्यविशेषो वा)।

मल् (मलति, मलते) = धारणे घर्षणे। घर्षण करना, धारण करना, धरना, पकड़ना, चिपकाना, लटकाना, पहनना। (मलति - घर्षति। मलते - घर्षयति। मलकः, मलमानः - घर्षितरि। मालम् - अवरोधरहितं स्थानम्, समभूमिः। मालिका - आपणम्)।

मल्ल (मल्लति, मल्लते) = धारणे, सहने, घर्षणे। (मल्लति - संघर्षति (झगड़ता है)। मल्लते - सहते। मल्लकः, मल्लमानः - सहनकर्तरि। मल्लः - मल्लयुद्धकर्ता (पहलवान)। मल्लनम्, मल्लनीयम् - सहने)।

मल्ह (मल्हते) = प्राधान्यपरिभाषणहिंसादानेषु, मुख्ये, परिभाषणे, हिंसायां, दाने च। मुख्य होना, कठोर बोलना, हिंसा करना, दान करना। (मल्हते - कठोरं भाषते। मल्हकः, मल्हमानः - कठोरभाषितरि। मल्हिः, मल्हनम्, मल्हनीयम् - कठोरवचने)।

मव् (मवति) = बन्धने, पालने च। बांधना, रोकना, पालन करना। (मवति - पालयति, विहन्ति। मवः, मावः, मावा, मावुः - चूतवृक्षः, फलम् वा। मवनम् - विधानम्, क्रमः)।

मव्य (मव्यति) = बन्धने, पालने च। बांधना, रोकना। (मव्यति - बध्नाति। मव्यः - बन्धकः)।

मश् (मशति) = शब्दे रोषे च। शब्द करना, क्रोध करना। (मशति - ध्वनति। मशकम्, मश्, मशितम्, मशिः, माशः, माशुः, मशुः - ध्वनौ)।

मष् (मषति) = हिंसार्थः, हिंसायाम्, दशने, दंशने वा। मार डालना, दुःख देना। (मषति - दशति। मषकः - दंशकः (मच्छर)।

मष्क (मष्कते) = गत्यर्थः, गतौ, त्यागे। जाना, त्याग करना। (मष्कते - त्यजति। मष्करिः - विरक्तः)।

मस् (मस्यति) = परिमाणे, इयत्तापरिच्छेदे। रूपान्तर करना, आकार बदलना, मापना, गति करना। (मसन्, मस्तः, मस्तवान्, मसकः, मस्ता - परिमापके। मसनम्, मस्तम्, मस्तव्यम्, मसिः, मसनीयम्, मस्यम्, मास्यम् - परिमाणे)।

मंस-मस् (मस्यति) = परिमाणे, इयत्तापरिच्छेदे गतौ। रूपान्तर करना, आकार बदलना, मापना, गति करना।

मस्त (मस्तयति) = धारणे, सहने। धारण करना, सहना। (मस्तयति

- सहते। मस्तम्, मस्तकम् - शिरसि)।

मह् (महति; महयति, महयते) = वृद्धौ, वर्धने, पूजायाम्, महत्वे। सम्मान करना, पूजा करना। (महति - वर्धते। महयति - पूज्यो भवति। महन्तः - पूज्यः। मही, महः - भूमौ। मट्, महनम्, महनीयम्, महितव्यम्, माह्यम्, माहितम्, महत्, महितम्, महिमन् - पूज्ये। महन्ती, महती - पूज्यायाम्। महकः, महान्, महन्तः, महिष्ठः - महति)।

मंह् (मंहते) = वृद्धौ, उत्पद्ये, अङ्कुरे। बढ़ना, उत्पन्न होना, अंकुरित होना।(मंहते - उत्पद्यते, अङ्कुरितो भवति। मंहकः, मंहमानः - उत्पद्यमानः। मंहिः, मंहुः, मंहम्, मंहनम्, मंहनीयम् - उत्पादे, अङ्कुरीभावे)।

मंह् - महि (मंहयति, मंहयते; मंहति) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, कहना।

महि - मंह (मंहयति, मंहयते; मंहति) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, कहना।

मही (महीयते) = पूजायाम्, महत्वे। पूजनीय होना।

मह्यम् (सर्वनाम) = मेरे लिए।

मा-माम् (सर्वनाम) = मुझको। (त्रिलिंग)

मा-मि (माति, मिमीते; मयते, मायते, मीमांसते) = मापने, माने, परिमाणे, शब्दे च। मापना, तौलना, मान करना, परिमाण करना, शब्द करना। अनु - तर्क से सिद्ध करना। उप - उपमा देना, तुलना करना, समानता दर्शाना। परि - मापना, गिनना, तोलना, परिमाण करना। प्र - प्रमाण होना।(माति - मापनम् करोति। मापन्, मापकः, प्रमाता - प्रमापतरि। मानम्, तिम्, मितिः, मितव्यम्, मेयम् - माने। मीमांसते - परिमाययति। प्रमाता - मानकर्त्री। मायकः, मापकः, मायमानः, मितवान् - प्रमातरि। मितिः, मितम्, मातव्यम्, मायम्, मानम्, मापनीयम् - मापने। मयते - परिमिमीते। माता, मायमानः - परिमापकः। मानम्, मायनम्, मायनीयम् -

मानदण्डम् (मानसाधनम्)।

माकिः (अव्यय) = मा कश्चित्, नहीं कोई।

मांक्ष (मांक्षति)) = मांक्षायाम्, काङ्क्षायाम्। इच्छा करना, चाहना। (माङ्क्षति - इच्छति। माङ्क्षा - इच्छा)।

मान् (मानयति, मानयते; मानति) = पूजायाम्, श्रेष्ठतायाम्। ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा करना, शोध करना, सत्कार करना, मानना। प्र - प्रमाण करना। अप - अव - अपमान करना, तिरस्कार करना। (मानयति - पूज्यो श्रेष्ठो ज्येष्ठो वा भवति। मानी, मानकः, मान्यः - ज्येष्ठे श्रेष्ठे। माननम्, माननीयम् - ज्येष्ठतायाम्। मानिनी - पतिव्रता)।

मान् (मीमांसते) = पूजायाम्, आदरे। पूजा करना, सत्कार करना, आदर करना। (मीमांसते - आद्रियते। मीमांसः, मीमांसकः - आदरिता। मीमांसा, मानम्, मान्यम्, मानिः, मान्, माननम्, माननीयम् - मान्यतायाम्)।

माम् (सर्वनाम) = मुझको।

मार्ग (मार्गयति, मार्गयते; मार्गति) = संस्कारे, अन्वेषणे - गवेषणे। ढूँढ़ना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना। (मार्गयति - अन्वेषयति। मार्गन्, मार्गी, मार्गकः - अन्वेषकः। मार्गः - अध्वा)।

मार्ज (मार्जयति, मार्जयते) = शब्दार्थः शुद्धौ। शब्द करना, शोधन करना, शुद्ध करना। (मार्जयति - शोधयति। मार्जन्, मार्जकः - शोधकः। सम्मार्जनम् - लेपनम्। सम्मार्जनी - लेपनकर्त्री (बुहारी - झाड़ू)।

माह् (माहति, माहते) = माने, वर्तने। मापना, गिनना, तौलना। (माहति, माहते - वर्तयति। माहः, माहकः, माहमानः, माहन् - वर्तके। माहनम्, माहनीयम् - वर्तनम्)।

मि (मयति) = गतौ, गमने। जाना चलना। (मयति - चलति। मिः - गन्ता, बालिका वा)।

मि - मिन् (मिनोति, मिनुते) = प्रक्षेपणे, रक्षणे, स्थापने। रक्षा करना,

मानना, फेंकना, फैलाना।(मिनोति, मिनुते - रक्षति। मितः, मितवान्, मेता, मयन्, मयानः - स्थापकः, रक्षकः। मितिः, मितम्, मेतव्यम्, मयनम्, मयनीयम्, मित् - माने)।

मि - मिम् (मिमते) = प्रक्षेपणे, रक्षणे, स्थापने। रक्षा करना, स्थापन करना, रखना, मानना, फेंकना, फैलाना।

मिच्छ (मिच्छति) = उत्क्लेशे, कष्टे, श्रमे। पीड़ा करना, दुःख देना, रोकना, निषेध करना।(मिच्छति - उत्क्लेशयति। मिच्छन्, मिच्छकः, मिच्छनम्, मिच्छनीयम् - उत्क्लेशे)।

मिञ्ज (मिञ्जयति, मिञ्जयते; मिञ्जति) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

मिण्ट (मिण्टति) = प्रहरणे, प्रहारे। प्रहार करना।(मिण्टति - प्रहरति। मिण्टा - प्रहारः)।

मिण्ठ (मिण्ठति) = व्यभिचारे, व्यभिचारक्रियायाम्। व्यभिचार करना। (मिण्ठति – व्यभिचरति। मिण्ठः - व्यभिचारी)।

मिथ् (मेथति, मेथते) = मेधाहिंसनयोः, संगमे च। समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, हिंसा करना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ना, संयुक्त करना।

मिथः (अव्यय) = परस्पर।

मिथ्या (अव्यय) = झूठ।

मिद् (मेदति, मेदते) = मेधा-हिंसन-गतिसु। समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, हानि करना।(मेदति, मेदते - चलति, हिंसयति। मिद्, मेदकः, मेदमानः - गन्तरि। मिदिः, मेदुः, मिन्नम्, मिद्यम्, मैद्यम्, मिदुलम् - गतौ)।

मिद् (मेदते; मेद्यति, मेदयति, मेदयते) = स्नेहने, गतौ, प्रीतौ, मृदुले, संघर्षणे। स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, प्रीति करना, नरम

होना, मृदुल होना, संघर्षण करना।(मेदयति, मेद्यति - स्निह्यति। मेदन्, मेदकः, मिन्नः, मिन्नवान् - स्नेहके। मेदते - स्निग्धो भवति। मेदकः, मेदमानः, स्नेहनकर्तरि। मिद्, मिदिः, मिदुः, मेदनम्, मेदनीयम्, मेद्यम्, मैद्यम्, मिन्नम् - स्नेहने। मेदस्, मेदा - स्नेहः, शारीरो धातुविशेषः। मेदुरम् - मृदु। मेदिः - संघर्षणम् (टकराना)। मिदुः - शनैः। मिद्या - गन्तव्यस्थानम्)।

मिध् (मेधति, मेधते) = मेधाहिंसनयोः, संगमे च। समझना, जानना, पीड़ा करना, दुःख देना, एकत्र करना, जोड़ना, जुड़ना, संयुक्त करना।

मिन्द (मिन्दयति, मिन्दयते; मिन्दति) = स्तुति-मोद-मद-स्वप्न-कान्तिगतिषु, स्तुतौ, आनन्दे, मदे, स्वप्ने, कान्तौ, गतौ, स्नेहने च। स्निग्ध होना, पिघलना, अभ्यञ्जन करना, आञ्जना, प्रीति करना, प्यार करना, नरम होना। (मिन्दते - स्तौति। मिन्द्रः, मिन्दः, मिन्दकः, मिन्दमानः - प्रशंसके। मिन्दनम्, मिन्दिः, मिन्दनीयम्, मिन्दा - स्तुतौ)।

मिन्व (मिन्वति) = सेवने सेचने च। सेवा करना, शुश्रूषा करना, सींचना, प्रोक्षण करना, गीला करना। (मिन्वति - सिञ्चति)।

मिल् (मिलति, मिलते) = संगमे, श्लेषणे, सहने। मिलना, संयुक्त होना, जुड़ना। (मिलति - धीरो भवति, धैर्यम् दधाति। मिलन्, मिलितः - धीरे। मेलनम्, मेलनीयम्, मेलम्, सम्मेलम् - सहने)।

मिश् (मेशति) = शब्दे रोषकृते च। शब्द करना, ध्वनि करना, क्रोध करना। (मेशति - ध्वनिं करोति। मेशः - भ्रमरः। मिक्, मिशिः, मिशः, मिशुकम्, मेशनम्, मेशानम्, मिशितम्, शब्दे, क्रोधे)।

मिश्र (मिश्रयति, मिश्रयते) = सम्पर्के, मेलने। मिश्रित करना, एकत्र करना। (मिश्रयति - सम्पर्कयति। मिश्रापणम् - मिलितम्)।

मिष् (मिषति) = स्पर्धायां वाचि, विवादे। स्पर्धा करना, होड़ लगाना, विवाद करना, झगड़ना, कलह करना। (मिषति - विवदते)।

मिष् (मेषति) = वपने, सेचने, घर्षणे। सींचना, प्रोक्षण करना। नि -

पलक मारना। उत् - आंख खोलना। (मिष्टा, मिषिता, मिषाणः, मिषकः, मिषुकः - वप्तृषु। निमिषन्, निमेषकः - चक्षुः निमीलकः। उन्मिषन्, उन्मेषकः - चक्षुरुद्घाटकः। अनिमिषाः - सततं जागरूकाः)।

मिह्-मीढ् (मेहति) = सेचने, घर्षणे, परिभावने। घर्षण करना, दबाना, गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना। (मेहति - सेचति, घर्षति। मेढा - परिभावकः (दबाने वाला)। मेढः, मेहः, मेहनम्, मीढुः - सेचकः। मीढुष्टमः - सेचकेषु श्रेष्ठः। मीढम् - घर्षकः)।

मी (माययति, माययते; मयति) = गतौ। समझना, जानना, जाना। (माययति - गच्छति। मायी, मायावी - मायायुक्ते। मायनम्, मायकम् - मनसः चाञ्चल्ये)।

मी (मीयते, मीनाति, मीनीते) = हिंसायाम्। मारना, मार डालना या दुःख देना, देहत्याग करना। (मीयते, मीनाति, मीनीते - हिनस्ति। मीनवान् - हिंसकः। मीनम्, मयनम्, मयनीयम् - हिंसने। मयानः, मयः - घातकः। मीनः, मीनम्, मीतिः, मयनम्, मयनीयम् - हिंसायाम्)।

मीढ-मिह् (मेहति) = सेचने, घर्षणे, परिभावने। घर्षण करना, दबाना, गीला करना, सींचना, प्रोक्षण करना। (मेहति - सेचति, घर्षति। मेढा - परिभावकः (दबाने वाला)। मेढः, मेहः, मेहनम्, मीढुः - सेचकः। मीढुष्टमः - सेचकेषु श्रेष्ठः। मीढम् - घर्षकः)।

मीम् (मीमति) = गतौ शब्दे च। जाना, शब्द करना।

मील् (मीलति) = निमेषणे, अक्षिनिमेषे। आँखें मूँदना, पलक मारना। उत् - जगाना, खिलना, फैलना। नि - बन्द करना या होना। (मीलति - चक्षुषी निमीलयति। मीलनम् - अक्षिस्पन्दनम्)।

मीव् (मीवति) = स्थौल्ये, स्थूलीभावे। मोटा होना, स्थूल होना। (मीवति - स्थूलो भवति। मीवः - स्थूलः)।

मृ (मरति, म्रियते) = गतौ, प्राणत्यागे, मरणे। मरना, देहत्याग

करना। (मरति - गच्छति। मर्त्यः - मनुष्यः। म्रियते - मरति। म्रियः, म्रियमाणः - मर्ता)।

मृक्ष (मृक्षति) = संघाते। ढेर करना, बटोरना, एकत्र करना।

मृख् (मर्खते) = विवादे, चलने। (मर्खते - विवदते। मूर्खः, मर्खः, मर्खकः, मर्खमाणः - विवदितरि। म्राख मर्खः, मर्खणम्, मर्खणीयम्, मृखिः - विवादे)।

मृग् (मृग्यति; मृगयते) = अन्वेषणे, गवेषणे। मृगया करना, शिकार करना, ढूँढ़ना। (मृगयते - गवेषयति)।

मृज् (मार्जयति, मार्जयते, मार्जति) = शौच-अलङ्कारयोः, शोधने, अलङ्करणे च। स्वच्छ करना, धोना, पवित्र होना, संवारना, अलंकृत करना। (मार्जयति - शोधयति। मार्जन्, मार्जकः - शोधके। मार्जनम्, मार्जनीयम् - स्वच्छतायाम्)।

मृज् (मार्जति, मार्ष्टि) = मार्जने, शुद्धौ। धोना, स्वच्छ करना, संवारना। अप, प्र - स्वच्छ करना, झाड़ना, बुहारना, पवित्र करना। (मार्ष्टि - शुद्धम् करोति। मार्ष्टा, मार्जन्, मार्जकः, मार्क् - शोधके। मार्जनम्, मार्जनीयम्, मार्ष्टव्यम्, मार्ज्यम्, मृष्टिः, मृष्टम् - शुद्धौ। सम्मार्जनी - मार्जनकत्री (झाड़ू, बुहारी)।

मृड् (मृडति) = सुखने, सुखे। आनन्द करना, सन्तोष पाना, सुख देना, प्रसन्न करना, सुखी होना, प्रसन्न होना। (मृडति - सुखयति। मृडः - सुखी। मृडनम् - सुखम्)।

मृड् (मृड्णाति) = क्षोदे, सुखने, सुखे। चूर्ण करना, कूटना, पीसना, सुख देना, प्रसन्न करना।

मृण् (मृणति) = छिद्रे, हिंसायाम्। दुःख देना, पीड़ा करना। (मृणति - छिद्रयति)।

मृद् (मृद्नाति) = क्षोदे, मर्दने। पीसना, कूटना, चूर्ण करना, कोमल

बनाना। (मृद्नाति - क्षोदयति। मर्दन्, मर्दकः - क्षोदके। मृत्, मर्दनम्, मर्दनीयम् - क्षोदने, मर्दने)।

मृध् (मर्धति, मर्धते) = संपीडने, रुन्धे, मर्दने। दबाना। (मर्धति, मर्धते - संपीडयति (दबाता है)। मृध्, मर्धन्, मर्धमानः - संपीडकः। मर्धनम्, मर्धनीयम् - संपीडनम्)।

मृध् (मर्द्धति, मर्द्धते) = उन्दने, हिंसायाम्, हिंसने च। मार डालना या दुःख देना, आर्द्र करना, गीला करना, गीला होना।

मृश् (मृशति) = आमर्शने, विमर्शे विचारे। स्पर्श करना, छूना, देखना, विचार करना। परा - बुद्धिपूर्वक कहना, परामर्श देना, मन्त्रणा देना। वि - विचार करना, मनन करना। सम् - स्पर्श करना। (मृशति - विचारयति। म्रष्टा, मर्षकः, मृष्टः, मृष्टवान् - विचारके। मृट्, मर्शः, मर्शनम्, मर्शनीयम्, मृष्टम्, मृष्टिः, म्रष्टव्यम् - विचारकर्मणि। परामर्शः - विचारः, मन्त्रणा)।

मृष् (मृष्यति, मृष्यते; मर्षयति, मर्षयते, मर्षति) = सहने, मार्जने, तितिक्षायाम्। सहन करना, मार्जन करना, शुद्ध करना। आ - क्रोध करना। वि - विपत्ति में पड़ना। (मर्षयति - सहते। मर्षन्, मर्षकः, मृष्टः, मृष्टवान् - षोढरि। मर्षणम्, मर्षणीयम् - सहने)।

मृष् (मृषयति) = क्षान्तौ, सहने। सहन करना। (मृषयति - सहते)।

मृष् (मृष्यति, मृष्यते) = क्षमायां, मिथ्यावचने, सहने च। असत्य बोलना, सहना। (मृष्यति, मृष्यते - मिथ्या वदति। मृष्टः - मृष्टवान्, मर्षकः, मर्ष्टा, मर्षन्, मर्षाणः - मिथ्यावाची, सहनकर्ता। मृष्टिः, मृष्टम्, मृष्टव्यम्, मर्षणम्, मर्षणीयम् - सहने। मृट्, मृषा - मिथ्या)।

मृष् (मर्षति) = सेचने, हसने च, हर्षे, धर्षणे च। प्रोक्षण करना, सींचना। (मर्षति - हसति, धर्षयति। मर्षः - धर्षकः)।

मृषा (अव्यय) = झूठ, व्यर्थ।

मॄ (मृणाति) = हिंसायाम्। मार डालना या दुःख देना, पीछे देना। प्रति - बदलना।

मु (मवते) = बन्धने। बाँधना। (मवते - बध्नाति। मुः, मवकः, मवमानः - निगृहीतरि)।

मु (मवति) = बन्धने। बाँधना। (मवति - बध्नाति। मुः, मवकः, मवमानः - बन्धने, निगृहीतरि वा)।

मुक्ष (मुक्षति) = संघाते। राशि करना, ढेर करना, बटोरना, सञ्चित करना। (मुक्षति - संघीभवति। मुक्षः - संघः। मोक्षः - संघः)।

मुख् (मोखति) = गतौ, अदने। जाना, खाना। (मोखति - अत्ति। मुखम् - अङ्गविशेषः)।

मुच् (मोचते) = कल्कने, धारणोच्छ्रायपूजनेषु, घर्षणे, ऐश्वर्ये, पूजायाम्। पूजा करना, बोलना, कहना, पीसना, ठगना। (मोचते - घर्षयति। मोचनम्, मोचनीयम्, मोच्यम्, मुक्तम्, मुक्तिः - पूजायाम्)।

मुच् (मोचयति, मोचयते) = प्रमोचनमोदनयोः, प्रमोचने, त्यागे। छोड़ना, द्रव्यादि देना, प्रसन्न होना। (मोचयति - त्यजति। । मुक्ता - जलजः (मोती)। मुक्तः, मुक्तवान् - त्यक्तरि। मोचकः - त्यागी। मुक्तम्, मुक्तिः, मोचनम्, मोचनीयम् - त्यागे)।

मुज् (मोजति, मुञ्जति) = शब्दे, शब्दार्थौ, शब्दने, सन्तोषे, हर्षोन्मत्ते। शब्द करना, हर्षोन्मत्त होना। (मोजति - हर्षेणोन्मत्तो भवति। मोजुः - सन्तोषः)।

मुञ्च (मुञ्चति, मुञ्चते) = शब्दे, शब्दार्थौ, शब्दने, मोचने, मोक्षणे - त्यागे। मुक्त करना, छोड़ना, त्याग करना, बोलना, कहना। (मुञ्चते, मुञ्चति - त्यजति। मुञ्चन् - त्यक्तरि)।

मुञ्च (मुञ्चते) = धारणोच्छ्रायपूजनेषु, घर्षणे, ऐश्वर्ये, पूजायाम्, शब्दे, शब्दार्थौ, शब्दने, कल्कने। पूजा करना, बोलना, कहना, पीसना,

कूटना, ठगना, फंसाना, दुराचार करना, गर्व करना। प्र - अतिदान करना, बहुत देना, समर्पण करना, देना। (मुञ्चते - पूजनीयो भवति। मुञ्चः, मुञ्चकः, मुञ्चमानः - पूज्ये। मुञ्चुः - पूर्वजः। मुञ्चिः, मुञ्चनम्, मुञ्चा, मुञ्चनीयम् - महति)।

मुञ्ज (मुञ्जति) = शब्दे, शब्दने, शब्दार्थौ, शब्दने, सन्तोषे, हर्षोन्मत्ते, सम्पीडने। शब्द करना, हर्षोन्मत्त होना, सम्पीडित करना। (मुञ्जति - संपीडयति। मुञ्जिः - बालकः)।

मुट् (मोटति) = मर्दने। घिसना, मर्दन करना, दबाना, मुक्की मारना, मलना।

मुट् (मुटति) = आक्षेप-प्रमर्दनयोः। निन्दा करना, दोष देना, घिसना, मर्दन करना।

मुट् (मोटयति, मोटयते) = संचूर्णने। चूर्ण करना, मर्दन करना, गूँथना। (मोटयति - चूर्णयति। मोटः - चूर्णयिता। मोटी - चूर्णयित्री। मोटनम्, मोटनीयम् - चूर्णनम्)।

मुट् (मुटति) = आक्षेप-प्रमर्दनयोः, कथने मर्दने च। निन्दा करना, दोष देना, घिसना, मर्दन करना। (मुटति - कथयति, मर्दयति। मुट, मोटः, मोटकः - कथके, मर्दके। मोटनम्, मोटनीयम् - कथने, मर्दने)।

मुट्ट (मुट्टति) = प्रमर्दने, उपकारे। उपकार करना। (मुट्टति - उपकरोति।)

मुट्ट (मुट्टयति) = संचूर्णने, स्पर्शे। चूर्ण करना, स्पर्श करना। (मुट्टयति - स्पृशति। मुट्टः - स्पर्शकः। मुट्टनम् - स्पर्शनम्)।

मुड्ड (मुड्डति) = सेचने, घर्षणे। सींचना, घर्षण करना। (मुड्डति - घर्षति। मुड्डुः - घर्षकः, वटुः वा। मुड्डिः - गुदमध्यभागः)।

मुण् (मुणति) = प्रतिज्ञायाम्, प्रतिज्ञाने। प्रण करना, वचन देना। (मुणति - प्रतिजानाति। मोणन्, (मुणन्), मोणः, मोणकः - प्रतिज्ञाता।

मुणिः, मोणनम्, मोणनीयम् - प्रतिज्ञा)।

मुण् (मोणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, सिञ्चने। शब्द करना, सींचना। (मोणति - सिञ्चति। मुणः - सिञ्चनम्)।

मुण्ट (मुण्टति) = खण्डने। खण्ड-खण्ड करना, टुकड़े करना।

मुण्ठ (मुण्ठते) = पालने, पलायने। पालन करना, रक्षा करना, उड़ना, उड़ जाना, भाग जाना। (मुण्ठते - पलायते। मुण्ठः, मुण्ठकः, मुण्ठानः - पलायकर्तरि। मुण्ठिः, मुण्ठुः, मुण्ठा, मुण्ठनम्, मुण्ठनीयम् - तोडने, पलायने)।

मुण्ड (मुण्डति) = खण्डने, अवयवविभागे। चूर्ण करना, क्षौर करना, मुण्डन करना। (मुण्डति - केशान् निकृन्तति, मुण्डयति। मुण्डः, मुण्डिः - मुण्डितः)।

मुण्ड (मुण्डते) = मार्जने, मज्जने, स्नाने। स्वच्छ करना, स्वच्छ होना, डुबकी लगाना। (मुण्डते - निमज्जति। मुण्डकः, मुण्डानः - निमज्जितरि। मुण्डनम्, मुण्डनीयम्, मुण्डिः, मुण्डुः, मुण्ड्यम् - जले निमज्जने)।

मुद् (मोदते) = हर्षे, प्रसन्नतायाम्। आनन्दित होना, प्रसन्न होना, अनु - अनुमोदन करना। (मोदते - हर्षितो भवति। मोदक; - हर्षितः, भक्ष्यविशेषः च। मुत्, मुदम्, मोदम्, मोदनम्, मोदितव्यम्, मोदनीयम्, मुदितम्, मुदिः, मुत्तम्, मुत्तिः, मुदा, मोद्यम् - हर्षे)।

मुद् (मोदयति, मोदयते) = संसर्गे। मिश्रित करना, एकत्र करना। (मोदयति - मिलति)।

मुधा (अव्यय) = व्यर्थ।

मुर् (मुरति) = संवरणे, संवेष्टने, आवेष्टने, कर्षणे, सुखे। घेरना, लपेटना, आकर्षण होना, सुख होना। (मुरति - आवेष्टयति (लपेटता है)। मुरशः - कर्षकः। मोरः - मयूरः। मोरा - सुखम्। मुरजा - वाद्यविशेषः (ढोल)।

मुर्च्छ् (मूर्च्छति) = मूर्च्छने, वैचित्ये, विस्मरणे। विस्मरण होना, अचेत होना, बुद्धिभ्रष्ट होना, मूर्छित होना, मुरझाना।

मुर्वी (मूर्वति) = बन्धने। बांधना, रोकना। (मुर्वति - बध्नाति। मूर्वः - बन्धनम्)।

मुल् (मोलयति, मोलयते) = रोहणे, रोपणे, वपने। बोना, बीजारोपण करना।

मुल् (मोलते) = सहने, धारणे, घर्षणे। धारण करना, सहना, घर्षण करना। (मोलते - सहते। मुलकः, मुलमानः - सोढरि। मुला - स्तनम्, कीलकम्। मुलः - शशः)।

मुल्ल (मुल्लते) = धारणे, घर्षणे, शोचने। पवित्र करना, शुद्ध करना, धारण करना, सहना, घर्षण करना। (मुल्लते - शोचति। मुल्ला, मुल्लनम्, मुल्लनीयम् - शोचने। मुल्लुः - कण्टकम्। मुल्लः, मुल्लकः, मुल्लानः - शोचयितरि)।

मुश् (मुश्यति) = खण्डने, छेदने। खण्ड-खण्ड करना, टुकड़े करना, छेद करना। (मुश्यति - छिद्रं करोति। मुट्, मोशन्, मोष्टा, मुष्टः, मोशकः - छेदकः। मुष्टिः - बद्धाङ्गुलिः। मुष्टम्, मोशनम्, मोशनीयम् - छेदने)।

मुष् (मोषति, मुष्णाति) = स्तेये, चौर्ये। चुराना, चोरी करना। (मूषति, मुष्णाति - चोरयति। मूषिकः - चूहा। मोषणम् - चौर्यगुणम्। मुष्टिः - बद्धाङ्गुलिः, ग्रहणम्। मुष्टम्, मोषः, मोषणम्, मोषणीयम् - चौर्ये)।

मुष्क (मुष्कते) = गतौ, घर्षणे। ज़ाना, घर्षण करना। (मुष्कते - घर्षयति। मुष्कः - वृषणम् (अण्डम्)।

मुस् (मुस्यति) = खण्डने। टुकड़े टुकड़े करना, कतरना, तोड़ना, चीरना।

मुस्त (मुस्तयति, मुस्तयते) = संघाते गन्धे। गन्ध लेना, ढेर करना,

एकत्र करना, राशि करना। (मुस्तयति - गन्धयति। मुस्ता - गन्धः, वृक्षविशेषः वा)।

मुह (मुह्यति) = वैचित्ये, विस्मरणे। विस्मरण होना, अचेत होना, बुद्धिभ्रष्ट होना। (मुह्यति - विस्मरति। मूढः, मूढवान्, मोढा, मोहन्, मोहकः - विस्मारके। मूढम्, मूढिः, मोहः, मोहनम्, मोहनीयम्, मुट् - विस्मरणे)।

मुहुः (अव्यय) = प्रायः।

मुहुर्मुहुः (अव्यय) = पुनः-पुनः, बार-बार ।

मू (मवते, मुनाति, मुनीते) = बन्धने। बांधना, जकड़ना। (मूतम् - आच्छादनम्, पुड़िया। मूतिः, मवनम्, मवनीयम्, मव्यम्, माव्यम् - बन्धने)।

मूत्र (मूत्रयति, मूत्रयते) = प्रस्रवणे, जलस्य पतने। मूत्र त्याग करना। (मूत्रयति - दूषितजलं स्रवति। मूत्रम्, मूत्रणम्, मूत्रणीयम् - दूषितस्य जलस्य प्रस्रवणे)।

मूर्छा (मूर्च्छति) = मोहसमुच्छ्राययोः, वैचित्ये, विस्मरणे, मूर्च्छने। मुरझाना, मूर्छित होना, मोहित होना, ज्ञान रहित होना, बढ़ना। (मूर्च्छति - विस्मरति। मूर्च्छा - विस्मरणम्)।

मूर्द्ध (मूर्द्धति) = मूर्द्धने। उच्च होना।

मूल् (मूलति, मूलते, मूलयति, मूलयते) = रोहणे, प्रतिष्ठायाम्, प्रतिष्ठापने। जड़ जमाना, दृढ़ बैठ जाना, बीजारोपण करना, बोना। उत् - जड़ से उखाड़ना। (मूलति - प्रतिष्ठापयति। मूलम् - कारणम्)।

मूल् (मूलयति) = प्रतिरोहणे, मूलोत्पत्तौ। जड़ निकलना। (मूलयति - प्रतिरोहति। मूलम् - जड़)।

मूष् (मूषति) = स्तेये। चोरी करना, चुराना, मूसना।

मे (सर्वनाम) = मेरे लिए, मेरा।

मे (मयते) = प्रतिदाने, ग्रहणे, अदर्शने। लेना, ग्रहण करना। (मयते - गृह्णाति। मायः, मायकः, मायमानः - ग्रहीता। मा - लक्ष्मीः। मा -

अपव्ययः। मायनम्, मायनीयम् - ग्रहणम्। मायम् - अदर्शनम् (छिपाना)।

मेट्-मेट्ट (मेटति) = उन्मादने, मानस-व्याधौ। उन्माद होना, उन्मत्त होना।

मेड् (मेडति) = उन्मादने, मानस-व्याधौ। उन्माद होना, उन्मत्त होना। (मेडति - उन्मादयुक्तो भवति। मेडीरः - उन्मत्तः)।

मेथ् (मेथति, मेथते) = मेधाहिंसनयोः। समझना, जानना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना।

मेथ्य (मेथ्यति, मेथ्यते) = गर्वे, अहंकारे, गतिहिंसयोः, संगमे। गर्व करना, हिंसा करना, इकट्ठा करना। (मेथ्यति, मेथ्यते - गर्वति, स्थूलो भवति। मेथ्यः, मेथ्यकः, मेथ्यन्, मेथ्यमानः - गर्वके। मेथ्यनम्, मेथ्यनीयम् - गर्वे, अहंकारे। मेथ्यः, मेथ्यकः, मेथ्यन्, मेथ्यमानः - गर्वके। मेथ्यनम्, मेथ्यनीयम् - गर्वे, अहंकारे)।

मेद् (मेदति, मेदते) = गतौ, मेधाहिंसनयोः। समझना, जानना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना। (मेदति, मेदते - मारयति। मेत्, मेदकः, मेदन्, मेदमानः - मारयितरि)।

मेध् (मेधति, मेधते) = मेधाहिंसनयोः संगमे च। समझना, जानना, मार डालना या दुःख देना, इकट्ठा करना, सङ्गति करना, मेल करना। (मेधति, मेधते - परस्परं मिलति। मेध्, मेधन्, मेधकः, मेधमानः - संगन्तरि। मेधा - दृढबुद्धिः। मेधावान् - बुद्धिमान्। मेधनम्, मेधनीयम्, मेध्यम्, मैध्यम् - संगमे)।

मेधा (मेधायति) = आशुग्रहणे। शीघ्र समझना, शीघ्र जान लेना।

मेप् (मेपते) = गतौ, सेवने। जाना, सेवा करना।

मेव् (मेवते) = लागौ, लागने, योजने, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, लगाना। (मेवते - लागयति (लगाता है)। मेव्, मेवः, मेवकः, मेवमानः, मेव्यः, मैव्यः - लगाने वाले। मेविः, मेवुः, मेवनम्, मेवा, मेवनीयम् - लगाना)।

मोक्ष (मोक्षयति) = असने, त्यागे। मुक्त करना, छोड़ देना। (मोक्षयति - त्यजति। मोक्षुः - यतिः)।

म्ना-मन् (मनति) = पठने, विचारे, ज्ञाने, अभ्यासे, पुनः-पुनः आवृत्तौ। विचार करना, मनन करना, अभ्यास करना। (मनति - पठति अभ्यसते। म्नाः, म्नः, म्नाता मायकः - पाठके, विदुषि। म्नाम्, म्नेयम्, म्नानीयम्, म्नातव्यम्, म्नितम्, म्नितिः, आम्नायः, समाम्नायः - विद्यासु)।

म्रक्ष (म्रक्षति) = संघाते। एकत्र करना, ढेर करना, लेपन करना, लीपना।

म्रक्ष (म्रक्षयति, म्रक्षयते) = नाशने, क्षरणस्निग्धार्थे, म्लेच्छने। मिश्रित करना, अशुद्ध करना। (म्रक्षः - नाशकः। म्रक्षणम् - नाशनम्)।

म्रच्छ (म्रच्छयति, म्रच्छयते) = म्लेक्षने। मिश्रित करना, अशुद्ध बोलना।

म्रड् (म्रडति) = अनादरे, अपमाने। अनादर करना, अपमान करना। (म्रडति - अनादरं करोति। म्रडीरः - अनादरे)।

म्रद् (म्रदते) = मर्दने। मर्दन करना, पीसना, कूटना। (म्रदते, म्रदयति - मर्दयति। म्रदकः, म्रदमानः - मर्दकः। म्रद्, म्रदिः, म्रदनम्, म्रदनीयम्, म्रद्यम्, म्राद्यम् - मर्दने)।

म्री (म्रियते) = प्राणत्यागे, मरणे। मरना। (म्रियते - मरति। म्रियः, म्रियमाणः - मर्ता)।

म्रुच् (म्रोचति) = गतौ। जाना, स्थानान्तर करना।

म्रुज् (म्रुजति) = निन्दायाम्, शब्दे, शब्दने। शब्द करना, निन्दा करना। (म्रुजति - निन्दयति। म्रुजा - निन्दा)।

म्रुञ्च (म्रुञ्चति) = गतौ, गमने, द्यूतक्रीडने। जाना, जुआ खेलना। (म्रुञ्चति - द्यूतम् क्रीडति। म्रुञ्चः - द्यूतक्रीडा)।

म्रुञ्च (म्रुञ्चति) = गतौ। जाना, स्थानान्तर करना।

म्रुञ्ज (म्रुञ्जति) = शब्दे, शब्दने, निन्दायाम्, गालिप्रदाने। शब्द

करना, निन्दा करना, गाली देना। (म्रुञ्जति - गालिं वदति। म्रुञ्जा - गालिः)।

म्रेट् (म्रेटति) = उन्मादने, मानस-व्याधौ। उन्माद होना, उन्मत्त होना।

म्रेड् (म्रेडति) = उन्मादने, मानस-व्याधौ। उन्माद होना, उन्मत्त होना। (म्रेडति - उन्मादयुक्तो भवति। म्रेडीरः - उन्मत्तः)।

म्लक्ष (म्लक्षति, म्लक्षते) = संघाते, नाशने, क्षरणस्निग्धार्थे, म्लेच्छने। नाश करना, मिश्रित करना, एकत्र करना, अशुद्ध बोलना, असम्बद्ध बोलना। (म्लक्षयति - नाशयति। म्लक्षः - नाशकः। म्लक्षणम् - नाशनम्)।

म्लड् (म्लडति) = अनादरे, अपमाने। अनादर करना, अपमान करना। (म्लडति - मर्खी करोति)।

म्लुच् (म्लोचति) = गत्यर्थौ। जाना, स्थानान्तर करना। अभिनि - नीचे जाना, अस्त होना।

म्लुञ्च (म्लुञ्चति) = गतौ, गमने, अपराधे च। जाना, अपराध करना। (म्लुञ्चति - अपराध्यति। म्लुञ्चः - अपराधः)।

म्लुञ्च (म्लुञ्चति) = गत्यर्थौ। जाना, स्थानान्तर करना। अभिनि - नीचे जाना, अस्त होना।

म्लेच्छ (म्लेच्छति; म्लेच्छयति, म्लेच्छयते) = अव्यक्तायां वाचि, अस्पष्टभाषणे, अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट या अशुद्ध बोलना, असम्बद्ध सम्भाषण करना, म्लेच्छ भाषा बोलना, जंगली भाषा बोलना। (म्लेच्छति - अस्पष्टं भाषते - म्लेच्छः - अस्पष्टम्)।

म्लेच्छ (म्लेच्छयति) = छेदने, छिद्रकरणे। काटना, छेद करना। (म्लेच्छयति - छिद्रयति। म्लेच्छः, म्लेच्छनम्, म्लेच्छनीयम् - छिद्रकर्तरि)।

म्लेट् (म्लेटति) = उन्मादने, मानस-व्याधौ। उन्माद होना, उन्मत्त होना।

म्लेड् (म्लेडति) = उन्मादने, मानस-व्याधौ। उन्माद होना, उन्मत्त होना।

म्लेव् (म्लेवते) = सेवने सेचने, घर्षणे। सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना। (म्लेवते। म्लेव्, म्लेवः, म्लेवलः, म्लेव्यः, म्लेवमानः। म्लेविः, म्लेवुः, म्लेवनम्, म्लेवनीयम्)।

म्लै (म्लायति) = हर्षक्षये गात्रविनामे, देहालस्ये। थकना, श्रान्त होना, निरुत्साह होना, नष्ट होना, मुरझाना, कुम्हलाना। (म्लायति - शरीरम् अलसायते। म्लैः, म्लानिः, म्लानम् - म्लाने (मुरझाने में)।

(य)

यः (सर्वनाम) = जो, जिस ने। (पुल्लिंग)।

यक्ष (यक्षयति, यक्षयते) = पूजायाम्, श्रेष्ठ्ये। श्रेष्ठ होना, पूजा करना, सत्कार करना। (यक्षयति - श्रेष्ठो भवति। यक्षः - श्रेष्ठः। यक्षिणी - श्रेष्ठा)।

यच्छ-यम (यच्छति) = उपरमे, समाप्तौ, उपसंहारे। प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना। नि - दौड़ाना, भगाना, कुलाचार करना, आकलन करना, आकर्षण करना, खींचना, नियम में बांधना। उत् - यत्न करना, उद्योग करना, ऊपर उठाना, ऊपर चढ़ना। व्या - कष्ट करना, परिश्रम करना, व्यवहार करना, उद्योग करना। सन्नि - प्रतिरोध करना, रोकना। आ - हाथ पसारना, जाना, बलात्कार से लेना। सम् - अपनी वस्तुओं को एकत्र करना, ढेर करना, संयोग करना, मेल करना। उप - विवाह करना, मान्य करना, स्वीकार करना, विद्या से जीतना, विद्या के बल से स्वाधीन रखना। (यच्छति - समापयति। यमः - अन्तकः)।

यच्छ-दा (यच्छति) = दाने। देना, सौंपना, लौटाना, रखना। आ - लेना, अंगीकार करना। परि - देना, सौंपना, ऋण देना, पुकार देना। प्र -

देना। व्या - उघाड़ना, खोलना। समा - चयन करके लेना। (यच्छति - ददाति। दः, दाः, दाता, दायकः, दानी - दातरि। दानम्, देयम्, दापनम्, दातव्यम्, दानीयम्, दायम्, दितम्, दितिः - दाने)।

यज् (यजति, यजते) = देवपूजा-संगतिकरण-दानेषु, देवपूजायाम्, धारणे, सङ्गतिकरणे, दाने च। देवपूजा करना, अर्पण करना, देना, संगति करना, संयोग करना। (यजति, यजते - पूजयति, ददाति, धारयति, करोति। यट्, याट्, याजी, यजन्, यजमानः, यक्ता, यायजूकः - पूजके। इष्टम्, इष्टिः, यष्टिः, यजनम्, याजनम्, यज्ञः, यागः, इष्टव्यम्, यज्यम्, याज्यम् - देवपूजने)।

यञ्च्-अञ्च (अञ्चयति, अञ्चयते) = विशेषणे। विशेषित करना, सम्मानित करना, हटाना, पृथक् करना।

यत्-यद् (सर्वनाम) = जो, जिस ने, जिस को। (नपुंसकलिंग)।

यत् (यातयति, यातयते) = खेदबिम्बाच्छादनेषु, दुःखे, छायायाम्, आच्छादने च, निकारोपस्कारयोः च। दुःख देना, मारना, ठोकना, आज्ञा करना, एकत्र करना, मना करना, रोकना। निर् - प्रतिकार लेना, बैर शुद्धि करना, दान देना, दूसरे की वस्तु लौटा देना, भेजना। वि - धृष्टता करना। (यातयति - दुःखितो भवति। यातकः - दुःखी। यातना - दुःखम्)।

यत् (यतते) = प्रयत्ने, उद्योगे। यत्न करना, उद्योग करना, निश्चय करना, ठहराना। (यत्नः, यत्नवान्, यतमानः - उद्योगकर्तरि। यतिः - ऋषिः। यतनीयम्, यत्, यत्यम्, यात्यम् - उद्योगे)।

यत् सीम् = जो कोई (अव्यय)।

यतः (अव्यय) = क्योंकि, जहां से, जिससे।

यतो (अव्यय) = क्योंकि, जहां से, जिससे।

यत्र (अव्यय) = जहाँ।

यत्र-यत्र (अव्यय) = जहाँ- जहाँ।

यत् सत्यम् (अव्यय) = सत्य है, निश्चय ही।

यथा (अव्यय) = जिससे।

यथा-तथा (अव्यय) = जैसे-तैसे।

यथाभागम् (अव्यय) = भाग के अनुसार।

यथा-यथा (अव्यय) = जैसे-जैसे।

यदा (अव्यय) = जब।

यदि (अव्यय) = यदि।

यन् (यनोति, यनुते) = उद्धारे, प्रेरणायाम्। उद्धार करना, उद्धरण करना। (यनोति, यनुते - उद्धरति। यन्वन्, यन्वानः, यनकः, यन्ता - प्रेरकः। यन्ता - उद्धारके। यन्त्रम् - उद्धरणम्। यन्त्रणम् - प्रेरणा)।

यन्त्र (यन्त्रयति, यन्त्रयते, यन्त्रति) = संकोचने, गोपने। स्वाधीन रखना, संकुचित करना। (यन्त्रयति - संकुचति, गोपयति। यन्त्रकः - संकोचकः, गोपकः। यन्त्रः, यन्त्रणम्, यन्त्रणीयम् - संकोचनम् गोपनम्)।

यभ् (यभति) = मैथुने, मैथुनकर्मणि। मैथुन करना, संयोग करना। (यभति - मैथुनं करोति। यभ्भा, यब्धा, यभकः - मैथुनकर्तरि। यभ्, यभनम्, यभ्भिः, यब्धिः, यभ्भम् यब्धम्, यभ्भव्यम्, यब्धव्यम्, यभनीयम्, यभ्यम्, याभ्यम् - मैथुने)।

यम् (सर्वनाम) = जिस को। (पुल्लिंग)

यम् (यमयति) = नाशने, प्रेरणे, प्रेरणायाम्। नाश करना, प्रेरणा करना। (यमयति - नाशयति। यमः - अन्तकः। यन्ता - प्रेरकः। संयमयति - संयमं करोति। संयमी - यतिः। नि-यमयति - नियमं करोति। नियमः - व्रतम्। नियमी - व्रती)।

यम् (यमयति, यमयते; यामयति) = परिवेषणे, परिवेष्टने, आवरणे, सहने। स्वाधीन रखना, नियन्त्रण में रखना, पोषण करना, खाने को देना। (यमयति - आवृणोति। यामयति - सहते। यमी - सहः, यतिः वा)।

यम्-यच्छ (यच्छति) = उपरमे। प्रतिबन्ध करना, रोकना, अवरोध करना। नि - दौड़ाना, भगाना, कुलाचार करना, आकलन करना, आकर्षण करना, खींचना, नियम में बांधना। उत् - यत्न करना, उद्योग, करना, ऊपर उठाना, ऊपर चढ़ना। व्या - कष्ट करना, श्रम करना, व्यवहार करना, उद्योग करना। सन्नि - प्रतिरोध करना, रोकना। आ - हाथ फैलाना, जाना, बलात् लेना। सम् - एकत्र करना, ढेर करना, संयोग करना, मेल करना। उप - विवाह करना, मान्य करना, स्वीकार करना, विद्या से जीतना, विद्या के बल से स्वाधीन रखना।

यया (सर्वनाम) = जिससे, जिस द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

ययोः (सर्वनाम) = जिन दोनों के, जिन दोनों में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

यव् (यवति) = उपरमे, समाप्तौ, उपसंहारे। समाप्त करना, उपसंहार करना। (यवति - समापयति)।

यश् (यशति, यशते) = यशे, कीर्तौ, प्रख्याने। यश होना, कीर्ति फैलना। (यशः — कीर्तिः)।

यस् (यस्यति) = गतौ, प्रयत्ने, उपक्षये। उपक्षय करना, चलना, यत्न करना। आ - श्रम करना, कष्ट करना। निर् - खोना। (यस्यति - प्रयतते। यस्तः, यस्तवान्, यसन्, यस्ता, यसकः - प्रयतितरि। यस्तम्, यस्तिः, यस्तव्यम्, यस्यम्, यास्यम्, यसम्, यासम् - प्रयत्ने)।

यस्मात् (सर्वनाम) = जिस से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

यस्मिन् (सर्वनाम) = जिस में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

यस्मै (सर्वनाम) = जिस के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

यस्य (सर्वनाम) = जिसका। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

यस्याः (सर्वनाम) = जिस से, जिस का। (स्त्रीलिंग)।

यस्याम् (सर्वनाम) = जिसमें। (स्त्रीलिंग)।

यस्यै (सर्वनाम) = जिस के लिए। (स्त्रीलिंग)।

यह् (यहते, यहति) = पुत्र होना, सन्तान होना।

यह्-मह् (महति; महयति, महयते) = पूजायाम्, महत्वे। सम्मान करना, पूजा करना। (महति - वर्धते। महयति - पूज्यो भवति। मट्, यहः - महति)।

या (याति) = प्रापणे, गतौ। जाना, प्राप्त होना, पहुँचना। अनु - अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना। अभि - पहुँचना, निकट जाना। आ - आना, प्रस्तुत होना। उप - छोड़ना, त्याग करना। निर् - बाहर जाना, आगे जाना, शीघ्रता से निकल जाना। प्र - जाना। प्रति - किसी ओर जाना। प्रत्युत् - सामने जाना। समभि - समीप जाना। समा - आना या पहुँचना। (याति - गच्छति। यायन्, यन्, यायकः, याता - गन्ता। यानम् यापनम्, यापनीयम्, यात्रा - गतौ। यानम् - गमन-साधनम्। यायावरः - गमनशीलः)।

या (सर्वनाम) = जो, जिस ने। (स्त्रीलिंग)।

याः (सर्वनाम) = जिन सब ने, जिन सब को। (स्त्रीलिंग)।

याच (याचति, याचते) = याच्ञायाम्, याचनायाम्। याचना करना, मांगना। (याचति, याचते - भिक्षति। याचन्, याचकः, याचमानः, याचिता - भिक्षुकः। याच्ञा, याचनम्, याचनीयम्, याच्यम्, याच्, याचितम् - भिक्षायाम्)।

याचत् (अव्यय) = तो, अभी।

यान् (सर्वनाम) = जिन सब को। (पुल्लिंग)।

यानि (सर्वनाम) = जिन सब ने, जिन सब को। (नपुंसकलिंग)।

याभिः (सर्वनाम) = जिन सब द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

याभ्यः (सर्वनाम) = जिन सब के लिए, जिन सब से। (स्त्रीलिंग)।

याभ्याम् (सर्वनाम) = जिन दोनों द्वारा, जिन दोनों के लिए, जिन दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

याम् (सर्वनाम) = जिस को। (स्त्रीलिंग)।

याल् (यालति, एलति) = गतौ, विस्तारे।(यालति, एलति - विस्तरितो भवति)।

यावत् (अव्यय) = जब तक।

यावत् तावत् (अव्यय) = जब तक तब तक, ज्यों ही त्यों ही।

यावद् (अव्यय) = जब तक, पहले ही।

यासाम् (सर्वनाम) = जिन सब के। (स्त्रीलिंग)।

यासु (सर्वनाम) = जिन सब में। (स्त्रीलिंग)।

यु (योति) = मिश्रणे, सम्मेलने, अमिश्रणे च।मिश्रित करना, मिलाप करना, पृथक् पृथक् करना। (यौति - मिश्रयति। युत्, यवन्, यावकः - मिश्रके। युवा - मिलनशीलः, तरुणः वा। युवतिः - मिलनशीला, तरुणी वा। यौवनम् - मेलनम्, तरुणावस्था वा। युतिः, युतम्, युतव्यम्, यवनीयम्, यव्यम्, याव्यम् - मिश्रणे)।

यु (यावयते) = जुगुप्सायाम्, घृणायाम्।अपमान करना, दोष लगाना, निन्दा करना।

यु - युन (युनाति, युनीते) = बन्धने, अवरोधने। सम्बन्ध करना, बांधना, बन्धन करना, गूंथना।(युनाति, युनीते - अवरुणद्धि।युतः, युतवान् - अवरोधके। युतम्, युतिः - अवरोधनम्)।

युङ्क्-युनक्-युज् (युनक्ति, युङ्क्ते) = योगे, मेलने। जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना। अनु - प्रश्न करना, पूछना, दोष लगाना। अभि - बोलना, दोष लगाना, प्रार्थना करना, अद्‌भुत प्रश्न करना। उप - खाना, उपयोग करना, काम में लाना, बलात् लेना। नि - आज्ञा करना, मिलाप करना, एकत्र करना। प्र - योग्य होना, यत्न करना, मिलाप करना, ऋण देना। वि - अलग करना, पृथक् करना, प्रेरणा करना, भेजना। विनि - व्यय करना, नियमित करना, भेजना, प्रेरणा करना, गूंथना, एकत्र करना। विप्र - अलग-अलग करना, विभक्त करना। सम् - युक्त करना, मिलाप करना।

समा - बहुत विचार करना।(युनक्ति, युङ्क्ते - मिलति। युञ्जन्, योक्ता, योजकः, योजी, योगी, युक्तः, युक्तवान् - मेलके। युक्तम्, युक्तिः, योगः, योग्यम्, यौगिकम्, योज्यम्, योजनीयम् - मेलने)।

युङ्ग (युङ्गति) = वर्जने, परित्यागे। छोड़ देना, त्याग करना। (युङ्गति - परित्यजति)।

युच्छ (युच्छति) = प्रमादे। दुर्लक्ष्य करना, असावधान रहना, प्रमाद करना।

युज् (युज्यते) = मेलने, समाधौ, एकाग्रचित्ते। चित्त स्थिर करना, मन को रोकना।(युज्यते - मिलति। योगी - योगयुक्तः। योक्ता, योजानः, युक्तः, युक्तवान् - मेलकः। योक्तव्यम्, योजनीयम्, योज्यम्, युक्तिः, युक्तम् - मेलने, योजनम् - मेलनम्, क्रोशचतुष्टयम् परिमाणः वा)।

युज् (योजयति, योजयते, योजति) = संयमने, तपस्यायाम्। संयत करना, बांधना, वश में रखना।(योजयति - तपस्यति। योगी - तपस्वी)।

युज् (योजयते) = जुगुप्सायाम्, घृणायाम्। घृणा करना। (योजयते - घृणां करोति)।

युज्-युङ्क्-युनक् (युनक्ति, युङ्क्ते) = योगे, मेलने। जुड़ना, मिलाप करना, एकत्र करना। अनु - प्रश्न करना, पूछना, दोष लगाना। अभि - बोलना, दोष लगाना, प्रार्थना करना, अद्‌भुत प्रश्न करना। उप - खाना, उपयोग करना, काम में लाना, बालत् लेना। नि - आज्ञा करना, मिलाप करना, एकत्र करना। प्र - योग्य होना, यत्न करना, मिलाप करना, ऋण देना। वि - अलग करना, पृथक् करना, प्रेरणा करना, भेजना। विनि - व्यय करना, नियमित करना, भेजना, प्रेरणा करना, गूंथना, एकत्र करना। विप्र - अलग-अलग करना, विभक्त करना। सम् - युक्त करना, मिलाप करना। समा - बहुत विचार करना।(युनक्ति, युङ्क्ते - मिलति। युञ्जन्, योक्ता, योजकः, योजी, योगी, युक्तः, युक्तवान् - मेलके। युक्तम्, युक्तिः, योगः,

योग्यम्, यौगिकम्, योज्यम्, योजनीयम् - मेलने)।

युञ्छ (युञ्छति) = विप्रलम्भने, प्रमादे। विप्रलम्भन करना, प्रमाद करना।(युञ्छति - विप्रलम्भितो भवति। युञ्छा - विप्रलम्भनम्)।

युञ्ज् - युज् (युज्यते) = मेलने, समाधौ, एकाग्रचित्ते। चित्त स्थिर करना, मन को रोकना।(युज्यते - मिलति। योगी - योगयुक्तः। योक्ता, योजानः, युक्तः, युक्तवान् - मेलकः। योक्तव्यम्, योजनीयम्, योज्यम्, युक्तिः, युक्तम् - मेलने)।

युत् (योतते) = भाषणे, शब्दने, भासने। शब्द करना, बोलना, चमकना, प्रकाशित होना।(योतते - वदति। योतः, योतकः, योतमानः - वदितरि। योतनम्, युतिः, योतनीयम्, योत्यम्, यौत्यम्, युत् - भाषणे)।

युध् (युध्यते) = सम्प्रहारे, विकर्तने। युद्ध कऱना, प्रहार करना, काटना।(युध्यते - विकृन्तति। योद्धा, योधकः, युद्धः, युद्धवान् - विकर्तके। युद्धिः, योद्धव्यम्, योधनम्, योधनीयम्, योध्यम् - विकर्तने)।

युन् - यु (युनाति, युनीते) = बन्धने, अवरोधने। बांधना, बन्धन करना, गूंथना।(युनाति, युनीते - अवरुणद्धि। युतः, युतवान् - अवरोधके। युतम्, युतिः - अवरोधनम्)।

युप् (युप्यति) = विमोहने, जागरणे। जागना।(युप्यति - जागर्ति। योपकः, योपः, योप्ता, युप्तः, युप्तवान् - जागरूके।युप्तिः, युप्तम्, योप्तव्यम्, योपनम्, योपनीयम्, योप्यम्, यौप्यम् - जागरणे)।

युवद् (सर्वनाम) = तुम से।

युवम् (सर्वनाम) = तुमको।

युवयोः (सर्वनाम) = तुम दोनों का, तुम दोनो में।

युवाभ्याम् (सर्वनाम) = तुम दोनों से, तुम दोनो द्वारा, तुम दोनों के लिए।(त्रिलिंग)।

युवाम् (सर्वनाम) = तुम दोनों ने, तुम दोनों को।

युष् (योषति) = हिंसायाम्। हिंसा करना। (योषति - हिनस्ति। (युष्टम्, युष्टिः, युषिः, योषणम् - विवादः)।

युष्मत् (सर्वनाम) = तुम सब से।(त्रिलिंग)।

युष्मभ्यम् (सर्वनाम) = तुम सब के लिए।(त्रिलिंग)।

युष्माः (सर्वनाम) = तुम्हें।

युष्माकम् (सर्वनाम) = तुम सब के।(त्रिलिंग)।

युष्मान् (सर्वनाम) = तुम सब को।(त्रिलिंग)।

युष्माभिः (सर्वनाम) = तुम सब से, तुम सब द्वारा।

युष्मासु (सर्वनाम) = तुम सब में।(त्रिलिंग)।

युष्मे (सर्वनाम) = तुम दोनों में।

यूयम् (सर्वनाम) = तुम सब ने।(त्रिलिंग)।

यूष् (यूषति) = हिंसायाम्, ताडने। मारना, दुःख देना, पीड़ा करना। (यूषति - मारयति। यूषिता - घातकः। यूषिः - घातककृत्यम्। यूष्टम् - मारितम्। यूषणम्, यूषम् - ताडनम्)।

ये (सर्वनाम) = जिन सब ने।(पुल्लिंग), जिन दोनों ने, जिन दोनों को।(नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)

येन (सर्वनाम) = जिससे, जिसके द्वारा।(पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)

येभिः (सर्वनाम) = जिनसे।

येभ्यः (सर्वनाम) = जिन सब के लिए, जिन सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

येल्-एल् (यालति, एलति) = गतौ, विस्तारे। जाना, विस्तार होना। (यालति, एलति - विस्तरितो भवति)।

येष् (येषते) = प्रयत्ने, प्रमाद-परिहारे। प्रयत्न करना, प्रमाद छोड़ना, आग्रह करना, चिपकना।(येषते - प्रयतते। येषकः, येषमाणः - प्रयतितरि।

येष्, येषणम्, येषणीयम् - प्रयत्ने)।

येषाम् (सर्वनाम) = जिनका (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

येषु (सर्वनाम) = जिन सब में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

यैः (सर्वनाम) = जिन सब द्वारा। (नपुंसकलिंग, पुल्लिंग)।

यो (सर्वनाम) = जो। (पुल्लिंग)।

योष्ट (योष्टते) = संघाते, सहभावे। राशि करना, ढेर करना, बटोरना, सञ्चित करना, साथ होना, साथ चलना। (योष्टते - सहभावं गच्छति। योष्टकः, योष्टमानः - सार्थे। योष्टिः, योष्टुः, योष्टम्, योष्टनम्, योष्टनीयम् - सहभावे)।

यौ (सर्वनाम) = जिन दोनों ने, जिन दोनों को। (पुल्लिंग)।

यौट् (यौटति) = बन्धने। बांधना, वश में रखना।

यौड् (यौडति) = बन्धने। बांधना, वश में रखना।

यौण्ड यौण्डति = सम्बद्धे, सम्बन्धे, स्पर्शे। सम्बन्ध होना, स्पर्श करना। (यौण्डति - स्पृशति, सम्बद्धो भवति। यौण्डीरः - स्पर्ष्टा)।

(र)

रक् (राकयति) = आस्वादने, रुच्याम्। स्वाद लेना, रुचि लेना। (राकयति - आस्वदते)।

रक्ष (रक्षति) = रक्षणे, पालने। रक्षण करना, पालन करना, परि - रक्षण करना, पालन करना, बचाना। (रक्षति - त्रायते। रक्षकः — त्रायकः। रक्षा - पालनम्, रक्षणम्)।

रख् (रखति) = गतौ। जाना। (रखति - गच्छति)।

रग् (रगति, रगयति) = शङ्कायां भये च। शंका करना, भय करना, डरना, संदिग्ध होना। (रगति, रगयति - शङ्कते। रगः, रगकः, रगन् -

शङ्किता। रगिः, रगुः, रगा, रगणम्, रगणीयम्, रग्यम्, राग्यम्, रग्, राग् - शङ्कायाम्)।

रग् (रागयति, रागयते) = आस्वादने। स्वाद लेना, रुचि लेना।

रग् (रगति) = गतौ, रिङ्गणे। जाना, रेंगना।

रङ्ख (रङ्खति) = गतौ, आरोहणे। जाना, ऊपर जाना, चढ़ना। (रङ्खति - आरोहति। रङ्खः - आरोहः।

रङ्ग (रङ्गति) = गतौ, रिङ्गणे, रजने, रङ्गणे। जाना, रेंगना, रंगना। (रङ्गति - रजति। रङ्गः - रजनम्)।

रघ् (राघयति, राघयते) = गतौ, शासने, आस्वादने। जाना, स्वाद लेना, रुचि लेना, शासन करना। (रघते - शास्ति। रघुः - शासकः। रघिः, रघः, रघणम्, रघणीयम्, रघ्यम् - शासने)।

रङ्घ (रङ्घते) = गतौ, कूर्दने। जाना, कूदना। (रङ्घते - कूर्दते। रङ्घकः, रङ्घमाणः - कूर्दितरि। रङ्घिः, रङ्घः, रङ्घणम्, रङ्घणीयम्, रङ्घ्यम् - कूर्दने)।

रङ्घ (रङ्घयति, रङ्घयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना।

रच् (रचयति, रचयते) = रचनायाम्, सर्जने, प्रतियत्ने। रचना, शिल्प कर्म करना, ग्रन्थ बनाना।

रच्छ-रछ् (रच्छति) = गतौ, संघाते, सहभावे। ज़ाना, राशि करना, ढेर करना, सञ्चित करना, एकत्र होना। (रच्छति - एकत्रो भवति। रच्छा - सम्मर्दः)।

रज - राज् - रज होना, धूल होना, सूक्ष्म होना, रंग देना, रंगना, लीन होना,चमकना, प्रकाशित होना, - दीप्त होना, चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, जीतना (धातु कोश में रखना है)

रज्-राज् (राजते, राजति) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, शोभित

होना, प्रकाश करना। निर्, नी - प्रकाश करना। वि - शोभित होना, प्रकाशित होना, चमकना, जीतना।(राजति, राजते - प्रकाशते।राट्, राजा, राजन्, राजमानः - प्रकाशमानः।राजितम्, राजितव्यम्, राजनम्, राजनीयम् - प्रकाशे)।

रज् (रजति, रजते; रज्यति, रज्यते) = रागे, वर्णे, दीप्तौ, गाने, आलापने च। रंग देना, रंगना, गाना, चमकना। अनु - किसी वस्तु में अनुरक्त होना, तत्पर होना, लवलीन होना, मोहित होना।अप, वि - विरक्त होना, तिरस्कार करना।(रज्यति, रज्यते - आलपते, गायति।रक्ता, रक्तः, रक्तवान्, रागी - विषयी, रक्तवर्णः।रक्तिः, रक्तिमा, रागः - रक्तं वर्णम्, प्रेमः।रागी - आसक्तः।विरक्तः, विरागी, वैरागी - संन्यासी।रजकम् - अग्निचूर्णम् (बारूद)।रजस् - स्पर्शः।रजस् - धूलिः)।

रञ्ज (रञ्जति) = रागे, वर्णे (रक्तवर्णे)।रंग देना, रंगना।(रञ्जति - रक्तं भवति। रञ्जन, रञ्जमाणः - रञ्जकः। रञ्जयति - प्रसन्नम् करोति)।

रञ्ज (रञ्जयति) = प्रसन्नतायाम्, रागे, वर्णे।प्रसन्न होना, प्रसन्न करना, रंग देना, रंगना।(रञ्जति - रक्तं भवति।रञ्जन, रञ्जमाणः - रञ्जकः।रञ्जयति - प्रसन्नम् करोति)।

रट् (रटति) = परिभाषणे, ध्वनौ।बोलना, सम्भाषण करना।(रटति - ध्वनति, शब्दयति। सम्राट् - सम्यक् भाषकः। राटा - ध्वनिकरः, सूत्रनिर्माणयन्त्रम् (चरखा)।राटालः - ध्वनिकरः, जलाकर्षणयन्त्रम् वा)।

रट्ट (रट्टति) = शकुने, ज्ञाने। ज़ानना। (रट्टति - जानाति। रट्टः - ज्ञाता)।

रठ् (रठति) = परिभाषणे, ध्वनौ, निन्दात्मके वाक्ये।बोलना, परिभाषण करना, निन्दा करना। (रठति - निन्दयति।रठः - निन्दकः)।

रण् (रणति, रणयति) = गत्यर्थः, गतौ, शब्दार्थः, शब्दे, शब्दक्रियायाम्।

शब्द करना, जाना।(रणति, रणयति - चलति।रणकः, रणन् - चलिता। रणनम्, रणनीयम् - चलने।रणति - शब्दयति, गच्छति।रणः - युद्धम्। राणिः - साम्राज्ञी)।

रण्ड (रण्डति) = व्यभिचारे।(रण्डति - व्यभिचरति।रण्डा, रण्डी - व्याभिचारिणी)।

रण्व (रवि) (रण्वति) = गतौ, गत्यर्थः।जाना।

रत् (रत्ति, रत्ते, रतति) = लिखना, चिह्न करना।

रद् (रदति) = विलेखने, लेखने।विदारण करना, चीरना, खोदना, लिखना, देना।(रदति - लिखति।रदनः - लेखनी)।

रध् (रध्यति) = हिंसा-संराध्योः।पूरा करना, समाप्त करना, अपकार करना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, पक्व होना, पकना, शुद्ध होना, निर्दोष होना, भूल न करना।(रध्यति - हिनस्ति।रधम्, रद्धा, रधकः, रद्धः, रद्धवान् - घातके।रत्, रधा, रद्धम्, रद्धिः, रधनम्, रधनीयम्, रध्यम्, राध्यम् - हिंसायाम्)।

रन् (रनति) = संभक्तौ, मिश्रणे।अलग करना, मिलाना।

रप् (रपति) = व्यक्तायां वाचि, विस्पष्टवाक्ये।स्पष्ट बोलना।(रपति - वदति।रप्ता - भाषा।रपणः - सुवर्णम्)।

रफ् (रफति) = गतौ, गत्याम्, कलहे, हिंसायाम्।जाना, मार डालना या दुःख देना।(रफति - चलति।रफः - कलहः)।

रभ् (रभते) = राभस्ये, कार्योपक्रमे।आनन्दित होना, प्रसन्न होना, कार्य आरम्भ करना।आ - प्रारम्भ करना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना। (रभते - उपक्रमते।रभ्, रभकः, रभः, रभमाणः - उपक्रमके।रभिः, रभणम्, रभ्यम्, राभ्यम्, रभणीयम - उपक्रमे)।

रम् (रमयति) = रमणे, परिवेष्टने, आवरणे। रमना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना, आवेष्टित करना। (रमयति - आत्मानम्

आवेष्टयति)।

रम् (रमते) = क्रीडायाम्। रमना, क्रीडा करना, खेलना, प्रिय होना, मूल्यवान् होना, प्रसन्न करना। आ, उप, वि - विराम करना, स्थिर रहना, आराम करना। (रमते - क्रीडति। रम्यम् - सौन्दर्यम्। रन्ता, रममाणः - क्रीडकः)।

रम्फ (रम्फति) = गतौ, गत्याम्, कलहे, हिंसायाम्। जाना, कलह करना, मार डालना, दुःख देना। (रम्फति - चलति। रम्फः - कलहः)।

रम्ब (रम्बते) = शब्दे, कम्पने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। शब्द करना, कम्पन करना। (रम्बति - कम्पते। रम्बा - कम्पनम्)।

रम्भ (रम्भति, रम्भते) = धारणे, घर्षणे, शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना, गाना। परि - आलिङ्गन करना, गले लगाना। (रम्भति - घर्षति। रम्भते - गायति। रम्भिः, रम्भुः, रम्भणम्, रम्भणीयम् - गानकर्मणि)।

रय् (रयते) = गतौ, प्रापणे। जाना, हिलना, अमरस बनाना। (रयते - आम्ररसं निष्पादयति। रयकः, रयमानः - आम्ररसनिष्पादयितरि। रयिः, रायिः, रयः, रायः - प्रगतिशीले, प्रापणे)।

रल् (रलति) = गतौ। ज़ाना।

रल्ल (रल्लति) = गतौ। जाना।

रव् (रवति) = गतौ, दीप्तौ, प्रकाशने। जाना, प्रकाश करना। (रवति - प्रकाशते। रविः - सूर्यः)।

रश् (रशति, रशते) = विकीर्णने, प्रसारणे। विकिरण होना, किरण निकलना।

रस् (रसति, रसयति, रसयते) = आस्वादनस्नेहनयोः, शब्दे, ध्वनौ। स्वाद लेना, चखना, प्रीति करना, शब्द करना। (रसति - रसयुक्तौ भवति। रसयति - स्वदयति। रसः, रसना - जिह्वा। रसिकः, रसालः - रसयुक्तः। रसितम्, रसिः, रसुः, रसकम्, रसत्, रसानम्, रसायनम्, रस् - रसीभावे।

रसिकः - स्वदिता)।

रस्त (रस्तयति) = सामग्रीवृद्धौ, द्रव्यसम्पदायाम्। सामग्री बढ़ाना, सम्पदा एकत्र करना। (रस्तयति - द्रव्यं संगृह्णाति। रस्तुः - द्रव्यसम्पदा)।

रह् (रहति; राहयति, राहयते; रहयति, रहयते) = त्यागे। छोड़ना, त्याग करना। वि - अलग होना, भिन्न होना। (रहति, रहयति - त्यजति। रहस् - एकान्तः। रहितः, राढा, राहकः - त्यक्तरि। रहणम्, रहिः, रहुः, राढम्, राढिः - त्यागे। राट्, राड्, रहः, रहकः - त्यागे)।

रंह् (रंहति) = गतौ, शीघ्रगमने, शीघ्रवाचने। चलना, वेग से जाना। (रंहति - चलति। रंहस्, रंहणम्, रंहिः, रंहुः, रंहितम्, रण्ढम्, रण्ढिः - शीघ्रस्य वाचकाः। रण्ढा, रंहकः - शीघ्रगमके)।

रंह् (रंहयति, रंहयते) = भासार्थः भाषार्थ वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, सम्भाषण करना।

रा (राति) = दाने, आदाने, ग्रहणे। देना, लेना, ग्रहण करना, मिल जाना। (राति - गृह्णाति, ददाति। रायन्, रायकः, राता - दाता, आदाता, ग्रहीता। रायणम्, रायणीयम्, राता - ग्रहणे। राः, रः - दाता, आदाता। अरातिः - अदाता, अदानी)।

राख् (राखति) = शोषणालमर्थयोः, शोषणे शृङ्गारे च। सूखना, शुष्क होना, संवारना, भूषित करना, अलंकृत करना, कार्यक्षम होना, पूरा होना, रोकना, निषेध करना, विघ्न करना। (राखति - शुष्यति, सह गच्छति। राखनम् - शोषणं मण्डनं च)।

राघ् (राघते) = सामर्थ्ये, शक्तौ। समर्थ होना, शक्य होना, योग्य होना। (राघते - समर्थो भवति। राघः, राघकः, राघमानः - समर्थे, ज्ञानिनि। राघिः, राघुः, राघणम्, राघणीयम्, राघ्यम्, राघरम् - सामर्थ्ये ज्ञाने च)।

राज् - रज् (राजते, राजति) = दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, शोभित होना, प्रकाश करना। निर्, नी - प्रकाश करना। वि - शोभित होना,

प्रकाशित होना, चमकना, जीतना। (राजति, राजते - प्रकाशते। राट्, राजा, राजन्, राजमानः - प्रकाशमानः। राजितम्, राजितव्यम्, राजनम्, राजनीयम् - प्रकाशे)।

राध् (राध्यति) = वृद्धौ, निर्णये। निर्णय करना, सिद्ध होना, बढ़ना। (राध्यति - निर्णयति। राद्धा, राधकः, राद्धवान्, राद्धः - निर्णायके। राधनम्, राधनीयम्, राद्धव्यम् - निर्णये)।

राध् (राध्नोति, राध्नुते) = संसिद्धौ, निर्णये। पूरा करना, सिद्ध करना। अप - अपराध करना। आ - आराधना करना। सम् - सिद्ध करना। (राध्नोति, राध्नुते - निर्णयति। राधन्, राधानः - निर्णये)।

रास् (रासते) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना। (रासते - शब्दं करोति। रासः, रासकः, रासमानः - गर्दभध्वनिकर्तरि। रासभः - गर्दभः। रासिः, रासुः, रासनम्, रासनीयम्, रास्यम् - गर्दभध्वनिक्रियायाम्)।

रि (रिणोति) = हिंसायाम्। दुःख देना, पीड़ा करना।

रि (रियति) = गतौ। जाना।

रिङ्क्-रिणक्-रिच् (रिणक्ति, रिङ्क्ते) = विरेचने, रिक्तीकरणे। रिक्त करना, मल शुद्धि होना, गर्भपात कराना, गर्भ गिराना। अति - अतिरिक्त होना, अतिक्रमण करना। वि - मल शुद्धि होना। (रिणक्ति, रिङ्क्ते - रिक्तं करोति। रिञ्चन्, रेचकः, रेक्ता, रेचः, रेची - रेचके। रेचनम्, रेचनीयम्, रेच्यम्, रिक्तिः, रिक्तम्, रेक्तव्यम् - विरेचने)।

रिख् (रेखति) = गतौ, लेखे, लेखायाम्। जाना, रेखा करना, लेखा करना। (रेखति - रेखां करोति। रेखा - लेखा)।

रिङ्ग् (रिङ्गति) = गतौ, गत्यर्थः, रिङ्गणे। चलना, रेंगना।

रिङ्घ (रिङ्घते) = गतौ, अवनमने। जाना, झुकना। (रिङ्घते - अवनतो भवति (झुकता है)। रिङ्घकः, रिङ्घमाणः - अवनन्तरि। रिङ्घः, रिङ्घिः, रिङ्घणम्, रिङ्घणीयम्, रिङ्घ्यम् - अवनमने)।

रिच (रेचयति, रेचयते, रेचति) = वियोजनसंपर्चनयोः। एकत्र करना, जोड़ना, बांधना, अलग-अलग करना, फैलाना, रेचक औषधि देना।

रिच्-रिङ्क्-रिणक् (रिणक्ति, रिङ्क्ते) = विरेचने, रिक्तीकरणे। रिक्त करना, मल शुद्धि होना, गर्भपात कराना, गर्भ गिराना। अति - अतिरिक्त होना, अतिक्रमण करना। वि - मल शुद्धि होना। (रिणक्ति, रिङ्क्ते - रिक्तं करोति। रिञ्चन्, रेचकः, रेक्ता, रेचः, रेची - रेचके। रेचनम्, रेचनीयम्, रेच्यम्, रिक्तिः, रिक्तम्, रेक्तव्यम् - विरेचने)।

रिञ्च (रिञ्चयति) = विस्तारे। विस्तार करना। (रिञ्चयति - विस्तारयति। विरञ्चः - विस्तारकः)।

रिण् (रेणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, अल्पीभावे, चूर्णे। शब्द करना, अल्प होना, चूर्ण होना। (रेणति - अल्पीभवति, शब्दं करोति। रेणुः - अल्पपरिधिद्रव्यम्, चूर्णम्)।

रिणक्-रिच्-रिङ्क् (रिणक्ति, रिङ्क्ते) = विरेचने, रिक्तीकरणे। रिक्त करना, मल शुद्धि होना, गर्भपात कराना, गर्भ गिराना। अति - अतिरिक्त होना, अतिक्रमण करना। वि - मल शुद्धि होना। (रिणक्ति, रिङ्क्ते - रिक्तं करोति। रिञ्चन्, रेचकः, रेक्ता, रेचः, रेची - रेचके। रेचनम्, रेचनीयम्, रेच्यम्, रिक्तिः, रिक्तम्, रेक्तव्यम् - विरेचने)।

रिण्व (रिण्वति) = गत्यर्थः। जाना।

रिप् (रिपति) = गतौ। जाना। (रिपति - गच्छति। रिप्तः, रिप्तवान्, रेप्ता, रेपकः - गन्ता। रेप्तव्यम्, रेप्यम्, रिप्तम्, रिप्तिः, रेपणम्, रेपणीयम् - गमने)।

रिफ् (रिफति, रेफति) = कथन-युद्ध-निन्दा-हिंसा-दानेषु, कथने, युद्धे, निन्दायाम्, हिंसायां, ग्रहणे च, भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। बोलना, कहना, युद्ध करना, दोष लगाना, निन्दा करना, दुःख देना, पीड़ा करना, देना, आत्मप्रशंसा या प्रस्तुति करना। (रेफति - मारयति। रेफः -

हिंसकः। रेफणम् - हिंसा। रिफति - कथयति। रेफन्, रेफकः - कथके)।

रिम्फ (रिम्फति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, हिंसा करना।(रिम्फति - हिंसयति। रिम्फः - हिंसकः। रिम्फणम् - हिंसा)।

रिम्भ (रिम्भति) = धारणे, घर्षणे। धारण करना, घर्षण करना। (रिम्भति - धारयति)।

रिश् (रिशति) = ताडने, हिंसायाम्। मार डालना या दुःख देना, मारने का यत्न करना। (रिशति - ताडयति। रेष्टा, रेशन्, रेशकः, रिष्टः, रिष्टवान् - ताडयितरि। रिट्, रेशः, रेशनम्, रेशनीयम्, रेष्टव्यम् - ताडनकर्मणि)।

रिष् (रेषति, रिष्यति) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना, मारने का यत्न करना। (रेषति - हिनस्ति। रेष्टा, रिषिः, रिषः। रेषः - श्लेष्मा। रेषणम् - हिंसनम्)।

रिह् (रिहति) = कथन-युद्ध-निन्दा-हिंसा-दानेषु। कहना, आत्म-प्रशंसा करना, निन्दा करना, युद्ध करना, मार डालना, मारने का यत्न करना, देना।

री (रिणाति) = गतिरेषणयोः, रेषणे, आदाने। जाना, अरण्य पशु के समान पुकारना, पीड़ा करना, दुःख देना।(रीणाति - आदत्ते। रीतिः, रीतः, रीतवान् - आदातरि। रीतम्, रीतः - आदाने)।

री (रीयते) = स्रवणे, श्रवणे। सुनना, झरना, टपकना, गिरना, नीचे आना।(रीयते - शृणोति। रीणः, रयाणः - श्रोतरि। रीतिः - क्रमः। रयणम्, रयणीयम् - श्रवणम्)।

री - रै (रायति) = शब्दे, ध्वनौ, गाने, गान-कर्मणि। शब्द करना। (रायति - गायति। रायकः, रायिता - गायके)।

रु (रौति) = शब्दे, ध्वनौ, भर्त्सने। शब्द करना, ध्वनि करना, भर्त्सना करना।(रौति - भर्त्सयति। रवन्, रवकः, रावकः, रवणः, रावणः - भर्त्सके। रुत्, रव्यम्, राव्यम्, रवणीयम् - भर्त्सने)।

रु (रवते) = गति-रेषणयोः। जाना, चलना, मार डालना या दुःख देना, बोलना, सम्भाषण करना, क्रोध करना।

रुच् (रोचते) = अभिलषे, रोचने, दीप्तौ, प्रकाशे, अभिप्रीतौ च। चमकाना, प्रकाशित होना, आनन्द करना, प्रसन्न होना, उत्साह करना, रुचना। (रोचते - अभिलषति, प्रकाशते। रोचकः, रोचमानः, रुचकः - प्रकाशकः। रुक्, रुचिः, रोचनम्, रोचनीयम्, रुच्यम्, रौच्यम्, रोचने)।

रुज् (रोजयति, रोजयते) = हिंसायाम्। मारना, दुःख देना।(रोजयति - मारयति। रोजकः - घातकः। रोजनम् - हिंसा)।

रुज् (रुजति) = भङ्गे, कष्टे। दुःख से या रोग से पीड़ित होना, वक्र होना, टेढ़ा होना, टूट जाना। (रुजति - कष्टं भुङ्क्ते। रोजन्, रोजकः, रुष्टः,रुष्टवान्, रोगी - कष्टभोक्तरि। रुक्, रोगः, रुजा, रुष्टम्, रुष्टिः, रोजनम्, रोजनीयम् - कष्टे)।

रुट् (रोटते) = उपघाते, विशरणे गत्यवसादनेषु, छेदने गमने दुःखे च। प्रतिबन्ध करना, रोकना, झगड़ना, कामवेग से तड़पना, भूमि पर लेटना। (रुटति - दुःखयति। रोटिः, रुटि्टः, रुट्टुः - दुःखम्)।

रुट् (रोटयति, रोटयते) = रोषे, प्रतिघाते, प्रतिहिंसायाम्। क्रोध करना, प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना।(रोटते - प्रतिघातयति (बदले में मारता है)। रोटकः, रोटमानः - प्रतिहन्ता। रुट्, रुटिः, रोटनम्, रोटनीयम्, रोट्यम्, रौट्यम् - प्रतिघातने)।

रुट् (रोटयति, रोटयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, भाषण करना।

रुठ् (रोठति, रोठते) = उपघाते, ताडने। मारना, नीचे गिरना। - रोकना, आड़े आना। (रोठति - मारयति। रुठः - हिंसा)।

रुठ् (रोठते) = कठोरे, प्रतिघाते, प्रतिहिंसायाम्। कठोर होना, प्रतिघात करना। (रोठते - कठोरो भवति। रोठकः, रोठमानः - कठोरं

भावुकः, रुठ्, रुठिः, रोठः, रोठनीयम् - कठोरे)।

रुण्-रुन्ध (रुणद्धि, रुन्धे) = आवरणे, अवरोधे। रोकना, घेर लेना, घेरना। अभिसम् - प्रतिरोध करना, अस्वीकार करना। अव - सावधान रहना, दक्षता से रहना। उप - घेरना, घेर लेना, सेना के द्वारा घेरना। प्रति - रोकना। सन्नि - बन्द करना, सैन्य आदि से बन्द करना।(रुणद्धि, रुन्धे - आवृणोति। रुन्धन्, रोधकः - आवरके। रोधस् - अवरोधकं वस्तु। रोधनम्, रोधनीयम् - अवरोधनम्)।

रुण्ट (रुण्टति) = चौर्ये, स्तेये। चुराना, मूसना।(रुण्टति - चोरयति। रुण्टाकः - चौरः)।

रुण्ठ (रुण्ठति) = स्तेये, गतौ, गमने। चुराना, मूसना, जाना, आलस्य करना, लंगड़ाना। (रुण्ठति - धावति। रुण्ठाकः - धावकः)।

रुण्ड (रुण्डति) = खण्डने, अवयवविभागे। काटना, टुकड़े करना। (रुण्डति - निकृन्तति, विभजति। रुण्डः - खण्डः)।

रुद् (रोदिति) = अश्रुविमोचने, रोदने। रोना, रोते-रोते कहना। उपा - रो-रो कर शान्त करना, दूसरे के लिए रोना।(रोदिति - अश्रु विमोचयति। रुत्, रुदन्, रोदकः, रुद्रः - रुदनकर्तरि। रुतिः, रुत्तम्,रुत्तव्यम्, रोदनीयम्, रोद्यम्, रौद्यम्, रौदम् - रोदने)।

रुध् (रुध्यति, रुध्नोति) = वृद्धौ, वर्धने। बढ़ना, गर्व करना।(रुध्यति, रुध्नोति - वर्धते। रुद्धः, रुद्धवान्, रोधन्, रोधकः, रोद्धा - वर्धके। रोधनम्, रोधनीयम्, रुद्धिः, रुद्धम् - वर्धने, गर्वे। रोधस् - अवरोधः। रुत्, रोधकः, रोद्धा, रुद्धः, रुद्धवान् - वर्धके। रोधनम्, रोधनीयम्, रोद्धव्यम्, रोध्यम्, रुद्धम्, रुद्धिः - वर्धने)।

रुध् (रुध्यते) = कामे, अवरोधने। चाहना, रोकना, कृपालु होना, दया करना, अनुमोदन देना, परामर्श करना, शोक करना, रोना।(अनुरुध्यते - अवरुणद्धि। अनुरुद्धः, अनुरुद्धवान्, अनुरोधकः - अवरोधके।अनुरुद्धम्,

अनुरुद्धिः, अनुरोधनम्, अनुरोधनीयम् - अवरोधने)।

रुन्ध-रुण् (रुणद्धि, रुन्धे) = आवरणे, अवरोधे। रोकना, घेर लेना, घेरना। अभिसम् - प्रतिरोध करना, अस्वीकार करना। अव - सावधान रहना, दक्षता से रहना। उप - घेरना, घेर लेना, सेना के द्वारा घेरना। प्रति - रोकना। सन्नि - बन्द करना, सैन्य आदि से घेरना। (रुणद्धि, रुन्धे - आवृणोति। रुन्धन्, रोधकः - आवरके। रोधस् - अवरोधकं वस्तु। रोधनम्, रोधनीयम् - अवरोधनम्)।

रुप् (रुप्यति) = विमोहने, जागरणे। विकल चित्त होना, भ्रान्त होना, जागना, जागरूक होना। (रुप्यति - जागर्ति। रोपकः, रोपः, रोप्ता, रुप्तः, रुप्तवान् - जागरूके। रुप्तिः, रुप्तम्, रोप्तव्यम्, रोपनम्, रोपनीयम्, रोप्यम्, रौप्यम् - जागरणे)।

रुफ् (रोफति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। हिंसा करना, मार डालना, पीड़ा देना, निन्दा करना। (रोफति - मारयति। रोफः - मारकः। रोफणम् - हिंसनम्)।

रुम्फ (रुम्फति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। निन्दा करना, हिंसा करना।(रुम्फति - मारयति। रुम्फः - मारयिता। रुम्फणम् - हिंसा)।

रुम्ब (रुम्बति) = मिश्रणे, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मर्दन करना, मिश्रण करना। (रुम्बति - मिश्रयति। रुम्बः - मिश्रणम्)।

रुश् (रुशति) = हिंसायाम्। हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना। (रुशति - हिंसयति। रोशन्, रोशकः, रोशी, रोष्टा, रुष्टः, रुष्टवान् - घातके। रुट्, रोशः, रोशनम्, रोशनीयम्, रुष्टम्, रुष्टिः, रोष्टव्यम् - हिंसायाम्)।

रुंश (रुंशयति, रुंशयते, रुंशति) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना।

रुष् (रोषति; रुष्यति) = हिंसायाम्, विवादे, रोषे, क्रोधे। विवाद करना, हिंसा करना, मार डालना, दुःख देना, मार डालने का यत्न करना।

(रोषति - विवदते। रोष्या - रोष्टा, विवदिता। रुट् - क्रोधः। रोषः - क्रोधः। रुषिः - क्रोधः। रुष्यम् - कलहितम्)।

रुष् (रुष्यति, रोषयति, रोषयते) = रोषे कोपने। क्रोध करना। (रुष्यति - रुष्टो भवति। रुष्टः, रुष्टवान्, रोषकः, रोषी - रुष्टे। रुट्, रोषणम्, रोषणीयम्, रोष्यम्, रौष्यम्, रोषः - कोपने। रोषयति - कुप्यति। रोषकः - कोपकः। रोषणम्, रोषणीयम् - क्रोधे)।

रुह् (रोहति) = बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च, जन्मनि, प्रसवे। बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, बढ़ना, चढ़ना, उत्पन्न होना, प्रकट होना, जन्म होना, जन्म लेना। अधि - ऊपर चढ़ना, चढ़ना, आरोहण करना। अव - उतरना, नीचे आना। आ - आरूढ़ होना, ऊपर बैठना, ऊपर चढ़ना। प्र - उगना, अङ्कुर उत्पन्न होना। (रोहति - प्रसूते। रुह्, रुहम्, रोहणम्, रोहणीयम् - अङ्कुरे। आरूढः - उपरिवर्तमानः। आरोहणम् - अधिगमनम्, उपरिगमनम्)।

रूक्ष (रूक्षयति, रूक्षयते) = पारुष्ये, कठोरतायाम्। कठिन होना, रूक्ष होना, कठोर वचन बोलना, नीरस होना, शुष्क होना, सूखना। (रूक्षयति - कठोरताम् आचरति। रूक्षवान्, रूक्ष्मी, रूक्षकः - कठोरव्यवहर्तरि। रूक्षम्, रूक्षणीयम्, रूक्षणम् — कठोरव्यवहारः)।

रूप् (रूपयति, रूपयते) = रूपक्रियायाम्। रूप बनाना, आकार बनाना, रचना करना, मन में रूपाकृति लाना। नि - स्पष्ट बोलना, समझा के कहना, वाद-विवाद करना। (रूपयति - रूपं निर्माति। रूपम् - आकृतिः)।

रूष् (रूषति) = भूषायाम्। संवारना, अलंकृत करना, शृंगार करना।

रेक् (रेकते) = शंकायाम्। शंका करना, संदिग्ध होना। आ - अधिक संदिग्ध होना।

रेखा (रेखायति) = श्लाघासादनयोः। स्तुति करना, उत्कर्ष की सीमा बनना, रेखा खींचना।

रेज् (रेजते) = दीप्तौ, भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना।

रेट् (रेटति, रेटते) = परिभाषणे, याञ्चायाम्। बोलना, सम्भाषण करना, याचना करना, मांगना।

रेड् (रेडति, रेडते) = परिभाषणे, अतिभाषणे। अधिक बोलना। (रेडति, रेडते - अतिभाषते। रेड्, रेडः, रेडकः, रेडन्, रेडमानः - अतिभाषके)।

रेप् (रेपते) = गतौ, शब्दे। जाना, शब्द करना।

रेभ् (रेभते) = भर्त्सने, शब्दे, गर्जने। शब्द करना। (रेभते - गर्जति। रेभः - हस्ती। रेभकः, रेभाणः - गर्जितरि। रेभिः, रेभुः, रेभणम्, रेभणीयम्, रेभ् - गर्जने)।

रेव् (रेवते) = प्लवगतौ, श्रमेण चलने। उड़कर जाना, तैरकर पार जाना, नदी के समान बहना। (रेवते - श्रमेण चलति। रेव्, रेवकः, रेवलः, रेव्यः रैव्यः, रेवमाणः - श्रमेण गन्तरि। रेविः - श्रमेण गन्त्री। रेवणीयम् - श्रमेण गमनम्। रेवुः - नदी)।

रेष् (रेषते) = अव्यक्ते शब्दे, अव्यक्तध्वनौ। गुनगुनाना, अस्पष्ट शब्द करना, हिनहिनाना, जोर से चिल्लाना। (रेषते - अव्यक्तं ध्वनति (गुनगुनाता है)। रेट्, रेषकः, रेषमाणः, रेषिः, रेषणम्, रेषणीयम् - अव्यक्तध्वनौ)।

रै (रायति) = शब्दे, ध्वनौ, गाने। शब्द करना, गाना। (रायति - गायति। रायकः, रायिता - गायके। रायणम् - ध्वनिः। रायः - शब्दकर्ता)।

रोड् (रोडति) = उन्मादे, अनादरे मौनधारणे च। उन्मत्त होना, मौन धारण करना, अपमान करना। (रोडति - मौनं धारयति। रोडः - मौनधारकः)।

रोलम्ब (रोलम्बति) = मर्दने, मर्दनक्रियायाम्, गन्धोपादाने, घ्राणे। सूंघना, चूमना, मर्दन करना। (रोलम्बति - जिघ्रति, गन्धं गृह्णाति। रोलम्बः - भ्रमरः)।

रौड् (रौडति) = अनादरे। अपमान करना, तिरस्कार करना।।

(ल)

लक् (लाकयति) = आच्छादने, आस्वादने, रुच्याम्। स्वाद लेना, रुचि होना, आच्छादित करना।(लाकयति - आच्छादयति।लाका - कम्बलम्)।

लक्ष् (लक्षयति, लक्षयते) = दर्शनाङ्कनयोः आलोचने, विचारणे। देखना, चिह्न करना, संकेत लगाना, तारतम्य देखना, विवेचन करना, निरूपण करना।उप - एक अर्थ के कहने से दूसरे अर्थ का बोध करना। सम् - अच्छी तरह जानना।(लक्षयति - पश्यति, चिह्नयति। लक्ष्मन् - चिह्नम्।लक्षणीयम् - परिचयनीयम्, परिचय-योग्यः।लक्षितम् - परिचितम्। लक्षयितव्यम् - परिचयनीयम्।लक्षयते - अङ्कयति।लक्षितः - चिह्नितः। लक्ष्यम् - ध्येयम्, चिह्नम्। लक्षणम् - चिह्नम्। लक्षिकः - लक्ष्यकर्ता)।

लक्ष (संख्या) = एक लाख (100,000)।

लख् (लखति) = गतौ, गत्यर्थौ।जाना, हिलना।(लखति - गच्छति। लखः - गमनम्)।

लग् (लगति, लगयति) = संगमे, सङ्गे।लगना, लगन होना, संयोग होना, मिलाप होना, स्पर्श होना, छूना।(लगति, लगयति - परस्परं संगच्छते। लगः, लगकः, लगन् - संगन्ता।लगिः, लगुः, लग्नम्, लगनम्, लगनीयम्, लगितव्यम्, लग्यम्, लाग्यम्, लागुः - परस्परं संगमने)।

लग् (लागयति, लागयते) = आस्वादने आच्छादने। स्वाद लेना, चखना, ढकना, सम्पादित करना।

लघि-लङ्घ (लङ्घते, लङ्घयति, लङ्घयते) = गतौ भोजननिवृत्तौ च।जाना, उपवास करना, भूखा रहना, न्यून होना, अल्प होना, शुष्क होना, सूखना।

लङ्ख (लङ्खति) = गतौ, गत्यर्थौ, सीवने।जाना, हिलना, सिलना। (लङ्खति - सीव्यति। लङ्खः - देवः)।

लङ्ग (लङ्गति) = गत्यर्थः, गतौ, लङ्गने। जाना, लंगड़ाना। (लङ्गति - चञ्चलो भवति (लंगड़ाता है)। लङ्गः - चञ्चलः)।

लङ्घ (लङ्घते, लङ्घयति, लङ्घयते) = गतौ, लङ्घने, कूर्दने, भोजननिवृत्तौ च। जाना, कूदना, उपवास करना, भूखा रहना। उत् - लांघना, मर्यादा का अतिक्रमण करना। (लङ्घते - कूर्दते। लङ्घकः, लङ्घमानः - कूर्दितरि।लङ्घयति - कूर्दते।लङ्घकः - कूर्दकः।लङ्घनम्, लङ्घनीयम्, लङ्घव्यम् - कूर्दने)।

लङ्घ (लङ्घति) = उत्पवने अल्पभारे च, शोषणे उत्क्रमणे च।न्यून होना, अल्प होना, अल्पभार होना, शुष्क होना, सूखना। (लङ्घति - शुष्यति। लङ्घनम् - उत्क्रमणम्, शोषणम्। लङ्घिः, लङ्घः, लङ्घनम्, लङ्घनीयम्, लङ्घ्यम् - अल्पभारे)।

लङ्घ (लङ्घयति, लङ्घयते) = गतौ, भासार्थः भाषार्थो वा।चमकना, आगे बढ़ जाना, बोलना।

लच्छ (लच्छति) = लक्षणे। चिह्न करना, ध्यान में रखना।

लज् (लजते) = व्रीडायाम्, लज्जायांम्, सेवने च। लज्जित होना, मुंह छिपाना।(लजयति, लजयते - सेवते। लजानः, लजः - सेवके)।

लज् (लजति) = भर्जने, भर्त्सने, निन्दायां गालिप्रदाने। भूँजना, तलना, भूनना, अपमान करना, धिक्कारना। (लजति - गालिं ददाति, निन्दयति। लजा - निन्दा। लाजः - भृष्टं धान्यम्)।

लज् (लजयति, लजयते) = प्रकाशने। प्रकट होना, स्पष्ट होना।

लज (लाजयति, लाजयते) = अपवारणे। ढांकना, छिपाना, दूर करना।

लज् (लाजयति, लाजयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

लज्ज (लज्जति, लज्जते) = व्रीडायाम्। लज्जित होना। (लज्जति,

लज्जते - व्रीडयति। लज्जन्, लज्जानः, लज्जितः, लज्जितवान् - व्रीडायुक्ते। लज्जा - व्रीडा)।

लञ्छ (लञ्छति) = परिचये, लक्षणे चिह्ने। चिह्न करना, पहचान करना। (लञ्छति - परिचिनोति। लञ्छनम् - चिह्नम्)।

लञ्ज् (लञ्जति) = भर्जने, भर्त्सने, निन्दायां गालिप्रदाने। भूँजना, तलना, भूनना, अपमान करना, धिक्कारना। (लजति - गालिं ददाति, निन्दयति। लजा - निन्दा)।

लञ्ज (लञ्जति, लञ्जते) = आकर्षणे, भर्त्सने, निन्दायां गालिप्रदाने हिंसाबलादाननिकेतनेषु च। आकर्षण होना, आकर्षण करना, दुःख देना, पीड़ा करना, दृढ़ होना, बलवान होना, देना, रहना, वास करना। (लञ्जति - आकर्षति)।

लञ्ज् (लञ्जयति, लञ्जयते) = प्रकाशने। प्रकट होना, स्पष्ट होना।

लञ्ज् (लञ्जयति, लञ्जयते) = भासार्थः, भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

लञ्ज (लञ्जयति, लञ्जति, लञ्जते) = हिंसाबलादाननिकेतनेषु भर्त्सने, निन्दायां गालिप्रदाने च। दुःख देना, पीड़ा करना, दृढ़ होना, बलवान होना, देना, रहना, वास करना।

लट् (लटति) = बाल्ये, बालक्रियायाम्, अव्यक्तध्वनौ च। बालक के समान चेष्टा करना, बोलना, तुतलाना, अल्प भाषण करना, थोड़ा बोलना। (लटति - अव्यक्तं शब्दयति (तुतलाता है), क्रीडति। लाटम् - बाल्यावस्था, बालस्य अव्यक्तध्वनिः च)।

लड् (लडति) = विलासे, संतोषे प्रसन्नतायां च। क्रीड़ा करना, विलास करना, संतोष करना, प्रसन्न होना, जीभ बाहर निकालना। (लडति - प्रसन्नो भवति। लाडः - संतोषी। लडः - प्रसन्नता)।

लड् (लाडयति, लाडयते) = उपसेवायाम्, कार्यान्त्ये, कार्यसमापने।

कार्यसमापन करना, पालन करना, चाहना। (लडयति - कार्यम् समापयति। लडन्, लडः, लडकः - कार्यसमापके)।

लण्ड (लण्डति, लण्डते, लण्डयति, लण्डयते) = कोपे, क्रोधे, उत्क्षेपे, जिह्वोन्मथने, भासार्थः भाषार्थो वा। क्रोध करना, ऊपर उठाना, ऊपर फेंकना, ऊपर उड़ाना, चमकना, बोलना, भाषण करना। (लण्डति - क्रुध्यति, दन्तैः जिह्वां घर्षयति। लण्डयति - उत्क्षिपति। लण्डः - क्रोधी, उत्क्षेपकः। लण्डा - क्रोधिनी। लण्डी - क्रोधी)।

लप् (लपति) = व्यक्तायां वाचि, विस्पष्टवाक्ये। स्पष्ट बोलना। अनु - दूसरे के समान बोलना, यथामति बोलना, प्रत्युत्तर देना। अप - स्वीकार नहीं करना, मान्य नहीं करना। आ - विचार करना, पूछना, आलाप करना। प्र - प्रलाप करना। प्रति - प्राप्त होना, मिलना। वि - रोना, शोक करना। विप्र - भाषण का खण्डन करना, प्रतिषेध करना। सम् - बोलना, भाषण करना, कपट करना, वञ्चना करना। (लपति - कथयति। लपनम् - दुःखप्रकाशनम्)।

लभ् (लभते) = प्राप्तौ। प्राप्त होना, मिलना। आ - स्पर्श करना। (लभते - प्राप्नोति। लभकः, लाभकः, लाभमानः - प्रापके। लभ्, लब्धिः, लब्धम्, लभिः, लभनम्, लभ्यम्, लाभ्यम्, लभः, लाभः - प्रापणे)।

लम्ब (लम्बते) = शब्दे, अवस्रंसने, अधोलम्बने। शब्द करना, लटकना, नीचे औंधा गिरना। अव - लटकना, आश्रय करना, टिकाना, आश्रय देना, टिकना, नीचे शिर और ऊपर पांव करके लटकना। आ - विश्वास करना, भरोसा करना। वि - विलम्ब करना। (लम्बते - अधोनमति (लटकता है)। लम्बिः, लम्बनम्, लम्बनीयम् - अधोलम्बने)।

लम्ब (लम्बति) = अवरोहणे, अधोलम्बने, मर्दनक्रियायाम्, मर्दने। लटकना। (लम्बति - अवरोहति। लम्बा, लम्बिका - जिह्वा)।

लम्भ (लम्भति) = धारणे, घर्षणे। धारण करना, वहन करना, ढोना।

(लम्भति - वहति)।

लर्ब (लर्बति) = गतौ। जाना।

लल् (ललति) = विलासे। क्रीडा करना, खेलना, जीभ बाहर निकाल कर हिलाना।

लल् (लालयते) = ईप्सायाम्। इच्छा करना, चाहना, रखना, टिकाना, स्थापित करना, रमण करना, खेलना, रति करना। (लालयति - इच्छति। लालनम्, लालनीयम् - इच्छा)।

लश् (लाशयति) = शिल्पयोगे, शिलायोगे, पाषाणयोगे। चतुर होना, कला कौशल जानना। (लाशयति - पाषाणं श्लिष्यति। लाशकः - पाषाणस्य योजको विभाजको वा)।

लष् (लषति, लषते) = कान्तौ, इच्छायाम्। इच्छा करना, चाहना। अभि - चाहना। (लषति, लषते - काङ्क्षति। लषः, लट्, लाट्, लषन्, लषमाणः, लषकः, लाषकः - कामयितरि। लषिः, लष्टिः, लषकः, लषणीयम्, लष्यम्, लाष्यम्, लाषम् - कामनायाम्। अभिलाषः - इच्छा)।

लष् (लाषयति) = शिल्पयोगे, शिलायोगे, पाषाणयोगे। चतुर होना, कला कौशल जानना।

लस् (लसति) = श्लेषणक्रीडनयोः, आलिङ्गने, सहने, क्रीडने च। आलिङ्गन करना, गले लगाना, क्रीडा करना, खेलना, रमण करना। उत् - चमकना, तेजोयुक्त होना, आनन्दित होना, प्रसन्न होना। वि - विलास करना, रमण करना। (लसितम्, लसिः, लसुः, लस्तिः, लसः, लसालम्, लसनम् - क्रीडने)।

लस् (लासयति, लासयते) = शिल्पयोगे। चतुर होना, कुशल होना, कला कौशल जानना।

ला (लाति) = आदाने, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना, देना, दान देना। (लाति - ग्रहणाति। लायन्, लायकः, लातः, लाता - ग्रहीता। लाः, लः -

ग्रहीता। लानम्, लातव्यम्, लानीयम् - ग्रहणे)।

लाख् (लाखति) = शोषणलमर्थयोः, शोषणे शृङ्गारे च। शुष्क होना, कार्यक्षम होना, समर्थ होना, भूषित करना, संवारना, निषेध करना। (लाखनम् - शोषणं मण्डनं च)।

लाघ् (लाघते, लाघरते) = सामर्थ्ये, शक्तौ, प्रापणे, प्राप्तौ। कार्यक्षम होना, समर्थ होना। (लाघते - प्राप्नोति। लाघरते - प्राप्नोति। लाघः, लाघकः, लाघरः लाघमानः - प्रापितरि। लाघिः, लाघुः, लाघनम्, लाघनीम्, लाघ्यम्, लाघनम् - प्राप्तौ)।

लाज् (लाजति) = भर्जने भर्त्सने, निन्दायां गालिप्रदाने। भूनना, दोष लगाना, निन्दा करना। (लाजति - भृञ्जति। लाजा - भृष्टं धान्यम्)।

लाञ्छ (लाञ्छति, लाञ्छयति) = लक्षणे, चिह्ने। चिह्न करना। (लाञ्छनम् - चिह्नम्, लक्षणम्)।

लाञ्ज (लाञ्जति) = भर्त्सने, निन्दायां गालिप्रदाने। दोष लगाना, निन्दा करना। (लाञ्जति - विप्रलभते। लाञ्जः - व्यभिचारी)।

लाट (लाट्यति) = जीवने। जीवन होना।

लाभ् (लाभयति) = प्रेरणे, धनागमे। प्रेरणा करना, भेजना, उड़ाना, फेंकना, धन मिलना। (लाभयति - धनागमो भवति। लाभम्, लाभनम्, लाभनीयम् - धनागमः)।

लाल् (लालयति) = द्रवीकरणे। द्रवित करना, द्रव होना। (लालयति - द्रवी भवति। लाला - मुखस्थं जलम्)।

लिख् (लेखति, लिखति) = गतौ, अक्षरविन्यासे। लिखना। (लेखति, लिखति - लेखनम् करति। लेखः - वाक्य-समूहः, रचना)।

लिङ्ग (लिङ्गति) = गतौ, चिह्ने, लक्ष्ये। जाना, लक्ष्य करना, चिह्न करना। आ - आलिङ्गन करना, गले लगाना। (लिङ्गति - लक्षयति, लक्ष्यं करोति। लिङ्गम् - लक्ष्यम्, चिह्नम्)।

लिङ्ग (लिङ्गयति, लिङ्गयते, लिङ्गति) = चित्रीकरणे, वैचित्र्ये, ज्ञाने। अनेक रंग देना, रंगना। (लिङ्गयति - विचित्रणं करोति ज्ञापयति। लिङ्गम् - विचित्रम्)।

लिङ्घ (लिङ्घते) = गतौ, नर्तने। गति करना, नृत्य करना। (लिङ्घते - नृत्यति। लिङ्घकः, लिङ्घमानः - नर्तके। लिङ्घिः, लिङ्घः, लिङ्घनम्, लिङ्घनीयम्, लिङ्घ्यम् - नर्तने)।

लिट् (लिट्यति) = अल्पकुत्सनयोः। अल्प होना, दोष लगाना, निन्दा करना।

लिढ्-लिह् (लेढि, लीढे) = आस्वादने, रुच्याम्। चाटना, चखना। (लेढि, लीढे - आस्वदयति। लेढा, लेहन्, लेहानः, लेहकः, लिट्, लीढवान्, लीढः - आस्वादके। लेहनम्, लेह्यम्, लैह्यम्, लैहम्, लीढिः, लीढम्, लीढव्यम् - आस्वादने)।

लिप् (लेपयति, लेपयते) = उपदेहे, लेपने। लीपना, पोतना, विलेपन करना, बढ़ाना, अधिक करना। (लेपनम्, लेपनीयम्, लेप्तव्यम्, लिप्तम्, लिप्तिः - लेपने। लिप्तः, लिप्तवान्, लेपकः - लेपके)।

लिम्प (लिम्पति, लिम्पते) = उपदेहे, लेपने। लीपना, पोतना, विलेपन करना, बढ़ाना, अधिक करना। (लिम्पति, लिम्पते - लेपयति)।

लिम्भ (लिम्भति) = धारणे, वहने, घर्षणे। ढोना। (लिम्भति - वहति)।

लिश् (लिशति, लिश्यते, लिश्यति) = अल्पीभावे, अल्पत्वे। अल्प होना, न्यून होना। (लिशति, लिश्यते - अल्पं भवति। लेष्टा, लेशकः, लिष्टः, लिष्टवान् - अल्पमात्रके। लेशः, लेश्यः, लिष्टिः, लिष्टम्, लेशनम्, लेशनीयम्, लेष्टव्यम्, लिट् - अल्पे)।

लिश् (लिशति) = गतौ, शनैर्गमने। जाना, धीरे चलना। (लिशति - गच्छति। लिशः - गन्ता। लेशन्, लेशी, लेष्टा, लिष्टः, लिष्टवान् - शनैर्गन्तरि। लिट्, लेशः, लेशनम्, लेशनीयम्, लिष्टम्, लिष्टः, लेष्टव्यम् - शनैर्गमने)।

लिह् (लेढि, लीढे) = आस्वादने, रुच्याम्। चाटना, चखना। (लेढि, लीढे - आस्वदयति। लेढा, लेहन्, लेहानः, लेहकः, लिट्, लीढवान्, लीढः - आस्वादके। लेहनम्, लेह्यम्, लैह्यम्, लैहम्, लीढिः, लीढम्, लीढव्यम् - आस्वादने)।

ली (लीनाति) = श्लेषणे, कष्टे। कष्ट होना। (लीनाति - कष्टयते। लीतः, लीतवान् - परिश्रमिणि। लीतम्, लीतिः - कष्टे)।

ली (लीयते; लीनाति) = श्लेषणे, आलिङ्गने। युक्त होना, प्राप्त होना, मिलना। (लीनः, लयानः - आश्लेष्टा। लीतः, लयनम्, लयनीयम् - आलिङ्गने)।

ली (लाययति, लाययते, लयति, लीनयति, लीनयते) = द्रवीकरणे। पतला करना, गलाना। आ - खर्च करना। प्रवि - प्राप्त करना, सम्पादित करना।

लुञ्च (लुञ्चति) = अपनयने, अल्पत्वे। दूर करना, कतरना, चीरना, तोड़ना, छीलना, छाल निकालना, बाल आदि को उखाड़ना। (लुञ्चति - अपनयति। लुञ्चनम् - अपनयनम्, अल्पता हीनता वा)।

लुञ्ज (लुञ्जयति, लुञ्जयते) = आकर्षणे, भाषार्थाः, हिंसाबलादाननिकेतनेषु। पीड़ा करना, दुःख देना, मोटा होना, बली होना, देना, रहना, वास करना। (लुञ्जयति - आकर्षति। लुञ्जकः - आकर्षकः। लुञ्जनम्, लुञ्जनीयम् - आकर्षणम्)।

लुट् (लोटति) = विलोडने, मन्थनक्रियाम्। विलोडना, काँपना, हिलना। (लोटति - मन्थयति। लोटुः - जनसम्मर्दः)।

लुट् (लुटति, लुट्यति) = विलोडने, संश्लेषणे। संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना, आलिङ्गन करना, विलोडन करना। (लुटति, लुट्यति - विलोडयति। लुट्, लोटन्, लोटकः, लोटा = विलोडके। लोटनम्, लोटव्यम्, लुटम्, लुटिः - विलोडने)।

लुट् (लोटते, लोटयति, लोटयते) = पदा ताडने, पदाघाते, प्रतिघाते, प्रतिहिंसायाम्, भासार्थः भाषार्थो वा। प्रतिबन्ध करना, रोकना, ढकेलना, लात मारना, धक्का मारना, चमकना, बोलना, भाषण करना। (लोटते, लोटयति, लोटयते - पदा ताडयति (लात मारता है)। लोटकः, लोटमानः - पदेनघातकः। लुट्, लुटिः, लोटः, लोटुः, लोटनम्, लोटनीयम् - पदाघाते। लोटुः, लोटनम्, लोटनीयम्, लोट्यम्, लौट्यम् - पदा ताडनम्)।

लुठ् (लोठति, लोठते) = उपघाते। नीचे गिराना।(लोठति - ताडयति। लुठः - ताडनम्)।

लुठ् (लुठति) = संश्लेषणे, आलिङ्गने, लोटने। भूमि का स्पर्श करना, भूमि पर लोटना, झरना, बहना। (लुठति - लोटते। लुठन्, लुठः, लुठकः - लोटितरि। लोठु - लोटनम्)।

लुठ् (लोठते) = प्रतिघाते, प्रतिहिंसायाम्, मेलने, मिश्रणे। प्रतिघात करना, मिलना। (लोठते - मिलति। लोठकः, लोठमानः - मेलकः। लुठ्, लुठिः, लोठनम्, लोठनीयम् - मेलने, मिश्रणे)।

लुड् (लोडति) = बिलोना।

लुण्ट (लुण्टति, लुण्टयति) = स्तेये, चौर्ये। चुराना, लूटना, अपमान करना।(लुण्टति, लुण्टयति - चोरयति। लुण्टः, लुण्टन्, लुण्टकः, लुण्टाकः - चोरे। लुण्टनम्, लुण्टनीयम् - चोरणे)।

लुण्ठ (लुण्ठयति, लुण्ठयते) = स्तेये। चुराना, लूटना।

लुण्ठ (लुण्ठति) = स्तेये, गतौ, गमने, कुर्दने। चुराना, लूटना, जाना, कूदना, लुढ़कना।(लुण्ठति - कुर्दते। लुण्ठाकः - कूर्दकः)।

लुण्ठ (लुण्ठति) = आलस्ये प्रतिघाते च। अलसाना, लंगड़ाना, रोकना।

लुन्थ (लुन्थति) = हिंसासंक्लेशयोः, वधे पीडनायां च। मार डालना, दुःख देना, क्लेशित करना, श्रान्त करना, कष्ट देना, श्रम करना, पीड़ा

भोगना। (लुन्थति - हिंसयति ताडयति वा। लुन्था - युद्धम्)।

लुप् (लुप्यति) = अदर्शने, लोपे, विमोहने, जागरणे। लुप्त होना, मतिभ्रंश होना, चूकना, मतिभ्रंश कराना, चूक कराना।(लुप्यति - जागर्ति। लोपकः, लोपः, लोप्ता, लुप्तः, लुप्तवान् - जागरूके। लुप्तिः, लुप्तम्, लोप्तव्यम्, लोपनम्, लोपनीयम्, लोप्यम्, लौप्यम् - लोपे, जागरणे)।

लुम्प (लुम्पति, लुम्पते) = छेदने, छिद्रकरणे, घर्षणे। कतरना, चीरना, टुकड़े करना, नष्ट करना, घर्षण करना, घिसना। वि - लुप्त करना। (लुम्पति, लुम्पते - छिद्रयति। लुम्पन्, लुप्तः, लुप्तवान्, लोपकः - छेदनकर्तरि। लुप्, लोपः, लोपनम्, लोपनीयम्, लोप्तव्यम्, लुप्तम्, लुप्तिः, लोप्यम् - छिद्रकरणे)।

लुम्ब (लुम्बति; लुम्बयति, लुम्बयते) = अर्दने अदर्शने मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, गोदना, नोचना। नष्ट होना, गुप्त होना, अदृश्य होना।

लुम्ब (लुम्बयति) = अर्दने, प्रापणे। पाना। (लुम्बयति - प्राप्नोति। लुम्बन्, लुम्बकः - प्रापके। लुम्बनम्, लुम्बनीयम् - प्रापणे)।

लुभ् (लुभ्यति) = गार्ध्ये, अभिकाङ्क्षायाम्।आशा करना, अभिकाङ्क्षा करना, चाहना, लोभ करना। प्र - सम् - लुभाना, आकर्षण करना, खींच लेना।(लुभ्यति - अभिकाङ्क्षति। लोभन्, लुब्धः, लुब्धवान्, लोब्धा, लोभकः - अभिकाङ्क्षके)। लुब्, लुप्, लोभः, लोभनम्, लोभनीयम्, लोब्धव्यम् - महत्वाकाङ्क्षायाम्)।

लुभ् (लुभति) = विमोहने, दीनतायाम्। दीन होना, मतिभ्रंश होना, भ्रान्त होना। (लुभति - दीनो भवति। लोभन्, लोभकः, लुब्धः, लुब्धवान् - दीने, लोभयुक्ते। लुब्धिः, लुब्धम्, लोभनम्, लोभनीयम् - दीनतायाम् विमोहने)।

लू (लुनाति, लुनीते) = छेदने, विकर्तने। काटना, कतरना, चीरना। (लुनाति, लुनीते - कृन्तति। लूनः, लूनवान् - छेत्तरि। लूतः, लावकः -

छेदकः। लवित्रम् - कर्तनसाधनम्। लवनम्, लवनीयम्, लव्यम्, लाव्यम् - विकर्तने)।

लूष् (लूषति) = भूषायाम्। संवारना, शृंगार करना, सुशोभित करना।

लूष् (लूषयति, लूषयते) = हिंसायाम्, मारणे। दुःख देना, पीड़ा करना। (लूषयति - मारयति। लूषकः - घातकः। लूषणन्, लूषणीयम्। घातने)।

लेट् (लेट्यति) = पूर्वभावे स्वप्ने धौर्त्ये च। पहले होना, सोना, धूर्तता करना, जुआ खेलना।

लेप् (लेपते) = गतौ शब्दे। समीप जाना, समीप आना, शब्द करना।

लेला (लेलायति) = दीप्तौ। चमकना, प्रकाशित होना, शोभित होना, शोभा पाना।

लोक् (लोकते, लोकयति, लोकयते) = दर्शने, भाषार्थः, भासार्थो च। देखना, चमकना, बोलना, भाषण करना। (लोकते - पश्यति। लोकः, लोककः, लोकमानः - द्रष्टरि। लोकः, लोकिः, लोकनम्, लोकनीयम्, लोक्यम् - दर्शने। लोकयति - पश्यति)।

लोच् (लोचते, लोचयति, लोचयते) = दर्शने, भासार्थः भाषार्थो वा। देखना, चमकना, प्रकाशित होना, भाषण करना, बोलना। आ - विचार करना, मनन करना। (लोचयति, लोचते - पश्यति। लोचनम् - चक्षुः। लोचः, लोचकः, लोचमानः - द्रष्टरि। लोचः, लोचिः, लोचनम्, लोचनीयम्, लोच्यम् - दर्शने)।

लोट् (लोट्यति) = पूर्वभावे स्वप्ने धौर्त्ये च। पहले होना, सोना, धूर्तता करना, जुआ खेलना।

लोड् (लोडति) = उन्माने, उन्मत्ततायाम्, शयने। मूर्ख होना, उन्मत्त होना, शयन करना। (लोडति - उन्मत्तो भवति। लोडः - उन्मत्तः। लोडुः - शायकः)।

लोष्ट (लोष्टते) = संघाते, सहभावे। एकत्र करना, ढेर करना, राशि करना। (लोष्टते - सहभावं गच्छति। लोष्टकः, लोष्टमानः - सार्थे। लोष्टिः, लोष्टुः, लोष्टम्, लोष्टनम्, लोष्टनीयम् - सहभावे)।

(व)

वः (सर्वनाम) = तुम लोग, तुम्हारा, तुमको, तुम सबका, तुम सबको, तुम सबके लिए।

वक्ष (वक्षति) = संघाते, रोषे, क्रोधे। क्रोध करना, बटोरना, ढेर करना। (वक्षति - क्रुध्यति)।

वक्ष (वक्षते) = पालने, रक्षणे, त्राणे। पालन करना, रक्षा करना। (वक्षते - रक्षति, पालयति। वक्षकः, वक्षमाणः- पालयितरि। वक्षस् - उरः। वक्षणम्, वक्षणीयम् - रक्षणम्, पालनम्)।

वख् (वखति) = गत्यर्थौ गतौ। जाना। (वखति - गच्छति)।

वग् (वगते) = गतौ, प्रवाहे, आदाने, ग्रहणे। लेना, ग्रहण करना, बहना। (वगते - वहति। वागुः - नदी। वागता - जीवनम्)।

वघ् (वघते) = गत्याक्षेपे, गत्यवरोधे, उत्तिष्ठने उत्थाने। रुकना, उठना। (वघते - उत्तिष्ठति। वघकः, वघमानः - उत्थातरि। वघम्, वघी, वघू, वघनम्, वघनीयम्, वघ्यम् - उत्थाने)।

वङ्क (वङ्कते) = गतौ, कौटिल्ये, कुटिलतायाम्। जाना, टेढ़ा जाना, वक्र होना, टेढ़ा होना, वक्र करना, टेढ़ा करना, दुष्टता करना, नमन करना, नमाना। (वङ्कते - वक्री भवति। वङ्कः, वङ्ककः, वङ्कमानः - कुटिलगन्तरि। वङ्किः - वक्रम्। वङ्कनम्, वङ्क्यम् - कौटिल्ये)।

वङ्ख (वङ्खति) = गत्यर्थौ, गतौ, कौटिल्ये, कुटिलतायाम्। जाना, टेढ़ा जाना, वक्र होना, टेढ़ा होना, वक्र करना, टेढ़ा करना, दुष्टता करना, नमन करना, नमाना। (वङ्खति - गुन्थति)।

वङ्ग (वङ्गति) = गत्यर्थः गतौ, स्खलित गमने, म्लाने च। जाना, लंगड़ाना। (वङ्गति - म्लायति)।

वङ्घ (वङ्घते) = स्खलने, गत्याक्षेपे, गत्यवरोधे। स्खलन होना, जाना, दोष लगाना, निन्दा करना, प्रारम्भ करना। (वङ्घते - स्खलति। वङ्घकः, वङ्घमानः - स्खलितरि। वङ्घः, वङ्घी, वङ्घू, वङ्घनम्, वङ्घनीयम्, वङ्घ्यम् - स्खलने)।

वच् (वक्ति, वाचयति, वाचयते, वाचति) = परिभाषणे, कथने, सन्देशे, साधुवाक्ये। बोलना, कहना, समझाना, पढ़ना, अध्ययन करना। प्र - बोलने का प्रारम्भ करना। (वक्ति - कथयति। वक्ता, वाचकः, वचन् - कथयिता। उक्तिः, उक्तम्, वचनम्, वचनीयम्, वाच्यम्, वाचकम्, वाचनीयम्, वाक्, वचस्, वक्तव्यम्, वाचा - कथने। वक्त्रम् - मुखम्। वाग्मी, वाचालः, वाचाटः - कथकः)।

वच् (वाचयति) = सन्देशे, साधुवाक्ये। बोलना, कहना, समझाना, पढ़ना, अध्ययन करना। (वाचयति - साधु वदति। वाचन्, वाचकः - साधुवदितरि। वचनम्, वाच्यम्, वाचनीयम् - साधुवाक्ये)।

वज् (वजति) = गतौ, गत्याम्। जाना। (वजति - गच्छति, चलति। वजः - गमने)।

वज् (वाजयति, वाजयते) = मार्गसंस्कारगत्योः, शस्त्रनिर्माणे। जाना, सिद्ध करना, बनाना, तैयार करना। (वाजयति - इषुं निर्मिमीते। वजनम्, वाजकः - तीरनिर्माणकर्तरि। वाजम् - तीरम्, इषुः)।

वञ्च (वञ्चति, वञ्चते, वञ्चयते) = गतौ, गमने, वञ्चने, प्रलम्भने। ठगना, फंसाना, जाना, प्रतारणा करना, वञ्चना करना। (वञ्चति - विप्रलम्भति। वञ्चनम् - विप्रलम्भनम्। वञ्चयते - प्रलम्भयति। वञ्चकः, वञ्चानः, वञ्चन् - प्रलम्भने। वञ्चनम्, वञ्चनीयम् - प्रलम्भने। परिवञ्चन् - परिवञ्चना)।

वट् (वटति) = वेष्टने, परितः आवेष्टने। घेरना, घेर लेना, बांधना,

गूंथना, बटना, एकत्र करना, लपेटना। (वटति - वेष्टयति। वटः - न्यग्रोधः। वाटः - परिवेष्टनम्। वाटी - मार्गः)।

वट् (वटति) = परिभाषणे संश्लेषणे, अवयवे, अवयवक्रियायाम्। परिभाषण करना, अनुचित बोलना, बाँटना, पीसना। (वटति - संश्लेषयति। वटा - जटा)।

वट् (वटयति, वटयते) = ग्रन्थे, प्रारम्भकरणे, वीरतायाम्। बटना, गूंथना। (वटयति - आवर्तयति। वटुः - आवर्तकः, पटुः वा)।

वट् (वटयति, वटयते) = विभाजने। विभाग करना, अलग-अलग करना।

वट् (वटति, वटयति) = परिभाषणे, व्यक्तभाषणे। स्पष्ट बोलना। (वटति, वटयति - वदति। वटः, वटुः, वटन् - वदिता। वटनम्, वटनीयम्, वट्यम्, वाट्यम् - वार्तायाम्)।

वट् (वटयति) = विभाजने, हस्तशिल्पे। दस्तकारी करना। (वटयति - हस्तेन कार्यं करोति। वटः, वटुः - हस्तेन कार्यकारको बालकः। वटनम्, वटनीयम् - हस्तशिल्पे)।

वट्ठ (वट्ठति) = सेचने, संघर्षे। संघर्षण करना, रगड़ना। (वट्ठति - संघर्षयति)।

वठ् (वठति) = स्थौल्ये, दीर्घे ह्रस्वत्वे च। शक्तिवान् होना, स्थूल होना, मोटा होना, ह्रस्व होना। (वठति - दीर्घो ह्रस्वो वा भवति)।

वड्ड (वड्डति) = खनने, खननक्रियायाम्। खनन करना, खोदना। (वड्डति - खनति। वड्डः - खनकः। वड्डुः, वड्डिः, वड्डनम् - खननम्)।

वण् (वणति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (वणति - वदति, जनसम्मर्दो (भीड़) भवति। वणुः - वाक्यम्। वाणी - वचनम्। वणः - सम्मर्दः)।

वण्ट (वण्टयति, वण्टयते) = प्रकाशने। प्रकाशित होना, प्रकट होना।

वण्ट (वण्टयति, वण्टयते, वण्टति) = विभागक्रियायाम्, विभाजने। पृथक् करना, अलग करना, विभाग करना, बांटना। (वण्टति - विभजति)।

वण्ठ (वण्ठते) = एकचर्यायाम्, एकान्ते। अकेला रहना। (वण्ठते - एकान्ते वसति। वण्ठः, वण्ठकः, वण्ठमानः - एकान्ते निवसितरि। वण्ठिः, वण्ठुः, वण्ठनम्, वण्ठनीयम् - एकान्तक्रियायाम्)।

वण्ठ (वण्ठति, वण्ठयति, वण्ठयते) = विभाजने। विभाग करना, बांटना।

वण्ड (वण्डति, वण्डते; वण्डयति, वण्डयते) = वेष्टने, परिवेष्टने, विभाजने। लपेटना, विभक्त करना, बांटना, अलग-अलग करना। (वण्डते - परिवेष्टयति। वण्डः, वण्डकः, वण्डमानः - परिवेष्टरि। वण्डा - लता, पाकः। वण्डिः, वण्डः, वण्डनम्, वण्डनीयम् - परिवेष्टने)।

वत् (अव्यय) = दया सूचक, खेद सूचक।

वद् (वदति, वदते, वादयति, वादयते) = व्यक्तायां वाचि, व्यक्तवाक्ये, सन्देशवाचने। कहना, स्पष्ट कहना, समझाना। अनु - अनन्तर बोलना, साथ बोलना। अप - निन्दा करना, अपकारकारक भाषण करना। अभि - सत्कार पूर्वक अभिनन्दन करना, नमस्कार करना। उप - समझा कर कहना। निर् - स्वच्छ बोलना, स्पष्ट कहना। परि - विरुद्ध बोलना। प्र - लोगों के सामने बोलना। प्रति - उत्तर देना। वि - वाद-विवाद करना। विप्र - विप्रलाप करना, निष्ठुर बोलना। विसम् - वचन भंग करना, कहने के अनुकूल न करना। सम्प्र - एकत्र होकर स्पष्ट कहना। सभी का एक साथ स्पष्ट बोलना। (वदति, वदते - भाषते। वक्ता, वदन्, वदान्यः, वादकः, वादी, वादयन्, वावदूकः - वक्तरि। वदनम्, वक्तम् - मुखम्। उक्तिः, उक्तम्, वक्तव्यम्, वदनीयम् - वाक्ये, भाषणे। वादयति - कथयति। वादनम्, वाद्यम्, वादित्रम् - वादनसाधने (बाजा)। प्रतिवादः - प्रतिवदनम्, प्रत्युत्तरम्। परीवादः - उपहासः, परिहासः, हास्योक्तिः। संवादः - सहभाषणम्। अनुवादः -

पश्चात् वादः, भाषान्तरः। वादः, वादनम्, वादनीयम् - वचने)।

वध्-हन् (हन्ति) = हिंसागत्योः, मारणे चलने च। मार डालना, प्राप्त करना, जाना, किसी प्रकार समाप्त करना।

वन्द (वन्दते) = अभिवादनस्तुत्योः, नमस्कारे प्रशंसायां च। सत्कार पूर्वक कुशल प्रश्न पूछना, प्रशंसा करना, स्तुति करना, वन्दना करना। (वन्दते - नमस्करोति, स्तौति वा। वन्दकः, वन्दी, वन्दमानः, वन्दासः - स्तावके। वन्दिः, वन्दनम्, वन्दनीयम्, वन्दा - नमस्कारे स्तुतौ च)।

वन् (वनति, वनयति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, संभक्तौ, मिश्रणे। शब्द करना, सेवा करना, चाकरी करना, सहायता करना, आपद्ग्रस्त होना। (वनति - मिश्रितो भवति, शब्दयति। वानः, वानम् - वर्षा-ध्वनिः)।

वन् (वनति, वनयति) = स्मरणे। स्मरण करना। (वनति, वनयति - स्मरति। वनः, वनकः, वनन् - स्मृतिशीलः। वननम्, वननीयम्, वन्यम्, वान्यम्, वानम् - स्मरणे)।

वन् (वनयति, वानयति) = बीजजन्मनि प्रादुर्भावे अङ्कुरणे च। बीज से उत्पन्न होना, बीज का उगना, उत्पन्न होना, प्रकट होना। (वनयति, वानयति - अङ्कुरितो भवति)।

वन् (वनुते, वनोति, वनयति, वनयते) = याचने। याचना करना, मांगना, दुःख देना, उद्योग-धन्धा करना। (वनौति, वनुते - याचते। वन्वन्, वन्वानः, वन्ता, वनकः - याचके। वननम्, वननीयम्, वन्तव्यम्, वन्तम्, वन्तिः - भिक्षणे)।

वप्-उप् (वपति, वपते) = बीजतन्तुसंताने, वपने, योजने, तन्तुसन्ताने, घर्षणे, तन्तुनिर्माणे च। बीज बोना, बुनना, उत्पन्न करना, अन्नादि काटना, बालकर्त्तन करना, क्षौरकर्म करना। (वपति - क्षेत्रे धान्यम् आकिरति। वपते - योजयति। वपन्, वपमानः, वपकः, वापकः - बीजवापके। वपा - नाभेः श्वेतं मांसम् (चर्बी)। वापिः - कृतसोपानको कूपः। वपनम् - बालकर्त्तनम्,

क्षौरकर्म। उप्तव्यम्, उप्तम्, उप्तिः, वपनीयम्, वप्यम्, वाप्यम्, वापम्, वप्, वाप् - वपने, योजने, तन्तुसन्ताने)।

वफ् (वफति) = गतौ, गत्याम्। जाना। (वफति - गच्छति)।

वभ्र (वभ्रति) = गतौ, चलने, विवादे। जाना, स्थानान्तर करना। (वभ्रति - विवदते। वभ्रम् - विवादः)।

वम् (वमति, वमयति, वामयति) = उद्गिरणे, वमने। वमन होना। (वमयति, वामयति - वमनं करोति। वमति - उद्गिरति। वमन्, वमकः - उद्ग्रिता। वमनम्, वमनीयम्, वान्तिः, वम्यम्, वाम्यम् - वमने)।

वय् (वयते) = गतौ, उड्डयने। जाना, स्थानान्तर करना, उड़ना। (वयते - उड्डीयते। वयनम्, वयिः, वयुः, वय्यम्, वाय्यम्, वयनीयम् - चलने। वयनम्, वयणम्, वयकः, वायकः, वयमानः - गन्तरि)।

वयम् (सर्वनाम) = हम सब, हम लोग, हमने, हम। (त्रिलिंग)।

वर् (वरयति, वरयते) = ईप्सायाम्। इच्छा करना, चाहना, आशा करना। (वरयति - इच्छति। वरः - वरणीयः (दूल्हा)।

वरण् (वरण्यति) = गतौ। जाना।

वरम् (अव्यय) = (च, तु, पुनः के साथ) अच्छा है, न कि, समान, सम्भवतः।

वर्च (वर्चते) = दीप्तौ। प्रकाशित होना, चमकना।

वर्ण (वर्णयति, वर्णयते) = प्रेरणे वर्णने च। आज्ञा करना, प्रेरणा करना, भेजना, रंग देना, रंगना।

वर्ण (वर्णयति, वर्णयते) = वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु, रागे विस्तारे प्रशंसायां च। वर्णन करना, विस्तृत करना, फैलाना, प्रशंसा करना, चमकना, प्रकाशित होना। (वर्णयति - रजति, विस्तारयति, प्रशंसयति। वर्णम् - रागः। वर्णकम् - रागः। वर्णकम् - रागः, पद्यम्। वर्णनम्, वर्णनीयम् - वर्णने)।

वर्ष (वर्षते) = वर्षायाम्, वर्षणे, सिञ्चने, स्नेहने। गीला होना, भीगना।

वर्ह (वर्हते) = परिभाषणहिंसाच्छादनेषु। बोलना, कहना, मार डालना या दुःख देना, आच्छादित करना, ढकना।

वर्ह (वर्हयति, वर्हयते) = भासार्थः भाषार्थो स्मरणे च। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, स्मरण करना।

वल् (वलते) = संवरणे संचलने च निष्पत्तौ, अङ्कुरे, फलितभावे। आच्छादित करना, ढकना, घेरना, जाना, अंकुरित होना। (वलति - अङ्कुरितो भवति। वलम् - अङ्कुरः। वालम् - केशः। वलितम् - लहर)।

वल् (वलते) = संवरणे, प्रसारे। विस्तार करना। (वलते - विस्तारयति। वलकः, वलमानः, विस्तारयितरि। वालम् - केशः, पुच्छम्। वालिः - वलितम्। वलम्, वलिः, वलुः, वलनम्, वलनीयम् - विस्तारे)।

वल्क (वल्कयति, वल्कयते) = परिधारणे, परिभाषणे, भाषणे, वचने। बोलना, सभी ओर धारण करना। (वल्कयति - परिदधाति। वल्कलम् - वृक्षस्य त्वक्)।

वल्गु (वल्गति) = गत्यर्थः, प्लुतगतौ। जाना, फुदकते हुए चलना।

वल्गु (वल्गूयति) = पूजामाधुर्ययोः। पूजा करना, सम्मान करना, मीठा बोलना।

वल्भ (वल्भते) = भोजने, अदने। खाना, भक्षण करना।

वल्यूल (वल्यूलयति, वल्यूलयते) = लवनपवनयोः, पतने च। स्वच्छ करना, कतरना, चीरना, तोड़ना, गिराना।

वल्ल (वल्लते) = विक्रये, संवरणे संचलने, प्रसारे, निष्पत्तौ, फलितभावे प्रेम्णे च। आच्छादित करना, ढकना, जाना। (वल्लति - विक्रीणाति। वल्लते - संवृणोति (लपेटता है)। वल्लकः, वल्लमानः - संवरितरि। वल्ली - लता। वल्लरिः - गुच्छः। वल्लनम्, वल्लम् - संवरणे। वल्लभः - प्रियः, पतिः)।

वल्ल (वल्लते) = भोजने, अदने। खाना, भक्षण करना। (वल्लते - अत्ति। वल्लः, वल्लकः, वल्लानः, वल्लालः - भक्षितरि। वल्लनम्, वल्लनीयम्

- भक्षणे)।

वल्ह (वल्हते, वल्हयति, वल्हयते) = परिभाषणहिंसाच्छादनेषु। भासार्थः भासार्थो, प्राधान्ये। बोलना, कहना, मार डालना या पीड़ा करना, आच्छादित करना, ढकना, प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, प्रधान होना।

वंश् (वंशते) = गतौ, शब्दे, वंशने च। बढ़ना, ऊँचा होना, उठना, ऊपर चढ़ना, शब्द करना।

वश् (वष्टि) = कान्तौ, द्योतने। प्रकाश करना, इच्छा करना, चाहना। (वष्टि - द्योतते। वशन्, वशकः - द्योतकः। वशिः, वशुः, वाशुः, वशः, वश्यम्, वाश्यम्, उष्टिः, उष्टम्, उष्टव्यम्, वशनम्, वाशनम्, वाशम्, वश्, वाश् - द्योतने)।

वष् (वषति) = भोजने, अदने, हिंसार्थः, हिंसायाम्। मार डालना, पीड़ा करना। (वषति - भक्षयति। वषिता - उदरम्भरिः (पेटू)। वष्यम् - भक्षितम्। वषिः - खाद्यम्)।

वष्क (वष्कयति, वष्कयते) = दर्शने, शपथे, गतौ। देखना, जाना, शपथ लेना। (वष्कते - शपथं गृह्णाति। वष्कलः - शपथग्रहीता)।

वस् (वस्ते) = आच्छादने। वस्त्र पहनना, ओढ़ना। (वस्ते-आच्छादयति। वसानः, वसकः, वस्तवान् - आच्छादकः। वसनम्, वस्त्रम्, वस्तव्यम्, वसनीयम्, वस्यम्, वास्यम्, वसन्, वस्त्रम् - आच्छादनवस्तूनि)।

वस् (वासयति, वासयते) = स्नेहने, छेदने, वर्तने, अवहरणे, अपहरणे च, स्नेहच्छेदापहरणेषु, स्नेहनच्छेदावहरणेषु च। दया करना, प्रीति करना, मार डालना, कतरना, चीरना, नष्ट करना, ले लेना। (वासयति - स्निह्यति। वासना - कर्तनम्)।

वस् (वसति, वसते) = निवासे। वसति करना, टिकना, निवास करना। अधि - ऊपर बैठना, उपभोग करना, कार्य में लगाना। उप - उपवास करना, भूखा रहना। नि - रहना, वास करना, बाहर जाना। सम्

- सहवास करना, साथ रहना, एकत्र करना। (वसति, वसते - निवासं करोति। वसन्, वसानः - आच्छादके। वसनम्, वस्त्रम्, वासम् - प्रावारे (चादर)। वस्तु - द्रव्यम्। वस्तिः - निवासः, शरीरैकदेशः। वसतिः - निवासस्थानम्। वासः, आवासः, निवासः - गृहम्। अधिवासः - निवसनम्। वस्तव्यम्, वसनीयम्, वस्यम्, वास्यम्, उष्टम्, उष्टिः - निवासे। वास्तव्यः - निवासयोग्यं गृहम्)।

वस् (वस्यति) = स्तम्भे, स्थितौ। मन से या शरीर से सीधा होना, निश्चल होना। (वस्यति - तिष्ठति (खड़ा होता है)। वसन्, वसकः, वस्तम्, वस्तवान्, वस्ता - स्थितिकर्तरि। वसनम्, वस्तम्, वस्तिः, वसनीयम्, वसम्, वासम्, वस्यम्, वास्यम् - स्तम्भने। वासुः - गृहस्य महत् स्तम्भम्। वास्तुः - गृहाधिशिल्पः। वस्तु - द्रव्यम्। वस्ति - गृहम्, तम्बूनाम्ना प्रसिद्धम्)।

वस्क (वस्कते) = गत्यर्थः। जाना।

वस्त (वस्तयति) = अर्दने, प्रेरणे। प्रेरणा करना। (वस्तयति - प्रेरयति। वस्तकः, वस्तन् - प्रेरणे। वस्तु, वस्तुकम् - प्रेरणायाम्)।

वह्-वोढ्-ऊढ् (वहति, वहते) = प्रापणे, धारणे। बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना। (वहति, वहते - धारयति। वहन्, वहमाणः, वोढा, वहकः, वाहकः - भारवाही। वहिः, वाहः, वहनम्, वहनीयम्, वह्या, वाह्यम्, ऊढम्, ऊढिः, ऊढव्यम् - वहने। प्रौढिः - बुद्धिमत्ता। प्रौढः - बुद्धिमान्। प्रौढा - बुद्धिमती)।

वंह् (वंहते) = वृद्धौ, साहाय्यकरणे। बढ़ना, सहायता करना। (वंहते - साहाय्यं करोति। वंहकः, वंहमानः - सहायकः। वंहिः, वंहुः, वंहनम्, वंहनीयम्, वंहम् - साहाय्यकरणे)।

वा (वाति) = गतिगन्धनयोः, चलने दुर्गन्धे च। जाना, पवन के समान चलना। नि - नष्ट होना, पवन से बुझना, पीड़ा करना, दुःख देना। (वाति - वहति। वायुः - अनिलः। वायन्, वायकः, वाता - गन्ता, दुर्गन्धयुक्तः।

वातः - वायुः)।

वा (अव्यय) = अथवा, या तो ..., या।

वाङ्क्ष (वाङ्क्षति) = काङ्क्षायाम्। इच्छा करना, चाहना। (वाङ्क्षति - इच्छति। वाङ्क्षा - इच्छा)।

वाज्-वज् (वाजयति) = बल होना, चलना, गति करना, जाना, सिद्ध करना, बनाना, तैयार करना।

वाञ्छ (वाञ्छति) = इच्छायाम्, कामनायाम्। इच्छा करना, चाहना। (वाञ्छति - कामयते। वाञ्छा - कामना)।

वाड् (वाडते) = आप्लाव्ये, अप्लावे, आप्लवे, तरणे। स्नान करना, नहाना, अङ्ग धोना, तैरना। (वाडते - तरति। वाडम् - महानौका (जहाज)। वाडकः, वाडानः - तरिता। वाडा। वाड्, वाडिः, वाडुः, वाडनम्, वाडनीयम्, वाड्यम् - तरणे)।

वात् (वातयति, वातयते) = गतिसुखसेचनयोः, गतौ सुखे च। सुखी होना, आनन्द करना, सेवा करना, जाना। (वातयति - गच्छति। वातः - वायुः)।

वाम् (सर्वनाम) = तुम दोनो को, तुम्हारे लिए, तुम्हारा, हम दोनों ने, हम दोनों को।

वास् (वासयति, वासयते) = उपसेवायाम्, अप्रधाने कर्मे गौणकार्ये, सुगन्धे। वासित करना, सुगन्धित करना, धूपित करना, धूप देना। (वासयति - अप्रधानं कार्यम् करोति। वासयन् - गौणकार्यकर्ता। वासना - गौणं कार्यम्)।

वास् (वास्यते) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, पक्षी के समान शब्द करना, बुलाना, पुकारना। (वास्यते - शब्दयति। वासानः, वासकः - शब्दयिता)।

वाह् (वाहते) = वाहने, वहने, प्रयत्ने, व्यवसाये। प्रयत्न करना, व्यवसाय करना। (वाहते - वहति। वाहकः, वाहमानः, वाट्, वाहः, वाहनीयम्,

वाहिनी - वोढा, नद्याम्, सेनायाम् वा)।

वि (उपसर्ग) = विशेष, विना, विलोम।

विक्- विज् (वेवेक्ति, वेविङ्क्ते वेविक्ते) = पृथग्भावे, भिन्नतायाम्, पार्थक्ये। पृथक् करना, अलग करना, पृथक् होना, अलग होना, टूटना, छूटना, विवेक करना, तारतम्य देखना। (वेवेक्ति, वेविङ्क्ते वेविक्ते - पृथग्भवति। वेक्ता, वेजन्, वेजकः, विक्तवान् - पृथग्भवितरि। विक्तः, विक्तम्, वेक्तव्यम्, वेजनम्, वेजनीयम्, वेज्यम्, वैज्यम्, वैजम्, विक्, विजम्, विजिः - पृथग्भावे)।

विङ्क्-विच-विनक् (विनक्ति, विङ्क्ते) = पृथग्भावे, पार्थक्ये, भिन्नतायाम्। पृथक् करना, अलग करना, पृथक् होना, अलग होना, छूटना, टूटना, विवेक करना, तारतम्य देखना। (विनक्तिः, विङ्क्ते - पृथग्भवति। विञ्चन्, वेचकः, वेची, वेक्ता, विक्तिः, विक्तवान्, वेकी - पृथग्भवितरि। विक्तम्, विक्तिः, वेचनम्, वेचनीयम्, वेच्यम्, वेकः - पृथग्भावे)।

विङ्क (विङ्कते) = गतौ, वपने, अल्पध्वनौ। गति करना, बोना। (विङ्कते - वपति। विङ्कः - वप्ता। कलं विङ्कते - अल्पं ध्वनयति। कलविङ्कः - गुदगुदी, चटकादिपक्षिविशेषाः)।

विच् (विचति) = गतौ, व्याप्तौ, व्याजीकरणे। व्यापना, ठगना, जाना।

विच्-विनक्-विङ्क् (विनक्ति, विङ्क्ते) = पृथग्भावे, पार्थक्ये। पृथक् करना, अलग करना, पृथक् होना, अलग होना, छूटना, टूटना, विवेक करना, तारतम्य देखना। (विनक्तिः, विङ्क्ते - पृथग्भवति। विञ्चन्, वेचकः, वेची, वेक्ता, विक्तिः, विक्तवान्, वेकी - पृथग्भवितरि। विक्तम्, विक्तिः, वेचनम्, वेचनीयम्, वेच्यम्, वेकः - पृथग्भावे)।

विच्छ (विच्छति) = गतौ, सावरोधगमने। समीप जाना या आना, रुकते हुए चलना। (विच्छति - रुन्धन् गच्छति (रुकता हुआ चलता है)। वेच्छन्, वेच्छकः, विष्टः, विष्टवान् - रुन्धन् गन्तरि। वेच्छनम्, वेच्छनीयम्, विट्, विष्टम्, विष्टः, वेष्टव्यम् - सावरोधगमने)।

विच्छ (विच्छयति, विच्छयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। प्रकाशित होना, चमकना, बोलना, भाषण करना।

विज् (विजयति, विजयते, विजते, उद्विजते, विनक्ति) = भयचलनयोः, भये कम्पने च। डरना, डर से कांपना, आपद्ग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना। (विजयति, विजयते - बिभेति, कम्पते। विनक्ति, विङ्क्ते - बिभेति, कम्पते। विक्तः, विक्तवान्, वेक्ता - भीरौ। वेजनम्, वेजनीयम्, वेज्यम्, वेगम्, विक्तिः, विक्तम् - भये कम्पने च)।

विज्-विक् (वेवेक्ति, वेविङ्क्ते वेविक्ते) = पृथग्भावे, भिन्नतायाम्, पार्थक्ये। पृथक् करना, अलग करना, पृथक् होना, अलग होना, टूटना, छूटना, विवेक करना, तारतम्य देखना।(वेवेक्ति, वेविङ्क्ते वेविक्ते - पृथग्भवति। वेक्ता, वेजन्, वेजकः, विक्तवान् - पृथग्भवितरि। विक्तः, विक्तम्, वेक्तव्यम्, वेजनम्, वेजनीयम्, वेज्यम्, वैज्यम्, वैजम्, विक्, विजम्, विजिः - पृथग्भावे)।

विट् (वेटति) = शब्दे, हास्ये, हास्यशब्दे। शब्द करना, परिहास करना।(वेटति - हसति। विटः - परिहासकः)।

विड् (वेडति) - शापे, अपशब्दे। शाप देना, अपशब्द बोलना।

वित्त (वित्तयति) = समुत्सर्गे। देना, दान करना, धर्म में व्यय करना।

विथ् (वेथते) = याचने। याचना करना, मांगना।

विद् (वेत्ति, वित्ते, वेद) = ज्ञाने। समझना, जानना। निर् - विपद्ग्रस्त होना, दुःखी होना। सम् (संवित्ते) - ध्यान करना, मनन करना, योगाभ्यास करना। (वेत्ति - जानाति। वित्, विद्वान्, वेदन्, वेदकः, वेदी, वेत्ता - ज्ञातरि। वेदः, वेदनम्, वेदितव्यम्, वेदनीयम्, वेद्यम्, वैद्यम् - ज्ञाने)।

विद् (विद्यते) = सत्तायाम्। जीवन होना, विद्यमान होना, रहना। निर् - विरक्त होना।(विद्यते - भवति। वेदानः, वेदकः, वित्तिः, वित्तवान् - भवितरि। वित्तिः, वेदनम्, वेदनीयम्, वेद्यम्, वेत्तव्यम् - भवने, सत्तायाम्)।

विद् (विन्ते) = मनने, विचारणे। मनन करना, विचार करना।(विन्ते - विचारयति। वित्तः, वित्तवान्, वेदकः, वेदी, वेत्ता - विचारके। वित्तिः, वेदनम्, वेदनीयम्, वेद्यम् - विचारणे। वेदः - विचारः)।

विद् (वेदयते) = चेतनवेतनाख्याननिवासेषु, भृतौ, नाम्नि, निवासे च। शरीर की सुध रखना, समझना, जानना, समझा कर कहना, चाकरी करना, वास करना, रहना, स्थिर रहना। नि, वि, निर् - समझा कर कहना। प्रति - देना, अर्पण करना।(वेदयति - भृतिं करोति। वेदानः - भृतिः। वेदी - निवसिता। वेदनम्, वेदनीयम् - भृतौ)।

विद्-विन्द (विन्दति, विन्दते) = लाभे। प्राप्त करना, सम्पादित करना।(विन्दति, विन्दते - प्राप्नोति। विन्दन्, वित्तः, वित्तवान् - प्रापके। वित्तम् - धनम्। वित्तिः, वेदनम्, वेदनीयम्, वेद्यम् - प्रापणे)।

विध् (विधति) = विधाने, ताडने। विधान करना, वेध करना, वेधन करना, ताडना।(विधति - विदधाति। विधन्, विधः, विधकः - विधायके। विधिः, विधनम्, विधनीयम्, विधानम् - विधाने)।

विनक् (विनक्ति) = भयचलनयोः, भये कम्पने च। डरना, डर से कम्पित होना, कांपना, आपद्ग्रस्त होना, विपत्ति में पड़ना।(विनक्ति - बिभेति, कम्पते)।

विनक्-विङ्क्-विच् (विनक्ति, विङ्क्ते) = पृथग्भावे, पार्थक्ये, भिन्नतायाम्। पृथक् करना, अलग करना, पृथक् होना, अलग होना, छूटना, टूटना, विवेक करना, तारतम्य देखना।(विनक्तिः, विङ्क्ते - पृथग्भवति। विञ्चन्, वेचकः, वेची, वेक्ता, विक्तिः, विक्तवान्, वेकी - पृथग्भवितरि। विक्तम्, विक्तिः, वेचनम्, वेचनीयम्, वेच्यम्, वेकः - पृथग्भावे)।

विना (अव्यय) = बिना, विहीन।

विन्द-विद् (विन्दति, विन्दते) = लाभे। प्राप्त करना, सम्पादित करना।(विन्दति, विन्दते - प्राप्नोति। विन्दन्, वित्तः, वित्तवान् - प्रापके।

वित्तम् - धनम्। वित्तिः, वेदनम्, वेदनीयम्, वेद्यम् - प्रापणे)।

विप् (विपते) = प्रेरणे। प्रेरित करना।

विभू = बहुत (अव्यय)।

विल् (विलति) = संवरणे, छिद्रे, विकर्तने। वस्त्र पहनना, ओढ़ना, छिद्र करना, चीरना।

विल् (वेलयति, वेलयते) = त्वरणे, क्षेपे, गत्याम्। उड़ाना, फेंकना, प्रेरणा करना, जाना। (वेलयति - त्वरयति। वेलन्, वेलकः - त्वरितरि। वेला, वेलनम्, वेलनीयम् - त्वरणे)।

विश् (विशति) = सूचने, प्रेरणे, प्रवेशने, अन्तर्गमने। घुसना, भीतर जाना, धंसना, सभी ओर फैलना। प्र - प्रवेश करना, घुस जाना। उप - बैठना, निकट जाना। अभिनि - समक्ष या सामने बैठना, विश्राम करना, थकना, अभिमान करना, अभिनिवेश करना। निर् - मूर्च्छित होना, बाहर जाना, उपभोग करना, भोगना। परि - समक्ष रखना, उपहार देना, भेंट देना। सम् - करवट लेना, विश्राम करना। सन्नि - समीप जाना, समीप रहना। समा - प्रचार में लाना, सम्मिलित करना। नि- निवेश करना, वास करना। (विशति - प्रविशति। वेश्मन्, निवेशनम् - गृहे। विष्टिः, विष्टवान् - गन्तरि। विष्टम्, विष्टिः, वेशनम्, वेशनीयम् - प्रवेशने। विश्यति - सूचयति। वेशः, वेशनम्, वेशनीयम्, विष्टिः, विष्टम् - सूचने)।

विंशतिः (संख्या) = बीस (20)।

विश्व (सर्वनाम) = सब, सभी।

विष् (विष्णाति) = विप्रयोगे, पार्थक्ये। उपयोग न होने से अलग करना, निकाल देना। (विष्णाति - पृथग् भवति। विष्टः, विष्टवान्, वेषकः - पृथक्कर्तरि। वेषः, वेषणम्, वेषणीयम् - पृथग्भावे)।

विष् (वेषति) = सेचने, वपने, घर्षणे। सींचना, घर्षण करना, प्रोक्षण करना, बोना। (वेषति - वपति। वेष्टा, वेषिता, वेषकः, वेषः, वेषुः - वप्तृषु)।

विष्-विविष् (वेवेष्टि, वेवीष्टे वेविष्टे) = व्याप्तौ व्यापने आवरणे। व्यापना, फैलना, प्रसृत होना। (वेवेष्टि, वेवीष्टे वेविष्टे - व्याप्नोति, आवृणोति। विष्णुः - व्यापकः। वेष्टा, विष्टवान्, विष्टः, वेषन्, वेषकः - व्यापके। वेषः, वेषणम्, वेषणीयम्, वेष्यम्, वैष्यम्, वेष्टव्यम्, विष्टिः, विष्टम् - आवरणे। विषयम् - आवरणम्। आविष्टम् - आवृतम्)।

विस् (विस्यति) = प्रेरणे। उड़ाना, फेंकना, समक्ष रखना, समक्ष धरना।

वि-स्रम्भ (वि-स्रम्भते) = विश्वासे (स्रम्भ धातुः प्रायेण विपूर्वः)। विश्वास करना, भरोसा रखना।

वी (वेति) = गति-व्याप्ति-प्रजनन-कान्त्यसन-खादनेषु, प्रसवे, प्रकाशे, आसने, खाद्ये च। जाना, व्यापना, घेरना, आक्रमण करना, गर्भवती होना, इच्छा करना, फेंकना, भेजना, दौड़ाना, खाना, भक्षण करना। सम् - घेरना, घेर लेना, लपेटना। (वेति - प्रसूते। वयन्, वयकः, वायकः - जन्मदाता। वयस्, वायिः, वीतिः - आयुः, खाद्यम्, प्रकाशः च)।

वीज् (वीजयति) = व्यजने। पंखा करना, धान्य को सूप आदि से फटकना।

वीड् (वीडयति, वीडयते) = स्तम्भने। स्थिर होना, दृढ़ होना।

वीण् (वेणति, वेणते) = ज्ञानचिन्तानिशामनेषु, ज्ञाने, बुद्धौ, चिन्तायां श्रवणे च। जानना, समझना, सूक्ष्म दृष्टि से जानना, चिन्तन करना, चिन्ता करना, सुनना। (वेणति, वेणते - शृणोति। वीणा, वीणकः, वीणन्, वीणानः, वीणमानः, वीण् - बुद्धिमती। वीणनम्, वीणनीयम्, वीण्यम्, वैण्यम् - श्रवणे)।

वीथ् (वीथते) = याचने, भिक्षणे, मार्गे। मांगना, चलना। (वीथते - भिक्षते। वीथः, वेथकः, वेथमानः - भिक्षुके। वीथ्, वीथिः, वेथनम्, वेथनीयम्, वेथ्यम्, वैथ्यम् - भिक्षणे। वीथी, वीथिका - मार्गे)।

वीर् (वीरयति, वीरयते) = विक्रान्तौ, वीरतायाम्। शूरवीर होना,

पराक्रमी होना, पराक्रम करना।(वीरयति - वीरताम् करोति, उपद्रवे युद्धे गच्छति। वीरः - शूरः)।

वृ (वरति) = संवरणे, आवरणे, आच्छादने। वरण करना, नियोजित करना, आच्छादित करना।

वृ (वृणीते) = संभक्तौ। सेवा करना, परिचर्या करना।

वृ (वृणोति, वृणीते) = वरणे, संवरणे। चुनना, छांटना।

वृ (वर्णति) = वर्णे। रंगना।(वर्णति - रजति, वर्णनं करोति वा। वर्णः - रागः)।

वृ (वृणोति, वृणुते; वारयति, वारयते, वरति) = वरणे, आवरणे। वरण करना, नियोजित करना, नियमित करना, आच्छादित करना, ढंकना। अप - संरक्षण करना, आच्छादन करना। आ - घेरना, लपेटना। नि, निर् - पूरा करना, समाप्त करना, निवारण करना। परि - घेरना, लपेटना, आच्छादन करना, भरोसा करना, विश्वास करना। वि - स्पष्ट करना या होना। सम् - छिपाना। समा - लपेटना। अप - छोड़ना, दान देना।(वृणोति, वृणुते - आवृतो भवति। वृतः, वृतवान् - आच्छाद्यमाने। वृतिः, वृतम्, वर्तिः, वरणम्, वरणीयम्, वरेण्यम्, वर्यम्, वार्यम् - आवरणे)।

वृ (वारयति, वारयते) = आवरणे, आच्छादने। हटाना, ढकना, घेरना। (वारयति - आवृणोति)।

वृक् (वर्कते) = निकृन्तने, आदाने, ग्रहणे। लेना, मान्य करना, स्वीकार करना।(वर्कते - निकृन्तति। वृक्कः, वृकः - निकृन्तकः)।

वृक्-वृच् (वृणक्ति, वृङ्क्ते) = हिंसायाम्। हिंसा करना, (वृणक्ति, वृङ्क्ते - हिनस्ति। वृक्तः, वृक्तवान्, वर्चनीयम्, वर्च्यम् - मारणे)।

वृक्ष (वृक्षते) = वरणे, आवरणे। योजित करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, ढकना। (वृक्षते - आच्छादयति। वृक्षः, वृक्षाणः - आच्छादनकर्तरि। वृक्षिः, वृक्षः, वृक्षुः, वृक्षणम्, वृक्षा, वृक्षणीयम् - आवरणे)।

वृच्-वृक् (वृणक्ति, वृङ्क्ते) = हिंसायाम्। हिंसा करना, (वृणक्ति, वृङ्क्ते - हिनस्ति। वृक्तः, वृक्तवान्, वर्चनीयम्, वर्च्यम् - मारणे)।

वृज् (वर्जयति, वर्जयते, वर्जति, वृङ्क्ते, वृणक्ति) = वर्जने, त्यागे। छोड़ना, वर्जित करना।(वृणक्तिः, वृङ्क्ते, वर्जयति - त्यजति। वर्जकः, वर्जानः, वर्जः, वृक्तवान् - त्याजके। वर्जनम्, वर्जनीयम्, वर्ज्यम्, वृक्तिः, वृक्तम्, वृक्तव्यम् - त्यागे। वृक्तः, वृक्तवान्, वर्जकः, वर्क्ता - त्यक्तरि। वृजिनम् - त्याज्यम्। वर्जकः - त्यागी। वर्जनम् - त्यागकरणम्)।

वृढ् (वर्ढति) = पालने, पोषणे। पालन करना, पोषण करना।(वर्ढति - पालयति। वृढः - पोषकः)।

वृण् (वृणति) = प्रीणने। आनन्द करना, उत्साह करना।

वृण् (वर्णति) = अपनयने, परित्यागे। दूर ले जाना, त्याग करना।

वृत् (वर्तते) = वर्तने, व्यवहारे। व्यवहार करना, वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना।अति - जीतना, आज्ञा भंग करना, अतिक्रमण करना, लांघना।अनु - अनुसरण करना, दूसरे के समान करना, पीछे-पीछे जाना। अप - लौटना। आ - चक्राकार घूमना, पुनः-पुनः करना। नि - लौटना, कृत्रिमता से करना। निर् - थमना, पूरा करना। परि - घेरना, लपेटना, आवृत करना, परिवर्तन करना, वर्चस्व करना, वर्चस्वी होना, चक्राकार घूमना, बढ़ जाना, आगे जाना, लौटना, पीछे लौटना। प्र - कार्य में लगना, उद्योग करने लगना, प्रवृत्त होना। प्रति - जाना। वि - लौटना, चक्राकार घूमना। विनि - पीछे लौटना। विपरि - मन से भ्रम होना। समभि - कूद कर जाना, उड़ जाना।(वर्तते - व्यवहरति। वर्तकः, वर्तमानः - व्यावहारिकः। वृत्तम्, वृत्तिः, वर्तनम्, वर्तनीयम्, वार्ता, वार्तिकम् - व्यवहारे)।

वृत् (वृतति) = हिंसायां, हिंसने ग्रन्थने च। हिंसा करना।(वृतति - हिनस्ति। वृत्रः - हिंसकः)।

वृत् (वर्तयति, वर्तयते) = भासार्थः भाषार्थो वर्तने, व्यवहारे च।

व्यवहार करना, वर्तन करना, वर्ताव करना, रहना, होना, चमकना, बोलना। (वर्तयति - व्यवहरति। वर्तनम् - प्रवर्तनम्, वृत्तिः, वार्ता, वृत्तान्तः - वार्तायाम्)।

वृत् (वृत्यते) = वरणे, आवरणे। स्वीकार करना, ठहराना, सेवा करना, चाकरी करना। (वृत्यते - आवृणोति। वर्तकः, वर्तमानः - आव्रियमाणः। वृत्तिः, वार्ता, वृत्तान्तः - वर्तने)।

वृथा (अव्यय) = व्यर्थ।

वृध् (वर्धते, वर्धयति, वर्धयते) = भासार्थः भाषार्थो वा, वर्धने, छेदनपूरणयोः। बढ़ना, अधिक होना, काटना, चीरना, भरना, पूर्ण करना, चमकना, बोलना। (वर्धते, वर्धयति - एधते। वर्धकः, वर्धमानः, वृद्धः - वृद्धे, वर्धिते, ज्येष्ठे च। वृध्, वृधिः, वृद्धिः, वर्द्धिः, वर्धनम्, वर्धनीयम्, वर्ध्यम्, वार्ध्यम्, वार्धिकम्, वार्धिक्यम् - वृद्धौ। वर्धकिः - तक्षकः। वर्धनम् - एधनम्, वृद्धिः)।

वृप्-वर्प (वर्पते) = रूपे, रूपकरणे। रूप बनाना।

वृश् (वृश्यति) = वर्धने, वरणे, आवरणे। वरण करना, स्वीकार करना, आच्छादन करना, बढ़ना।

वृष् (वर्षति) = सेचने, घर्षणे, वपने, मेहने, हिंसासंक्लेशनयोः च। बरसना, सींचना, प्रोक्षण करना, मार डालना या पीड़ा करना, दुःख देना, पीड़ित करना। (वर्षति - मेहति। वर्षा, वृष्टिः, वर्षम् - वर्षायाम्। वृषाणः - घर्षकः। वृष्टम् - सिंचितम्। वृट्, वृषिः, वृषा, वृषभः, वार्षुः, वर्षकः - वप्तृषु)।

वृष् (वर्षयते) = शक्तिबन्धे, गर्भे च। गर्भवती होना, विशिष्ट होना, अमानवी पराक्रम करना, पराक्रमी होना, प्रजनन करने में समर्थ होना।

वृह् (वृहति) = उद्यमने। यत्न करना।

वृंह् (वृंहति, वृंहयति, वृंहयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, बोलना।

वॄ (वृणाति, वृणीते) = वरणे, आवरणे। आवरण करना, वरण करना, स्वीकार करना। (वृणाति, वृणीते - आवरयति। वृणः, वृणवान् - आवृते। व्रातः - आवृतः, समूहः वा)।

वुख् (वोखते) = चलने, कम्पने। चलना, कम्पन करना। (वोखते - कम्पते। वोखः, वोखकः, वोखमानः, वुख् - कम्पितरि। वुखिः, वुखुः, वोखनम्, वोखनीयम् - कम्पने)।

वुङ्ग (वुङ्गति) = वर्जने। छोड़ना, त्याग करना, वर्जित करना।

वे (अव्यय) = निश्चय।

वे (वयति, वयते) = तन्तुसन्ताने, तन्तुयोजने, वस्त्रवयने। बुनना, बटना। (वयति, वयते - तन्तुन् योजयति। तन्तुवायः - वस्त्रनिर्माता (जुलाहा)। वयनम्, वयनीयम्, वीतिः, वीतम्, वयितव्यम्, वय्यम्, वाय्यम् - तन्तुसंयोगे)।

वेङ्क (वेङ्कते) = गतौ, रज्जु-भुवि। ज़ाना, रस्सी होना। (वेङ्कते - मन्थनस्य रज्जुः भवति। वेङ्कटः - मन्थनरज्जुः)।

वेण् (वेणति, वेणते) = गतिप्रेषणाश्लेषणेषु, वयने, गत्यां प्रेरणे सहने च, गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु। जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्ययन्त्र बजाना, वाद्ययन्त्र हाथ में लेना। (वेणति - वयति)।

वेथ् (वेथते) = याचने, भिक्षणे, मिश्रणे। याचना करना, मांगना। (वेथते - याचति, मिश्रयति। वेथः, वेथकः, वेथमानः - याचके। वेथ्, वेथिः, वेथनम्, वेथनीयम्, वेथ्यम्, वैथ्यम् - याचने)।

वेदि (वेद्यति) = धौर्त्ये स्वप्ने च। धूर्तता करना, ठगना, सोना।

वेन् (वेनति) = रक्षणे, संभक्तौ, मिश्रणे। रक्षा करना। (वेनति - रक्षति। वेनः - रक्षकः)।

वेन् (वेनति, वेनते) = गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु। जाना, समझना, जानना, स्मरण करना, सारासार विचार करना, तारतम्य देखना, वाद्य यन्त्र बजाना, बाजा हाथ में लेना।

वेप् (वेपते) = कम्पने, क्षरणे। कम्पन करना, काँपना, क्षरण होना। (वेपते - कम्पते। वेपथुः, वेपमानः, वेपन्, वेपकः, वेप् - कम्पनशीले। वेपः, वेपिः, वेपुः, वेपनीयम् - कम्पने)।

वेल् (वेलयति, वेलयते) = कालोपदेशे, काले सन्दर्भे त्वरणे च। काल गणना करना, उपदेश करना, समय पर समझाना। (वेलयति - त्वरयति। वेलः - समयः)।

वेल् (वेलति) = चलने, गतौ, कम्पने। जाना, सरकना, कांपना, थरथराना। (वेलति - व्यत्येति। वेलुः - हस्ताभरणम्)।

वेल्ल (वेल्लति) = चलने, गतौ, कम्पने। जाना, सरकना, कांपना, थरथराना।

वेवी (वेवीते) = गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनस्वादनेषु, वेतनातुल्ये, कर्मकरवद्व्यवहारे। जाना, सरकना, चलना, व्याप्त होना, आक्रमण करना, फैलना, गर्भवती होना, इच्छा करना, चाहना, भेजना, फेंकना, उड़ाना, खाना। (वेवीते - भृतकत्वं करोति (चाकरी करता है)। वेवीतः, वेवीतवान्, वेवयकः, वेवायकः, वेवीयानः, वेवीता - भृतके। वेवीतिः, वेवीतम्, वेवीतव्यम्, वेवीयनम्, वेवियनम्, वेवय्यम्, वेवाय्यम्, वेवयम्, वेवायम् - भृतककर्मणि)।

वेष्ट (वेष्टते) = वेष्टने। लपेटना, घेरना।

वेह् (वेहते) = प्रयत्ने। यत्न करना, निश्चय करना, ठहराना।

वै (वायति) = श्रमे खेदे, शोषणे। शुष्क होना, सूखना। (वायति - श्राम्यति, श्रान्तो भवति। वायकः - श्राम्यमाणः। वानम, वातम्, वीनम्, वीतम्, वायनम्, वैः, वः - श्रमे खेदे)।

वै (अव्यय) = निश्चये।

वो (सर्वनाम) = तुम्हारा। तुम सबको, तुम सबके लिए, तुम सबका।

वोढ्-वह्-ऊढ् (वहति, वहते) = वहने, प्रापणे, धारणे। बहना, झरना, ढोना, ढो ले जाना। (वहति, वहते - धारयति। वहन्, वहमाणः, वोढा, वहकः,

वाहकः - भारवाही। वहिः, वाहः, वहनम्, वहनीयम्, वह्या, वाह्यम्, ऊढम्, ऊढिः, ऊढव्यम् - वहने। प्रौढिः - बुद्धिमत्ता। प्रौढः - बुद्धिमान्। प्रौढा - बुद्धिमती)।

व्यच् (व्यचति, विचति) = व्याजीकरणे। व्यापना, ठगना, फसाना, जाना।

व्यथ् (व्यथते, व्यथयति) = दुःखभयचलनयोः, दुःखेन भयेन च व्यथने, चलने। डरना, क्षुब्ध होना, सन्तप्त होना, दुःख भोगना, चलना। (व्यथते, व्यथयति - दुःख्यति, बिभेति। व्यथकः, व्यथमानः - दुःखितः, भीरुः च। व्यथ्यम्, व्यथ्, व्यथिः, व्यथम्, व्यथा, व्यथनम्, व्यथनीयम्, व्याथ्यम् - दुःखे भये)।

व्यध् (व्यध्यति) = ताडने। मारना, पीटना, दुःख देना, पीड़ा करना, छेदना। (व्यध्यति - ताडयति। व्याधः - हिंसकः। व्याधिः - पीडा। व्यद्धा, व्यद्धः, व्यधकः, व्यधन्, व्यधवान् - ताडयितरि। व्यधनम्, व्यधनीयम्, व्यध्यम्, व्याध्यम्, व्याद्धम्, व्याद्धिः - ताडने)।

व्यय् (व्ययति, व्ययते, व्याययति, व्याययते) = संवरणे, गतौ, क्षये, नाशे, उपयोगितायाम्, वित्तसमुत्सर्गे, धनव्यये। खर्च करना, व्यय करना, आच्छादन करना, ढकना, सीना। (व्ययति, व्ययते - व्ययं करोति, व्यवहरति। व्यययति - वित्तम् उत्सृजति। व्ययम्, व्ययमानः - व्ययकर्ता, व्यवहर्ता। व्ययम्, व्ययनम्, व्ययनीयम् - उपयोगे। व्ययः - द्रव्योपयोग, धनोत्सर्गः। अव्ययम् - धनोत्सर्गाभावः)।

व्युष् (व्युष्यति) = दाहे विभागे च। जलाना, भूनना, दग्ध करना, पृथक् करना, विभाग करना।

व्युस् (व्युस्यति) = विभागे। विभाग करना, पृथक् करना।

व्रज् (व्रजति) = गतौ, गत्याम्, व्रजने। घूमना, जाना, भटकना। परि - संन्यासी के समान घूमना, भटकना, यात्रा करना। (व्रजति - गच्छति,

चलति। व्रजः - गमने)।

व्रज् (व्राजयति, व्राजयते) = संस्कारगत्योः। पूर्ण करना, तैयार करना, सिद्ध करना, जाना, घूमना।

व्रण् (व्रणति) = शब्दार्थः, क्रिमिभक्षणे, कीटदशने। शब्द करना, कीड़ा काटना। (व्रणति - कीटो दशति। व्रणम् - कीटदशनम्)।

व्रण् (व्रणयति, व्रणयते) = गात्रविचूर्णने, शरीरस्य विदारणे। क्षत करना, घाव करना। (व्रणयति - शरीरं विदीर्यते। व्रणम् - विदारणम्)।

व्रश्च (वृश्चति) = छेदने, कर्त्तने, दुष्टतायाम्। काटना, कतरना, छेद करना, रेतना, छीलना। (वृश्चति - कृन्तति। वृश्चिकः - दुष्टः, कीटः वा (बिच्छू)। वृश्चितः, वृश्चितवान् - दुष्टे। व्रश्चनम्, व्रश्चनीयम्, व्रश्चितव्यम् - दुष्टतायाम्)।

व्री (व्रीयते, व्रिणाति, व्रीणाति) = वरणे, आवरणे, मेलने, सामीप्ये। ढूँढ़ निकालना, स्वीकार करना, बीनना, आच्छादन करना, ढकना। (व्रीयते - मिलति, आवृणोति। व्रीणः, व्रयाणः - मेलके। व्रीतिः, व्रयणम्, व्रयणीयम् - मेलने आवरणे च। व्रीणाति - आच्छादयति। व्रीतः, व्रीतवान् - आवारके। व्रीतम्, व्रीतिः - आवरणे)।

व्रीड (व्रीड्यति) = लज्जायांम्, प्रेरणे च। भेजना, प्रेरित करना, लज्जित होना। (व्रीड्यति - प्रेरयति, लज्जते। व्रीड्यन, व्रीडितः, व्रीडितवान्, व्रीडिता, व्रीडकः - लज्जके। व्रीडा, व्रीडनम्, व्रीडनीयम्, व्रीडितम्, व्रीडितव्यम् - लज्जने)।

व्रुड् (व्रुडति) = संवरणे, संघाते, निमज्जने। डूबना, राशि करना, ढेर करना, आच्छादन करना, ढकना।

व्ली (व्लिनाति, व्लीनाति) = गतौ, वरणे, आच्छादने। वरण करना, स्वीकार करना, ढूँढ़ निकालना, बीनना, आच्छादन करना, जाना, सरकना।

(श)

शक् (शक्नोति, शक्नुते) = शक्तौ, बले। शक्तिमान् होना, समर्थ होना। (शक्नोति, शक्नुते - बलं दर्शयति। शकन्, शकानः, शक्तः, शक्तवान् - बलवति। शकनम्, शकनीयम्, शक्तव्यम्, शक्यम्, शाक्यम्, शक्तिः - बलम्)।

शक् (शक्यति, शक्यते) = मर्षणे सहने, क्षमायां च। सहना, सहन करना। (शक्यति, शक्यते - सहते। शक्तः, शक्तवान्, शक्ता, शककः - सहनशीलः। शकनम्, शकनीयम्, शक्यम्, शाक्यम्, शक्तम् - सहने)।

शक्व (शक्वरते) = गतौ, शब्दे, शक्तौ, बले। शक्तिमान् होना, समर्थ होना। (शक्वरते - वृषभम् इव शब्दयति)।

शङ्क (शङ्कते) = शङ्कायाम्, भये, विचारे। शंका करना, संशय करना, डरना, निचार करना। आ - डरना, घबराना। (शङ्कते - विचारयति। शङ्कः, शङ्ककः, शङ्कमानः - विचारके। शङ्किः, शङ्कनम्, शङ्कनीयम्, शङ्क्यम् - विचारे, शङ्कायां च। शङ्कः - शङ्कमानः। शङ्का - विचारः, भयः)।

शच् (शचते) = व्यक्तायां वाचि, स्पष्टवाक्ये। स्पष्ट बोलना। (शचते - स्पष्टं वदति। शचम्, शचि, शचु, शचनम्, शचनीयम्, शच्यम् - स्पष्टवचने)।

शट् (शटति) = रुजोविशरणगत्यवसादनेषु। रोगी होना, छेद करना, छेदना, जाना, चलना, थकना, श्रान्त होना, खिन्न होना, उदास होना।

शट् (शटति) = निवासे, आवासे आच्छादने च। निवास करना, आच्छादन करना। (शटति - आच्छादयति। शाटी - लघूपवस्त्रम् (रूमाल)। शाटः, शाटिका - आच्छादनम्, वस्त्रम्, अधोवस्त्रम् वा)।

शठ् (शठति) = कैतवे, द्यूते स्पर्धायां, मिथ्याभाषणे, हिंसासंक्लेशनयोः। ठगना, द्यूतक्रीडा करना, मिथ्याभाषण करना, मार डालना, दुःख देना, क्लेश, दुःख या पीड़ा सहन करना। (शठति - अक्षैः दीव्यति। शठः -

कितवः। शठा - अनृतम्, मिथ्याभाषकः। शठा, शठनम्, शठनीयम् - मिथ्याभाषणे)।

शठ (शठयति, शठयते) = असम्यक् अवभाषणे, सम्यक् आभाषणे, चातुर्ये, मौनम् धारणे। दुर्भाषण करना, दुर्वचन कहना, कटुवचन कहना, सम्यक् बोलना, मौन धारण करना, नहीं बोलना, चुप रहना, चुप होना। (शठयति - सम्यग्वदति। शठः - चतुरः)।

शठ् (शाठयति, शाठयते) = असंस्कारगत्योः, अनृतभाषणे गतौ च। ठीक न बनाना, पूरा न करना, समाप्त न करना, अधूरा छोड़ना, अनृतभाषण करना, मिथ्या बोलना, जाना। (शाठयति - वचनं विधातयति। शठन्, शठकः - वचनविधातकः। शठा, शठनम्, शठनीयम्, शाठ्यम् - अनृते। शठा - अनृतम् भाषकः, मिथ्याभाषकः। शठा, शठनम्, शठनीयम् - मिथ्याभाषणे)।

शठ् (शाठयते) = श्लाघायाम्, श्रैष्ठ्ये, प्रशंसायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्रेष्ठ होना। (शाठयति - श्रेष्ठो भवति। शठन्, शठकः, शठः - श्रेष्ठः)।

शण् (शणति, शणयति) = दाने गतौ च। देना, दान करना, जाना। (शणति, शणयति - ददाति। शणः, शणकः, शणन् - दाता। शण, शाण, शणि, शणु, शणनम्, शणनीयम्, शण्यम्, शाण्यम्, शणितम् - दाने)।

शण् (शणति) = उपद्रवे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना। (शणति - उपद्रवति, शब्दयति)।

शण्ड (शण्डति, शण्डते) = संघाते हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां, रुजायाम्, शोके, पीडने, पीडायाम्। रोगी होना, अपकार करना, दुःख देना, एकत्र करना, ढेर करना। (शण्डति - शोकं करोति। शण्डते - पीडाम् अनुभवति। शण्डः, शण्डिलः, शण्डकः, शण्डमानः - पीडाम् अनुभवितरि। शण्डा, शण्डी, शण्डुः, शण्डनम्, शण्डनीयम् - पीडने)।

शतम् (संख्या) = सौ (100)।

शद्-शी (शीयति, शीयते) = शातने, आसने, उपवेशने। जीर्ण होना, धीरे-धीरे अल्प होना, मुरझाना, गिरना, जाना, नीचे फेंकना, नीचे गिराना। (शीयति, शीयते - उपविशति। शीयति - आस्ते। शदन्, शदकः - आसकः। शदनम्, शदनीयम्, शादम् - आसने)।

शनैः (अव्यय) = धीरे।

शनैः शनैः (अव्यय) = धीरे-धीरे।

शप् (शपति, शपते; शप्यति, शप्यते) = आक्रोशे, कोपे, निन्दायाम्, शपथे, सौगन्धे, प्रतिज्ञायाम्। शपथ करना, सौगन्ध खाना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, निन्दा करना। (शपति, शपते - निन्दति। शपन्, शपमानः, शपकः, शापकः, शप्ता - निन्दके। शपम्, शापम्, शपनम्, शपनीयम्, शप्तव्यम्, शप्यम्, शाप्यम्, शप्तम्, शप्तिः, शपथः - निन्दायाम्। शप्यति, शप्यते - निन्दयति। शपन्, शपानः, शप्तः, शप्तवान्, शप्ता, शपकः - निन्दके। शपनम्, शपनीयम्, शप्तव्यम्, शापः, शपथः, शप्तम्, शप्तिः - निन्दायाम्)।

शब् (शबति) = गतौ, अग्रगमने। ज़ाना। (शबति - अग्रे गच्छति। शबरः, शबम्, शबः, शबरी - अग्रगमने)।

शब्द (शब्दयति) = शब्दने, आविष्कारे भाषणे च। शब्द करना, भाषण करना, प्रकट करना। प्र, प्रति, वि - स्पष्ट बोलना, वचन देना। (शब्दयति - ध्वनयति। विशब्दन्, विशब्दितः - अतिभाषकः। विशब्दः, विशब्दनम्, विशब्दनीयम् - भूरिध्वनौ)।

शम् (शमयति, शामयति, शामयते) = शमने, आलोचने, आदर्शने। शमन करना, शान्त करना, प्रसिद्ध करना, स्पष्टता से दिखाना। (शमयति शामयते = आलोचयति, आदर्शयति। निशामयति - परिचिनोति)।

शम् (शमयते) = आलोचने, विचारणे। विचार करना। (शमयते -

विचारयति। शामाकः - विचारकः)।

शम् (शाम्यति) = उपशमे, सहने। शमन करना, सहन करना। (शाम्यति - सहते। शमन्, शमिता, शमितः, शमितवान्, शमी, शमकः - सोढरि। शमनम्, शमनीयम्, शमितव्यम्, शमितिः, शमितम्, शम्यम्, शाम्यम्, शमः - सहने। शान्तः - शान्तिवान्। शम्, शान्तिः - शमनम्)।

शम् (शाम्यति, शमयति, शामयते) = उपशमे, सूक्ष्मदर्शने। सान्त्वना करना, शमन करना, शान्त होना, मन स्वाधीन रखना, स्वस्थ होना, क्षुब्ध नहीं होना। उप - शान्त करना, उपशमन करना। नि - सुनना, प्रतिबन्ध करना, रोकना। प्र - शान्त होना, स्थिर होना, नष्ट करना। (शामयते - सूक्ष्मता से देखता है। शमयति - शान्त करता है)।

शम्ब (शम्बति) = ताडने, गर्जने, जले, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। ताडन करना, गर्जन करना, जल होना, मर्दन करना। (शम्बति - ताडयति। शम्बः - गर्जनम्। शम्बरम् - जलम्)।

शर्द (शर्दते) = कुत्सित शब्दे, निन्दिते शब्दे। कुत्सित शब्द करना, अपानवायु छोड़ना। (शर्दते - अपानं त्यजति। शर्दकः, शर्दमानः - अपानस्य मोक्तरि। शर्दिः, शर्दुः, शर्दनम्, शर्दनीयम् - अपानत्यागे)।

शर्ब (शर्बति) = गतौ। जाना।

शर्म (अव्यय) = सुख।

शर्म (शर्मति) = शर्मणे, सुखे। सुख होना।

शर्व (शर्वति) = हिंसायाम्, हिंसने, गतौ, गत्याम्। जाना, क्षत करना, घाव करना, मार डालना। (शर्वति - मारयति)।

शल् (शलति, शलते) = गतौ, गत्याम्, चलने, कम्पने, चलसंवरणयोः, आच्छादने। जाना, शीघ्र जाना, त्वरित जाना, चुभना, आच्छादित करना, ढकना। (शलति, शलते - चलति, कम्पते। शलकः, शलमानः - कम्पितरि। शाला - आच्छादनम्, गृहम् वा। शलिः, शलुः, शलनम्, शलनीयम् -

कम्पने)।

शल् (शलति) = विस्मरणे, गतौ, गत्याम्। गति करना, विस्मरण होना। (शलति - विस्मरति)।

शल् (शालयति, शालयते) = श्लाघायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना।

शलङ्क (शलङ्कते) = चलने, कम्पने, श्रमे, तपस्यायाम्। (शलङ्कते - श्रमं करोति, तपस्यति। शलङ्कनम्, शलङ्कनीयम् - तपस्यने)।

शल्भ (शल्भते) = स्तुतौ, कत्थने, वचने। प्रशंसा करना, स्तुति करना, आत्मश्लाघा करना, स्वप्रशंसा करना, आत्मप्रशंसा करना।

शल्ल (शल्लते) = कत्थने, वचने। बोलना, कहना। (शल्लते - वदति। शल्ला - वदित्री। शल्लकः, शल्लानः - कथयितरि। शल्लनम्, शल्लनीयम्, शल्लिः, शल्लुः - कथने)।

शल्ल (शल्लति) = गतौ, चलने, कम्पने। जाना, चलना, कम्पन करना। (शल्लते - कम्पते। शल्लकः, शल्लमानः, शल्ला शल्लूकः - कम्पितरि। शल्लिः, शल्लुः, शल्लनम्, शल्लनीयम् - कम्पने)।

शव् (शवति) = गतौ, विकारे। जाना, समीप जाना, आना, चलना, विकार होना। (शवति - विकृतो भवति (सड़ता है)। शवः, शवृ, शविः, शवुः, शवितम्, शावम्, शावनम्, शवत्, शवानम् - विकारः)।

शश् (शशति) = प्लुतगतौ, कूर्दने, विकर्तने, घातने। फुदकते हुए चलना, कूदते हुए जाना, काटना, हिंसा करना। (शशति - कूर्दते। शक्, शशिः, शशितम्, शाश्यम् - विकर्तकः, घातकः)।

शंश (शंसति) = स्तुतौ, प्रशंसायाम्, इच्छायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, चाहना, इच्छा करना। अभि - मिथ्यापवाद लगाना। आ - चाहना, बोलना। प्र - प्रशंसा करना, स्तुति करना।

शशु - शश्व् (शश्वते) = नित्ये, शाश्वते। नित्य होना, सदैव रहना,

शश्वत होना, शाश्वत होना।

शश्व् - शशु (शश्वते) = नित्ये, शाश्वते। नित्य होना, सदैव रहना, शश्वत होना, शाश्वत होना।

शश्वत् (अव्यय) = सदा, निरन्तर, नित्य।

शष (शषति) = हिंसायाम्। मारना, दुःख देना, पीड़ा करना।

शस् (शसति) = हिंसायाम्, विकर्तने। मारना, दुःख देना। अभि - विनती करना, गिड़गिड़ाना। (शसति - कृन्तति। शस्त्रम् - विकर्तनसाधनम्। शसिः, शसुः, शसितम्, शसनम् - विकर्तने। शसकः - विकर्तकः, घातकः)।

शंस (शंसति, शंसते) = स्तुतौ, प्रशंसायाम्, इच्छायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, चाहना, इच्छा करना। प्र - प्रशंसा करना। (शंसति - स्तौति। शंसकः - स्तावकः। शंसा, शंसनम्, शंसिः, शंसुः, शंसितम् - स्तुतौ। आशंसते - प्रशंसाम् इच्छां वा करोति। आशंसकः, आशंसमानः - प्रशंसकः इच्छुः वा। आशंसिः, आशंसुः, आशंसनम्, आशंसनीयम् - स्तुतौ)।

शाख् (शाखति) = व्याप्तौ, आवरणे। शाखा फैलना, डालें उत्पन्न होना। (शाखति - व्याप्नोति। शाखा - वृक्षावयवविशेषः (डाल)।

शाड् (शाडते) = श्लाघायाम्, पूजायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, स्वप्रशंसा करना, आत्मप्रशंसा करना, तैरना। (शाडते - पूज्यो भवति। शाड्, शाडः, शाडकः, शाडानः - पूज्ये। शाडिः, शाडुः, शाडनम्, शाडनीयम् - मान्ये, पूज्ये)।

शान् (शीशांसति, शीशांसते, शानयति, शानयते) = तेजने, अवतेजने, तीक्ष्णीकरणे (धार रखना, तेज करना, तीक्ष्ण करना, पैना करना। (शीशांसति, शीशांसते, शानयति, शानयते - तीक्ष्णीकरोति। शीशांसकः, शानम्, शानमानः - अवतेजके। शीशांसा, शानम्, शाननीयम् - तीक्ष्णीकरणे)।

शान्तम् (अव्यय) = बस, शान्त हो।

शान्त्व (शान्त्वयति) = सामप्रयोगे। सान्त्वना करना, समाधान करना।

शार् (शारयति) = दौर्बल्ये। निर्बल होना, निर्बल करना, आसक्त होना, आसक्त करना।

शास् (शास्ति) = अनुशिष्टौ, अनुशासने। आज्ञा करना, कहना, बोध करना, अधिकार करना, शासन करना, शासक होना। (शास्ति - दण्डयति। शास्ता - शासकः, दण्डप्रदाता वा)।

शास् (शास्ति, शास्ते, आशास्ते) = इच्छायाम्। आशीर्वाद देना, भला चाहना, आशा करना। (शाष्टिः, शाष्टम्, शासितव्यम्, शास्यम् - इच्छायाम्)।

शि (श्यति) = तनूकरणे, लघुत्वे। तीक्ष्ण करना, पैना करना, छील कर पैना करना। (श्यति - लघु करोति। शोः, शाता, शितवान्, शितः, शायन्, शापकः - तनूकर्तरि। शितिः, शितम्, शापनम्, शापनीयम्, शाप्यम्, शापम्, शैतव्यम् - लघुत्वे)।

शि (शिनोति, शिनुते) = निशाने, श्रवणे। तीक्ष्ण करना, पैना करना, पतला करना, सुनना। (शिनोति, शिनुते - शृणोति। शयन्, शयानः, शेता, शितिः, शितवान् - श्रावके)।

शिक्ष (शिक्षते) = विद्योपादाने, विद्याग्रहणे, शिक्षणे, अध्यापने। अभ्यास करना, अध्ययन करना, सीखना, पढ़ाना, अध्यापन करना। (शिक्षते - पाठयति। शिक्षकः, शिक्षमाणः - अध्यापयितरि। शिक्षिः, शिक्षुः, शिक्षा, शिक्षणम, शिक्षणीयम्- अध्यापने)।

शिखण्ड (शिखण्डति) = निष्फले, निर्बीजे, सन्ततिहीने। निर्बीज होना, निष्फल होना। (शिखण्डति - निष्फलो भवति)।

शिङ्क - शिञ्ज (शिजि) (शिङ्क्ते) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट ध्वनि करना।

शिङ्ख (शिङ्खति) = गत्यर्थः। जाना।

शिङ्घ (शिङ्घति) = आघ्राणे उत्पवने, गन्धग्रहणे। सूंघना, आघ्राण

करना। (शिङ्घति - जिघ्रति। शिङ्घाणः - दुर्गन्धनम्, नासामलम्)।

शिजि-शिङ्क-शिञ्ज (शिङ्क्ते) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट ध्वनि करना।

शिञ्ज-शिजि-शिङ्क (शिङ्क्ते) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट ध्वनि करना।

शिट् (शेटति) = अनादरे, अपमाने। अपमान करना, तिरस्कार करना। (शिटति - अपमानं करोति। शेटः - अनादरः)।

शिण्ड (शिण्डति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। (शिण्डति - आसेचति। शिण्डः - आसेचकः, महागर्तः वा)।

शिनष्-शिष् (शिनष्टि) = अवशेषे, शेषणे, विशेषणे, असर्वोपयोगे। शेष रखना, बचाना, पूरा खर्च न करना। (शिनष्टि - शेषयति। शिष्टः, शिष्टवान्, शिष्यः, शिष्टिः, शिष्टम्, शेषणम्, - शेषणे)।

शिप् (शेपते) = क्षरणे। क्षरण होना, काटने योग्य होना। (शेपते - क्षरति, विकर्तितुं योग्यो भवति)।

शिफ् (शेफते) = वपने, क्षरणे। बोना, क्षरण होना। (शेफते - वपति। शेफस् - मेढ्रम्। शेफकः, शेफालः - वप्तरि। शेफः, शेफी, शेफू, शेफ्, शेफनम्, शेफनीयम् - वपने)।

शिम्ब (शिम्बति) = सेवने, सेवायाम्, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। सेवा करना। (शिम्बति - सेवते। शिम्बः - सेवकः। शिम्बी - सेविका। शिम्बिकः - सेवकः)।

शिर् (शिरति) = गतौ, शीर्षणे। शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना, होना, सोना, बैठना।

शिल् (शिलति) = उञ्छे, चालने, कम्पयने। बीनना, उञ्छन करना, एक-एक कर बीनना। (शिलति - कम्पयति)।

शिव् (शिवति) = गतौ, शमने, शान्तौ, कल्याणे, शुभे। कल्याण

करना, शमन करना, शान्त करना, शुभ होना। शिवः, शेवः, शेवमानः, शेवः, शैवः - शमने, कल्याणे। शेवनम्, शेवनीयम्, शेव्यम्, शैव्यः, शेविः, शेवुः, शेवा - शमनम्)।

शिव्-शेव् (शेवते) = सेवायाम्, राजसेवायाम्, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, चाकरी करना। (शेवते - राजपरिषदि उपविशति। शेवः, शेवमानः, शेवः, शैवः - राजपरिषदि उपवेशके। शेवनम्, शेवनीयम्, शेव्यम्, शैव्यः, शेविः, शेवुः, शेवा - राजपरिषदि उपवेशने)।

शिष् (शेषति) = हिंसार्थः दुःख देना, मारना।

शिष् (शेषयति, शेषयते, शेषति) = अवशेषे, आसर्वोपयोगे, आसमन्तात् प्रयोगे, शेषणे, विशेषणे। बचाना, शेष रखना, बचा रखना, पूरा खर्च न करना। वि-शिष् - विशेष होना, अतिशय होना, अधिक होना। (शेषति - अवशिष्यते। शेषयति - प्रयोजयति। विशेषः - विशिष्टः, अतिशयः। शेषः - अवशिष्टो भागः। शिष्टम् - अवशेषः)।

शिष् (शिनष्टि) = अवशेषे, शेषणे, विशेषणे, असर्वोपयोगे। शेष रखना, बचाना, पूरा खर्च न करना। (शिनष्टि - शेषयति। शिष्टः, शिष्टवान्, शिष्यः, शिष्टिः, शिष्टम्, शेषणम् - शेषणे)।

शिस्त (शिस्तयति) = मर्यादायाम्, नियमे, नियमितो भुवि। नियमित होना। (शिस्तयति - नियमितो भवति। शिस्तुः - नियमः)।

शी (शेते) = स्वप्ने, निद्रायाम्। सोना, शयन करना। अति - अतिशय होना, अधिक होना। अधि - निवास करना। सम्, वि - शंका करना, सन्देह करना। (शीतः, शीतवान्, शयिता, शयकः, शायकः, शायी, शयानः - शयितरि। शीः, शयनम्, शायनम्, शयितव्यम्, शीतम्, शीतिः, शय्या, शय्यम्, शाय्यम्, शायम् - निद्रायाम्। शीतम् - हिमम्)।

शीक् (शीकयति, शीकयते) = भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, भाषण करना।

शीक् (शीकते) = सेचने। गीला करना, छींटा मारना, भिगोना, सिंचाई करना।

शीघ्र (शीघ्रति, शीघ्रते) = शीघ्रे, क्षिप्रे च। शीघ्र होना, क्षिप्र होना।

शीघ्रम् = शीघ्र (अव्यय)।

शीभ् (शीभते) = कत्थने, पूजने, शीघ्रे, क्षिप्रे च। प्रशंसा करना, स्तुति करना, आत्म-स्तुति करना, शीघ्र होना, क्षिप्र होना।(शीभते - पूज्यो भवति। शीभः, शीभकः, शीभानः - पूज्ये। शीभिः - वृक्षः, मार्जारः। शीभुः, शीभनम्, शीभनीयम् - पूजने)।

शीर्ष (शीर्षति) = शीर्षणे। शीर्ष होना, मुख्य होना, उच्च होना।

शील् (शीलति) = समाधौ, शीले, चरित्रे। मनन करना, मन की एकाग्रता करना, अर्चना करना। (शीलति - चरित्रवान् भवति। शीलम् - चरित्रम्)।

शील् (शीलयति, शीलयते, शीलति) = आधृषादौ, उपाधारणे, अभ्यासे, स्वभावे। अभ्यास करना, स्वभाव होना, प्रकृति होना, धारण करना, पहनना, रखना। (शीलयति - वर्तयति। शीलम् - स्वभावः)।

शृ (शृणोति, शृणुते) = श्रवणे। सुनना, श्रवण करना, जाना। प्रति-सम्-शृणुते - स्वीकार करना, मान्य करना। वि-शृणोति - कीर्तिमान होना, प्रख्यात होना। (शृणोति - श्रवति। श्रो, श्रावकः, श्रुत् - श्रवणकर्तरि। श्रवम् - कर्णम्। श्रावणः - शब्दः। श्रुतिः - वेदः। श्रुतम्, श्रोतव्यम्, श्राव्यम्, श्रवणीयम् - श्रवणयोग्ये)।

शृध् (शर्धति) = शब्दकुत्सायाम्, ध्वनेः हीनतायाम्, अपानवायौ। अधो वायु छोड़ना। (शर्धते - अपानिति। शर्धकः, शर्धमानः, शृद्धः - अपानशब्दकर्तरि। शृध्, शृधिः, शृद्धिः, शर्धा, शर्धनम्, शर्धनीयम्, शर्ध्यम्, शार्ध्यम् - अपानवायौ)।

शृध् (शर्धति, शर्धते) = उन्दने। गीला होना, आर्द्र होना।

शृध् (शर्धयति, शर्धयते) = प्रसहने, किञ्चित् हसने, अल्पहासे, सहने, जये, अपमाने, अनादरे। मुस्कराना, सहना, सहन करना, पराभव करना, जीतना, अपमान करना, अनादर करना। (शर्धयति - स्मयते। शर्धकः - स्यामकः। शर्धनम् - स्मयनम्)।

शृन्थ (श्रन्थते) = शैथिल्ये, शिथिलतायाम्। शिथिल होना। (श्रन्थते - शिथिलो भवति। श्रन्थः, श्रन्थकः, श्रन्थमानः - शिथिले। श्रन्थिः, श्रन्थनम्, श्रन्थनीयम्, श्रन्थ्यम् - शैथिल्ये)।

शृम् (उपसर्ग) = सम्यक्, पूर्णतः।

शॄ (शृणाति, शृणीते, विशीर्यते) = हिंसायाम्, मारणे। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना। दुःखी होना, पीड़ित होना, गलित होना, गिर पड़ना। (शृणाति, शृणीते - मारयति। विशीर्यते - दुःखीभावे, अधोपतने। शरभः - हिंसकः, अष्टपात् प्राणिविशेषः वा। शरम् - हिंसकः, दर्भः, इषुः वा। शर्वाणी - हिंसिका। शीर्णम् - विकर्तनम्। शीर्यम्, शरीरम् - - विकर्तितुं योग्यम्। शरणम् - गृहः, आश्रयः। शरण्यम्, शरणीयम् - रक्षणयोग्ये)।

शुक् (शोकति) = गतौ। जाना। (शोकति - गच्छति। शोकः - गमनम्)।

शुक्ल (शुक्लयति) = सर्जने, त्यागे। त्याग करना। (शुक्लयति - त्यजति। शुक्लम् - वीर्यम्)।

शुच् (शुच्यति, शुच्यते) = पूतीभावे, पवने। स्नान करना, शुद्ध होना, आर्द्र होना, गीला होना।(शुच्यति, शुच्यते - पवते। शोक्ता, शोचकः, शुक्तः, शूद्रः, शुक्तवान्, शुक् - पवित्रे। शुचिः - पवित्रम्। शुक्तम्, शोक्तव्यम्, शोचनम्, शोचनीयम्, शोच्यम्, शौचम्, शौच्यम् - निर्मलीभावे)।

शुच् (शोचति) = शोके, दुःखीभावे चिन्तायां च। दुःख मानना, शोक करना। (शोचति - दुःखितो भवति। शोकः - दुःखम्, चिन्ता, इष्टवियोगानुचिन्तनम्)।

शुच्य (शुच्यति) = अभिषवे, मन्थने। स्नान करना, सार निकालना, अर्क खींचना, मथना, छानना, मर्दन करना, क्षत करना, घाव करना, पीड़ा करना, दुःख देना। (शुच्यति - मन्थति। शुक्तिः - बुद्बुदः)।

शुट् (शोटति) = गतिप्रतिघाते, अपराधे। रोकना, रोक रखना, गमन में विघ्न होना, लंगड़ाना। (शोटति - अपराध्यति। शुटः - अपराधकः। शुटा - अपराधनम्)।

शुट् (शोटयति, शोटयते) = आलस्ये। अलसाना, आलस्य करना। (शोटयति - अलसो भवति। शुटः, शोटकः, शोटन् - अलसः। शोटनम्, शोटनीयम् - आलस्ये)।

शुण्ठ (शुण्ठति) = धावने, प्रतिघाते शोषणे, शुष्कीभावे। रोकना, रोक रखना, जाने में विघ्न होना, लंगड़ाना, सूखना, सुखाना। (शुण्ठति - धावति)।

शुण्ठ (शुण्ठयति, शुण्ठयते) = शोषे, शुष्कीभावे। सूखना, सुखाना, शोषण करना। (शुण्ठयति - शोषयति। शुण्ठः - मूर्खः। शुण्ठनम्, शुण्ठनीयम् - निरर्थकवचने)।

शुण्ड (शुण्डति) = वर्तने, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। हिंसा करना, गति करना। (शुण्डति - वर्तयति। शुण्डः - हस्ती। शुण्डालः, शुण्डः - सूंड़)।

शुध् (शुध्यति) = शौचे, पवने, मार्जने, शुचिकर्मणि। शुद्ध होना, पवित्र होना। (शुध्यति - शुचिः भवति। शुद्धः, शुद्धवान्, शूद्रः, शोधकः, शोद्धा - मार्जके शुचिकर्तरि। शुत्, शुधा, शुद्धम्, शुद्धिः, शोधितव्यम्, शोधनम्, शोधनीयम् - मार्जने, शुचिकर्मणि। शुद्धा - पवित्रा स्त्री)।

शुध् (शोधति) = शुद्धौ, शौचे, मार्जने, शुचिकर्मणि। शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध करना, पवित्र करना। (शोधति - पवित्री करोति, मार्जयति। शूद्रः, शुद्धः, शुद्धम् - शौचे)।

शुन् (शुनति) = कर्तने, संभक्तौ, मिश्रणे, सम्मेलने, अमिश्रणे गतौ च। मिश्रित करना, मिलाप करना, कतरना, काटना, पृथक्-पृथक् करना, जाना। (शुनति - कृन्तति। शुनः, शुनकः - कृन्तकः, कुक्कुरः वा। शुनी - कुक्कुरी)।

शुन्ध (शुन्धति, शुन्धयति, शुन्धयते) = शुद्धौ, शौचे, शौचकर्मणि। शुद्ध होना, पवित्र होना, शुद्ध करना, पवित्र करना। (शुन्धयति - शुद्धिम् करोति। शुन्धन्, शुन्धकः - शोधके। शुन्धनम्, शुन्धनीयम् - शोधने)।

शुभ् (शुभति, शोभते) = शोभार्थे, दीप्तौ, प्रकाशे। चमकना, प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना, शोभा पाना, सुन्दर होना, शोभायमान होना। (शुभति, शोभते - प्रकाशते। शोभकः, शोभमानः - द्योतकः। शुभ्, शुभिः, शुभम्, शोभा, शोभनम्, शोभनीयम् - प्रकाशने। शुभन्, शुभकः - शोभके। शुभम्, शोभनम्, शोभनीयम् - शोभायाम्)।

शुभ् (शोभति) = मङ्गले, भाषणे, वचने, हिंसायाम् च। भाषण करना, बोलना, मार डालना या दुःख देना। (शोभति - वदति। शोभः - वाचालः। शुभम्, शोभनम् - मङ्गलम्)।

शुम्भ (शुम्भति) = शोभार्थे। चमकना, प्रकाशित होना, देदीप्यमान होना, सुन्दर होना। (शुम्भति - दीप्यते। शुम्भकः - द्योतके। शुम्भनम्, शुम्भनीयम् - द्योतने)।

शुम्भ (शुम्भति) = भाषणे, वचने। बोलना। (शुम्भति - वदति)।

शुल्क (शुल्कयति, शुल्कयते) = शुल्कने, अतिस्पर्शने, भाषणे, वचने। कर लगाना, उत्पत्ति कर देना, उत्पन्न करना, कहना, प्रीति करना, मिलाना, छोड़ देना, मुक्त कर देना। (शुल्कयति - वदति। शौल्किकः - शुल्कस्य करस्य वा संग्राहकः। शुल्कम् - करः)।

शुल्ब (शुल्बयति) = माने। मापना, गिनना, तोलना, उत्पन्न करना।

शुष् (शुष्यति) = शोषणे। शुष्क होना, सूखना, सुखाना, बल होना।

।(शुष्यति - शोषयति।शोष्टा, शोषन्, शोषकः - शोषके।शोषणम्, शोषणीयम्, शोषितव्यम्, शुष्कम्, शोष्यम्, शौष्यम् - शुष्कीभावे)।

शूच् (शूच्यति) = सीवने, अभिषवे, मन्थने। स्नान करना, सार निकालना, अर्क खींचना, मथना, छानना, पीड़ा करना, सिलना, दुःख देना।(शूच्यति - सीव्यति।शूचिः - सूचिः (सूई)।शूचनम् - अपकारप्रयुक्तं सूचनम् (चुगली)। शूचकः - सूचकः)।

शून् (शूनति) = शून्ये, संभक्तौ, मिश्रणे। मुक्त होना, रिक्त होना, शून्य होना। (शूनति - शून्यं भवति। शून्यम् - रिक्तं। शोनति - मुक्तो भवति)।

शूर् (शूरयते; शूर्यते) = अग्रगतौ, विक्रान्तौ, वीरतायाम्। पराक्रमी होना, शूरवीर होना, वीरता दिखाना। (शूरयति - अग्रे गच्छति। शूरः - वीरः)।

शूर् (शूर्यते) = हिंसास्तम्भनयोः, स्तम्भे, स्थिरीभावे। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, मूर्ख होना, निश्चल होना, स्तब्ध होना।(शूर्यते - स्थिरो भवति। शूरः, शूरकः, शूराणः, शूर्ता - स्थाता। शूरणम्, शूरणीयम्, शूर्तव्यम्, शूर्तिः - स्थिरीभावे)।

शूर्प (शूर्पयति, शूर्पयते) = मापने, माने, गणनायाम्, तोलने, उन्माने। मापना, तोलना, गिनना।(शूर्पयति - मापयति। शूर्पकः - मापकः। शूर्पम् - धान्यादिनिष्पावनसाधनम्)।

शूल् (शूलति) = रुजायाम्, रोगे, संघाते दुःखे। पेट दुःखना, पीड़ा होना, रोगी होना, शूली पर चढ़ाना, शूली देना।(शूलति - पीडयति। शूला - पीडा। शूलम् - शूलनामा शस्त्रविशेषः)।

शूष् (शूषति) = प्रसवे। जनना, उत्पन्न करना, प्रसूत होना।

शेखृ (शेखरते) = गतौ, संग्रहे। संग्रह करना, जाना। (शेखरते - संगृहणाति। शेखरः - संग्राहकः)।

शेफ् (शेफते) = क्षरणे, वपने। झरना, टपकना, बोना। (शेफते - वपति। शेफस् - मेढ्रम्। शेफकः, शेफालः - वप्तरि। शेफः - वृक्षः, शेफी, शेफू, शेफ्, शेफनम्, शेफनीयम् - वपने)।

शेल् (शेलति) = गतौ, कम्पने। जाना, सरकना, कांपना, थरथराना।

शेव् (शेवते) = सेवायाम्, राजसेवायाम्, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, चाकरी करना। (शेवते - राजपरिषदि उपविशति। शेवः, शेवमानः, शेवः, शैवः - राजपरिषदि उपवेशके। शेवनम्, शेवनीयम्, शेव्यम्, शैव्यः, शेविः, शेवुः, शेवा - राजपरिषदि उपवेशने)।

शै (शायति) = पाके। पक्व होना, पकना, पक्व करना, पकाना।

शो (श्यति) = तनूकरणे, लघुत्वे। तीक्ष्ण करना, पैना करना, शान धरना, छील कर पैना करना।(श्यति - लघु करोति। शोः, शाता, शितवान्, शितः, शायन्, शापकः - तनूकर्तरि। शितिः, शितम्, शापनम्, शापनीयम्, शाप्यम्, शापम्, शैतव्यम् - लघुत्वे)।

शोण् (शोणति) = वर्णगत्योः, रागे, गतौ च। रंगना, लाल होना, जाना। (शोणति - रजति। शोणः - रक्तं वर्णम्)।

शौट् (शौटति) = गर्वे, अभिमाने। गर्व करना, अभिमान करना, अहङ्कार करना, स्वप्रशंसा करना, आत्मप्रशंसा करना।

शौण्ड-शौड् (शौण्डति) = गर्वे, अभिमाने। गर्व करना, अभिमान करना, अहङ्कार करना, स्वप्रशंसा करना, आत्मप्रशंसा करना।(शौण्डति - गर्वति, अभिमत्तो भवति। शौण्डीरः - गर्वी)।

श्चुत् (श्चोतति) = क्षरणे, नाशने। टपकना, झरना, सींचना, प्रोक्षण करना, छींटा देना।

श्नथ् (श्नथति, श्नथयति) = हिंसायाम्, मारणे। हिंसा करना, मारना। (श्नथति, श्नथयति - मारयति। श्नथः, श्नथकः, श्नथन् - मारयिता। श्नथनम्, श्नथितम्, श्नथितव्यम्, श्नथनीयम्, श्नथ्यम्, श्नाथ्यम्, श्नाथम्,

श्नथ्, श्नाथ्, श्नाथु, श्नथि, श्नथु - हिंसायाम्)।

श्मील् (श्मीलति) = निमेषणे, अक्षिनिमेषे। पलक लगाना, आंखें मींचना, पलक झपकना, नेत्र स्फुरण होना।

श्यम् (श्यामयति) = वितर्के, विवादे, वर्णे। वितर्क करना, विवाद करना, रंगना। (श्यामयति - विवदते। श्यामलः - कृष्णः, रक्तवर्णश्च। श्यामला, श्यामा - श्यामवर्णा। श्यामः - श्यामवर्णकः)।

श्यै (श्यायते) = गतौ, तरणे। जाना, तैरना। (श्यायते - तरति। श्यायकः, श्यायमानः - तरिता)।

श्रङ्क (श्रङ्कति) = गतौ, गत्यर्थः, वपने। बोना, जाना। (श्रङ्कते - वपति। श्रङ्कः - वप्ता)।

श्रङ्ग (श्रङ्गति) = गतौ, गत्यर्थः, वपने। बोना, जाना।

श्रण (श्रणति; श्रणयति, श्राणयति, श्राणयते) = दाने। देना, दान करना। वि - देना। (श्राणयति - ददाति। श्रणन्, श्रणकः - दानिनि। श्रणनम्, श्रणनीयम् - दाने)।

श्रण् (श्रणति; श्रणयति) = रक्षणे। रक्षा करना। (श्रणति, श्रणयति - रक्षति। श्रणः, श्रणकः, श्रणन् - रक्षकः। श्रण्, श्रणि, श्रणु, श्राणु, श्रणितम्, श्रण्यम्, श्राण्यम्, श्रणनम्, श्रणनीयम्, श्राणम्, श्रणितव्यम् - रक्षणे)।

श्रत् (उपसर्ग) = सत्य।

श्रथ् (श्राथयति, श्राथयते) = प्रयत्ने प्रस्थाने च। प्रयत्न करना, जाना।

श्रथ् (श्रथति, श्राथयति, श्राथयते) = हिंसार्थः, बन्धने, मोक्षणे हिंसायाम् च। मुक्त करना, छोड़ना, मारना, पीड़ा देना, बन्धन करना, बांधना, जकड़ना। (श्राथयति - बध्नाति। श्रथकः - बन्धकः। श्रथनम्, श्रथनीयम् - बन्धने)।

श्रथ् (श्रथयति, श्रथयते) = दौर्बल्ये, बलाधिक्ये। निर्बल होना, शक्तिहीन

होना।

श्रथ-श्रन्थ (श्रथ्नाति, श्रथ्नीते) = विमोचनप्रतिहर्षणयोः, मुक्तौ दुःखे बन्धने च। मुक्त करना, दुःख होना। (श्रथ्नाति, श्रथ्नीते - मुञ्चति, दुःख्यति। श्रन्थकः, श्रन्थानः - बन्धके, दुःखिनि। श्रन्थम्, श्रन्थनीयम् - बन्धने)।

श्रथ-श्रन्थ (श्रथ्नाति, श्रन्थयति, श्रन्थयते, श्रन्थति) = सन्दर्भे, मेलने। मिलाना, रचना करना, क्रम से रखना, गूंथना, गुम्फित करना। (श्रन्थयति - मेलयति। श्रन्थः, श्रन्थकः - मेलके। श्रन्थनम्, श्रन्थनीयम् - मेलने)।

श्रन्थ (श्रन्थते) = शैथिल्ये, शिथिलतायाम्। शिथिल करना, ढीला करना, शिथिल होना, ढीला होना। (श्रन्थते - शिथिलो भवति। श्रन्थः, श्रन्थकः, श्रन्थमानः - शिथिले। श्रन्थिः, श्रन्थनम्, श्रन्थनीयम्, श्रन्थ्यम् - शैथिल्ये)।

श्रन्थ-श्रथ (श्रथ्नाति, श्रन्थयति, श्रन्थयते, श्रन्थति) = सन्दर्भे, मेलने। मिलाना, रचना करना, क्रम से रखना, गूंथना, गुम्फित करना। (श्रन्थयति - मेलयति। श्रन्थः, श्रन्थकः - मेलके। श्रन्थनम्, श्रन्थनीयम् - मेलने)।

श्रन्थ (श्रन्थयति) = प्रतिहर्षे, श्रमे। थकना। (श्रन्थयति - श्राम्यति, श्रन्थः, श्रन्थकः - श्रमके। श्रन्थनम्, श्रन्थनीयम् - श्रमे)।

श्रन्थ-श्रथ (श्रथ्नाति, श्रथ्नीते) = विमोचनप्रतिहर्षणयोः, मुक्तौ दुःखे बन्धने च। मुक्त करना, दुःख होना। (श्रथ्नाति, श्रथ्नीते - मुञ्चति, दुःख्यति। श्रन्थकः, श्रन्थानः - बन्धके, दुःखिनि। श्रन्थम्, श्रन्थनीयम् - बन्धने)।

श्रम् (श्राम्यति) = तपसि, खेदे, देहदण्डने दुःखे च। थकना, श्रान्त होना, पीड़ित होना, दुःखित होना, तपश्चर्या करना, व्रत करना। (श्राम्यति - कष्टं सहते, दुःखितो भवति। श्रान्तः, श्रान्तवान्, श्रान्ता, श्रमन्, श्रमकः - श्रमकर्तरि। श्रमः, श्रान्तिः, श्रान्तम्, श्रान्तव्यम्, श्रमणम्, श्रमणीयम्, श्रम्यम्, श्राम्यम्, श्रामम् - तपसि दुःखे च। श्रमणः - तपस्वी)।

श्रम्भ (श्रम्भते) = प्रमादे विश्वासे। विश्वास करना, दुर्लक्ष्य करना,

चूकना, भूल करना। (श्रम्भते - विश्वसिति। श्रम्भकः, श्रम्भमाणः, श्रब्धः, श्रब्धवान् - विश्वसितरि। श्रम्भिः, श्रम्भुः, श्रम्भणम्, श्रम्भणीयम्, श्रब्धिः - विश्वासे)।

श्रंस् (श्रंसते) = प्रमादे, विश्वासघाते। प्रमाद करना, विश्वासघात करना, वञ्चना करना। (श्रंसते - वञ्चति। श्रंसकः, श्रंसानः - वञ्चके। श्रंसिः, श्रंसनम्, श्रंसनीयम् - वञ्चने)।

श्रंस (श्रंसते) = अवस्रंसने, पतने। पतन होना। (श्रंसते - पतति। श्रंसकः - श्रंसमानः - पतिता। श्रंसनम्, श्रंसनीयम्, श्रस्तम्, श्रस्तिः - पतने)।

श्रा (श्राति, श्रायति, श्राययति, श्रापयति) = पाके, क्वथने। पकाना, राधना, उबालना। (श्रायति, श्राययति, श्रापयति - पचति। श्रायः, श्रायन्, श्रायकः - पक्तरि। श्रायणम्, श्रायणीयम्, श्रायितव्यम् - पाके। श्रायन्, श्रायकः, श्रापकः, श्राता - पक्तरि। श्राणम् - श्राणीयम्, श्रायम्, श्रातिः, श्रातव्यम् - पाके)।

श्राख् (श्राखति) = व्याप्तौ, आवरणे, अङ्कुरणे। व्याप्त होना, अङ्कुरित होना। (श्राखति - अङ्कुरितो भवति)।

श्राम् (श्रामयति) = श्रमे, आमन्त्रणे, अभिमुखं भूत्वा वार्ताकरणे। श्रम करना, आमन्त्रण करना, अभिमुख होकर वार्ता करना। (श्रामयति - श्रमं करोति। श्रमणः - तपस्वी)।

श्रि (श्रयति, श्रयते) = सेवायाम्। सेवा करना, चाकरी करना। आ - आश्रय करना, समीप जाना या रहना, उपयोग करना। अपा - छोड़ना। उत्, समुत् - ऊँचा होना। व्यपा - साष्टाङ्ग नमस्कार करना, विश्वास करना।

श्रिष् (श्रेषति) = दाहे। जलाना, भूनना। (श्रेषति - दहति, दाहेन पीड्यते। श्रेषिता, श्रेष्टा, श्रेषकः, श्रेषः - दाहकर्तृषु। श्रेष्टम् - दाहेन तप्तम्।

श्रिषिः, श्रिष्टिः, श्रिषः, श्रिषुः, श्रयणम्, श्रयाणम्, श्रिट् - दहने)।

श्री (श्रयति, श्रयते) = सेवायाम्, सेवने। सेवा करना। (श्रयति, श्रयते - सेवते। श्रयन्, श्रयमाणः - सेवकः। श्रीः, श्रयणम्, श्रयणीयम्, श्रयम्, श्रायम् - सेवा। श्रेयस् - मङ्गलम्। निःश्रेयसम् - मुक्तिः)।

श्री (श्रीणाति, श्रीणीते) = पाके। पकाना, रांधना। (श्रीणाति, श्रीणीते - पचति। श्रीतः, श्रीतवान् - पाके। श्रीः, श्रीतम्, श्रीतिः, श्रयणम्, श्रयणीयम् - पाके)।

शृ (शृणोति, शृणुते) = श्रवणे। सुनना, श्रवण करना, जाना। प्रति-सम्-शृणुते - स्वीकार करना, मान्य करना। वि-शृणोति - कीर्तिमान होना, प्रख्यात होना। (शृणोति-श्रवति)।

श्रु-शृ (श्रवति) = श्रवणे। सुनना, श्रवण करना, जाना। (श्रवति - शृणोति। श्रो, श्रावकः, श्रुत् - श्रवणकर्तरि। श्रवम् - कर्णम्। श्रावणः - शब्दः। श्रुतिः - वेदः। श्रुतम्, श्रोतव्यम्, श्राव्यम्, श्रवणीयम् - श्रवणयोग्ये)।

श्रेक् (श्रेकते) = गतौ। जाना। (श्रेकते - चलति, गच्छति। श्रेकरः - गन्ता)।

श्रै (श्रायति) = पाके, पचनक्रियायाम्। पकाना, रांधना, पसीना निकालना, पिघलाना, पतला करना, द्रव करना। (श्रायति - पचति। श्रायकः - पाचकः। श्रायणम्, श्रायम्, श्रातम्, श्राणम्, श्रीणम्, श्रीतम्, श्रैः, श्रैः श्रः - पाके)।

श्रोण् (श्रोणति) = संघाते, समूहे। एकत्र करना, सञ्चय करना, ढेर करना। (श्रोणति - संहतो भवति। श्रोणिः - कटिप्रदेशः)।

श्लङ्क (श्लङ्कते) = गतौ, गत्यर्थः, सीवने। जाना। (श्लङ्कते - सीव्यति। श्लङ्कः - सूचिका (सूई)।

श्लङ्ग (श्लङ्गति) = गतौ, गत्यर्थः। जाना।

श्लथ् (श्लथति) = शैथिल्ये, हिंसार्थः। शिथिल होना, ढीला होना,

हिंसा करना।

श्लाख् (श्लाखति) = व्याप्तौ, आवरणे। व्याप्त होना, फैलना। (श्लाखति - अङ्कुरितो भवति। श्लाखा - शाखा, नवपल्लवं वा)।

श्लाघ् (श्लाघते) = कत्थने, उत्कर्षे, पूजायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, फुसलाना। (श्लाघते - प्रशंसायोग्यो भवति। लाघ्यः, श्लाघकः, लाघमानः - पूज्ये। श्लाघम्, श्लाघिः, श्लाघुः, श्लाघनम्, श्लाघनीयम् - पूजायाम्)।

श्लिष् (श्लिष्यति; श्लेषयति, श्लेषयते) = आलिङ्गने श्लेषणे मेलने च। आलिङ्गन करना, गले लगाना, सटे रहना, चिपके रहना, एका करना, मिलाप करना। वि - विशेषण करना। (श्लिष्यति - आलिङ्गति। श्लेषन्, श्लेषकः, श्लिष्टः, श्लिष्टवान्, श्लेष्टा - आलिङ्गके। श्लिष्टम्, श्लिष्टिः, श्लेषितव्यम्, श्लेष्यम्, श्लैष्यम्, श्लेषः, श्लिट्, श्लेषणीयम् - आलिङ्गने। श्लेषयति - मिलति। श्लेषकः - मेलकः। श्लिष्टम्, श्लिष्टिः, श्लेषः, श्लेषणम्, श्लेषणीयम् - मेलने)।

श्लिष् (श्लेषति) = सहने, दाहे। सहना, सहन करना, दग्ध करना, जलाना। (श्लेषति - सहते। श्लेषिता, श्लिष्टा, श्लेषकः - सोढृषु। श्लिट्, श्लिषिः, श्लिषुः, श्लिषः, श्लयनम्, श्लयानम्, श्लयत् - सहने)।

श्लोक् (श्लोकते) = संघाते, सहभावे। साथ जाना, श्लोक बनाना, कविता करना, रचना करना। (श्लोकते - सहगच्छति। श्लोकः, श्लोककः, श्लोकमानः - सार्थे। श्लोक्, श्लोकिः, श्लोकनम्, श्लोक्यम् - सहभावे)।

श्लोण् (श्लोणति) = स्थूलतायाम्, संघाते, समूहे। स्थूल होना, एकत्र करना, ढेर करना। (श्लोणति - स्थूलो भवति। श्लोणम् - स्थूलता)।

श्वः (अव्यय) = कल (आगामी)।

श्वङ्क (श्वङ्कते) = गत्यर्थः। जाना, सरकना।

श्वच् (श्वचते) = गतौ। जाना, सरकना। (श्वचते - चलति। श्वक्,

श्वचकः, श्वचमानः - चलितरि। श्वचिः, श्वचुः, श्वचनम्, श्वचनीयम्, श्वच्यम् - चलने)।

श्वज् (श्वजते) = गतौ। जाना, सरकना।

श्वञ्च (श्वञ्चते) = गतौ, धावने। जाना, दौड़ना। (श्वञ्चते - धावति। श्वञ्चकः, श्वञ्चमानः - धावके)।

श्वठ् (श्वठयति, श्वठयते) = परिहासे, सम्यक् भाषणे, अवभाषणे, अभाषणे। आशीर्वाद देना, शुभ बोलना, वर देना, अयोग्य वचन बोलना, अयथार्थ बोलना, अयथार्थ भाषण करना, चुप रहना, नहीं बोलना। (श्वठयति - हास्यं करोति। श्वठः - परिहासकः)।

श्वठ् (श्वाठयति, श्वाठयते) = अपराधने, असंस्कार गत्योः, अनृतभाषणे गतौ च। असंस्कृत रखना, जाना, सरकना, चलना, पूरा न करना, समाप्त न करना, अनृत बोलना, असत्य बोलना। (श्वाठयति - अपराध्यति। श्वटन्, श्वठकः - अपराधके। श्वठनम्, श्वठनीयम्, श्वाठ्यम्, श्वठा - अपराधने)।

श्वण्ठ (श्वण्ठयति, श्वण्ठयते) = अपराधने, असंस्कार गत्योः, अनृतभाषणे गतौ च। असंस्कृत रखना, जाना, सरकना, चलना, पूरा न करना, समाप्त न करना, अनृत बोलना, असत्य बोलना।

श्वन् (श्वनति, श्वनयति, श्वानयति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, अपशब्द बोलना। (श्वनति - गालिं भाषते। श्वानः - कुक्कुरः। श्वनयति, श्वानयति - भषते (भूंकता है)।

श्वभ्र (श्वभ्रयति, श्वभ्रयते) = गत्याम्, छेदने, दरिद्रतायाम्, कृच्छ्रजीवने। जाना, छेदना। दरिद्र दशा में रहना, विपत्ति में रहना।

श्वर्त (श्वर्तयति, श्वर्तयते) = गतौ गत्याम्, दरिद्रतायाम्, कृच्छ्रजीवने। जाना, दरिद्र दशा में रहना। (श्वर्तयति - गच्छति। श्वर्तन्, श्वर्तकः, श्वर्तः - गन्तरि। श्वर्तनम्, श्वर्तनीयम् - गमने)।

श्वल् (श्वलति) = आशुगमने। दौड़ना, भागना, तीव्र चलना।

श्वल्क (श्वल्कयति, श्वल्कयते) = परिभाषणे। बोलना, भाषण करना।

श्वल्ल (श्वल्लति) = आशुगमने। दौड़ना, भागना, तीव्र चलना।

श्वस् (श्वसिति) = प्राणने, चेतने। श्वास लेना, श्वासोच्छ्वास करना, जीते रहना। आ - समाधान करना, आश्वस्त करना। उत् - विकसित होना, प्रफुल्लित होना, खिलना, सान्त्वना करना, समाधान करना। निर् - सांस भरना। वि - विश्वास करना, भरोसा रखना। (श्वसिति - चेतति, जागर्ति। श्वसन्, श्वसकः - चेतितरि। श्वसनः - वायुः। श्वासः - प्राणः। श्वस्तम् - हितम्। श्वस्तव्यम्, श्वस्यम्, श्वसनीयम्, श्वास्यम् - जीविका, वेतने)।

श्वि (श्वयति, श्वयते) = गतिवृद्ध्योः, चलने वृद्धौ च। जाना, समीप जाना, बढ़ना। (श्वयति, श्वयते - चलति, वर्धते। श्वयन्, श्वयानः - गन्ता। श्वेतः, श्वितिः, श्वितम्, श्वयनम्, श्वितव्यम्, श्वित्, श्वित्यम् - चलने वृद्धौ च)।

श्वित (श्वेतते) = वर्णे, श्वेतवर्णे। श्वेत होना, शुभ्र होना। (श्वेतते - शुभ्रो भवति। श्वेततः, श्वेतमानः - शुभ्रवर्णकः। श्वित्, श्वितिः, श्वेतः, श्वेतनम्, श्वेतनीयम्, श्वित्यम्, श्वैत्यम् - शुभ्रवर्णे)।

श्विन्द (श्विन्दते) = श्वैत्ये। श्वेत होना, शुभ्र होना।

(ष)

षग् (सगति, सगयति) = आच्छादने, संवरणे। आच्छादन करना, ओढ़ना। (सगति, सगयति - संवृणोति। सगः, सगन्, सगकः - संव्रियमाणः (ओढ़ने वाला)। सगिः, सगनम्, सगनीयम् - संवरणे (ओढ़ने के अर्थ में)।

षघ् (सघ्नोति) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना।

षच् (सचते) = सेचने, सेवने, घर्षणे। आर्द्र करना, गीला करना, छींटा मारना, सींचना, सेवा करना। (सचते - घर्षयति। सचकः, सचमानः,

सक्तुः - घर्षयितरि। सचि, सचु, सचम्, सचनम्, सचनीयम्, सच्यम् - घर्षणे)।

षच् (सचति, सचते) = समवाये। पूरा समझना, अच्छी तरह जानना, सम्बन्धी होना, संसर्गी होना।

षज्ज-षस्ज (सज्जति) = गतौ, सज्जायाम्। जाना, तैयार होना, सिद्ध होना।

षञ्ज् (सञ्जति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां, आच्छादने, अन्धकारे च। हिंसा करना, गति करना, अन्धकार होना, आच्छादन करना। (सञ्जति - सन्ध्या भवति। सञ्जा - तमः। सञ्जी - यवनिका (परदा)।

षञ्ज् (सञ्जति) = सङ्गे, सहभावे, मेलने। आलिङ्गन करना, गले लगाना, सटे रहना, चिपके रहना, सम्बन्धी होना। अव - लटकना, हिलना, लटके रहना। आ - अनुरक्त होना, आसक्त होना। व्या - झगड़ना, हाथापाई करना। (सञ्जति - मिलति। सङ्गः - मेलकः। सञ्जनम्, सञ्जनीयम्, सङ्क्तव्यम्, सङ्क्तम्, सङ्क्तिः, साञ्ज्यम् - मेलने, दाने)।

षट् (संख्या) = छह (06)।

षट् (सटति) = अवयवे, सङ्घाते, संश्लेषे। भाग होना, हिस्सा होना, अवयव होना, सटकर रहना, सटना। (सटति - समीपम् आगच्छति। सटा - जटा)।

षट्ट (सट्टयति, सट्टयते) = हिंसाबलदाननिकेतनेषु, विदारणे, मारणे, बले, दाने, निवासे च। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, विदीर्ण करना। (सट्टयति - विदारयति। सटा (सट्टा) - विदीर्णो भागः)।

षट्चत्वारिंशत् (संख्या) = छियालीस (46)।

षट्त्रिंशः (संख्या) = छत्तीस (36)।

षट्पञ्चाशत् (संख्या) = छप्पन (56)।

षट्षष्टिः (संख्या) = छांछठ (66)।

षट्सप्तति (संख्या) = छिहत्तर (76)।

षडशीति (संख्या) = छियासी (86)।

षड्विंशतिः (संख्या) = छब्बीस (26)।

षण् - सनु (सनोति, सनुते) = दाने। देना, दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना। (सनोति, सनुते - ददाति। सन्तः, सन्तवान्, सन्ता - दातरि। सन्तम्, सन्तिः, सननम्, सननीयम्, सन्यम्, सान्यम्, सन्तव्यम्, सनम्, सनी, सनुम्, सानम् - दानक्रियायाम्। सानुः, सानी - दाता, माता वा)।

षण्ड (षण्डति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां, नपुंसने, निर्बीजे, सन्ततिहीने च। हिंसा करना, गति करना, निर्बीज होना। (षण्डति - पुँस्त्वहीनो भवति, सन्ततिरहितो भवति। षण्डः - नपुंसकः, सन्तानहीनः)।

षण्णवति (संख्या) = छियानवे (96)।

षन् (सन्ति, सनति) = गतौ, योग्ये, सम्भक्तौ, मिश्रणे। सेवा करना, चाकरी करना, विभक्त करना, अलग करना, मिलाना। (सनति - योग्यो भवति। सानुः - तटम्, गिरिशृङ्गं वा)।

षन् (सनोति, सनुते) = दाने। देना, दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना। (सनोति, सनुते - ददाति। सन्तः, सन्तवान्, सन्ता दातरि। सन्तम्, सन्तिः, सननम्, सननीयम्, सन्यम्, सान्यम्, सन्तव्यम्, सनम्, सनी, सनुम्, सानम् - दानक्रियायाम्)।

षद्-षीद-षद् (सीदति) = विशरणगत्यवसादनेषु, विशरणे, विकर्तने, गतौ, स्थाने। जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, विकर्तन करना, भग्न करना, नष्ट करना, बैठना, चढ़ाई करना, सूखना। अव - क्लान्त होना, थकना, बलहीन होना, पूर्ण करना, समाप्त करना। समा - प्राप्त होना, मिलना, इच्छितार्थ की प्राप्ति होना। उत् - ऊपर चढ़ना, नष्ट करना। उप - समीप जाना। नि - ऊपर

या भीतर बैठना, खड़ा करना, पालन करना, संभालना। प्र - आनन्दित होना, सुखी होना, प्रफुल्लित होना, खिलना, उत्तम दशा को प्राप्त होना, सुखी करना, सन्तुष्ट करना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना, स्मित करना, मुस्कराना। वि - अशान्तचित्त होना, खिन्न होना, दुःखी होना, श्रान्त होना, थकना। सम् - इच्छितार्थ की प्राप्ति होना, मण्डली में रहना। (सीदति - विकृन्तति। प्र-सन्नः - मुदितः। आ-सन्नः - समीपवर्ती। आ-सादी - महापूजकः। प्र-सादः - चन्द्रिका। प्रसादः, प्रासादः - गृहोपरिभवः छदः (छत)। प्र-सादनम् - आभरणम्। सद्यः, सदस्, सदः, सदस्यः - सदस्यः)।

षप् (सपति) = समवाये। पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना।

षम् (सम्यति) = परिणामे। परिणाम होना, रूपान्तर होना।

षम् (समति) = समाने, समविभागे, अवैक्लव्ये, वैक्लव्ये, श्रमे। न घबराना, एक समान रहना। समयति - न घबराने देना, हिचकिचाने से रोकना। (समति - विभजति (बाँटता है)। समन्, समकः - विभजकः। समम्, समनम्, समानम्, समनीयम्, साम्यम्, सम्यम्, सम्, समि, समु, सामु, सामम् - समाने। सामन्, सामकः - वेदविशेषः, सामवेदः वा)।

षम्ब (सम्बयति, सम्बयते) = निपातने सम्बन्धने च। उड़ेलना, संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना। (सम्बयति - निपातयति (उड़ेलता है)। सम्बः, सम्बन्, सम्बकः - निपातके। सम्बनम्, सम्बनीयम् - निपातने)।

षर्ज (सर्जति) = अर्जने, अलब्धस्य लाभे। उपार्जन करना, मिलाना, पाना, प्राप्त करना, प्राप्त होना। (सर्जति - प्राप्नोति। सर्जनम् - प्रापणम्)।

षर्ज (सर्जते) = गतौ, त्यागे। जाना, त्याग करना। (सर्जते - त्यजति। सर्जः, सर्जकः, सर्जमानः - त्यक्तरि। सर्ज्यः - सिंहः। सर्जनम्, सर्जनीयम्, सर्जिः, सर्जुः, सर्गः - त्यागे। सर्जरसः - धूपवृक्षः)।

षर्ब (सर्बति) = गतौ। जाना।

षर्व (सर्वति) = गतौ, हिंसायाम्। जाना, दुःख देना, पीड़ा करना।

षल् (सलति) = गतौ, कम्पने। जाना, सरकना, कांपना, थरथराना।

षष् (षष्यति, सष्यति) = शक्तौ, सामर्थ्ये। शक्ति होना, सामर्थ्य होना, गणना करना।(षष्यति, सष्यति - गणयति। षट्, षषः, षषकः, षष्टः, षष्टवान्, षष्टा - गणके। षषणम्, षष्यम्, षष्टव्यम् - शक्तौ)।

षष्टिः (संख्या) = साठ (60)।

षस् (संस्) (सस्ति) = स्वप्ने। सोना। (सस्ति - शेते। ससन्, ससकः - स्वप्नद्रष्टा। सस्तिः, सस्तम्, ससनम्, ससनीयम्, सस्यम्, सास्यम्, सासम् - स्वप्ने)।

षस्ज-षज्ज (सज्जति) = गतौ, सज्जायाम्। जाना, तैयार होना, सिद्ध होना।

षह् (सहते; साहयति, साहयते, सहति, सह्यति) = मर्षणे, सहने, सहभावे, चक्यर्थे, शक्तौ, सामर्थ्ये। तृप्त होना, प्रसन्न होना, सहन करना, सहना, प्रतिरोध करना, शक्तिमान् करना, सन्तुष्ट होना। उत् - उत्साहित होना, आनन्दित होना, उद्योग करना, यत्न करना। प्र - अत्याचार करना, बलात्कार करना। वि - दृढ़ निश्चय करना, निर्णय करना, ठहराना।(सहते - मर्षयति। साढ्, सहन्, सहकः, सोढा - मर्षयिता। सहः - सहभावे। सहि - प्रत्यर्पणम्। सहनम्, सहनीयम् - मर्षणम्। सहयति - (तुरां, कोलाहलं) सहते। सह्यति - सहते। सह - सहितम्। सहन्, सोढा, सहकः, सहितः, सहितवान् - सहनशीले। सहनम्, सहनीयम्, सहितव्यम्, सहितम्, सहितिः, सही, साह्यम्, साहम् - सहने)।

षान्त्व (सान्त्वयति, सान्त्वयते) = सामप्रयोगे, शमने। सान्त्वना देना, समाधान करना, विवेक की बातें कहना।(सान्त्वयति - शाम्यति। सान्त्वन्, सान्त्वकः - शान्तरि। सान्त्वनम्, सान्त्वनीयम् - शमने)।

षिक्-षिङ्क्-षिज्-षिञ्ज (सिङ्ते, सिङ्क्ते) **=** अव्यक्त शब्दे,

अनुकरणध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना। (सिङ्ते, सिङ्क्ते - ध्वनिं करोति। सिक्तवान्, सिङ्क्तवान्, सिञ्जानः, सिक्ता, सिङ्क्ता - शब्दितरि। सिञ्जा, सिञ्जिनी, सिञ्जनम्, सिञ्जनीयम्, सिक्तव्यम्, सिङ्क्तव्यम्, सिक्तिः, सिक्तम्, सिङ्क्तिः, सिङ्क्तम् - ध्वनौ)।

षिट् (सेटति) = अनादरे, अपमाने। अपमान करना, तिरस्कार करना। (सेटति - अनादरं करोति, गालिं ददाति)।

षिध् (सिध्यति) = संराद्धौ, निश्चये। पूरा करना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना, समाप्त होना।(सिध्यति - निश्चितं भवति। सेद्धा, सेधकः, सिद्धः, सिद्धावान् - निश्चयवति। सित्, सिधा, सिद्धम्, सिद्धिः, सेधनम्, सेधनीयम्, सेध्यम्, सैध्यम्, सैधम् - निश्चये। निषेधः, प्रतिषेधः - अनृते (निश्चयविपरीते)।

षिध् (सेधति) = गत्याम्। जाना। नि - रोकना।(सेधति - गच्छति। सिद्धम् - सिद्धिः)।

षिध् (सेधति) = पठने, पाठने, अध्ययने, शास्त्रे, माङ्गल्ये च। आज्ञा करना, पठन-पाठन करना, अध्ययन करना, उपाध्याय करना, मंगल कर्म करना। नि, प्रति - निषेध करना, अस्वीकार करना। प्र - प्रसिद्ध होना, कीर्तिमान होना।(सेधति - पठति, पाठयति, मङ्गलं शुभं वा भवति)।

षिभ् (सेभति) = हिंसार्थः। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, प्रकाशित होना, चमकना, भाषण करना, बोलना।

षिम्भ (सिम्भति) = हिंसार्थः, भासार्थः भाषार्थो वा। चमकना, प्रकाशित होना, बोलना, भाषण करना, मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना।

षिल् (सिलति) = चर्बणे, उञ्छे, चालने। बीनना, एक-एक दाना चुगना।(सिलति - चर्बति। सेलन्, सेलकः - चर्बकः। सेलुः, सेला, सिली - - चर्बिका)।

षिव् (सीव्यति) = तन्तुसन्ताने, तन्तूनां संयोजने। सीना, सिलाई

करना, बीजारोपण करना, बोना, रोपना।(सीव्यति - तन्तून् संयोजयति। सीव्यन्, सेवः, सेवकः, सेविता, सेवितवान् - तन्तुसंयोजके, सीवके। सेवनम्, सेवनीयम्, सेव्यम्, सैव्यम्, सैवम्, सेवा, सेवितव्यम्, सेवितम् - सीवने)।

षृभ् (सर्भति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना।(सर्भति - मारयति। सर्भः - मारयिता। सर्भणम् - हिंसनम्)।

षृम्भ (सृम्भति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना। (सृम्भति - मारयति। सृम्भः - घातकः। सृम्भणम् - हिंसा)।

षृ (सृणाति, सृणीते) = हिंसायाम्, मारणे, भक्षणे, खाद्ये। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, खाना। (सृणाति, सृणीते - अत्ति। सरभः - मृगविशेषः (गैंडा)। सर्वः - भक्षकः। सरणम्, सरणीयम्, सर्यम्, सार्यम्, सरीरम् - खाद्ये)।

षु (सुनोति, सुनुते) = अभिषवे, मथने। यज्ञान्त स्नान करना, स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, निचोड़ना, दबाना, हिलाना। अभि - प्रोक्षण करना, मार्जन करन, सींचना, स्नान करना, नहाना।(सुनोति, सुनुते - मन्थति। सवन्, सवानः, सोता, सुतः, सुतवान्, सवकः - मन्थनकर्तरि। सवनम्, सवनीयम्, सोतव्यम्, सुतिः, सुतम् - मथने)।

षु (सवति, सौति) = प्रसवे, जनने, गर्भविमोचने, प्रसवैश्वर्ययोः। उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना। (सवति - जनयति। सौति - गर्भम् विमुञ्चति। सविता - पिता। सावित्री - जननी, माता। सवन्, सवकः, सावकः, सविता - प्रसवकर्तरि। सुः, सुत्, सविः, सावुः, सवनम्, सुतिः, सुतम्, सुतव्यम्, सुत्यम् - प्रसवे)।

षुट्ट (सुट्टयति, सुट्टयते) = रोचने, अनादरे। अपमान करना, तिरस्कार करना, अल्प होना, थाह लगाना।(सुट्टयति - रोचते। सुट्टम्

- शाकम्)।

षुर् (सुरति) = ऐश्वर्यदीप्त्योः, ऐश्वर्ये प्रकाशे च। अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना।(सुरति - ऐश्वर्यो भवति, प्रकाशते। सुरः - धनवान्, प्रकाशकः। सोरणम् - ऐश्वर्यम्, प्रकाशः)।

षुह् (सुह्यति) = चक्यर्थे शक्तौ, सामर्थ्ये। तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, सहन करना, पराक्रमी होना, शक्तिमान होना, समर्थ होना। (सुह्यति - तृप्यति, समर्थयति। सोहन्, सोहः, सोहकः, सोही, सोढा - तर्पके, समर्थे। सोहनम्, सोहनीयम्, सोह्यम्, सौह्यम्, सौहम्, सोहितव्यम्, सोहितिः, सोहितम्, सोढ़ः, सुण्डी - तर्पणे सामर्थ्ये)।

षू (सूते, सूयते) = प्राणिगर्भविमोचने, प्राणिप्रसवे, जनने। गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना।(सूते - गर्भम् मुञ्चति। सूयते - प्रसूते। सवानः - प्रसवकर्त्ता। सवनम् - प्रसवः। सविता, सूतः, सूतवान्, सावी, सवानः, सावकः - उत्पादके। सूः, प्रसूः, प्रसूता, सवित्री, सावित्री - जन्मदात्री। सवः, सावः, सवनम्, सवनीयम्, सव्यम्, साव्यम्, सवितव्यम्, सविः - प्रसवे जनने)।

षू (सुवति) = प्रेरणे, नियमने। भेजना, उड़ाना, कार्य में लगाना। (सूवति - नियमयति। सूतः, सूवन्, सूतवान्, सूवकः - प्रेरके। सूवनम्, सूवनीयम्, सूतव्यम्, सूतिः - प्रेरणायाम्)।

षू (सवति) = गतौ। जाना, चलना।(सवति - सर्वदेहेषु चलति। सूः, सविता, सावकः, सवनम्, सावनम् - चलने। सोतव्यम्, सवनीयम् - श्रवणीये, गमनीये)।

षूद् (सूदते; सूदयति, सूदयते) = क्षरणे, अस्वीकारे, आश्रये। टपकना, झरना, रखना, पवित्र करना, शुद्ध करना, पीड़ा करना, दुःख देना, क्षत करना, घाव करना, मार डालना, मारने का यत्न करना। (सूदयति - आश्रितो भवति। सूदते - न स्वीकरोति। सूदः - आश्रितः। सूदकः, सूदमानः,

सूत् - अस्वीकर्तरि। सूदनीयम्, सूद्यम् - सूद्यम्, सूदि – अस्वीकारे)।

षेल् (सेलति) = गतौ। जाना, गतिशील करना, गति देना, प्राप्त करना, बिक्री द्वारा धन प्राप्त होना। (सेलति - श्लिष्यति, श्लेष्मद्रव्येण परस्परं संश्लिष्यति। सेलुः - श्लेष्मद्रव्यम्)।

षेव् (सेवते) = सेवने, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, चाकरी करना, शुश्रूषा करना, विश्वास करना, भरोसा रखना, पूजा करना, सेवन करना, अनुसरण करना। (सेवते - घर्षति, सेवयति। सेवकः, सेवमानः - घर्षकः, परिचारकः। सेवन्ती, सेवन्तिका, सेवका - परिचारिका। सेवा - परिचर्या। सेवनम्, सेवनीयम्, सेविः, सेवुः, सेव्यम्, सैव्यम् - गृहकार्ये)।

षै (सायति) = क्षये, नाशे। ह्रास होना, अल्प होना, क्षीण होना। (सायति - क्षीणो भवति। सायम् - सूर्यास्तानन्तरः कालः। षैः, षः, सायनम्, सायमानम्, सानम्, सातम्, सीतम्, सीनम् - क्षये। सायकः - इषुः)।

षो–ष्य, ष्य (स्यति) = अन्तकर्मणि। विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। (स्यति - समापयति। सायः, सायिता, सितः, सितवान्, सायन् - कर्मसमापके। सायकम्, सायम् - दिवसावसानम्। सायनम्, सायनीयम्, सायितव्यम् - कर्म समापने)।

षोडश (संख्या) = सोलह (16)।

ष्टिव् (ष्टीव्यति) = निरसने, निस्सारणे। निकालना, फेंकना। (ष्टीव्यति - निरस्यति। ष्टीव्यन्, ष्टवः, ष्टवकः, ष्टवितः, ष्टितवान् - निरसितरि। ष्टेवनम्, ष्टेवनीयम्, ष्टेवितव्यम् - निरसनम्)।

ष्ठीव् (ष्ठीवति) = निरसने, निष्ठीवने। थूकना। (ष्ठीवति - ष्ठीवनं करोति (थूत्करोति)। ष्ठीवः - थूत्कर्ता। निष्ठीवनम् - थूत्करणम्)।

ष्तक् (स्तकति) = प्रतिघाते। रोकना, प्रतिघात करना।

ष्तग् (स्तगति) = संवरणे। आच्छादित करना।

ष्तन् (स्तनति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, त्यागे, रेचने। शब्द करना,

त्यागना। (स्तनति - त्यजति, रेचयति वा। स्तनः - उरोजः)।

ष्तन् (स्तनयति, स्तनयते) = देवशब्दे, मेघध्वनौ। मेघ की गर्जना होना। (स्तनयति - शब्दयति, गर्जति। स्तनयित्नुः - मेघः)।

ष्तम्भ (स्तम्भते) = प्रतिबन्धे, अवरोधे। बन्द करना, रोकना, अवरोध करना, जड़बुद्धि होना, मूर्ख होना, दृढ़ होना, अचल होना, चकित होना, विस्मययुक्त होना, स्तब्ध होना, नष्टेन्द्रिय होना, जड़ीभूत होना। (स्तम्भते - तिष्ठति। स्तम्भः - कम्भः (खम्बा)। स्तम्भकः, स्तम्भमानः - स्थातरि। स्तम्भिः, स्तम्भः, स्तम्भनम्, स्तम्भनीयम् - स्थितौ)।

ष्तम् (स्तमति) = प्रतिनिवर्तने, अवैक्लव्ये वैक्लव्ये, श्रमे। भ्रान्त नहीं होना, भ्रान्त होना, व्यग्रचित्त होना। (स्तमति - प्रतिनिवर्तयति (चुकाता है)। स्तम्, स्तमकः - प्रतिनिवर्तकः। स्तमनम्, स्तमितव्यम्, स्तमनीयम्, स्तम्यम्, स्ताम्यम्, स्तामम्, स्तमिः, स्तमुः, स्तामुः, स्तामु - प्रतिनिवर्तने (चुकाने में)।

ष्तिघ् (स्तिघ्नुते) = आस्कन्दने। घेर लेना।

ष्तिप् (स्तेपते) = क्षरणार्थः। टपकना, झरना, प्रोक्षण करना, सींचना।

ष्तिम् (स्तिम्यति) = आर्द्रीभावे, आर्द्रकरणे, मौने। गीला होना, भीगना, भाप बनना। (स्तिम्यति - आर्द्र करोति। स्तिम्यन्, स्तिमिता, स्तिमितः, स्तिमतवान् - आर्द्रकर्तरि, मौने। स्तिमितम्, स्तिमितव्यम्, स्तिमितिः, स्तिमनीयम् - आर्द्रकरणे, मौने। स्तीम्नति - स्रवति। स्तीम्यन्, स्तीमिता, स्तीमितवान्, स्तीमितः - स्रावके। स्तीमितव्यम्, स्तीमनीयम्, स्तीमनीयम्, स्तीमितम्, स्तीमितिः - स्रोतसि)।

ष्तीम् (स्तीम्यति) = आर्द्रीभावे, आर्द्रकरणे, मौने। गीला होना, भीगना, भाप बनना। (स्तीम्यति - वाष्पम्, आर्द्रम् वा करोति)।

ष्तृक्ष (स्तृक्षति)) = गतौ। जाना।

ष्तु (स्तौति, स्तुते; स्तवीति, स्तवीते) = स्तुतौ, प्रशंसायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, अर्चा करना, सेवा करना, भजन करना।

(स्तौति, स्तबीते, स्तुते - प्रशंसति। स्तोता, स्तवन्, स्तवानः, स्तुतः, स्तुतवान्, स्तुतः, स्तवकः, स्तावकः - प्रशंसके। स्तवनम्, स्तवनीयम्, स्तव्यम्, स्ताव्यम्, स्तुतिः, स्तुतम्, स्तोतव्यम् - प्रशंसने)।

ष्टुच् (स्तोचते) = प्रसादे, प्रसन्नतायाम्। सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, प्रकाशित होना, चमकना, तेजस्वी होना। (स्तोचते - प्रसन्नो भवति। स्तुक्, स्तोचः, स्तोचकः, स्तोचमानः - प्रसन्ने। स्तोचनम्, स्तोचनीयम्, स्तोच्यम् - प्रसादे)।

ष्टुप् (स्तुप्यति, स्तोपयति, स्तोपयते) = समुच्छ्राये। ढेर करना, राशि करना।

ष्टुभ् (स्तोभति) = स्तम्भे। अवरोध करना, रोकना, मूर्ख होना, मन्दमति होना।

ष्टेप् (स्तेपते) = क्षरणे। टपकना, सींचना। (स्तेपते - सिञ्चति, क्षरति। स्तेपकः, स्तेपानः, स्तिप्ः, स्तिपितः, स्तेपः - क्षरितरि)।

ष्टै (स्तायति) = वेष्टने, बन्धने। घेरना, लपेटना, वेष्टित करना, रोक रखना। (स्तायति - बन्धयति। स्तायकः - वेष्टकः। स्तैः, स्तः, स्तायनम्, स्तायम्, स्तानम्, स्तातम्, स्तीतम्, स्तीनम् - परिवृत्तौ, वेष्टने)।

ष्टयै (ष्ट्यायति, स्त्यायति) = शब्दसंघातयोः, ध्वनौ संघाते सहगमने च। शब्द करना, साथ चलना, भीड़ होना, घेरना, फैलना। (स्त्यायति, ष्ट्यायति - ध्वनिं करोति, सह गच्छति। ष्ट्यायकः, ष्ट्यायिता - ध्वनिंकर्तरि, सहगन्तरि च। ष्ट्यैः, ष्ट्यायनम्, ष्ट्यानम्, ष्ट्यानिः - कोलाहले। स्त्यायति - सह गच्छति। स्त्यायी - सहगन्त्री। स्त्यायकः, स्त्यायता, स्त्यायिता - सहगन्तरि। स्त्री - सहगन्त्री। स्त्यायकः स्त्यायिता - गायिका। स्त्यैः, स्त्यानम्, स्त्यायनम्, स्त्यानिः - शब्दे)।

ष्थल् (स्थलति) = स्थाने, स्थितौ। स्थिर होना, थमना, स्तब्ध होना, खड़ा होना। (स्थलति - स्थिरो भवति। स्थलम् - स्थानम्। स्थाली - पाकाधिकरणी)।

ष्ठा (तिष्ठ) (तिष्ठति, तिष्ठते) = गतिनिवृत्तौ, गत्यवरोधे आसादने। स्थित होना, ठहरना, मार्ग प्रतीक्षा करना, विनती करना, गिड़गिड़ाना, अपना अभिप्राय दूसरे को समझाना। अधि - पदारूढ़ होना, अधिकारारूढ़ होना, ऊपर रहना, ऊपर बैठना, जीतना, बढ़ना, अधिक होना। अनु - यथाशास्त्र वर्तना, उपयोग करना, सटे रहना, लटकना, चिपके रहना। अव - सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना, थमना, स्थिर रहना। आ - निश्चयपूर्वक बुलाना, योजना बनाना, नियमित करना, अधिरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उत् - खड़ा होना, आसन से उठना, प्राप्ति के लिए ढूँढ़ना, खोजना। उप - प्रशंसा करना, स्तुति करना, पूजा करना, आदरातिथ्य करना, सम्भावना करना, जाना, रहना, आलिङ्गन करना, प्राप्ति की इच्छा करना, मिलने का हेतु रखना। नि - रखना, स्थापित करना। पर्यव - अचल होना, स्थिर होना। प्र - जाना, आगे जाना। प्रोत् - आसन पर से उठना, खड़ा रहना। प्रति - प्रतिष्ठित होना। वि - अलग खड़ा रहना, दूर खड़ा रहना, थकना। व्यव - आज्ञा करना। सम् - अच्छा होना, निकट होना, पूर्ण होना, एकमत होना। समा - करना, आचरण करना। समुत् - उठ खड़ा रहना। सम्प्र - प्रवास करना, परदेश जाना, आगे जाना। (तिष्ठति - आसीदति। तिष्ठन्, तिष्ठान्, स्थायिता, स्थानकः, स्थानिकः, स्थापकः - आसीदितरि। स्थानम्, स्थापनम्, स्थेयम्, स्थानीयम्, स्थितम्, स्थितिः, स्थः, स्थाः - उपवेशने)।

ष्नस (स्नयति) = निरसने। थूकना।

ष्ना (स्नाति, स्नपयति, स्नापयति) = शौचे, स्नाने। स्नान करना, शुद्ध होना। (स्नपयति, स्नापयति, स्नाति - स्नानम् करति। स्नायन्, स्नातः, स्नापकः, स्नाता, स्नातकः - स्नानकर्तरि। स्नानम्, स्नपनम्, स्नापनम्, स्नातव्यम्, स्नापनीयम्, स्नाय्यम् - स्नाने)।

ष्णिह् (स्निह्यति; स्नेहयति, स्नेहयते) = स्नेहने, प्रीतौ। प्रीति करना, स्नेह करना, मित्रता करना, स्निग्ध होना। (स्निह्यति - प्रीतिम् करोति। स्नेहति - लगति। स्नेहयति - मेदयति। स्निक्, स्निग्, स्निट्, स्निड्, स्नेही, स्नेहकः, स्नेहिता, स्नेहितवान, स्नेहनीयम्, स्नेहितम्, स्नेहितिः, स्नेहः - प्रीतिः, प्रेमः, तैलम्। स्नेहनम्, स्नेहनीयम्, स्नेहितम्, स्नेहितिः, स्नेहितव्यम्, स्नेहयम्, स्नैहयम् - प्रीतौ)।

ष्णु (स्नौति) = प्रस्रवणे, स्रोतसि। भाप से टपकना, झरना। (स्नौति - प्रस्रवति। स्नुत्, स्नवन्, स्नवकः, स्नावकः, स्नावः - स्रोतप्रस्रावके। स्नुः - स्रोतस्थानम्। स्नुतिः, स्नुतम्, स्नवम्, स्नवनम्, स्नवनीयम् - स्नोतसि)।

ष्णुस् (स्नुस्यति) = अदने, भक्षणे, आदाने, अदर्शने च। खाना, निगलना, ग्रहण करना, लेना, अदृश्य होना, थूकना। (स्नुस्यति - खादति। स्नुस्यत्, स्नोसः, स्नोसकः, स्नोसितः, स्नोसिता, स्नोसितवान् - भक्षिंतरि। स्नोषणम्, स्नोषणीयम्, स्नोषितव्यम्, स्नोषितम्, स्नोषितिः - खादने)।

ष्णुह् (स्नुह्यति) = उद्गिरणे वमने। वमन करना, निरस्त करना। (स्नुह्यति - वमति। स्नुक्, स्नुग्, स्नुट्, स्नुड्, स्नोहकः, स्नोही, स्नोहन् - वामके। स्नुहिः। स्नोहः, स्नोहनम्, स्नोहनीयम् - वमने)।

ष्णुह् (स्नोहति) = हिंसागत्योः। हिंसा करना, गति करना। (स्नोहति - पतति)।

ष्णै (स्नायति) = वेष्टने शोभायाम्। घेरना, एकत्र करना, शोभित होना।

ष्मि (स्मयते) = ईषद् हसने, अल्पहासे। मुस्कराना, मन्द हास्य करना। वि - आश्चर्य करना। (स्मयते - अल्पं हसति (मुस्कराता है)। स्मयकः, स्मयमानः - ईषद् हासकः। स्मितम्, स्मितिः, स्मयः, स्मयिः, स्मयनम्, स्मयनीयम्, स्मेरम् - ईषद् हसने)।

ष्मि (स्मापयते) = अनादरे। अनादर करना, तिरस्कार करना,

डराना।

ष्मिट्ट (स्मेटयति, स्मेटयते) = अनादरे। अनादर करना, तिरस्कृत करना। (स्मेटयति - अनादरयति। स्मेटन्, स्मेटकः, स्मेटः - अनादरके। स्मेटनम्, स्मेटनीयम् - अनादरे)।

ष्वञ्ज (स्वञ्जति) = सङ्गे, सहभावे। मिलना। (स्वञ्जति - मिलति। स्वङ्गः, स्वञ्जकः - मेलके)।

ष्वद् (स्वदति, स्वादयति, स्वादयते) = आस्वादने, रोचने। स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना। (स्वदते - रोचते। स्वदः, स्वदकः, स्वदमानः - रोचितरि। स्वदिः, स्वत्, स्वदनम्, स्वदनीयम् - रुचौ)।

ष्वप् (स्वपिति) = शये। सोना, निद्रा लेना। (स्वपिति - शेते। स्वपन्, स्वपकः - शायकः। सुप्तिः, सुप्तम्, सुप्तव्यम्, स्वप्तव्यम्, स्वप्नः, स्वापः, स्वपनीयम्, स्वप्यम्, स्वाप्यम् - शयने)।

ष्विद् (स्वेदते) = स्नेहमोचनयोः, मोचने, स्वेदे, स्नेहने च। गीला करना, चिकना होना, छोड़ना, त्याग करना। (स्वेदते - स्वेदयुक्तः भवति। स्वेदकः, स्वेदमानः - स्वेदयुक्तः। स्विदिः, स्विदुः, स्वेदनम्, स्वेदनीयम् - स्वेदे)।

ष्विद् (स्वेदति) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट ध्वनि करना, गुनगुनाना।

ष्विद् (स्विद्यति -स्विद्यति) = गात्रप्रक्षेपणे, धर्मजले। पसीजना, पसीना छूटना। (स्विद्यति - गात्रेभ्यो जलं प्रक्षरति। स्विन्नः, स्विन्नवान्, स्वेदन्, स्वेदकः, स्वेदा - स्वेदितरि। स्विन्नम्, स्वेदः, स्वेद्यम्, स्वैद्यम्, स्वेदितव्यम् - गात्रप्रक्षरणे)।

(स)

स (उपसर्ग) = साथ।

स (सर्वनाम) = वह, उस ने। (पुल्लिंग)।

सः (सर्वनाम) = वह, उस ने।(पुल्लिंग)।

सकृत् (अव्यय) = एक बार।

सक्त (सक्तति) = भर्जने, पाके, पाचने।भूनना, पीसना।(सक्तुः - भोज्यान्न विशेषः)।

सख् (सखति) = मित्रभावे। मित्र होना। (सखति - मित्रम् भवति। सखा - मित्रः)।

सग् (सगति, सगयति) = संवरणे। आच्छादन करना, ओढ़ना। (सगति, सगयति - संवृणोति।सगः, सगन्, सगकः - संव्रियमाणः (ओढ़ने वाला)।सगिः, सगनम्, सगनीयम् - संवरणे (ओढ़ने में)।

सघ् (सघ्नोति) = हिंसायाम्।मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना।

सङ्केत् (सङ्केतयति, सङ्केतयते) = आमन्त्रणे।बुलाना, आमन्त्रण करना, बुद्धि से विचार कर कहना, मन्त्रणा देना, समय नियत करना।

सङ्ग्राम् (सङ्ग्रामयते) = युद्धे।युद्ध करना, लड़ाई करना।(सङ्ग्रामयते - युध्यते।संग्रामः - युद्धम्)।

सङ्घ (सङ्घति) = गतौ, गत्याम्, समूहे।जाना, चलना।(सङ्घति - चलति।सङ्घः - समूहः)।

सच् (सचते) = सेचने, सेवने, घर्षणे।आर्द्र करना, गीला करना, छींटा मारना, सींचना, सेवा करना, सेवा करके सन्तुष्ट करना।(सचते - घर्षयति।सचकः, सचमानः, सक्तुः - घर्षयितरि।सचि, सचु, सचम्, सचनम्, सचनीयम्, सच्यम् - घर्षणे)।

सच् (सचति, सचते) = समवाये।पूरा समझना, अच्छी तरह जानना, सम्बन्धी होना, संसर्गी होना।

सजुष् (सजोषति) = हिंसायाम्, मिश्रणे, सम्मेलने। हिंसा करना, मिलाना।(सजोषति - मिश्रयति।सजोषस्, सजोष्टा - मिश्रकः।सजुष्टम् - मिश्रितम्। सजोषः - सम्मेलनम्। सजुष्टिः - मिश्रणम्। सजुषिः - मिश्रणम्। सजुट् - मिश्रितः)।

सज्ज (सज्जति, सज्जते) = गतौ, सज्जायाम्।जाना, तैयार होना, सिद्ध होना।

सञ्ज (सञ्जति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां आच्छादने अन्धकारे च।हिंसा करना, गति करना, आच्छादन करना।(सञ्जति - सन्ध्या भवति। सञ्जा - तमः।सञ्जी - यवनिका (परदा)।

सञ्ज (सञ्जति) = सङ्गे, सहभावे, आलिङ्गने, मेलने।आलिङ्गन करना, गले लगाना, सटे रहना, चिपके रहना, सम्बन्धी होना। अव - लटकना, हिलना।आ - अनुरक्त होना, आसक्त होना।व्या - झगड़ना, हाथापाई करना।(सञ्जति - मिलति।सङ्गः - मेलकः।सञ्जनम्, सञ्जनीयम्, साञ्ज्यम् - मेलने)।

सट् (सटति) = अवयवे, सङ्घाते, संश्लेषे। भाग होना, अवयव होना, सटकर रहना, सटना।(सटति - समीपम् आगच्छति।सटा - जटा)।

सट्ट (सट्टयति, सट्टयते) = हिंसाबलदाननिकेतनेषु, मारणे, बले, दाने, निवासे च। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, विदीर्ण करना।(सट्टयति - विदारयति।सट्टा - विदीर्णो भागः)।

सण् (सणति) = प्रकाशे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्।(सणति - प्रकाशते)।

सत् (सतति) = सत्तायाम्, भुवि।होना, सत्य होना, अस्तित्व होना।

सत् = सत्य, अस्तित्व (अव्यय)।

सततम् (अव्यय) = निरन्तर, लगातार।

सत्र (सत्रयते) = सन्तानक्रियायाम्, धर्मसंघाते। फैलाना, विस्तार करना, सम्बन्ध करना, संसर्गी होना। (सत्रयते - सततं धर्मम् आचरति। सत्रम् - धर्मसन्तानम्)।

सत्रा = सभी (अव्यय)।

सद्-सीद् (सीदति) = विशरणगत्यवसादनेषु, विशरणे, विकर्तने,

गतौ, स्थाने। जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, काटना, विकर्तन करना, भग्न करना, नष्ट करना, बैठना, चढ़ाई करना, सूखना। अव - क्लान्त होना, थकना, बलहीन होना, पूर्ण करना, समाप्त करना। समा - प्राप्त होना, मिलना, इच्छितार्थ की प्राप्ति होना। उत् - ऊपर चढ़ना, नष्ट करना। उप - निकट जाना। नि - ऊपर या भीतर बैठना, खड़ा करना, पालन करना, संभालना। प्र - आनन्दित होना, सुखी होना, प्रफुल्लित होना, खिलना, उत्तम दशा को प्राप्त होना, सुखी करना, सन्तुष्ट करना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना, स्मित करना, मुस्कराना। वि - अशान्तचित्त होना, खिन्न होना, दुःखी होना, श्रान्त होना, थकना। सम् - इच्छितार्थ की प्राप्ति होना, मण्डली में रहना। (सीदति - विकृन्तति। प्र-सन्नः - मुदितः। आ-सन्नः - समीपवर्ती। आ-सादी - महापूजकः। प्र-सादः - चन्द्रिका। प्रसादः, प्रासादः - गृहोपरिभवः छदः (छत)। प्र-सादनम् - आभरणम्। सदस्, सदः, सदस्यः - सदस्यः)।

सदा (अव्यय) = प्रत्येक समय, सर्वदा।

सध (अव्यय) = साथ।

सन् (सन्ति, सनति) = सम्भक्तौ, मिश्रणे। सेवा करना, चाकरी करना, विभक्त करना, अलग करना। (सनति - योग्यो भवति। सानुः - तटम्, गिरिशृङ्गं वा)।

सना (अव्यय) = सदा (अव्यय)।

सनात् = सदा से, सनातन से (अव्यय)।

सनातन (अव्यय) = सदा, प्राचीन (सना+तन)।

सनु (सनोति, सनुते) = दाने। देना, दान करना, सेवा करना, पूजा करना, सत्कार करना। (सनोति, सनुते - ददाति। सन्तः, सन्तवान्, सन्ता - दातरि। सन्तम्, सन्तिः, सननम्, सननीयम्, सन्यम्, सान्यम्, सन्तव्यम्, सनम्, सनी, सनुम्, सानम् - दानक्रियायाम्। सानुः - दानी, उपत्यका वा

(तराई, घाटी)। सानी - दाता, माता वा)

सप् (सपति) = समवाये। पूर्ण ज्ञान होना, पूरा समझना, पूर्णतया जानना, संसक्त होना, संलग्न होना, मिलाप होना।

सपदि (अव्यय) = तुरन्त, शीघ्र।

सपर् (सपर्यति) = पूजायाम्। पूजा करना, सेवा करना।

सप्त (संख्या) = सात (07)।

सप्तचत्वारिंशत् (संख्या) = सैंतालीस (47)।

सप्तति (संख्या) = सत्तर (70)।

सप्तत्रिंशत् (संख्या) = सैंतीस (37)।

सप्तदशः (संख्या) = सत्रह (17)।

सप्तनवति (संख्या) = सत्तानवे (97)।

सप्तपञ्चाशत् (संख्या) = सत्तावन (57)।

सप्तविंशति (संख्या)= सत्ताईस (27)।

सप्तषष्टिः (संख्या)= सरसठ (67)।

सप्तसप्तति (संख्या) = सतहत्तर (77)।

सप्ताशीति (संख्या) = सत्तासी (87)।

सभाज् (सभाजयति) = प्रीतिसेवनयोः प्रीतिदर्शनयोः प्रीतिदर्शने। प्रीति करना, स्नेह करना, तृप्त करना, सेवा करना, देखना, प्रीति करना या स्नेहपूर्वक देखना। (सभाजयति - प्रीतिम् करोति। सभाजयन् - प्रीतिकर्ता। सभाजनम् - प्रीतिः)।

सम्-संस् (उपसर्ग) = सम्यक् रूप से, भलीभाँति।

सम (सर्वनाम) = सब, सभी (समान अर्थ में सर्वनाम नहीं)।

सम् (सम्यति) = परिणामे। परिणाम होना, रूपान्तर होना।

सम् (समयति) = समाने, समविभागे, अवैक्लव्ये, वैक्लव्ये, श्रमे।

समान विभाग होना, न घबराना, एक समान रहना। (समयति - घबराने नहीं देता है, हिचकिचाने से रोकता है)।

सम् (समति, समयति) = समाने, समविभागे, अवैक्लव्ये, वैक्लव्ये, श्रमे। समान विभाग होना, न घबराना, एक समान रहना। (समति - विभजति (बाँटता है)। समयति - घबराने नहीं देता है, हिचकिचाने से रोकता है। समन्, समकः - विभजकः। समम्, समनम्, समानम्, समनीयम्, साम्यम्, सम्यम्, सम्, समि, समु, सामु, सामम् - समाने। सामन्, सामकः - - वेदविशेषः, सामवेदः)।

समम् (अव्यय) = समान।

समया (अव्यय) = निकट, साथ।

समीचीनम् (अव्यय) = ठीक है।

समीपम् (अव्यय) = निकट।

समीपे (अव्यय) = निकट।

सम्प (सम्पयति) = क्षान्तौ, सहने, फले। समर्थ होना, सहना, फल होना, फलीभूत होना। (सम्पयति - फलति। सम्पा - वृक्षः)।

सम्प्रति (अव्यय) = इस समय, अभी।

सम्ब (सम्बयति, सम्बयते) = निपातने सम्बन्धने च। उड़ेलना, संयोग करना, मिलाप करना, जोड़ना। (सम्बयति - निपातयति (उड़ेलता है)। सम्बः, सम्बन्, सम्बकः - निपातके। सम्बनम्, सम्बनीयम् - निपातने)।

सम्बर् (सम्बर्यति) = संभरणे। पालन करना, भरण करना, बटोरना, एकत्र करना।

सम्भूयस् (सम्भूयस्यति) = प्रभूतभावे। बहुत होना।

सम्मुखम् (अव्यय) = सामने।

सम्यक् (अव्यय) = भलीभाँति।

सय्, सो, स्य (स्यति) = अन्तकर्मणि। विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। (स्यति - समापयति। सायः, सायिता, सितः, सितवान्, सायन् - कर्मसमापके। सायकम्, सायम् - दिवसावसानम्। सायनम्, सायनीयम्, सायितव्यम् - कर्म समापने)।

सर्ज (सर्जति) = अर्जने, अलब्धस्य लाभे। उपार्जन करना, मिलाना, प्राप्त करना, प्राप्त होना। (सर्जति - प्राप्नोति। सर्जनम् - प्रापणम्)।

सर्ज (धातु) (सर्जते) = गतौ, त्यागे। त्याग करना। (सर्जते - त्यजति। सर्जः, सर्जकः, सर्जमानः - त्यक्तरि। सर्ज्यः - सिंहः। सर्जनम्, सर्जनीयम्, सर्जिः, सर्जुः, सर्गः - त्यागे)।

सर्ब (सर्बति) = गतौ। जाना।

सर्व (सर्वति) = हिंसायाम्। जाना, दुःख देना, पीड़ा करना।

सर्व (सर्वनाम) = सब, सबने (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वतः (अव्यय) = सभी ओर, सभी दिशाओं में।

सर्वत्र (अव्यय) = सभी स्थानों पर।

सर्वथा (अव्यय) = सब प्रकार से।

सर्वदा (अव्यय) = सभी समय, सब दिन।

सर्वम् (सर्वनाम) = सब कुछ, सब ने, सब को। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वया (सर्वनाम) = सब द्वारा। (स्त्रीलिंग)।

सर्वयोः (सर्वनाम) = सब दोनों के, सब दोनों में (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

सर्वस्मात् (सर्वनाम) = सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वस्मिन् (सर्वनाम) = सब में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वस्मै (सर्वनाम) = सब के लिए। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वस्य (सर्वनाम) = सब का। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वस्याः (सर्वनाम) = सब के, सब से। (स्त्रीलिंग)।

सर्वस्याम् (सर्वनाम) = सब में। (स्त्रीलिंग)।

सर्वस्यै (सर्वनाम) = सब के लिए। (स्त्रीलिंग)।

सर्वा (सर्वनाम) = सब, सब ने। (स्त्रीलिंग)।

सर्वाः (सर्वनाम) = सब ने, सब को। (स्त्रीलिंग)(बहुवचन)।

सर्वाणि (सर्वनाम) = सब ने, सब को। (नपुंसकलिंग)(बहुवचन)।

सर्वान् (सर्वनाम) = सब को। (पुल्लिंग) (बहुवचन)।

सर्वाभिः (सर्वनाम) = सब द्वारा। (स्त्रीलिंग)(बहुवचन)।

सर्वाभ्यः (सर्वनाम) = सब के लिए, सब से। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

सर्वाभ्याम् (सर्वनाम) = सब दोनों द्वारा, सब दोनों के लिए, सब दोनों से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग)।

सर्वाम् (सर्वनाम) = सब को। (स्त्रीलिंग)।

सर्वासाम् (सर्वनाम) = सब का। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

सर्वासु (सर्वनाम) = सब में। (स्त्रीलिंग) (बहुवचन)।

सर्वे (सर्वनाम) = सब (स्त्रीलिंग)।

सर्वेण (सर्वनाम) = सब द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग)।

सर्वेभ्यः (सर्वनाम) = सब के लिए, सब से। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

सर्वेषाम् (सर्वनाम) = सब का। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।।

सर्वेषु (सर्वनाम) = सब में। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

सर्वैः (सर्वनाम) = सब द्वारा। (पुल्लिंग, नपुंसकलिंग) (बहुवचन)।

सर्वौ (सर्वनाम) = सब दोनों ने। (पुल्लिंग)।

सल् (सलति) = गतौ। जाना, सरकना, कांपना, थरथराना।

सष् (सष्यति) = गणनायाम्, शक्तौ, सामर्थ्ये। शक्ति होना, सामर्थ्य

होना, गणना करना। (सष्यति - गणयति। षट्, षषः, षषकः, षष्टः, षष्टवान्, षष्टा - गणके। षषणम्, षष्यम्, षष्टव्यम् - शक्तौ)।

संस्-सम् (उपसर्ग) = सम्यक् रूप से, भलीभाँति।

सस् (संस्) (सस्ति) = स्वप्ने। सोना। (सस्ति - शेते। ससन्, ससकः - स्वप्नद्रष्टा। सस्तिः, सस्तम्, ससनम्, ससनीयम्, सस्यम्, सास्यम्, सासम् - स्वप्ने)।

सस्ज-सज्ज (सज्जति) = गतौ, सज्जायाम्। जाना, तैयार होना, सिद्ध होना।

सह् (सहते; साहयति, साहयते, सहति, सह्यति) = मर्षणे, सहने, सहभावे, चक्यर्थे, शक्तौ, सामर्थ्ये। तृप्त होना, प्रसन्न होना, सहन करना, प्रतिरोध करना, शक्तिमान् करना, सन्तुष्ट होना। उत् - उत्साहित होना, आनन्दित होना, उद्योग करना, यत्न करना। प्र - अत्याचार करना, बलात्कार करना। वि - दृढ़ निश्चय करना, निर्णय करना, ठहराना। (सहते - मर्षयति। साढ्, सहन्, सहकः, सोढा - मर्षयिता। सह - सहभावे। सहि - प्रत्यर्पणम्। सहनम्, सहनीयम् - मर्षणम्। सहयति - (तुरां, कोलाहलं) सहते। सह्यति - सहते। तुराषाट् - इन्द्रः। सहः, सहन्, सोढा, सहकः, सहितः, सहितवान् - सहनशीले। सहनम्, सहनीयम्, सहितव्यम्, सहितम्, सहितिः, सही, साह्यम्, साहम् - सहने)।

सह (अव्यय) = सहित, साथ।

सहः (अव्यय) = साथ।

सहसः (अव्यय) = अचानक।

सहसा (अव्यय) = अचानक।

सहस्त्र (संख्या) = सहस्त्र, हजार (1000)।

सा (सर्वनाम) = वह, उस ने। (स्त्रीलिंग)।

साकम् (अव्यय) = साथ।

साक्षात् (अव्यय) = प्रत्यक्ष, आँखों के सामने।

साध् (साध्नोति) = संसिद्धौ, निर्णये। पूर्ण करना, सिद्ध करना, जय पाना, जीतना, यशस्वी होना, साधना करना। (साधन्, साधानः - निर्णायके)।

साध् (साध्यति) = संसिद्धौ, निर्णये। निर्णय करना। (साध्यति - निर्णयति। साद्धा, साधन्, साधकः, साद्धः, साधवान् - निर्णायके। साधनम्, साधम् - निर्णये। साध्यम्, साधनीयम् - निर्णेतुं योग्ये)।

सान्त्व (सान्त्वयति, सान्त्वयते) = सामप्रयोगे, शमने। सान्त्वना देना, समाधान करना, विवेकपूर्ण बात कहना। (सान्त्वयति - शाम्यति। सान्त्वन्, सान्त्वकः - शान्तरि। सान्त्वनम्, सान्त्वनीयम् - शमने)।

साम् (सामयति) = सान्त्वप्रयोगे सान्त्वने, साधने। सान्त्वना देना, समाधान करना, शान्त करना। (सामयति - साध्नोति। सामन्तः - साधकः)।

साम्प्रतम् (अव्यय) = अब, उचित।

साम्ब (साम्बयति, साम्बयते) = सम्बन्धने। एकत्र होना, संयुक्त होना, संयोग करना, मिलाप करना।

सायम् (अव्यय) = सन्ध्या, सायम्।

सार् (सारयति, सारयते) = दौर्बल्ये, बले। अधिकबल होना, दुर्बल होना। (सारयति - अधिकबलो भवति। सारः — अतिबलः)।

सार्धम् (अव्यय) = साथ।

सि (सिनोति, सिनुते; सिनाति, सिनीते) = बन्धने। बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना। अध्यव - निश्चय करना, श्रम करना, सिद्ध करना, हेतु पूर्ण करना। व्यव - उद्योग करना, व्यवसाय करना। वि - कारणीभूत होना। (सिनोति सिनुते - बध्नाति। सयन्, सयानः, सितः, सितवान्, सेता, सयकः - बन्धके। सेतुः - पुलिनम् (बाँध)। सितम्, सितिः, सयनम्, सयनीयम्, सेतव्यम् - सेतौ, बन्धे (मेंढ़)। सिनाति, सिनीते - बध्नाति। सितः, सितवान् - बन्धके। सितम्, सितिः - बन्धने)।

सिक्-सिङ्क्-सिज्-सिञ्ज (सिङ्ते, सिङ्क्ते) = अव्यक्त शब्दे, अनुकरणध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना। (सिङ्ते, सिङ्क्ते - ध्वनिं करोति। सिक्तवान्, सिङ्क्तवान्, सिञ्जानः, सिक्ता, सिङ्क्ता - शब्दितरि। सिञ्जा, सिञ्जनम्, सिञ्जनीयम्, सिक्तव्यम्, सिङ्क्तव्यम्, सिक्तिः, सिक्तम्, सिङ्क्तिः, सिङ्क्तम्) - ध्वनौ)।

सिघ् (सिघ्नोति) = जिघांसायाम्, छिद्रकरणे। कतरना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना, नष्ट करना, घिसना, काटना, छांटना। (सिघ्नोति - छिद्रं करोति। सिघ्, सेघन्, सेघः, सेघकः - छिद्रकर्तरि। सिग्घिः, सिग्धम्, सेग्घव्यम्, सेघ्यम्, सैव्यम्, सेघनम्, सेघनीयम् - छिद्रकरणे)।

सिघ् (सिघ्नुते) = आस्कन्दने, शनैः गमने, अल्पशोषणे। चलना, धीरे चलना, सूखना। (सिघ्नुते - चलति, शुष्यति। सेघानः, सिग्धः, सिग्धवान्, सेघकः - शुष्कभावुके। सिग्धिः, सिग्धम्, सेग्धव्यम्, सेघनम्, सेघनीयम् - शुष्कीभावे)।

सिङ्ग (सिङ्गति) = गतौ, उपद्रवे। ज़ाना, उपद्रव करना। (सिङ्गति - उपद्रवति। सिङ्गः - उपद्रवी, कपिविशेषः वा)।

सिज्-सिक् (सिङ्ते, सिङ्क्ते) = अव्यक्त शब्दे, अनुकरणध्वनौ। अस्पष्ट ध्वनि करना। (सिङ्ते, सिङ्क्ते - ध्वनिं करोति। सिक्तवान्, सिङ्क्तवान्, सिञ्जानः, सिक्ता, सिङ्क्ता - शब्दितरि। सिञ्जा, सिञ्जनम्, सिञ्जनीयम्, सिक्तव्यम्, सिङ्क्तव्यम्, सिक्तिः, सिक्तम्, सिङ्क्तिः, सिङ्क्तम् - ध्वनौ)।

सिच् (सिच्यति, सिच्यते) = क्षरणे, सिञ्चने। छिड़कना, प्रोक्षण करना, छींटा देना, सींचना। (सिञ्चति, सिञ्चते - क्षरति (छिड़कता है)। सिक्तः, सिक्तवान्, सेचकः - सेचनकर्तरि। सिक्तम्, सिक्तिः, सेचनम्, सेचनीयम् - सेचनकर्मणि)।

सिञ्च (सिञ्चति, सिञ्चते) = क्षरणे, सिञ्चने। छिड़कना, प्रोक्षण

करना, छींटा देना, सींचना।(सिञ्चति, सिञ्चते - क्षरति (छिड़कता है)। सिक्तः, सिक्तवान्, सेचकः - सेचनकर्तरि। सिक्तम्, सिक्तिः, सेचनम्, सेचनीयम् - सेचनकर्मणि)।

सिञ्ज्-सिङ्क्-सिक्-सिङ्क्-सिज् (सिङ्ते, सिङ्क्ते) = अव्यक्त शब्दे, अनुकरणध्वनौ।अस्पष्ट ध्वनि करना, अनुकरण ध्वनि करना।(सिङ्ते, सिङ्क्ते - ध्वनिं करोति। सिञ्जः, सिञ्जकः, सिक्तवान्, सिङ्क्तवान्, सिञ्जानः, सिक्ता, सिङ्क्ता - शब्दितरि।सिञ्जा, सिञ्जनम्, सिञ्जनीयम्, सिक्तव्यम्, सिङ्क्तव्यम्, सिक्तिः, सिक्तम्, सिङ्क्तिः, सिङ्क्तम् - ध्वनौ)।

सिट् (सेटति) = अनादरे, अपमाने। अपमान करना, तिरस्कार करना।(सेटति - अनादरं करोति)।

सिद् (सेदति) = गतौ, हिंसायाम्। हिंसा करना, अवसाद होना, जाना, जानना, पाना।

सिध् (सिध्यति) = संराद्धौ, निश्चये।पूरा करना, सिद्ध होना, जीत होना, पूर्ण होना, समाप्त होना।(सिध्यति - निश्चितं भवति।सेद्धा, सेधकः, सिद्धः, सिद्धावान् - निश्चयवति।सित्, सिधा, सिद्धम्, सिद्धिः, सेधनम्, सेधनीयम्, सेध्यम्, सैध्यम्, सैधम् - निश्चये।निषेधः, प्रतिषेधः - अनृते, निश्चयविपरीते)।

सिध् (सेधति) = गत्याम्।जाना।नि - रोकना।(सेधति - गच्छति। सिद्धम् - सिद्धिः)।

सिध् (सेधति) = पठने, पाठने, अध्ययने, शास्त्रे, माङ्गल्ये च। आज्ञा करना, पठन-पाठन करना, अध्ययन करना, उपाध्याय करना, मंगल कर्म करना।नि, प्रति - निषेध करना, नकारना, रोकना।प्र - प्रसिद्ध होना, कीर्तिमान होना।(सेधति - पठति, पाठयति, मङ्गलं शुभं वा भवति)।

सिन्-सि (सिनोति, सिनुते; सिनाति, सिनीते) = बन्धने। बांधना, गूंथना, फन्दे से पकड़ना। अध्यव - निश्चय करना, श्रम करना, सिद्ध

करना, हेतु पूर्ण करना। व्यव - उद्योग करना, व्यवसाय करना। वि - कारणभूत होना।(सिनोति सिनुते - बध्नाति।सयन्, सयानः, सितः, सितवान्, सेता, सयकः - बन्धके।सेतुः - पुलिनम् (बाँध)।सितम्, सितिः, सयनम्, सयनीयम्, सेतव्यम् - सेतौ, बन्धे (मेंढ़)। सिनाति, सिनीते - बध्नाति। सितः, सितवान् - बन्धके।सितम्, सितिः - बन्धने)।

सिभ् (सेभति) = हिंसार्थः, भाषार्थः, भासार्थः च। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना, प्रकाशित होना, चमकना, भाषण करना, बोलना।

सिम (सर्वनाम) = सम्पूर्ण।

सिम्भ (सिम्भति) = हिंसार्थः।मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, प्रकाशित होना, चमकना, भाषण करना, बोलना।

सिल् (सिलति) = उञ्छे, चालने। बीनना, एक-एक दाना चुगना। (सिलति - चर्बति। सेलन्, सेलकः - चर्बकः। सेलुः, सेला, सिली - चर्बिका)।

सिव् (सीव्यति) = तन्तुसन्ताने, तन्तूनां संयोजने। सीना, सिलाई करना, बीजारोपण करना, बोना, रोपना।(सीव्यति - तन्तून् संयोजयति। सीव्यन्, सेवः, सेवकः, सेविता, सेवितवान् - तन्तुसंयोजके, सीवके)।सेवनम्, सेवनीयम्, सेव्यम्, सैव्यम्, सैवम्, सेवा, सेवितव्यम्, सेवितम् - सीवने)।

सिष् - सिञ्च (सिञ्चति, सिञ्चते) = क्षरणे, सिञ्चने। छिड़कना, प्रोक्षण करना, छींटा देना, सींचना।(सिञ्चति, सिञ्चते - क्षरति (छिड़कता है)।सिक्तः, सिक्तवान्, सेचकः - सेचनकर्तरि।सिक्तम्, सिक्तिः, सेचनम्, सेचनीयम् - सेचनकर्मणि)।

सिंह (सिंहति) = हिंसागत्योः, विदारणे।हिंसा करना, विदीर्ण करना, गति करना।(सिंहति - विदारयति।सिंहः - वनराजः।सिंहलः - लङ्का)।

सीक् (सीकयति) = आमर्षणे, विमर्शे। विचार करना।(सीकयति - विचारयति)।

सीक् (सीकते) = सेचने, घर्षणे। सींचना, घर्षण करना। (सीकते - घर्षयति। सीकः, सीककः, सीकमानः - घर्षके। सीक्, सीकिः, सीकनम्, सीकनीयम्, सीक्यम् - घर्षणे)।

सीक् (सीकते) = गतौ, कूर्दने। जाना, चलना, कूदना। (सीकते - कूर्दते। सीकरः - जलबिन्दुः)।

सीद्-सद् (सीदति) = विशरणगत्यवसादनेषु, विशरणे, विकर्तने, गतौ, स्थाने। जाना, चलना, शक्तिहीन होना, म्लान होना, खिन्न होना, सूखना, शुष्क होना, मुर्झाना, विकर्तन करना, भग्न करना, नष्ट करना, बैठना, चढ़ाई करना, सूखना। अव - क्लान्त होना, थकना, बलहीन होना, पूर्ण करना, समाप्त करना। समा - प्राप्त होना, मिलना, इच्छितार्थ की प्राप्ति होना। उत् - ऊपर चढ़ना, नष्ट करना। उप - निकट जाना। नि - ऊपर या भीतर बैठना, खड़ा करना, पालन करना, संभालना। प्र - आनन्दित होना, सुखी होना, प्रफुल्लित होना, खिलना, उत्तम दशा को प्राप्त होना, सुखी करना, सन्तुष्ट करना, स्वच्छ करना, शुद्ध करना, स्मित करना, मुस्कराना। वि - अशान्तचित्त होना, खिन्न होना, दुःखी होना, श्रान्त होना, थकना। सम् - इच्छितार्थ की प्राप्ति होना, मण्डली में रहना। (सीदति - विकृन्तति। प्र-सन्नः - मुदितः। आ-सन्नः - समीपवर्ती। आ-सादी - महापूजकः। प्र-सादः - चन्द्रिका। प्रसादः, प्रासादः - गृहोपरिभवः छदः (छत)। प्र-सादनम् - आभरणम्। सदस्, सदः, सदस्यः - सदस्यः)।

सीम् = सब (सर्वनाम)।

सीम् = कोई (अव्यय)।

सृ (सरति; ससर्त्ति) = गतौ, चलने। जाना, सरकना। अनु - पश्चात् गमन करना, पीछे पीछे जाना, अनगमन करना। अप - लौटना, पीछे जाना। अभि - सभी ओर फैलना, सहगमन करना, साथ जाना। उप - समीप जाना। प्र - आगे जाना, आगे आना, फैलना। वि - आना, अलग-

अलग जाना, छोड़ कर आगे जाना। निस् - निकलना। (सरति - चलति। सर्ता, सरकः - गन्तरि। सरस्, सर्, सृत्, सृ, सरणम्, सरस्वत्, सारम्, सारः, सरिः, सरः, सारुः, सारणम्, सार्यम्, सर्तव्यम्, सरणीयम्, सृतिः, सृतम्, सरत्, सर्यमाणम् - चलने। सरणिः - मार्गः)।

सृ (सिसर्ति) = गतौ। जाना। (सिसर्ति - गच्छति। सर्ता, सरन्, सरकः, सृतवान्, सृतः, सरः - गन्तरि। सृत्, सृतिः, सृतम्, सर्तव्यम्, सर्यम्, सार्यम्, सारम्, सरम्, सारि, सरणम्, सारणम्, सृत्यम् - चलने। सरणिः - मार्गः। सरटः - गृहगोधा। सारणी - पक्षी)।

सृक्ष (सृक्षति) = गतौ, गमने। जाना। (सृक्षति - गच्छति। सृक्षकः - गन्ता)।

सृज् (सृज्यति; सृजति) = उत्पादने, विसर्गे, परित्यागे। छोड़ना, त्याग करना, उत्पादन करना, बनाना, रचना करना। उत्, वि, नि - छोड़ देना। सम् - मिलाप करना, मिलाप होना। (सृज्यते - त्यजति। सृजति - उत्पादयति। स्रष्टा, सर्गकः - सृष्टिकर्ता। सर्जनम्, सृष्टिः, सर्जनीयम् - सृष्टिनिर्माणम्। सर्जनम्, सर्जनीयम्, सर्क्तव्यम्, सर्गः, सृष्टम्, सृष्टिः - उत्पादने। प्रतिसर्गः - नाशः। उत्सर्गः - परित्यागः। संसर्गः - मेलनम्)।

सृध् (सर्धति, सर्धते) = रुन्धे, मर्दने, सम्पीडने। मर्दन करना, सम्पीडन करना। (सर्धति, सर्धते - मर्दयति। सृध्, सर्धकः, सर्धमानः - मर्दकः। सर्धनम्, सर्धनीयम् - मर्दनम्)।

सृप् (सर्पति) = गतौ, वक्रगतौ। जाना, सरकना, वक्रगति करना। अप - सन्निकट होना, हटना। (सर्पति - चलति। सर्पः - प्राणिविशेषः, अहिः वा। सर्पिस् - घृतम्। सर्पणम् - वक्रगतिः)।

सृभ् (सर्भति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। मार डालना या दुःख देना, पीड़ा करना। (सर्भति - मारयति। सर्भः - मारयिता। सर्भणम् - हिंसनम्)।

सृम्भ (सृम्भति) = भर्त्सनहिंसयोः, निन्दायां हिंसने च। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना। (सृम्भति - मारयति। सृम्भः - घातकः। सृम्भणम् - हिंसा)।

सृ (सृणाति, सृणीते) = हिंसायाम्, मारणे, भक्षणे, खाद्ये। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, खाना। (सृणाति, सृणीते - अत्ति। सरभः - मृगविशेषः (गैंडा)। सर्वः - भक्षकः। सरणम्, सरणीयम्, सर्यम्, सार्यम्, सरीरम् - खाद्ये)।

सु (उपसर्ग) = अच्छा।

सु (सुनोति, सुनुते) = अभिषवे, मथने। स्नान करना, यन्त्रादि द्वारा अर्क निकालना, निचोड़ना, दबाना, हिलाना। अभि - प्रोक्षण करना, मार्जन करन, सींचना, स्नान करना। (सुनोति, सुनुते - मन्थति। सवन्, सवानः, सोता, सुतः, सुतवान्, सवकः - मन्थनकर्तरि। सवनम्, सवनीयम्, सोतव्यम्, सुतिः, सुतम् - मथने)।

सु (सवति, सौति) = प्रसवे, जनने, गर्भविमोचने, प्रसवैश्वर्ययोः। उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना, अद्भुत सामर्थ्य होना। अमानवी पराक्रम होना। (सवति - जनयति। सौति - गर्भ विमुञ्चति। सवन्, सवकः, सावकः, सविता - प्रसवकर्तरि। सावित्री - माता। सुः, सुत्, सविः, सावुः, सवनम्, सुतिः, सुतम्, सुतव्यम्, सुत्यम् - प्रसवे)।

सुख् (सुखयति, सुखयते, सुख्यति) = तत्क्रियायाम्, सुखने। - सुखी करना, आनन्दित करना, प्रसन्न करना, सुख का अनुभव करना, आनन्दानुभव करना। (सुखयति - सुखं भुङ्क्ते। सुखी - सुखयुक्तः। सुखम् - अनामयम्)।

सुघ् (सोघति, सुघति) = भाषार्थाः, शब्दे, ध्वनौ। ध्वनि करना, बोलना, स्पष्ट बोलना, शब्द करना।

सुट्ट (सुट्टयति, सुट्टयते) = रोचने, अनादरे। अपमान करना,

तिरस्कार करना, अल्प होना, थाह लगाना। (सुट्टयति - रोचते। सुट्टम् - रोचनम्, शाकम् वा)।

सुटि (सुण्टति) = वक्रे, कौटिल्ये। वक्र होना, कुटिल होना, टेढ़ा होना। (सुण्टति - कुटिलो भवति। सुण्टः - कुटिलः, पृष्ठम् वा शरीरस्य मध्यभागः वा)।

सुभ् (सोभति, सुभति) = शोभार्थे, भाषणे हिंसायाञ्च। बोलना, दुःख देना, मारना, सुन्दर होना। (सोभति, सुभति - शोभार्थे)।

सुम्भ (सुम्भति) = शोभार्थे, भाषणे हिंसायाम् च। बोलना, दुःख देना, मारना, सुन्दर होना। (सुम्भति - शोभार्थे)।

सुर् (सुरति) = ऐश्वर्यदीप्त्योः, ऐश्वर्ये प्रकाशे च। अद्भुत सामर्थ्य या अमानवी पराक्रम होना, चमकना। (सुरति - प्रकाशते। सुरः - ऐश्वर्यवान्, प्रकाशकः। सोरणम् - ऐश्वर्यम्, प्रकाशः)।

सुष्-सूष्-सुस् (सूषति) = प्रसवे, प्रजनने। उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना। (सूषति - प्रसूते। सोषणम् - प्रसवः। सुष्यम् - प्रसूतम्। सुष्टिः - प्रसवः)।

सुष्ठु (अव्यय) = अच्छा।

सुह् (सुह्यति) = चक्यर्थे, शक्तौ, सामर्थ्ये। तृप्त होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, सहन करना, पराक्रमी होना, शक्तिमान होना, समर्थ होना। (सुह्यति - तृप्यति, समर्थयति। सोहन्, सोहः, सोहकः, सोही, सोढा - तर्पके, समर्थे। सोहनम्, सोहनीयम्, सोह्यम्, सौह्यम्, सौहम्, सोहितव्यम्, सोहितिः, सोहितम्, सोढः, सुण्डी - तर्पणे सामर्थ्ये)।

सू (सूते, सूयते) = प्राणिगर्भविमोचने, प्राणिप्रसवे, जनने। गर्भ धारण करना, जन्म देना, उत्पन्न करना, गर्भ धारण करना। (सूते - गर्भम् मुञ्चति। सूयते - प्रसूते। सवानः - प्रसवकर्त्ता। सवनम् - प्रसवः। सविता, सूतः, सूतवान्, सावी, सवानः, सावकः - उत्पादके। सूः, प्रसूः, प्रसूता,

सवित्री, सावित्री - जन्मदात्री। सवः, सावः, सवनम्, सवनीयम्, सव्यम्, साव्यम्, सवितव्यम्, सविः - प्रसवे, जनने)।

सू (सुवति) = प्रेरणे, नियमने। भेजना, उड़ाना, कार्य में लगाना। (सूवति - नियमयति। सूतः, सूवन्, सूतवान्, सूवकः - प्रेरके। सूवनम्, सूवनीयम्, सूतव्यम्, सूतिः - प्रेरणायाम्)।

सू (सवति) = गतौ। जाना, चलना। (सवति - चलति। सूः, सविता, सावकः - गन्ता। सवनम्, सावनम् - चलने। सोतव्यम्, सवनीयम् - श्रवणीये, गमनीये)।

सूच् (सूचयति, सूचयते) = सूचने, पैशुन्ये। सूचना करना, बात कहना, जताना, बताना। (सूचयति - सूचनम् करोति। सूचः - सूचकः)।

सूत्र (सूत्रयति, सूत्रयते) = वेष्टने विमोचने अवमोचने, संयोजने च। सूत से लपेटना, रस्सी बटना, मुक्त करना। (सूत्रयति - संयुनक्ति। सूत्री, सूत्रकः, सूत्रन् - संयोजके। सूत्रम्, सूत्रितम्। सूत्रणम्, सूत्रणीयम् - संयोजने)।

सूद् (सूदते; सूदयति, सूदयते) = क्षरणे, अस्वीकारे, आश्रये। टपकना, झरना, रखना, पवित्र करना, शुद्ध करना, पीड़ा करना, दुःख देना, क्षत करना, घाव करना, मार डालना, मारने का यत्न करना। (सूदयति - आश्रितो भवति। सूदते - न स्वीकरोति। सूदः - आश्रितः। सूदकः, सूदमानः, सूत् - अस्वीकर्तरि। सूदनीयम्, सूद्यम् - सूद्यम्, सूदि — अस्वीकारे)।

सूप् (सूपयति) = समुच्छ्राये, उद्धारे। उद्धार करना। (सूपयति - उद्धरति, उद्गृह्णाति। सूपकः - उद्ग्राहकः। सूपम् - पाकम्, दालम्)।

सूर्क्ष (सूर्क्षति, सूर्क्षते) = आदरे, अनादरे, निरादरे, अप्रीतौ च। अप्रिय होना, आदर सत्कार करना, आदर न करना। (सूर्क्षति - अप्रियो भवति। सूर्क्षः - अप्रियः)।

सूर्क्ष्य (सूर्क्ष्यति) = ईर्ष्यायाम्। मत्सर करना, परोत्कर्ष न सहना, अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना। (सूर्क्ष्यति - ईर्ष्यया अधरं

दन्तैः दंशति। सूर्क्ष्यम् - ईर्ष्यया दन्तपेषणम् (दाँत पीसना)।

सूष्-सुस् (सूषति) = प्रसवे, प्रजनने। उत्पन्न करना, जनना, गर्भ धारण करना। (सूषति - प्रसूते। सोषणम् - प्रसवः। सुष्यम् - प्रसूतम्। सुष्टिः - प्रसवः)।

सेक् (सेकते) = गत्यर्थः। जाना।

सेल् (सेलति) = गतौ। जाना, गतिशील करना, गति देना, प्राप्त करना, बिक्री द्वारा धन प्राप्त होना। (सेलति - श्लिष्यति, श्लेष्मद्रव्येण परस्परं संश्लिष्यति। सेलुः - श्लेष्मद्रव्यम्)।

सेव् (सेवते) = सेवने, सेचने, घर्षणे। सेवा करना, चाकरी करना, शुश्रूषा करना, विश्वास करना, भरोसा रखना, पूजा करना, सेवन करना, अनुसरण करना। (सेवते - घर्षति, सेवयति। सेवकः, सेवमानः - घर्षकः, परिचारकः। सेवन्ती, सेवन्तिका, सेवका, सेविका - परिचारिका। सेवा - परिचर्या। सेवनम्, सेवनीयम्, सेविः, सेवुः, सेव्यम्, सैव्यम् - सेवायाम्, परिचर्यायाम्, गृहकार्ये)।

सै (सायति) = क्षये, नाशे। ह्रास होना, क्षीण होना। (सायति - क्षीणो भवति। सायम् - सूर्यास्तानन्तरः कालः। सायकः - इषुः। षैः, षः, सायनम्, सायमानम्, सानम्, सातम्, सीतम्, सीनम् - क्षये)।

सो—स्य्, सय् (स्यति) = अन्तकर्मणि। विध्वंस करना, नष्ट करना, नष्ट होना, भग्न होना। (स्यति - समापयति। सायः, सायिता, सितः, सितवान्, सायन् - कर्मसमापके। सायकम्, सायम् - दिवसावसानम्। सायनम्, सायनीयम्, सायितव्यम् - कर्म समापने)।

स्कन् (स्कनति, स्कनयति) = क्षोभे, निरादरे, तिरस्कारे। क्षुब्ध होना, तिरस्कार करना।

स्कन्द (स्कन्दति, स्कन्दते) = गतिशोषणयोः, चलने शुष्कीभावे च। जाना, चलना, सूखना, सुखाना। अव - आक्रमण करना, चढ़ाई करना,

हल्ला करना।(स्कन्दति - चलति।स्कन्दः - प्रगतिशीलः, सुब्रह्मण्यः वा)।

स्कम्भ (स्कम्भते, स्कम्भनोति, स्कभ्नाति) = माने, मापने, बन्धने, प्रतिबन्धे, अवरोधे। रोकना, प्रतिबन्ध करना। (स्कम्भते - चतसृषु दिक्षु बध्नाति। स्कम्भः - परिमातृ काष्ठम्, मापनदण्डः)। स्कम्भकः, स्कम्भमानः - मापके। स्कम्भिः, स्कम्भु, स्कम्भनम्, स्कम्भनीयम् - माने)।

स्कम्भ (ष्कम्भति) = स्तम्बने, स्थापने, उच्छ्रये। स्थापित करना, स्थित करना। (विष्कम्भति - उच्छ्रयति)।

स्कु (स्कुनाति, स्कुनीते) = आप्रवणे आच्छादने, आवरणे, कूर्दने। कूदना, फुदकना, उड़ाना, ऊपर उठाना, आच्छादित करना, ढकना।(स्कूनाति, स्कूनीते - आच्छादयति। स्कूतः, स्कूतवान् - आच्छादके। स्कूतम्, स्कूतिः - आच्छादनसाधने)।

स्कुन्द (स्कुन्दते) = आप्रवणे, कूर्दने। चलना, कूदना, ऊपर उठाना। (स्कुन्दते - कूर्दते। स्कुन्दः, स्कुन्दकः, स्कुन्दमानः - कूर्दके। स्कुन्दनम्, स्कुन्दिः, स्कुन्दनीयम्, स्कुन्दा - कूर्दने)।

स्कुम्भ (स्कुभ्नाति, स्कुभ्नोति) = प्रतिबन्धे।प्रतिबन्ध करना, रोकना, धारण करना।

स्खद् (स्खदते) = स्खदने, विशरणे, स्खलने, विकर्तने, अपराधे च। जीतना, पराजय करना, हटाना, कतरना, तोड़ना, स्थिर करना, दृढ़ करना, खाना, भक्षण करना, श्रान्त करना, कष्ट देना, थकना, मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना, भंग करना। (स्खदते, स्खदयति - कृन्तति, चोरयति, अपराध्यति। स्खदकः, स्खदमानः - विकर्तकः, अपराधी। स्खद्, स्खदनम्, स्खदनीयम्, स्खद्यम्, स्खाद्यम् - विकर्तने, अपराधे च)।

स्खद् (स्खदयति) = अवत्यां, रक्षणे अपरिवेषणे, रूपणे। रक्षा करना, रूप बनाना। (स्खधयति - रक्षां करोति, रूपयति)।

स्खल् (स्खलति) = स्खलने, संचलने, चंचले, भ्रान्तौ भ्रमणे च।

जाना, चलना, गिरना, च्युत होना, ठोकर लगना। (स्खलति - अवपतति (फिसलता है)। स्खलनम् - पतनम् (फिसलना)। स्खलिता - पतिता। स्खलितम् - पतितम्। स्खलितव्यम् - पतितव्यम्। स्खलनीयम् - पतितुं योग्यम्)।

स्खल्ल (स्खल्लति) = स्खलने, संचलने, चञ्चले, भ्रान्तौ, भ्रमणे च। चञ्चल होना, जाना, गिरना, च्युत होना, ठोकर लगना। (स्खल्लति - अवपतति (फिसलता है)।

स्तक् (स्तकति) = प्रतिघाते। रोकना, प्रतिघात करना।

स्तग् (स्तगति) = आच्छादने, संवरणे। आच्छादित करना।

स्तन् (स्तनति) = शब्दे, शब्दक्रियायाम्, त्यागे, रेचने। शब्द करना, त्यागना, रेचन करना। (स्तनति - त्यजति, रेचयति वा। स्तनः - रेचकः, उरोजः वा)।

स्तन् (स्तनयति, स्तनयते) = देवशब्दे, मेघध्वनौ। मेघ की गर्जना होना। (स्तनयति - शब्दयति, गर्जति। स्तनयित्नुः - गर्जनकरः, मेघः वा)।

स्तब् (स्तबति) = गुच्छने, गुच्छायाम्, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। गुच्छा बनाना। (स्तबति, - गुच्छयति। स्तबकम् - आम्रगुच्छम्)।

स्तम् (स्तमति) = प्रतिनिवर्तने, अवैक्लव्ये वैक्लव्ये, श्रमे। चुकाना, लौटाना, भ्रान्त नहीं होना, भ्रान्त होना, व्यग्रचित्त होना। (स्तमति - प्रतिनिवर्तयति (चुकाता है)। स्तम्, स्तमकः - प्रतिनिवर्तकः। स्तमनम्, स्तमितव्यम्, स्तमनीयम्, स्तम्यम्, स्ताम्यम्, स्तामम्, स्तमिः, स्तमुः, स्तामुः, स्तामु - प्रतिनिवर्तने (चुकाने में)।

स्ताम्ब (स्तम्बयति) = गुच्छने, गुच्छायाम्, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। गुच्छा बनाना। (स्तम्बयति - गुच्छयति)।

स्तम्भ (स्तम्भते) = प्रतिबन्धे, अवरोधे। बन्द करना, रोकना, अवरोध करना, दृढ़ होना, अचल होना, चकित होना, विस्मय युक्त होना, स्तब्ध

होना, नष्टेन्द्रिय होना, जड़ीभूत होना।(स्तम्भते - तिष्ठति।स्तम्भः - कम्भः (खम्बा)। स्तम्भकः, स्तम्भमानः - स्थातरि। स्तम्भिः, स्तम्भः, स्तम्भनम्, स्तम्भनीयम् - स्थितौ)।

स्तम्भ (स्तम्भति) = स्तम्बने, स्थापने।स्थापित करना, स्थित करना। (स्तम्भति - स्थापयति, गर्ते रोहयति।स्तम्भः - गर्ते रोपितो वृक्षः।उत्तम्भः - कीलम्, वृक्षः)।

स्तम्भ (स्तभ्नोति, स्तभ्नाति) = प्रतिबन्धे।प्रतिबन्ध करना, रोकना, जड़बुद्धि होना, मूर्ख होना।

स्तर्ख (स्तर्खते) = चलने, विस्मरणे। विस्मरण होना। (स्तर्खते - विस्मरति। स्तर्खः, स्तर्खकः, स्तर्खमाणः - विस्मृर्तरि। स्तृखिः, स्तृखुः, स्तर्खणम्, स्तर्खणीयम् - विस्मरणे)।

स्तिघ् (स्तिघ्नुते) = आस्कन्दने।हल्ला करना, घेर लेना।

स्तिप् (स्तेपते) = क्षरणार्थः।टपकना, झरना, प्रोक्षण करना, सींचना।

स्तिम् (स्तिम्यति) = आद्रीभावे, आर्द्रकरणे, मौने। गीला होना, भीगना, भाप बनना।(स्तिम्यति - आर्द्रः करोति।स्तिम्यन्, स्तिमिता, स्तिमितः, स्तिमतवान् - आर्द्रकर्तरि, मौने।स्तिमितम्, स्तिमितव्यम्, स्तिमितिः, स्तिमनीयम् - आर्द्रकरणे, मौने।स्तीम्नति - स्रवति।स्तीम्यन्, स्तीमिता, स्तीमितवान्, स्तीमितः - स्रावके। स्तीमितव्यम्, स्तीमनीयम्, स्तीमनीयम्, स्तीमितम्, स्तीमितिः - स्रोतसि)।

स्तीम् (स्तीम्यति) = आद्रीभावे, आर्द्रकरणे, मौने। गीला होना, भीगना, भाप बनना। (स्तीम्यति - आर्द्र करोति)।

स्तृ (स्तृणोति, स्तृणुते, स्तृणाति) = आच्छादने, हिंसायाम्।फैलाना, वस्त्रादि से आच्छादित करना, ढकना, हिंसा करना।वि - फैलना, विस्तार होना या करना।(स्तृणोति, स्तृणुते - आच्छादयति।स्तर्ता, स्तृतः, स्तृतवान्, स्तरन्, स्तराणः - आच्छादके। स्तरणम्, स्तरणीयम्, स्तर्तव्यम्, स्तृतिः,

स्तृतम् - विष्टरे)।

स्तृ (स्तृणाति, स्तृणीते) = विष्टरे, आप्रवणे, पूरणे। पूर्ण करना। (स्तृणाति, स्तृणीते - पूरयति।स्तृणः, स्तृणवान् - पूरयितरि।आस्तरणम्, आस्तरणीयम्, आस्तीर्णम् - विष्टरे)।

स्तृक्ष (स्तृक्षति)) = गतौ।जाना।

स्तृप् (स्तृप्यति) = समुच्छ्राये, विस्तारे।फैलाना, पसारना, विस्तार करना।(स्तृप्यति - विस्तारयति।स्तृप्तः, स्तृप्तवान्, स्तर्पन्, स्तर्पकः, स्तर्पः - विस्तारके।स्तृप्तिः, स्तृप्तम्, स्तर्पणन्, स्तर्पणीयम् - विस्तरणे)।

स्तृह् (स्तृहति) = हिंसायाम्, ताडने।मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना। (स्तृहति - ताडयति। स्तृहन्, स्तृहकः, स्तृहः, स्तृट् - ताडके। स्तृहणम्, स्तृहणीयम् - ताडने)।

स्तृंह् (स्तृंहति) = हिंसायाम्, ताडने।मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना।

स्तु (स्तौति, स्तुते; स्तवीति, स्तवीते) = स्तुतौ, प्रशंसायाम्।प्रशंसा करना, स्तुति करना, सेवा करना। (स्तौति, स्तबीते, स्तुते - प्रशंसति। स्तोता, स्तवन्, स्तवानः, स्तुतः, स्तुतवान्, स्तुतः, स्तवकः, स्तावकः - प्रशंसके।स्तवनम्, स्तवनीयम्, स्तव्यम्, स्ताव्यम्, स्तुतिः, स्तुतम्, स्तोतव्यम् - प्रशंसने)।

स्तुच् (स्तोचते) = प्रसादे, प्रसन्नतायाम्। सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, प्रकाशित होना, चमकना, तेजस्वी होना।(स्तोचते - प्रसन्नो भवति। स्तुक्, स्तोचः, स्तोचकः, स्तोचमानः - प्रसन्ने। स्तोचनम्, स्तोचनीयम्, स्तोच्यम् - प्रसादे)।

स्तुप् (स्तुप्यति, स्तोपयति, स्तोपयते) = समुच्छ्राये। ढेर करना, राशि करना।

स्तुभ् (स्तोभति) = स्तम्भे। अवरोध करना, रोकना, मूर्ख होना,

मन्दमति होना।

स्तुभ् (स्तोभते) = स्तम्भने, स्थित्याम्। स्थित होना, ठहरना। (स्तोभते - तिष्ठति। स्तोभकः, स्तोभानः - स्थातरि। स्तुभिः, स्तुभुः, स्तोभनम्, स्तोभनीयम् - स्थितौ)।

स्तुम्ब (स्तुम्बयति) = गुच्छने, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। गुच्छा बनाना। (स्तुम्बयति - गुच्छयति)।

स्तुम्भ (स्तुम्भते) = स्तम्भने, स्थित्याम्। स्थित होना, ठहरना। (स्तुम्भते - तिष्ठति। स्तुम्भकः, स्तुम्भमानः - स्थातरि। स्तुम्भः, स्तुम्भुः, स्तुम्भनीयम् - स्थापने)।

स्तूप् (स्तूप्यति; स्तूपयति, स्तूपयते) = समुच्छ्राये। ढेर लगाना, राशि करना।

स्तेन् (स्तेनयति, स्तेनयते) = चौर्ये। चुराना, मूसना, लूटना। (स्तेनयते - चोरयति। स्तेनानः - चौरः। स्तेनम्, स्तेननम्, स्तेननीयम् - चुरायाम्)।

स्तेप् (स्तेपते) = क्षरणे। टपकना, सींचना। (स्तेपते -सिञ्चति, क्षरति। स्तेपकः, स्तेपानः, स्तिप्ः, स्तिपितः, स्तेपः - क्षरितरि)।

स्तै (स्तायति) = वेष्टने, बन्धने। घेरना, लपेटना, वेष्टित करना, रोक रखना। (स्तायति - बन्धयति। स्तायकः - वेष्टकः। स्तैः, स्तः, स्तायनम्, स्तायम्, स्तानम्, स्तातम्, स्तीतम्, स्तीनम् - परिवृत्तौ, वेष्टने)।

स्तोम् (स्तोमयति, स्तोमयते) = श्लाघायाम्, पूज्ये, स्तुतौ, प्रशंसायाम्। प्रशंसा करना, स्तुति करना, आत्मश्लाघा करना, मुंह देख कर बोलना, मिथ्या प्रशंसा करना। करना। (स्तोमयति - पूज्यो भवति)।

स्त्यै (स्त्यायति) = शब्दसंघातयोः, ध्वनौ संघाते च। शब्द करना, एकत्र होना, भीड़ होना, घेरना, फैलना। (स्त्यायति, ष्ट्यायति - ध्वनिं करोति, सह वा गच्छति। ष्ट्यायकः, ष्ट्यायिता - ध्वनिंकर्तरि, सहगन्तरि च। ष्ट्यैः, ष्ट्यायनम्, ष्ट्यानम्, ष्ट्यानिः - कोलाहले। स्त्यायति - सह

गच्छति। स्त्यायी - सहगन्त्री। स्त्यायकः, स्त्यायता, स्त्यायिता - सहगन्तरि। स्त्यायकः स्त्यायिता - गायिका। स्त्यैः, स्त्यानम्, स्त्यायनम्, स्त्यानिः - शब्दे)।

स्थग् (स्थगति; स्थगयति, स्थगयते) = स्थगने, संवरणे। रोकना, ढांकना, छिपाना। (स्थगति, स्थगयति - आवृणोति (घेरता है)। स्थगः, स्थगकः, स्थगन् - आवरकः। स्थगिः, स्थगितम्, स्थगनम्, स्थगनीयम् - आवरणे)।

स्थल् (स्थलति) = स्थाने, स्थितौ। स्थिर होना, थमना, स्तब्ध होना, खड़ा होना। (स्थलति - स्थिरो भवति। स्थलम् - स्थानम्। स्थाली - पाकाधिकरणी)।

स्था (तिष्ठ) (तिष्ठति, तिष्ठते, स्थापयति, स्थापते स्थाते) = गतिनिवृत्तौ, गत्यवरोधे आसादने, उपवेशने। स्थित होना, ठहरना, प्रतीक्षा करना, विनती करना, गिड़गिड़ाना, अपना अभिप्राय दूसरे को समझाना। अधि - पदारूढ़ होना, अधिकारारूढ़ होना, ऊपर रहना, ऊपर बैठना, जीतना, बढ़ना, अधिक होना। अनु - यथाशास्त्र वर्तना, उपयोग करना, सटे रहना, लटकना। अव - सेवा करना, शुश्रूषा करना, चाकरी करना, थमना, स्थिर रहना। आ - निश्चयपूर्वक बुलाना, योजना बनाना, नियमित करना, अधिरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उत् - खड़ा होना, आसन से उठना, ढूँढ़ना, खोजना। उप - प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्रसन्न करना, आदरातिथ्य करना, सम्भावना करना, जाना, रहना, आलिङ्गन करना, प्राप्ति की इच्छा करना, मिलने का हेतु रखना। नि - रखना, स्थापित करना। पर्यव - अचल होना, स्थिर होना। प्र - जाना, आगे जाना। प्रोत् - आसन पर से उठना, खड़ा रहना। प्रति - प्रतिष्ठित होना, खड़े रहना, परमेश्वरार्पित होना। वि - अलग खड़ा रहना, दूर खड़ा रहना, थकना, बाट जोहना। व्यव - व्यवस्था करना, आज्ञा करना। सम् - अच्छा होना, भला होना, निकट होना, पूर्ण

होना, एकमत होना। समा - आचरण करना, बर्ताव करना। समुत् - उठ खड़ा होना। सम्प्र - प्रवास करना, परदेश जाना, आगे जाना। (तिष्ठति - आसीदति। तिष्ठन्, तिष्ठान्, स्थायिता, स्थानकः, स्थानिकः, स्थापकः - आसीदितरि। स्थानम्, स्थापनम्, स्थेयम्, स्थानीयम्, स्थितम्, स्थितिः, स्थः, स्थाः - उपवेशने)।

स्थाने (अव्यय) = न्यायतः, यह सर्वथा उचित ही है।

स्थुड् (स्थुडति) = संवरणे, वेष्टने। वस्त्र धारण करना, कपड़ा पहनना, ओढ़ना। (स्थुडति - वेष्टयति। स्थुडः - वेष्टकः। स्थुडनम्, स्थुडनीयम् - वेष्टनम्)।

स्थूल् (स्थूलयते) = परिबृंहणे। मोटा होना, स्थूल होना, शरीर पुष्ट होना। (स्थूलयते - स्थूलो भवति। स्थूलानः - स्थूलः। स्थूलम् - बृंहणम्)।

स्नसु (स्नयति) = निरसने। थूकना।

स्ना (स्नाति, स्नपयति, स्नापयति) = शौचे, स्नाने। स्नान करना, शुद्ध होना। (स्नपयति, स्नापयति, स्नाति - स्नान करता है। स्नायन्, स्नातः, स्नापकः, स्नाता, स्नातकः - स्नानकर्तरि। स्नानम्, स्नपनम्, स्नापनम्, स्नातव्यम्, स्नापनीयम् - स्नाय्यम् - स्नाने)।

स्निह् (स्निह्यति; स्नेहयति, स्नेहयते) = स्नेहने, प्रीतौ, लगने। प्रीति करना, स्नेह करना, मित्रता करना, स्निग्ध होना। (स्निह्यति - प्रीतिं करोति। स्नेहयति - मेदयति। स्नेहति - लगति। स्निक्, स्निग्, स्निट्, स्निड्, स्नेही, स्नेहकः, स्नेहिता, स्नेहितवान, स्नेहनीयम्, स्नेहितम्, स्नेहितिः, स्नेहः - प्रीतिः, प्रेमः, तैलम्। स्नेहनम्, स्नेहनीयम्, स्नेहितम्, स्नेहितिः, स्नेहितव्यम्, स्नेहयम्, स्नैहयम् - प्रीतौ)।

स्नु (स्नौति) = प्रस्रवणे, स्रोतसि। भाप से टपकना, झरना, चूना। (स्नौति - प्रस्रवति। स्नुत्, स्नवन्, स्नवकः, स्नावकः, स्नावः - स्रोतप्रस्रावके। स्नुः - स्रोतस्थानम्। स्नुतिः, स्नुतम्, स्नवम्, स्नवनम्, स्नवनीयम् - स्नोतसि)।

स्नुस् (स्नुस्यति) = अदने, भक्षणे, आदाने, अदर्शने च। खाना, निगलना, ग्रहण करना, लेना, अदृश्य होना, नहीं दिखाई देना, मुख से बाहर फेंकना, थूकना। (स्नुस्यति - खादति। स्नुस्यत्, स्नोसः, स्नोसकः, स्नोसितः, स्नोसिता, स्नोसितवान् - भक्षिंतरि। स्नोषणम्, स्नोषणीयम्, स्नोषितव्यम्, स्नोषितम्, स्नोषितिः - खादने)।

स्नुह् (स्नुह्यति) = उद्गिरणे वमने, निरसने। वमन करना, निरस्त करना। (स्नुह्यति - वमति। स्नुक्, स्नुग्, स्नुट्, स्नुड्, स्नोहकः, स्नोही, स्नोहन् - वामके। स्नुहिः। स्नोहः, स्नोहनम्, स्नोहनीयम् - वमने, निरसने)।

स्नुह् (स्नोहति) = पतने, हिंसागत्योः। हिंसा करना, गति करना, गिरना। (स्नोहति - पतति)।

स्नै (स्नायति) = वेष्टने, शोभायाम्। घेरना, एकत्र करना, शोभित होना।

स्पन्द (स्पन्दते) = किञ्चित् चलने, अल्पगतौ। कांपना, थरथराना, सरकना, जाना। (स्पन्दते - अल्पं गच्छति। स्पन्दः, स्पन्द्रः, स्पन्दकः, स्पन्दमानः - किञ्चिद्गन्तरि। स्पन्दिः, स्पन्दनम्, स्पन्दनीयम् - किञ्चिद्गतौ)।

स्पर्ध (स्पर्धते) = संघर्षे, परेषां विजयस्येच्छा, स्पर्धायाम्। प्रतिद्वन्द्वी से आगे बढ़ने का यत्न करना, मत्सर करना, दूसरे के अहित की इच्छा करना। (स्पर्धते - स्पर्धाम् करोति। स्पर्धमानः - स्पर्धाम् क्रियामाणः। स्पर्धनम्, स्पर्धा, स्पर्धिः, स्पर्धनीयम् - स्पर्धायाम्)।

स्पर्श (स्पर्शयते) = ग्रहणसंश्लेषणयोः। ग्रहण करना, लेना, छूना, संयुक्त करना, जोड़ना।

स्पश् (स्पशति) = बाधनस्पर्शयोः। अवरोध करना, रोकना, प्रसिद्ध करना, एकत्र करना, गुम्फित करना, स्पर्श करना, छूना।

स्पश् (स्पाशयते) = ग्रहणसंश्लेषणयोः। लेना, संयोग करना, जोड़ना।

स्पृ (स्पृणोति) = प्रीतिसेवनयोः, प्रीतिचलनयोः। सन्तुष्ट करना,

प्रसन्न करना, संरक्षण करना, पालना, चलना, जाना।

स्पृश् (स्पृशति) = संस्पर्शने। स्पर्श करना, छूना, संयोग करना, हाथ से लेना। उप - स्नान करना, आचमन करना, पैरों से कुचलना।

स्पृश् (स्पृशति) = कम्पने। कम्पन करना, कांपना। (स्पृशति - कम्पते। स्पृक्, स्पर्शकः, स्पृष्टः, स्पृष्टवान् - कम्पके। स्पर्शनः - वायुः। स्पृष्टम्, स्पृष्टिः, स्पर्शनीयम् - कम्पने)।

स्पृह (स्पृहयति, स्पृहयते) = ईप्सायाम्। इच्छा करना, चाहना। (स्पृहयति - इच्छति। स्पृहन् - इच्छुकः। स्पृहा - इच्छा)।

स्फट् (स्फटति, स्फटते) = विशरणे। खुलना, खिलना, फटना।

स्फण्ट (स्फण्टति) = विशरणे। खुलना, खिलना, फटना।

स्फर् (स्फरति) = गतौ, स्फुरणे। कांपना, थरथराना, धकधक होना, प्रकट होना, प्रसिद्ध होना, जाना, जाने लगना।

स्फाय्-स्फी (स्फायते) = वृद्धौ, वर्धने। मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना। (स्फायते - वर्धते। स्फायकः। स्फायमानः - वर्धितरि। स्फायिः, स्फायः, स्फायुः, स्फायनम्, स्फायनीयम्, स्फायत् - वर्धने। स्फीतम् - वृद्धम्, वर्धितम् वा)।

स्फिट् (स्फेटयति, स्फेटयते) = आच्छादने, अनादरे। अनादर करना, आच्छादित करना, ढकना।

स्फिट्ट (स्फिट्टयति, स्फिट्टयते) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना, पीड़ा करना।

स्फिठ् (स्फेठयति, स्फेठयते) = स्नेहने। स्नेह करना, प्रीति करना।

स्फी (स्फायते) = वृद्धौ, वर्धने। मोटा होना, स्थूल होना, बढ़ना। (स्फायते - वर्धते। स्फायकः, स्फायमानः - वर्धितरि। स्फायिः, स्फायः, स्फायुः, स्फायनम्, स्फायनीयम्, स्फायत् - वर्धने। स्फीतम् - वृद्धम्, वर्धितम् वा)।

स्फुट् (स्फोटते; स्फुटति) = विकसने, वृद्धौ, विकासे च। खिलना, फूलना, प्रफुल्लित होना। (स्फोटते - श्वयति। स्फोटकः, स्फोटमानः - श्वयितरि। स्फुटम्, स्फुटितम्, स्फुटनम्, स्फुटनीयम् - श्वपथा। स्फोटकम् - फोड़ा)।

स्फुट् (स्फोटयति, स्फोटयते) = भेदने विकसने। कतरना, छेदना, तोड़ना, चीरना, विकसित करना, मारना, दुःख देना। (स्फुटति - विकसितो भवति। स्फुटन्, स्फुटितः, स्फुटितवान् - विकसितरि। स्फुटम्, स्फुटितम्, स्फोटनम्, स्फोटनीयम् - विकसने)।

स्फुट् (स्फुटयति) = परिहासे, हास्ये। परिहास करना, हँसना। (स्फुटयति - हसति। स्फोटन् - हसिता। स्फोटा - हसनम्)।

स्फुट् (स्फोटयति) = हिंसायाम्। हिंसा करना। (स्फोटयति - हिंसयति। स्फोटम् - महारोगः)।

स्फुट् (स्फोटयति) = भेदे, विभागे। विभाग करना, बाँटना। (स्फोटयति - विभजति। स्फुटम् - विभजनम्)।

स्फुट् (स्फोटति) = विशरणे विकासे, मारणे च। विकसित होना, हिंसा करना, नष्ट करना, नष्ट होना, विखरना, अलगाव होना, विस्फोट होना। (स्फोटति - मारयति, विकसितो भवति (पुष्पम्)। स्फोटकम् - विभजनम्। स्फुटितम् - विकसितम्)।

स्फुड् (स्फुडति) = संवरणे, आच्छादने, वेष्टने,। वस्त्रादि से वेष्टित करना, लपेटना, आच्छादित करना।

स्फुण्ट (स्फुण्टयति, स्फुण्टयते; स्फुण्टति) = परिहासे। ठठ्ठा करना, परिहास करना, विनोद करना।

स्फुण्ड (स्फुण्डयति, स्फुण्डयते स्फूण्डति) = परिहासे। विनोद करना, परिहास करना, ठट्ठा करना।

स्फुर् (स्फुरति) = स्फुरणे, दर्शने, प्रकटीकरणे। हिलना, स्फुरित

होना, जाना, फैलना, दिखना, देखना।(स्फुरति - दर्शयति।स्फुरन्, स्फुरः, स्फुरकः - दर्शके।स्फुरणम्, स्फुरणीयम् - दर्शने)।

स्फुर्च्छ (स्फूर्च्छति) = विस्मृतौ, विस्मरणे।विस्मरण होना, भूलना, फैलना, विस्तृत होना।(स्फूर्च्छति - विस्मरति।स्फूर्च्छा - विस्मरणम्)।

स्फुर्ज (स्फूर्जति) = वज्रनिर्घोषे, देवशब्दे, विद्युद्ध्वनौ)। मेघ की गर्जना होना, विद्युत गड़गड़ाना।(स्फूर्जति - गर्जति।स्फूर्जतुः - गर्जनम्)।

स्फुल् (स्फुलति) = संवलने, संचये, एकत्रकरणे दर्शने स्फुरणे च। प्रकट होना, स्पष्ट होना, दिखना, ढेर करना, संचय करना, हिलना, कांपना, स्फुरित होना।(स्फुलति - संचिनोति।स्फुलन्, स्फुलः, स्फुलकः - संचयकर्तरि।स्फुलनम्, स्फुलितम् - संचयकरणे)।

स्फूर्छ-स्फुर्च्छ (स्फूर्च्छति) = विस्मृतौ, विस्मरणे। विस्मरण होना, भूलना, फैलना, विस्तृत होना।(स्फूर्च्छति - विस्मरति।स्फूर्च्छा - विस्मरणम्)।

स्मि (स्मयते) = ईषद् हसने, अल्पहासे। मुस्कराना, मन्द हास्य करना। वि - आश्चर्य करना। (स्मयते - अल्पं हसति (मुस्कराता है)। स्मयकः, स्मयमानः - ईषद् हासकः। स्मितम्, स्मितिः, स्मयः, स्मयिः, स्मयनम्, स्मयनीयम्, स्मेरम् - ईषद् हसने)।

स्मि (स्मापयते) = अनादरे। अनादर करना, तिरस्कार करना, डराना।

स्मिट्ट (स्मेटयति, स्मेटयते) = अनादरे।अनादर करना, तिरस्कृत करना।(स्मेटयति - अनादरयति। स्मेटन्, स्मेटकः, स्मेटः - अनादरके। स्मेटनम्, स्मेटनीयम् - अनादरे)।

स्मील् (स्मीलति) = निमेषणे, अक्षिनिमेषे। पलक लगाना, आंखें मींचना, पलक झपकना, नेत्र स्फुरण होना। (स्मीलति - चक्षोः उपरिस्थिं, पलकं मोटयति। स्मीलनम् - नेत्रस्फुरणक्रियाकरणम्)।

स्मृ (स्मरति) = आध्याने, चिन्तायाम्, विचारे।उत्सुकता से स्मरण

करना, विचार करना, चिन्ता करना, ध्यान करना। वि - भूलना, विस्मृत होना। (स्मरति - चिन्तयति। स्मृ, स्मरणम्, स्मृतिः, स्मृतम्, स्मरणीयम्, स्मर्तव्यम्, स्मार्यम् - स्मृतौ। स्मर्ता, स्मरकः, स्मारः - चिन्तयितरि। स्मरति - आध्यायति। स्मर्ता - आध्यायकः। स्मरणम्, स्मृतिः, स्मृतम्, स्मर्तव्यम्, स्मरणीयम्, स्मर्यम्, स्मार्यम्, स्मर्यमाणम् - स्मरणे)।

स्मृ (स्मृणोति) = पालने, रक्षणे, प्रीतौ च, प्रीतिसेवनयोः, प्रीतिचलनयोः च।आनन्दित करना, प्रसन्न करना, पालन करना, संरक्षण करना, जाना। (स्मृणोति, स्मृणुते - पालयति। स्मर्ता, स्मरन्, स्मराणः, स्मृतः, स्मृतवान् - रक्षके। स्मृत्, स्मृतिः, स्मृतम्, स्मर्तव्यम्, स्मरणम्, स्मरणीयम्, स्मर्यम्, स्मार्यम् - रक्षणे। स्मरः - प्रेमकर्ता, पालयिता, मन्मथः)।

स्यः (सर्वनाम) = वह (पुल्लिंग)।

स्यन्द (स्यन्दते) = प्रस्रवणे, स्रवणे, स्रोतसि। टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना।अनु - टपकना, झरना, चूना। निस् - निकलना, झरना। (स्यन्दते - प्रस्रवति। स्यन्दः, स्यन्दकः, स्यन्दमानः - स्रोतसि। स्यन्दिः, स्यन्दनः, स्यन्दनीयम्, सन्द्यम्, सान्द्यम् - स्रवणे)।

स्यम् (स्यमति) = शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना।(स्यमति - शब्दयति।स्यमः, स्यमन्, स्यमकः, स्यमः - ध्वनितरि।स्यमनम्, स्यमितव्यम्, स्यमनीयम्, स्यम्यम्, स्याम्यम् - ध्वनौ)।

स्या (सर्वनाम) = उस ने। (स्त्रीलिंग)।

स्रङ्क (स्रङ्कते) = गतौ, गत्यर्थः, प्रवहने, प्रवाहे। जाना, सरकना। (स्रङ्कते - प्रवहति। स्रङ्कः - प्रवाहः, जलम् वा)।

स्रम्भ (स्रम्भते) = प्रमादे। प्रमाद करना, चूकना, भूलना।

स्रम्भ (वि-स्रम्भते) = विश्वासे (प्रायेण विपूर्वः)। विश्वास करना, भरोसा रखना।

स्रंस (स्रंसते) = अवस्रंसने। गिरना, खिसकना।

स्रिव् (स्रीव्यति) = गतिशोषणयोः। शुष्क होना, सूखना, जाना, सरकना। (स्रीव्यति - गच्छति, शुष्यति। स्रीव्यन्, स्रेवः, स्रेवकः, स्रेवितः, स्रेवितवान्, स्रेविता - गन्तरि, शोषितरि। स्रेवणम्, स्रेवणीयम्, स्रेव्यम्, स्रैव्यम्, स्रेवा, स्रेवितव्यन्, स्रेवितम्, स्रेवितिः - चलने, शोषणे)।

स्रीव् (स्रीव्यति) = गतिशोषणयोः। शुष्क होना, सूखना, जाना, सरकना। (स्रीव्यति - गच्छति, शुष्यति। स्रीव्यन्, स्रेवः, स्रेवकः, स्रेवितः, स्रेवितवान्, स्रेविता - गन्तरि, शोषितरि। स्रेवणम्, स्रेवणीयम्, स्रेव्यम्, स्रैव्यम्, स्रेवा, स्रेवितव्यन्, स्रेवितम्, स्रेवितिः - चलने, शोषणे)।

स्रु (स्रवति) = गतौ, गत्यर्थः, प्रवहने, प्रवाहे। जाना, सरकना, टपकना, झरना, चूना, बहना।

स्रुञ्च (स्रुञ्चति) = गतौ, गमने। जाना, भ्रमण करना, घूमना। (स्रुञ्चति - भ्रमयति। स्रुञ्चः - भ्रमणम्)।

स्रू (स्रवति) = गतौ, गत्यर्थः, पतने, प्रवहने, प्रवाहे। टपकना, झरना, चूना, सींचना, छींटा देना, जाना। (स्रवति - पतति। स्रूः, स्रवणम्, स्रावणम्, स्राव्यम्, स्रुतिः, स्रुतम्, स्रोः, स्रवणीयम् - जलप्रपाते, ध्वनौ च। स्रोतस् - जलप्रस्रवणम्)।

स्रेक् (स्रेकते) = गतौ, वपने। जाना, पाना, बोना। (स्रेकते - वपति। स्रेकरः - (बीजादीनां) वपकः)।

स्रै (स्रायति) = पाके, पचनक्रियायाम्। पक्व करना, पकाना, पिघलाना। (स्रायति - पचति। स्रायकः - पाचकः। स्रैः, स्रः, स्रायणम्, स्राणम्, स्रातः, स्रीणम्, स्रीतम् - पाके)।

स्लङ्क (स्लङ्कते) = गतौ, अन्तर्गमने। जाना, भीतर जाना। (स्लङ्कते - अन्तर्गच्छति। स्लङ्कः - कीलकम्)।

स्लुञ्च (स्लुञ्चति) = गतौ, गमने। जाना।

स्व (अव्यय) = निज, अपना।

स्वङ्क (स्वङ्कते) = गतौ। जाना। (स्वङ्कते - गच्छति। स्वङ्कः - हंसः)।

स्वज् (स्वजते) = परिषङ्गे, सहने, धन्यवादे। घेरना, लपेटना, आलिङ्गन करना, गले लगाना। (स्वजते - धन्यवादं करोति। स्वजकः, स्वजमानः - धन्यवादस्य दातरि। स्वजिः, स्वजुः, स्वजनम् - सहने)।

स्वञ्ज (स्वञ्जति) = सङ्गे, सहभावे। मिलना। (स्वञ्जति - मिलति। स्वङ्गः, स्वञ्जकः - मेलके)।

स्वद् (स्वदने; स्वादयति, स्वादयते) = आस्वादने, रोचने। स्वाद लेना, चखना, तुष्ट होना, प्रसन्न होना। (स्वदते - रोचते। स्वदः, स्वदकः, स्वदमानः - रोचितरि। स्वदिः, स्वत्, स्वदनम्, स्वदनीयम् - रुचौ)।

स्वन् (स्वनति) = शब्दे शब्दक्रियायाम्, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना। वि - (विष्वणति), अव (अवष्वणति) - सशब्द भोजन करना। (स्वनति - ध्वनति, गर्जति। स्वनन्, स्वनकः - शब्दयिता। स्वनः, स्वानः - शब्दः, ध्वनिः)।

स्वन् (स्वनति) = अवतंसने। संवारना, सजाना, अलंकृत करना, सुशोभित करना।

स्वप् (स्वपिति) = शये। सोना, निद्रा लेना। (स्वपिति - शेते। स्वपन्, स्वपकः - शायकः। सुप्तिः, सुप्तम्, सुप्तव्यम्, स्वप्तव्यम्, स्वप्नः, स्वापः, स्वपनीयम्, स्वप्यम्, स्वाप्यम् - शयने)।

स्वयम् (अव्यय) = अपने आप।

स्वर् (स्वरयति, स्वरयते) = आक्षेपे, कथने। शब्द करना, ध्वनि करना, दोष लगाना, निन्दा करना। (स्वरयति - कथयति)।

स्वर्त (स्वर्तयति, स्वर्तयते) = आपदि, गत्यां च। जाना, आपद्ग्रस्त होना।

स्वर्द (स्वर्दते) = आस्वादने, लेहने, रोचने। स्वाद लेना, चखना,

चाटना, आनन्दित होना। (स्वर्दते - लेढि। स्वर्दकः, स्वर्दमानः - लेहके। स्वर्दिः, स्वदनम्, स्वर्दनीयम् - लेहनकर्मणि)।

स्वल् (स्वलति) = आशुगतौ, शीघ्रचलने। तीव्र गति से चलना। (स्वलति - शीघ्रं गच्छति। स्वलः - झञ्झावातः)।

स्वल्ल (स्वल्लति) = निमज्ञने, आशुगतौ, शीघ्रचलने। तीव्र गति से चलना, जल में डुबकी लगाना। (स्वल्लति - जले निमज्ञति। स्वल्लः - निमज्ञनीयं जलम्)।

स्वष्क (स्वष्कति) = गतौ। जाना।

स्वस्तये (अव्यय) = कल्याण के लिए।

स्वाद् (स्वादते; स्वादयति, स्वादयते) = आस्वादने, रोचने। स्वाद लेना, चखना, मधुर होना, मीठा होना, सुखदायक होना। (स्वादते - रसं गृह्णाति। स्वादः, स्वादकः, स्वादमानः - रसग्रहीतरि। स्वात्, स्वादनम्, स्वादिः, स्वादुः, स्वादनीयम् - आस्वादने)।

स्विद् (स्वेदते) = स्नेहमोचनयोः, मोचने, स्वेदे स्नेहने च। गीला करना, चिकना होना, छोड़ना, त्याग करना। (स्वेदते - पसीना बहता है। स्वेदकः, स्वेदमानः - स्वेदयुक्तः। स्विदिः, स्विदुः, स्वेदनम्, स्वेदनीयम् - स्वेदे)।

स्विद् (स्वेदति) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट ध्वनि करना, गुनगुनाना।

स्विद् (स्विद्यति - स्विद्यति) = स्वेदे, गात्रप्रक्षेपणे, धर्मजले। पसीजना, पसीना छूटना। (स्विद्यति - गात्रेभ्यो जलं प्रक्षरति। स्विन्नः, स्विन्नवान्, स्वेदन्, स्वेदकः, स्वेदा - स्वेदितरि। स्विन्नम्, स्वेदः, स्वेद्यम्, स्वैद्यम्, स्वेदितव्यम् - गात्रप्रक्षरणे)।

स्विन्द (स्विन्दते) = शैत्ये, शीतीभावे। शान्त होना, शीत होना। (स्विन्दते - शीतीभवति। स्विन्दः, स्विन्दकः, स्विन्दमानः - शीतीकर्तरि। स्विन्दिः, स्विन्दनम्, स्विन्दनीयम्, स्विन्दा - शीतीभावे)।

स्वृ (स्वरति) = शब्दे, उपतापे, ध्वनौ, हिंसने, खेदे च। शब्द करना, ध्वनि करना, रोगी होना, दुःख देना, पीड़ा करना, सताना। सम् - अच्छा शब्द करना। (स्वरति - स्वरान् प्रकाशते। (चोरम्) स्वरति - हन्ति। स्वरकः, स्वर्ता - शब्दयितरि। स्वरः, स्वरितः, स्वरणम्, स्वृतिः, स्वृतम्, स्वृ - शब्दविशेषे। स्वर्ता, स्वारकः, स्वारः - ध्वनौ। स्वरः, स्वरितः, स्वरणम्, स्वृतिः, स्वृतम्, स्वः, स्वर्ता, स्वारकः, स्वारः - ध्वनौ)।

स्वॄ (स्वृणाति, स्वृणीते) = हिंसायाम्। मार डालना, दुःख देना।

स्वे (सर्वनाम) = अपने लिए, अपने साथ।

स्वैः (सर्वनाम) = अपने।

(ह)

ह = ही, निश्चय ही (अव्यय)।

हट् (हटति) = दीप्तौ, प्रकाशे शब्दे संघाते। प्रकाशित होना, चमकना, शब्द करना, एकत्र करना। (हटति - प्रकाशते। हाटकम् - प्रकाशः, सुवर्णम् वा)।

हट्ट (हट्टति) = निवासे, व्यावहारिगृहे, आपणे। निवास करना, व्यापारगृह होना, व्यापार करना। (हट्टति - व्यवहरति, व्यापारं करोति। हट्टः - आपणम्)।

हठ् (हठति) = प्लुतिशठत्वयोः, बलात्कारे, प्रसह्य कर्मणि च। फुदकना, फुदकते जाना, दुष्ट होना, घातकी होना, जकड़ना, बांधना, बलात्कार करना, अत्याचार करना। (हठति - प्रसहते। हठः - प्रसहः, बलात्कारः)।

हण् (हणति) = उपद्रवे, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, कलह करना। (हणति - उपद्रवति। हाणः - उपद्रवः। हाणा-हाणिः - कलहः)।

हण्ड (हण्डति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां च। हिंसा करना,

मारना, गति करना।(हण्डति - मारयति। हण्डः - हिंसकः)।

हद् (हदते) = पुरीषोत्सर्गे, मलत्यागे, मिश्रणे। मलत्याग करना, शौच करना।(हदते - पुरीषम् उत्सृजति।हदकः, हदः, हदानः - मलोत्सर्जके। हदिः, हदनम्, हदनीयम् - शौचे। हदम् - वषणम्, मिश्रणम्)।

हन् (हन्ति) = हिंसागत्योः, मारणे चलने च। मार डालना, प्राप्त करना, जाना, समाप्त करना। अभि - मुख से बजाना। नि, परि - समूल नष्ट करना। प्र - ऊपर रखना, प्रहार करना, मारना, ठोकना। प्रति - विरुद्ध पक्ष का खण्डन करना। व्या - प्रतिबन्ध करना, रोकना। सम् - हिंसा करना, मारना, एकत्र करना। आ (आहते) - ठोकना, मारना। (हन्ति - मारयति गच्छति वा। हान्, हन्, हनन्, हनकः, हः - घातके, हन्तरि, गन्तरि। (हनोः घा - हन्तेर्घा आदेशो भवति) घातः, घातकः, घाः, घायकः, हन्ता - घातके हन्तरि, गन्तरि। हानिः, हनिः, हननम्, हनम्, हन्तव्यम्, हन्तिः, हन्तम्, हननीयम्, हन्यम्, हान्यम्, हानम्, घातम्, घातिः, घायम् - मारणे चलने च)।

हम् (अव्यय) = क्रोधसूचक।

हम् (हमति) = गतौ, गमने, प्रेरणायाम्। गति करना, जाना, प्रेरणा करना।(हमति - प्रेरयति। हन्ता, हमः - प्रेरकः)।

हम्म (हम्मति) = गतौ, गमने, गर्वे। जाना, गर्व करना।(हम्मति - गर्वं करोति। हम्मः - गर्वी। हम्मुः - गर्वः)।

हय् (हयति) = गतौ, गमने, कूर्दने, नर्तने, पूजायाम्, सेवायाम्। जाना, कूदना, नृत्य करना, पूजा करना, सेवा करना, शब्द करना, ध्वनि करना।(हयति - कूर्दते, नृत्यति। हयनम् - नृत्यम्। हयिता - नर्तकः)।

हर्य (हर्यति) = गतिकान्त्योः, क्लान्तौ च, शोषणे चलने च। जाना, इच्छा करना, चाहना, प्रकाशित होना, चमकना।(हर्यति - शुष्यति। हर्यक्षः - सिंहः। हर्यः - गतिः)।

हल् (हलति) = विलेखने, कर्षणे। जोतना, हल चलाना।(हलति - कर्षति। हलम् - क्षेत्रकर्षणसाधनम्। हली - कृषकः)।

हस् (हसति) = हसने। हंसना, ठट्ठा करना।(हासकः - हास्यकारः। हसः, हसनम्, हसिः, हसुः, हसितम्, हास्यम् - हास्ये। अट्टहासः - उच्चैर्हासः। हसन्ती - हास्यकारी)।

हस्त (हस्तयति) = आदाने, दाने ग्रहणे च। देना, लेना, ग्रहण करना।(हस्तयति - ददाति आदत्ते च। हस्तः - करः। हस्ती - करी)।

हा, हाहा (अव्यय) = शोक, विषाद, आश्चर्य, विस्मय।

हा (जहाति) = गतौ, त्यागे। छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना। (जहाति - त्यजति। जहन्, जहकः, हाता, हायकः - त्याजके। जहत्, जहनम्, जहनीयम् - त्यागे)।

हा (जिहीते) = गतौ। जाना, चलना। (जिहीते - गच्छति। हाता, हायमानः, हायकः, हितः, हितवान् - गन्तरि। हितिः, हितम्, हेतव्यम्, हायनम्, हायनीयम्, हायम् - गमने)।

हि (अव्यय) = ही, निश्चय ही, वस्तुतः, सत्यतः।

हि (हिनोति, हिनुते) = गतौ, वृद्धौ, प्रेरणायाम्, परितापे च। जाना, प्रेरणा करना, भेजना, स्थूल होना, बढ़ना, जानना, पाना।(हिनोति, हिनुते - गच्छति, वर्धते। हेतुः - कारणम्। हयन्, हयानः, हयकः, हितः, हितवान्, हेता - गन्तरि। हितम्, हितिः, हेतव्यम्, हयनम्, हयनीयम् - गमने वृद्धौ च)।

हिक्क (हिक्कति, हिक्कते) = अव्यक्ते शब्दे। अस्पष्ट शब्द करना, हिचकी आना, हिचकियाँ लेना।

हिक्क (हिक्कयति) = हिंसायाम्, पीडायाम्। हिंसा करना, कष्ट होना।(हिक्कयति - कष्टयति। हिक्का - कष्टम्)।

हिट् (हेटति) = आक्रोशे। निन्दा करना, आक्रोश करना।

हिट् (हिट्णाति) = कालात्यये। नियत काल का उल्लंघन करना,

योग्य काल के पश्चात् जन्म लेना।

हिट्ट (हिट्टति) = बन्धने। बन्धन होना, बांधना। (हिट्टति - बन्धयति। हिट्टः - बन्धनम्)।

हिण्ट (हिण्टति) = शोषणे, शुष्कीभावे। सूखना। (हिण्टति - शुष्यति)।

हिण्ड (हिण्डते) = गत्याम्, गतौ, अनादरे, समूहे, संघाते च, तिरस्कारे च। घूमना, भटकना, अपमान करना, अनादर करना, तिरस्कार करना। (हिण्डते - पीडयति। हिण्डकः, हिण्डमानः - पीडयितरि। हिण्डुः - समूहः)।

हिन्व-हिवि (हिन्वति) = प्रीणनार्थः प्रीणने, शीतीभावे। चलना, जाना, भेजना, प्रेरित करना, तृप्त होना, शान्त होना, प्रीति करना, गति करना। (हिन्वति - शीतीकरोति। हिव्वः - शीतीकर्ता। हिव्वनम्, हिव्वुः, हिव्विः - शीतीभावे)।

हिम्ब (हिम्बति) = भये, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। डरना। (हिम्बति - बिभेति। हिम्बः - कायरः। हिम्बा - कायरता)।

हिरण् (हेरणति) = दीप्तौ, शब्दे, शब्दक्रियायाम्। शब्द करना, दीप्त होना)। (हेरणति - दीप्यते। हिरणः - रागः (रङ्गः)। हिरण्यम्, हिरण् - सुवर्णम्)।

हिल् (हिलति) = हावकरणे, विषयासक्तौ, शृङ्गारकरणे। हावभाव करना, नखरा करना, लीला करना, क्रीड़ा करना। (हिलति - शृङ्गारं करोति। हेलन्, हेलाकः, हेलिः - रत्यर्थम् शृङ्गारकर्ता। हेलनम्, हेलनीयम्, हेला - शृङ्गारकरणे। प्रहेला, प्रहेलिका - पहेली)।

हिवि- हिन्व (हिन्वति) = प्रीणनार्थः प्रीणने, शीतीभावे। चलना, जाना, भेजना, प्रेरित करना, तृप्त होना, शान्त होना, प्रीति करना, गति करना। (हिन्वति - शीतीकरोति। हिव्वः - शीतीकर्ता। हिव्वनम्, हिव्वुः, हिव्विः - शीतीभावे)।

हिष्क (हिष्कति, हिष्कते) = गतौ, संतोषगत्याम्। जाना, सन्तोषपूर्वक

गति करना। (हिष्कति, हिष्कते - संतोषेण गच्छति। हिष्कन्, हिष्ककः, हिष्कमानः - सन्तोषेण गन्ता। हिष्कणम्, हिष्कणीयम्, हिष्कम् - सन्तोषगतौ)।

हिष्क (हिष्कयते) = हिंसायाम्, पीडायाम्। मारना, दुःख देना। (हिष्कयति - पीडयति। हिष्का - पीडा)।

हिंस (हिनस्ति; हिंसयति, हिंसयते, हिंसति) = हिंसायाम्। मारना, बध करना, दुःख देना, सताना। (हिनस्ति - ताडयति। हिंसकः - घातकः। हिंसम्, हिंसनीयम्, हिंसा - मारणे)।

ही (अव्यय) = विस्मयसूचक।

ही (हा) (जहाति) = गतौ, त्यागे। छोड़ना, परित्याग करना, जाना, चलना। (जहाति - त्यजति। जहन्, जहकः, हाता, हायकः - त्याजके। जहत्, जहनम्, जहनीयम् - त्यागे)।

ही-हा (जिहीते) = गतौ। जाना, चलना। (जिहीते - गच्छति। हाता, हायमानः, हायकः, हितः, हितवान् - गन्तरि। हितिः, हितम्, हेतव्यम्, हायनम्, हायनीयम्, हायम् - गमने)।

हृ (जिहर्ति) = प्रसह्यकरणे, बलात्कारे। बलात्कार करना।

हृ (हरति, हरते) = प्रसह्य करना, बलपूर्वक करना, हरण करना, ले जाना, पहुँचाना, चुराना।

हृ (हरति, हरते) = हरणे, अपनयने, नाशने। ले जाना, पहुँचाना, लेना, ग्रहण करना, नष्ट करना, चुराना। अनु - अनुसरण करना, अनुगमन करना। अप - बलात् ले जाना, पीछे फेकना, हटाना, चुराना। अभि - हल्ला करना, मारपीट करना। अभ्या - तर्क वितर्क करना, वाद करना, शुद्धाशुद्ध का विचार करना। अभ्युत् - देना, अर्पण करना। अभिव्या - उच्चारण करना। अव - पुनः सम्पादन करना, फिर प्राप्त करना, शासन करना, दण्ड देना। उत् - ऊपर लेना, उद्धार करना, देश से निकाल देना। उदा - कहना, दृष्टान्तपूर्वक स्पष्ट करना, उदाहरणपूर्वक कहना। उप - भेंट देना,

समीप लाना। उपसम् - रखना, नहीं देना, सिकोड़ना, समेटना, समाप्त करना। नि - ठिठुरना, जमना। निर् - अपमान करना। निरा - उपवास करना, बिना आहार के रहना, भूखा रहना। परि - शाप देना, निन्दा करना, छोड़ना, त्याग करना, रोकना, सार या तत्व निकालना। प्र - प्रहार करना, मारना, ठोकना। प्रतिसम् - छोड़ना, त्यागना, अप्रतिष्ठा करना। वि - क्रीड़ा करना, विलास करना, खेलना। व्या - बोलना, कहना। व्यव - उद्योग करना, धन्धा करना, वाद करना। सम् - मार डालना, जान से मारना, समेटना, सिकोड़ना, नष्ट करना। समा - एकत्र करना, बटोरना। समभिव्या - एकमत से या सम्मति से योजना करना या रचना, युक्ति निकालना, संयोजन करना। समुदा - कथन करना, कहना। समुप - एकत्र करना, देना। सम्प्र - युद्ध करना, लड़ना। व्यति - एक मत से चोरी करना। अनु - परम्परागत व्यवहार का सेवन करना। (हरति, हरते - अपनयति, नाशयति। विहारिणी - विहारकर्त्री। आहारः - भक्ष्यम्। उपाहारः - उपहारः। संहारः - नाशः। अध्याहारः - अर्थपूर्त्यर्थकं बाह्यं पदम्। उदाहरणम् - दृष्टान्तः। प्रत्याहारः - संकोचः। प्रतिहारः - प्रतिहारी। परिहारः - समाधानम्। नीहारः - अवश्यायः। व्यवहारः - वर्तनम्। प्रहारः - प्रहरणम्। हर्ता - नाशयिता। हर्त्री - नाशयित्री। हृत्, हृतिः, हृतम्, हर्तव्यम्, हरणम्, हरणीयम्, हर्यम्, हार्यम् - नाशने)।

हृणी (हृणीयते) = रोषणे, लज्जायाम् च। लज्जित होना, क्रोध करना।

हृष् (हृष्यति) = सन्तोषे, तुष्टौ, पुष्टौ, पोषणे। हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना। (हृष्यति - हृष्टो भवति। हृष्टः, हृष्टवान्, हर्षकः, हर्ष्टा, हर्षन् - संतोषके। हर्षः, हर्षणीयम्, हर्षितव्यम्, हर्ष्यम्, हार्ष्यम्, हृष्टम्, हृष्टिः - सन्तोषे। रोमहर्षणः - पुलकाङ्कनः, भयङ्करः)।

हृष् (हर्षति) = अलीके, आनन्दे। हृष्ट होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न

होना, झूठ बोलना, मिथ्या बोलना। (हर्षति - आनन्दितो भवति। हर्षिता, हृष्टः, हृष्टकः - संतोष्टरि। हृष्टम् - सन्तुष्टम्। हृष्टिः, हृषिः, हर्षः, हर्षणम्, हृषाणम्, हृषत्, हृट् - आनन्दे)।

हु (जुहोति, जुहुते) = तर्पणे, दानादानयोः, दाने, आदाने, ग्रहणे च। देना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, तृप्त करना। (जुहोति, जुहुते - ददाति, गृह्णाति च। होता, हवकः, हावकः, हवन्, हावनः, हुतः, हुतवान् - ग्रहीतरि। हवनम्, हवनीयम्, हव्यम्, हाव्यम्, हविस्, हुतः, हुतिः - दाने आदाने च)।

हु-ह्वे (ह्वयति, ह्वयते) = स्पर्धायां वाचि, विवादवाक्ये, स्पर्धायाम्, निन्दायाम्, शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, बुलाना, पुकारना, नाम लेना, नाम लेकर पुकारना, हांक मारना, मांगना, युद्ध के लिए बुलाना, स्पर्धा करना, लड़ाई करना, शब्द करना, ध्वनि करना। उप, नि, वि, सम्, आ - युद्ध के लिए बुलाना। (ह्वयति, ह्वयते - निन्दति। ह्वयन, ह्वयानः - निन्दके। आह्वानम् - शब्दनम्। ह्वा, ह्वायनम्, ह्वायनीयम्, ह्वाय्यम् - विवादशब्दे। आहवः - कलहम्, युद्धम्। हावः - मैथुनं संभ्रमः)।

हुञ्ज (हुञ्जति) = हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां पतने, अधोगमने च। हिंसा करना, जाना, गिरना। (हुञ्जति - पतति)।

हुड् (हुडति) = संघाते, ताडने, निमज्जने। बटोरना, एकत्र करना, डूबना, पानी में उतरना। (हुडति - ताडयति। हुडः, होडः, होडकः - ताडके, संघर्षके। हुडिः, होडनम्, होडनीयम् - ताडने)।

हुड् (होडति) = गतौ, खनने, चलने। जाना, खोदना, खनन करना, होड़ लगाना। (होडति - खनति)।

हुण् (होणति) = गतौ, गमने। जाना। (होणति - गच्छति)।

हुण्ड (हुण्डति, हुण्डते) = पराजये, हिंसागत्योः, हिंसायां गत्यां, संघाते वरणे, सहभावे च। पराजय करना, पराजय होना, एकत्र करना,

मान्य करना, लेना। (हुण्डते - पराजयते। हुण्डति - हिंसति, निकृन्तति। हुण्डकः, हुण्डमानः - पराजेतरि। हुण्डा, हुण्डिः - पराजयः। हुण्डः - कृष्णः। हुण्डिः - अपजयः, पराजयः)।

हुम् (अव्यय) = क्रोधसूचक।

हुर्च्छा (हूर्च्छति) = कौटिल्ये, कुटिलतायां विप्रलम्भने। मन तथा आकृति वक्र होना, छिपना, दबे पांवों भाग जाना, हटना, ठगना। (हूर्च्छति - विप्रलम्भते। हूर्च्छा - विप्रलम्भनम्, कौटिल्यम्)।

हुल् (होलति) = हिंसासंवरणयोः, हिंसायाम्, आच्छादने, गतौ च। जाना, हिंसा करना, मार डालना, आच्छादित करना, ढकना। (होलति - मारयति। हुलिः - व्याघ्रः। हुलम् - गम्यम्, क्षेत्रम् वा)।

हू (हूते) = अपनयने। दूर ले जाना, त्याग करना। (हूते - त्यजति। हूतः, हूतवान्, ह्वानः - त्याजकः आह्वयिता च। हूतिः, हूतम्, आह्वानम् - त्यजनम्, आह्वानं च)।

हू (जुहोति, जुहुते) = दानादानयोः, दाने ग्रहणे च। देना, खाना, भक्षण करना, लेना, ग्रहण करना, तृप्त करना। (जुहोति, जुहुते - ददाति गृह्णाति च। होता, हवकः, हावकः, हवन्, हावनः, हुतः, हुतवान् - ग्रहीतरि। हवनम्, हवनीयम्, हव्यम्, हाव्यम्, हविस्, हुतः, हुतिः - दाने आदाने च)।

हू-ह्वे (ह्वयति, ह्वयते) = शब्दे, ध्वनौ, स्पर्धायां वाचि, विवादवाक्ये, स्पर्धायाम् शब्दे च। शब्द करना, पुकारना, मांगना, युद्ध के लिए बुलाना, स्पर्धा करना, लड़ाई करना। उप, नि, वि, सम्, आ - युद्ध के लिए बुलाना। (ह्वयति, ह्वयते - निन्दति। ह्वयन, ह्वयानः - निन्दके। आह्वानम् - शब्दनम्। ह्वा, ह्वायनम्, ह्वायनीयम्, ह्वाय्यम् - विवादशब्दे। आहवः - युद्धम्। हावः - मैथुनं संभ्रमः)।

हूड् (हूडति) = गतौ, चलने, कर्षणे। जाना, सरकना, कर्षण करना। (हूडति - कृषति। हूडिकः - कृषकः)।

हूण् (होणति) = गतौ, गमने। जाना, विशिष्ट विषय में व्यवहार करना। (होणति - विशिष्टविषये व्यवहरति। हूणम् - लक्षणम्)।

हेट् (हेटते) = विवाधायाम्, स्थविरे, गत्यावरोधे। रोकना, प्रतिरोध करना।

हेठ् (हेठति) = विवाधायाम्, स्थविरे, गत्यावरोधे। रोकना, निष्ठुर होना, क्रूर होना। (हेठते - स्थिरो भवति, गतिम् अवरुणद्धि। हेठः, हेठकः, हेठानः, स्थिरे। हेठिः, हेठुः, हेठनम्, हेठनीयम् - स्थविरे, स्थैर्ये)।

हेठ् (हेठ्नाति) = भूतप्रादुर्भावे। जन्म देना, उत्पन्न करना, नियतकाल का अतिक्रमण कर जन्म होना।

हेड् (हेडति) = वेष्टने, परिवेष्टने। लपेटना, घेरे में लेना। (हेडति, हेडयति - परिवेष्टयति। हेडकः, हेडन्, हेडः - परिवेष्टकः, हेडिः, हेडुः, हेडनम्, हेडनीयम्, हेड्यम्, हैड्यम्, हैडम् - वेष्टने)।

हेड् (हेडते) = भये, अनादरे, तिरस्कारे। डरना, अपमान करना, तिरस्कार करना। (हेडते - बिभेति। हेडकः, हेडानः - कायरः। हेडनम्, हेडनीयम् - भये)।

हेड् (हेडति) = भये, गतौ, चलने। जाना, डरना। (हेडति - बिभेति। हेडः - भितिः। हेडिः - भीरुः)।

हेप् (हेपते) = गतौ। जाना।

हेरम्ब (हेरम्बति) = बहुभक्षणे, मर्दने, मर्दनक्रियायाम्। अधिक खाना। (हेरम्बति - बहु भक्षयति। हेरम्बः - बहुभक्षकः)।

हेल् (हेलति) = गतौ, भ्रमणे। जाना, घूमना। (हेलति - भ्रमति। हेला - भ्रमणम्। प्रहेलिका - भ्रमकरः कथनम्, पहेली)।

हेष् (हेषते) = अव्यक्ते शब्दे, अव्यक्तध्वनौ। हिनहिनाना (घोड़े का शब्द)। (हेषते - अश्वः शब्दयति। हेट, हेषकः, हेषमाणः - अश्वे। हेषिः, हेषा, हेषणम्, हेषणीयम् - अश्वध्वनौ)।

हैड् (हैडति) = भये, गतौ, चलने। डरना, आगे दौड़ना। (हैडति - बिभेति। हैडिकः - अग्र धावकः)।

होड् (होडति) = गतौ, चलने, ज्ञाने। चलना, जाना, जानना, होड करना। (होडति - जानाति, चलति)।

होड् (होडते) = हिंसायाम्, अनादरे, तिरस्कारे। हिंसा करना, अपमान करना, तिरस्कार करना। (होडते - हिंसयति, असिना गात्रं विच्छेदयति। होडः, होडकः, होडानः - गात्रविच्छेदके। होडिः, होडुः, होडा - ताडनम्। होडनम्, होडनीयम् - कष्टप्रदाने)।

हौड् (हौडति) = गतौ, चलने, धावने। जाना, दौड़ना। (हौडति - धावति। हौडः - धावकः)।

ह्नु (ह्नुते) = अपनयने। छिपाना, लुकाना, चुराना, ले जाना, दबा लेना। आ, नि - छिपाना, लुकाना।

ह्मल् (ह्मलति, ह्मलयति, ह्मालयति) = संचलने कम्पने, स्वप्ने च। कांपना, थरथराना। (ह्मलति, ह्मलयति - कम्पते। ह्मलयति, ह्मालयति - स्वप्नं पश्यति। ह्मलः, ह्मलकः, ह्मलन् - कम्पकः। ह्मलनम्, ह्मलनीयम्, ह्मलितव्यम् - कम्पने)।

ह्यः (अव्यय) = कल (बीता हुआ दिन)।

ह्रगे (ह्लगे) (ह्रगति) = संवरणे, आच्छादने। ढकना, आच्छादित करना, लपेटना। (ह्रगति, ह्रगयति - आच्छादितो भवति, आच्छादयति च। ह्रगः, ह्रगन्, ह्रगकः - आच्छादयिता। ह्रगिः, ह्रगुः, ह्रगणम्, ह्रगितव्यम्, ह्रगणीयम्, ह्रग्यम्, ह्राग्यम्, ह्रागम् - आच्छादने)।

ह्रप् (ह्रापयति, ह्रापयते) = व्यक्तायां वाचि। स्पष्ट बोलना।

ह्रस् (ह्रसति) = तनूभावे, अल्पीभावे, शब्दे, ध्वनौ। शब्द करना, ध्वनि करना, अल्प होना। (ह्रसति - तनूभवति। ह्रस्वः - तनुः, लघुः। ह्रसितम्, ह्रसिः, ह्रसः, ह्रस्, ह्रसु - तनूभावे)।

ह्राद् (ह्रादते) = अव्यक्ते शब्दे, अस्पष्टध्वनौ, मेघध्वनौ। अस्पष्ट शब्द करना, मेघध्वनि करना। (ह्रादते - मेघः शब्दयति। ह्रादः - मेघः। ह्रदिनी - मेघध्वनिः। ह्रादकः - मेघः शब्दकर्ता। ह्रादिः, ह्रात्, ह्रादनम्, ह्रादनीयम्, ह्रादमानम्, ह्राद्यम् - मेघध्वनौ)।

ह्री-जिह्री (जिह्रेति) = लज्जायाम्, त्रपायाम्। लज्जित होना। (जिह्रेति - त्रपते। ह्रेता, ह्रीतः, ह्रीतवान्, ह्रयन्, ह्रयः, ह्रयकः, ह्रायः - त्रपमाणे। ह्रीः, ह्रीतिः, ह्रीतम्, ह्रेतव्यम्, ह्रय्यम्, ह्राय्यम्, ह्रयणम्, ह्रयणीयम् - लज्जने)।

ह्रीच्छ (ह्रीच्छति) = लज्जायाम्। लज्जित होना। (ह्रीच्छति - लज्जते। ह्रीच्छा - लज्जा)।

ह्रूड् (ह्रुडति, ह्रूडति) = संघाते। एकत्र करना, बटोरना, जाना, सरकना।

ह्रेष् (ह्रेषते) = संवरणे अव्यक्ते शब्दे, गतौ, नृत्ये। नाचना, नृत्य करना, हिनहिनाना (घोड़े का शब्द)। (ह्रेषते - नृत्यति। ह्रेट्, ह्रेषकः, ह्रेषमाणः - नर्तके। ह्रेषणम्, ह्रेषणीयम्, ह्रेषिः - नर्तने)।

ह्लग् (ह्लगति) = संवरणे, आच्छादने। आच्छादित करना, ढकना, लपेटना। (ह्लगति, ह्लगयति - आच्छादयति। ह्लगः, ह्लगकः, ह्लगन् - आच्छादकः। ह्लगिः, ह्लगम्, ह्लगनीयम् - आच्छादने)।

ह्लप् (ह्लापयति) = व्यक्तायां वाचि, शोभने वाक्ये। स्पष्टोच्चारण करना, बोलना। (ह्लापयति - शोभनं वदति। ह्लपन्, ह्लपकः - साधुवक्ता। ह्लपनम्, ह्लपनीयम् - साधुभाषणे)।

ह्लस् (ह्लसति) = काठिन्ये, शब्दे, ध्वनौ। कठिन होना, शब्द करना, ध्वनि करना। (ह्लसति - कठिनो भवति। ह्लसितम्, ह्लसः, ह्लसिः, ह्लसुः,ह्लस् - काठिन्ये)।

ह्लाद् (ह्लादते) = अव्यक्ते शब्दे च, सौख्ये च, मेघध्वनौ, सुखे च।

सुखी होना, सन्तुष्ट होना, प्रसन्न होना, सन्तुष्ट करना, प्रसन्न करना, मेघ ध्वनि करना, बाघ जैसा शब्द करना। (ह्लादते - मेघध्वनति। ह्लादकः, ह्लादमानः - सुखभोक्तरि। ह्लात्, ह्लादिः, ह्लादनम्, ह्लादनीयम् - मेघध्वनौ सुखे च। प्रह्लादः, विह्लादः, सुह्लादः, निह्लादः - सुखे)।

ह्वल् (ह्वलति; ह्वलयति) = संचलने चलने, स्पन्दने, कलरवे। कांपना, थरथराना, भ्रान्त होना, मोहित होना, घबराना। (ह्वलति, ह्वलयति - स्पन्दते। ह्वलयति, ह्वालयति - कलरव भवति। ह्वलः, ह्वलकः, ह्वलन् - स्पन्दिता। ह्वलनम्, ह्वलनीयम्, ह्वलितव्यम् - स्पन्दने)।

ह्वृ (ह्वरति) = कौटिल्ये, अनार्जवे। वक्र होना, टेढ़ा होना, बांका होना। (ह्वरति - कुटिलमाचरति। ह्वर्ता, ह्वरकः, ह्वरः - कुटिलव्यवहारकर्त्तरि। ह्वः, ह्वरणम, ह्वृतम्, ह्वृतिः, ह्वरणीयम्, ह्वर्तव्यम्, ह्वर्यम्, ह्वार्यम् - कौटिल्ये)।

ह्वृ (ह्वरति) = वरणे, आच्छादने, स्वस्थाने। निवास करना। (ह्वरति - निवसति। ह्वर्ता, ह्वरकः - निवसितरि। ह्वरणम्, ह्वृ, ह्वरणीयम्, ह्वर्तव्यम्, ह्वारर्यम् - स्वस्थाने)।

ह्वे (ह्वयति, ह्वयते) = स्पर्धायां वाचि, विवादवाक्ये। स्पर्धायाम् शब्दे च। बुलाना, पुकारना, मांगना, युद्ध के लिए बुलाना, स्पर्धा करना, लड़ाई करना, शब्द करना। उप, नि, वि, सम्, आ - युद्ध के लिए बुलाना। (ह्वयति, ह्वयते - निन्दति। ह्वयन, ह्वयानः - निन्दके। आह्वानम् - शब्दनम्। ह्वा, ह्वायनम्, ह्वायनीयम्, ह्वाय्यम् - विवादशब्दे)।

ह्वेल् (ह्वेलति) = गतौ, भ्रमणे। जाना, घूमना। (ह्वेलति - भ्रमति। ह्वेला - भ्रमणम्)।

ॐ

स्वामी शरण कृत साहित्य

मो. 9839105629, 8687849004

1. ऋग्वेद भाष्य :- ऋग्वेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण।

(बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

2. सामवेद भाष्य :- सामवेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक

भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

3. अथर्ववेद भाष्य :- अथर्ववेद भाष्य के इस सार-संक्षेप संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

4. यजुर्वेद भाष्य :- यजुर्वेद भाष्य के इस सम्पूर्ण संस्करण में सन्धियों से मुक्त सरल पाठ के साथ ही मन्त्रार्थ, भावार्थ तथा पदार्थ भी प्रस्तुत किया गया है। मन्त्रों के सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ

इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का यह इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी संस्करण। (बृहद् आकार) **रु. 2000.00**

5. वेदायन भाष्य :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

6. वेदायन प्रवचन :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेद सूक्तों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ तथा सरस गेय पद्यानुवाद भी दिया गया है। इसके साथ ही इन मन्त्रों पर विस्तृत

प्रवचन भी इस पुस्तक में संकलित हैं। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है। सभी के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

7. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद, भावार्थ सहित):- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। **रु. 100.00**

8. वेदायन (सरल पाठ, काव्यानुवाद) :- चारो वेदों से चुने हुए प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ, काव्यानुवाद एवम् भावार्थ। वेदपाठ तथा उपासना के लिए। **रु. 100.00**

9. वेद सूक्तायन :- चारो वेदों से चुने हुए 15 प्रमुख वेदसूक्तों का सन्धियों से मुक्त सरल पाठ (छन्द पाठ), मन्त्रार्थ, विशेष भावार्थ-व्याख्या, व्याकरण-सम्मत पदार्थ (शब्दार्थ) सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। **रु. 100.00**

10. यजुर्वेद एकादशी :- यजुर्वेद के अन्तिम 11 अध्यायों का मन्त्रार्थ, पदार्थ, भावार्थ दिया गया है। सन्धियों-संयुक्ताक्षरों

से मुक्त सरल सरल पाठ के साथ ही प्रत्येक शब्द का प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत किया गया है। वेद को वैदिक भाषा के अनुसार समझने का इतिहास में सर्वप्रथम प्रयास है। व्याकरण-सम्मत, पदार्थ (शब्दार्थ) एवम् भावार्थ-व्याख्या सहित सरल प्रामाणिक अनुवाद। मूल मन्त्र के किसी शब्द को छोड़ा नहीं गया है, कोई भी शब्द अपनी ओर से जोड़ा नहीं गया है। जन सामान्य तथा शोधकर्ताओं-अध्येताओं के लिए उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

11. चतुर्वेद सरल पाठ :- प्रथम बार प्रस्तुत सन्धियों से मुक्त चारों वेदों का सरल पाठ जन साधारण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। (बृहद् आकार) **रु. 2500.00**

12. ऋग्वेद सरल पाठ :- ऋग्वेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(बृहद आकार) **रु. 900.00**

13. सामवेद सरल पाठ :- सामवेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 500.00**

14. अथर्ववेद सरल पाठ :- अथर्ववेद का सम्पूर्ण सरल पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है।

(बृहद आकार) **रु. 700.00**

15. यजुर्वेद सरल पाठ :- यजुर्वेद का सम्पूर्ण सरल

पाठ प्रथम बार प्रस्तुत किया जा रहा है। **रु. 700.00**

16. वैदिक धात्वादि कोश :- पाणिनि तथा काशकृत्स्न प्रोक्त धातुपाठों को समाहित कर सम्पूर्ण धातुकोश तैयार किया गया है। उपसर्ग, अव्यय, संख्या, सर्वनाम शब्द भी दिये गये हैं। इसकी सहायता से वेद सहित सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य का अर्थ किया जा सकता है। अत्यन्त उपयोगी संस्करण। **रु. 500.00**

17. वैदिक शब्दकोश :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश।

(वृहद आकार) **रु. 900.00**

18. वैदिक शब्दकोश (लघु संस्करण) :- वैदिक पदों (शब्दों) का धातुज, व्याकरण-सम्मत प्रमाण सहित निष्पक्ष अर्थ। इतिहास में सर्व प्रथम प्रस्तुत वैदिक शब्दकोश। **रु. 200.00**

19. सरल संस्कृत व्याकरण :- व्याकरण के मूल तत्वों पर आधारित इस पद्धति से शब्द रूप, धातु रूप, पाणिनीय सूत्र रटे बिना एक मास में संस्कृत पढ़ना, लिखना, बोलना सीख सकते हैं। दशकों के अनुभव के बाद प्रस्तुत उपयोगी चमत्कारिक व्याकरण प्रणाली। **रु. 95.00**

20. वैदिक इतिहास :- ब्रह्मा व मनु से आरम्भ कर

बुद्ध तक का सम्पूर्ण क्रमबद्ध इतिहास एक पुस्तक में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है। सूर्यवंश की 128 पीढ़ियों का इतिहास प्रथम बार प्रस्तुत किया है। सूर्यवंश, चन्द्रवंश की शाखाओं सहित मनु से भोज तक सम्पूर्ण वंशावली भी दी गयी है। **रु. 200.00**

21. ओम् साधना :- ओम् साधना, वैदिक संस्कृति, वैदिक आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 200.00**

22. चिन्तन प्रवाह :- वैदिक संस्कृति तथा जीवन दर्शन सम्बन्धी चिन्तन। **रु. 500.00**

23. वैदिक विज्ञान :- वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक चिकित्सा, वैदिक योग साधना। **रु. 50.00**

24. युगबोध :- प्रबन्ध काव्य। **रु. 300.00**

25. चेतना :- काव्य संकलन। **रु. 100.00**

26. नवांकुर :- काव्य संकलन। **रु. 20.00**

❖❖ ❖ ❖❖

ॐ यो असौ आदित्ये पुरुषः, सो असौ अहम्, ओम् खम् ब्रह्म॥